
इकाई: 1 बौद्धिक अक्षमता :ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 मानसिक मंदता: पाश्चात्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
- 1.4 मानसिक मंदता: भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
- 1.5 मानसिक मंदता की परिभाषा का भारतीय परिप्रेक्ष्य
- 1.6 सामान्य अंधविश्वास और सच्चाई
- 1.7 सारांश
- 1.8 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की आधारभूत संकल्पनाओं से परिचित होंगे। पाठ का मुख्य केंद्र है बौद्धिक अक्षमता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (पाश्चात्य एवं भारतीय) है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि बौद्धिक अक्षमता को ही मानसिक मंदता के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में इस इकाई में आप यह भी पढ़ेंगे कि हमारे समाज में किस प्रकार की भ्रांतियाँ मानसिक मंदता के प्रति व्याप्त रही हैं। पाठ में आंतरालिक रूप से कुछ वस्तुविष्ट प्रश्न दिए गए हैं, जिससे आपको अपनी प्रगति की जाँच करने में मदद मिलेगी।

1.2 उद्देश्य

इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. मानसिक मंदता का ऐतिहासिक भारतीय परिप्रेक्ष्य बता पाने में सक्षम होंगे।
2. मानसिक मंदता का ऐतिहासिक पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य बता पाने में सक्षम होंगे।

1.3 पाश्चात्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

विकलांगता का पुराना इतिहास अस्पष्ट है। सामाजिक जागरूकता न होने की वजह से इतिहासकारों ने विकलांगता/अक्षमता के इतिहास को तरजीह नहीं दी है। तत्कालीन साहित्य का अध्ययन करने पर हमें, विकलांगता ग्रस्त, व्यक्तियों के जीवन की थोड़ी जानकारी अवश्य मिलती है। प्राचीन ग्रीस में राज्य परिषद के अधिकारी नवजात शिशुओं की जांच करते थे और यदि वे 'दोषपूर्ण' पाये जाते तो उन्हें समाप्त कर दिया जाता था। अक्षमताग्रस्त शिशुओं के संदर्भ में शिशु हत्या प्रचलित थीं। दूसरी शताब्दी में रोम-साम्राज्य में मनोरंजन के उद्देश्य से, अक्षमताग्रस्त बालकों एवं व्यक्तियों को बेचे जाने के प्रमाण मिलते हैं। पांचवी से पंद्रहवी शताब्दी के मध्य शिशु हत्या और विक्रय में थोड़ी कमी आयी और अक्षमता युक्त व्यक्तियों/बालकों के साथ मानवीय व्यवहार का आरंभ हुआ। 12वीं शताब्दी में इंग्लैंड के राजा हेनरी द्वितीय ने कानून बनाकर मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों के साथ अमानवीय व्यवहारों पर रोक लगाने की कोषिष की।

1690 में जॉन लॉक द्वारा प्रतिपादित धारणा कि नवजात का मस्तिष्क 'टेबुला रसा' (खाली स्लेट) के समान होता है, ने मानसिक मंदता युक्त बालकों के प्रशिक्षण एवं जीवन शैली को बहुत प्रभावित किया। जॉन लॉक ने सर्वप्रथम मानसिक मंदता को मानसिक रोग से अलग बताया।

अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में विशेष शिक्षा को शिक्षा की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। हालांकि यह विकलांग बालकों के अधिकार पर आधारित शिक्षा की बजाय उनके प्रति दयाभाव (Charity) अधिक था।

यह वह समय था जब कई समाज सेवा करने वाली संस्थाएं और राज्य समर्थित विशेष विद्यालय खोले गए। विशेष शिक्षा की औपचारिक शुरुआत में फ्रांस के मनो चिकित्सक जीन मार्क गैस्पर्ड इटार्ड का नाम अग्रणी है, जिन्हें प्रायः विशेष शिक्षा के जनक के रूप में संबोधित किया जाता है। 1799 ई. में इटार्ड को फ्रांस के जंगलों में एक बच्चा मिला जिसे 'एवरॉन का जंगली' बालक के नाम से संबोधित किया जाता है। बाद में उसका नाम 'विक्टर' रखा गया। 12 वर्ष के विक्टर को जिसके सभी व्यवहार 'आदि मानव' के समान थे, को शिक्षित करने की जिम्मेदारी इटार्ड को दी गई। पांच वर्ष के लगातार प्रयासों के बाद इटार्ड, विक्टर को सामान्य संप्रेषण कौशल एवं सामान्य सामाजिक व्यवहार सिखा पाने सक्षम हो सके परंतु श्रम के अनुपात में सफलता नहीं मिल पायी। इटार्ड के इन प्रयासों ने पूरे यूरोप को मानसिक मंद बालकों के शिक्षण के प्रति उद्वेलित कर दिया। इटार्ड के शिष्य सेंगुइन ने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों को शिक्षा के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया और विशेष शिक्षा की जड़ों को मजबूत बनाने में अपना योगदान दिया। सेंगुइन द्वारा विकसित 'सेंगुइन फार्म बोर्ड' (SFB) आज भी छोटे बच्चों की बौद्धिक क्षमता के आकलन में प्रयुक्त होता है।

सेंगुइन ने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा के लिए एक विस्तृत विधि का विकास किया जिसे उन्होंने शरीर क्रियात्मक विधि (Physiological Method) का नाम दिया। सेंगुइन के द्वारा विकसित विशेष शिक्षा की इस विधि में संवेदी प्रशिक्षण (दृष्टि/श्रवण/आंखों और हाथों का समन्वय) आदि शामिल थे। सन् 1850 में सेंगुइन यू.एस.ए. चले गए और वहां मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा में अपना योगदान दिया। सन् 1876 में सेंगुइन ने असोसिएशन ऑफ मेडिकल ऑफिसर्स ऑफ अमेरिकन इंस्टीच्यूसंस फॉर इडिओटिक एण्ड फीबल माइंडेड पर्सनल (Association of Medical Officers of American Institution for Idiotic & Feeble Minded Persons-AMOAIFMP) की स्थापना की। बाद में यह संस्था मानसिक मंदता में काम करने वाली विश्व की अग्रणी संस्था बन गई और अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिसिएंसी $\frac{1}{4}$ American Association of Mental Deficiency-AAMD $\frac{1}{2}$ अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन $\frac{1}{4}$ American Association of Mental Retardation-AAMR $\frac{1}{2}$ जैसे परिवर्तित नामों का सफर तय करते हुए अब अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज के नाम से जानी जाती है।

19वीं सदी का प्रारंभिक भाग मानसिक मंदता के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण है। सन् 1905 में विश्व का पहला बौद्धिक परीक्षण बिने एवं साइमन ने विकसित कर के, मानसिक मंदता की पहचान में क्रांति की शुरुआत कर दी। प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूरा विश्व अस्थिर हो गया फलतः राज्यों की ओर से विकलांगता में काम कर रहे संस्थाओं के अनुदान में एक तरफ कटौती की गई और दूसरी तरफ युद्ध के परिणाम स्वरूप लाखों व्यक्ति विकलांग होकर घर लौटे। इन कारणों की वजह से, 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में बड़े-बड़े संस्थानों की स्थापना की गई और विकलांग व्यक्तियों को बड़ी-बड़ी (5000-6000 व्यक्ति) संस्थाओं में एक साथ रखे जाने लगे जहां बुनियादी सुविधाओं की भी पर्याप्त कमी थी। सन् 1962 में अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी ने प्रेसीडेंट कमिटी ऑफ मेंटल रिटार्डेशन गठित किया जिसका उद्देश्य था मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों के जीवन स्तर की समीक्षा करना। इस दौरान, कुछ लोग डेनमार्क, स्वीडन आदि देशों में बड़ी-बड़ी संस्थाओं में हो रहे मानवाधिकारों के हनन के विरुद्ध सामने आए और इन सभी के संयुक्त प्रयासों ने विसंस्थानीकरण (Deinstitutionalization) की नींव रखी। विसंस्थानीकरण एवं समुदाय आधारित आंदोलन के प्रमुख अग्रणी नेताओं में नील्स एरिक बैक माइकेल्सन, वुल्फ वुल्फेन्सवर्गर, बेन्जट नीरजी आदि प्रमुख हैं। बैक मिकेल्सन को सामान्यीकरण की अवधारणा का जनक माना जाता है। इसके पश्चात् सन् 1975 में विकलांग व्यक्तियों के वैश्विक अधिकारों की घोषणा की गई और अमेरिका में सभी विकलांग बालकों के लिए शिक्षा (Education for all Handicapped Children Act 1975) पारित किया गया और तदुसार, सामान्य विद्यालयों के दरवाजे विकलांग बालकों के लिए भी खोल दिए गए। तत्पश्चात् आए कानून (जिनका अध्ययन हम अगली इकाइयों में करेंगे) यथा: विकलांग बालकों के अधिकार से संबंधित

सलमांका केन्फ्रेंस और अद्यतनल यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन राइट्स ऑफ पर्सनस विथ डिसेबिलिटीज (UNCRPD) ने सभी अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा में वैश्विक क्रांति ला दी है।

1.4 भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

बौद्धिक अक्षमता/मानसिक मंदता का भारतीय इतिहास उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता। भारतीय धार्मिक ग्रंथों में विकलांगता/मानसिक मंदता के साक्ष्य उपलब्ध हैं। लगभग 5000 ई. पू. रामायण काल में रानी कैकेयी की दासी मंथरा 'मानसिक मंदता' की उदाहरण है, जो अपनी अल्प बौद्धिक क्षमता के कारण इधर-उधर की बातों से जल्दी प्रभावित हो जाती थी।

रामायण काल के बाद महाभारत काल में भी मानसिक मंदता/विकलांगता का विवरण उपलब्ध है। महाभारत कालीन युग में कृष्ण की दासी 'कुब्जा' और विद्वान 'अष्टावक्र' दोनों ही अस्थि विकलांगता के उदाहरण माने जा सकते हैं। चौथी शताब्दी ई.पू. महान भारतीय अर्थशास्त्री चाणक्य ने अक्षमताग्रस्त व्यक्तियों के लिए अपमान जनक शब्दों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था और इसके लिए सजा का प्रावधान भी किया था। लगभग पहली शताब्दी ई.पू. भारतीय राजा अमरशक्ति के तीनों बच्चों वासुष्क्ति, उग्रशक्ति और अनेकशक्ति मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त माने जा सकते हैं, जो सामान्य शिक्षण विधियों से सीख नहीं पाये, फलतः राजा के दरबारी पंडित विष्णु शर्मा उन्हें राजनीति का ज्ञान कराने के लिए 'पंचतंत्र' की रचना की जो विश्व की प्रथम विशेष शिक्षा की किताब मानी जाती है।

बौद्धिक धार्मिक ग्रंथों में विकलांगता/मानसिक मंदता को पिछले जन्म के पापों का परिणाम बताया गया है। प्राचीन ग्रंथ मनुस्मृति में मनु ने भी उद्धृत किया है कि पूर्व जन्म में किए गए अपराधों के फलस्वरूप आदमी 'विकलांगताओं' को भोगता है और उसका प्रायश्चित्त करता है।

प्राचीन काल में विकलांग बालकों को जीने का अधिकार प्राप्त नहीं था इसके प्रमाण मिलते हैं कि प्रायः विकलांगता ग्रस्त शिशुओं की हत्या ¼Infanticide½ कर दी जाती थी। यदि विकलांग व्यक्ति जीवित रह जाते थे तो भी उनकी शिक्षा एवं अन्य जरूरतों का ध्यान नहीं रखा जाता था और ऐसे सभी विकलांग व्यक्तियों को 'पागल' की श्रेणी में माना जाता था। यदि मानसिक मंदता/विकलांगता के अद्यतन वैज्ञानिक भारतीय इतिहास की बात की जाय तो यह अत्यंत संक्षिप्त है। विकलांगता/अक्षमता से संबद्ध पहला भारतीय कानून इंडियन लूनासी ऐक्ट (1912) पारित किया गया और अक्षमता ग्रस्त व्यक्तियों के लिए पहला कानून अस्तित्व में आया। इंडियन लूनासी ऐक्ट (1912) ने मानसिक मंदता और मनोरोगों को समान मानते हुए, उनके लिए समान मानक एवं समान मानदण्ड तय किये। इसके बाद, एक लंबे अंतराल के बाद मानसिक स्वास्थ्य कानून (1987) मेंटल हेल्थ ऐक्ट

1987 आया जिसमें मानसिक रोग और मानसिक मंदता को अलग तो मान लिया गया परंतु मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के लिए कोई प्रावधान नहीं दिया गया। इससे पूर्व कोठारी आयोग की अनुषंसा पर 1974 में समेकित शिक्षा कार्यक्रम (Intergrated Education for Disabled Children- IEDC) आरंभ हो चुका था, 1984 में राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH) की स्थापना सिकंदराबाद में की चुकी थी।

इसके बाद NPE -1986, भारतीय पुनर्वास परिषद कानून 1992, विकलांग जन (समान अवसर, पूर्ण भागीदारी और अधिकारों की रक्षा) कानून 1995, राष्ट्रीय न्याय अधिनियम 1999, शिक्षा का अधिकार (RTE, 2009) कानून आदि बनाए गए और अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा है।

अभ्यास प्रश्न

1. इटार्ड को विशेष शिक्षा का जनक माना है। (सत्य/ असत्य)
2. भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1980 में लागू की गई। (सत्य/ असत्य)
3. विकलांग जन कानून 1995 में पारित हुआ। (सत्य/ असत्य)
4. छप्डभू की स्थापना दिल्ली में की गई। (सत्य/ असत्य)
5. रामायण काल में मानसिक मंदता के प्रमाण मिलते हैं। (सत्य/ असत्य)
6. सुमेलित करें:
 1. विशेष शिक्षा की पहली पुस्तक A. 1975
 2. भारतीय पुनर्वास B. पंचतंत्र
 3. AAMR के संस्थापक C. 1992
 4. शिक्षा का अधिकार कानून D. सेंगुइन
 5. EAHCA E. 2009

1.5 मानसिक मंदता की परिभाषा का भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारत में मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता को परिभाषित करने का प्रयास ज्यादा पुराना नहीं है। पहली बार विकलांग जन अधिनियम (PWD Act) 1995 में मानसिक मंदता को परिभाषित किया गया है, जिसके अनुसार “मानसिक मंदता का तात्पर्य मानव मस्तिष्क के अवरुद्ध अथवा अपूर्ण विकास से है जो सामान्यतः अधोसामान्य (Subnormal) बौद्धिक क्षमता के रूप में परिलक्षित होता है।” भारतीय संदर्भ में दी गई मानसिक मंदता की यह परिभाषा अत्यंत पुरानी प्रतीत होती है और अंतरराष्ट्रीय परिभाषाओं से इसकी तुलना करें तो अधूरी प्रतीत होती है क्योंकि इसमें मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए ‘अनुकूलनीय व्यवहार का सीमित होना’ समाहित नहीं है। इसमें ‘बौद्धिक

क्षमता' को मानसिक मंदता का नैदानिक मानदंड माना गया है जो अपर्याप्त है। सिर्फ सीमित वर्तमान में इस कानून में संशोधन की बात चल रही है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'स्पष्ट औसत से कम' बौद्धिक क्षमता प्रयोग सर्व प्रथम लयूकेसॉन ने किया (सत्य/असत्य)
2. ग्रॉसमैन के अनुसार बच्चे का विकास काल 16 वर्ष तक माना जाना चाहिए, (सत्य/असत्य)
3. मानसिक मंदता में बौद्धिक क्रियाशीलता के साथ अनुकूलनीय व्यवहार भी सीमित होना चाहिए (सत्य/असत्य)
4. मानसिक मंदता को पाश्चात्य देशों में बौद्धिक अक्षमता कहा जाने लगा है। (सत्य/असत्य)
5. विकलांग जन कानून 1995 के अनुसार मानसिक मंदता का अर्थ अधोसामान्य बुद्धि लब्धि से है। (सत्य/असत्य)

1.6 सामान्य अंधविश्वास और सच्चाई

यद्यपि कि विगत दशकों में मानसिक मंदता के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है, परन्तु अभी भी प्रायः मानसिक मंदता को 'मानसिक रोग' समझा जाता है। मानसिक मंदता और मानसिक रोग दो भिन्न संकल्पनायें/अवस्था है। इस सन्दर्भ में, भारत में कानूनी विकास का अध्ययन बड़ा दिलचस्प होगा। भारत में आजादी से पूर्व इंडियन लूनासी ऐक्ट, 1912 ¼Indian Lunacy Act 1912½ में आया। इस कानून के तहत मानसिक मंदता और मानसिक रोग दोनों को समान माना गया और समान प्रावधान किये गये। यह कानून स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग चार दशकों बाद भी लागू रहा। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत सारे परिवर्तन हुए, मानसिक मंदता को मानसिक रोग से इतर मानकर दोनों के लिये अलग-अलग प्रावधान किये गये परन्तु भारत में 1986 तक दोनों में कोई कानूनी अंतर नहीं किया गया।

1987 में पहली बार मानसिक रोग को मानसिक मंदता से अलग माना गया और मंेटल हेल्थ ऐक्ट 1987 के तहत मानसिक रूग्णता के लिये अलग प्रावधान बनाये गये। यहाँ पर भी, मानसिक मंदता और मानसिक रूग्णता को अलग-अलग मान तो लिये गये पर, प्रावधान बनाया गया सिर्फ मानसिक रोग के लिये। उपरोक्त कानून से मानसिक मंदता को पूरी तरह से अलग रखा गया। मानसिक मंद बालकों को सम्मिलित करते हुए, भारत में

पहला कानून बना वह है विकलांग जन कानून, 1995 जिसमें मानसिक मंदता की कानूनी परिभाषा के साथ ही उनके लिए विशिष्ट प्रावधान किये गये।

आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक मंद बच्चों को 'पागल' कहा जाना एवं माना जाना आम है। इसके अलावा भी, मानसिक मंदता के प्रति विभिन्न भ्रांतियाँ मंदता बुरी आत्माओं के प्रभाव की वजह से होता है। मानसिक मंदता झाड़-फूँक से ठीक हो सकती है। शादी कर दिये जाने पर मानसिक मंदता ठीक हो सकती है। मानसिक मंदता एक छुआछूत का रोग है जो साथ, बैठने, साथ खेलने आदि से किसी को भी हो सकता है। मानसिक मंदता माँ-बाप के पिछले जन्म के कर्मों का फल है आदि। आप सहमत होंगे कि इस वैज्ञानिक युग में उपरोक्त मान्यताओं का कोई आधार नहीं। मानसिक मंदता न तो बुरी आत्माओं के प्रभाव से होती है और न ही झाड़-फूँक से उसे खत्म किया जा सकता है। मानसिक मंदता एक मानसिक अवस्था है, कोई छुआछूत का रोग नहीं कि मानसिक मंद व्यक्ति को छूने, साथ खेलने या बैठने से किसी को हो जाये। मानसिक मंदता के बहुत सारे संभावित कारणों का पता लगाया जा चुका है और बच्चों में मानसिक मंदता का माँ-बाप के पिछले जन्म के कर्मों से कोई लेना-देना नहीं है।

1.7 सारांश

अभी तक आपने वर्तमान इकाई मानसिक मंदता की अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण एवं विशेषताओं में मानसिक मंदता का संक्षिप्त वैश्विक एवं भारतीय इतिहास पढ़ा। प्राचीन समय में प्रायः विकलांगता युक्त बालकों का जन्म से पूर्व ही मार दिया जाता था। फ्रांसीसी चिकित्सक इटार्ड (1799) एवं उनके शिष्य सेंगुइन के प्रयासों ने मानसिक मंदता युक्त बालकों की शिक्षा की नींव रखी। बाद में मानवाधिकारों की वैश्विक घोषणा, विकलांग बालकों के अधिकारों की घोषणा, सलमांका, कान्फ्रेंस (1994), यू.एन.सी.आर.वी.डी. (2008), ने विकलांग बालकों के शिक्षा की ओर पूरे विश्व को प्रेरित कर दिया। भारत में भी, 1995 का विकलांग जन कानून, राष्ट्रीय न्याय कानून 1999, भारतीय पुनर्वास परिषद कानून 1992, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, शिक्षा का अधिकार कानून 1992 आदि के तहत, विकलांग युक्त बालकों की शिक्षा से संबंधित प्रावधान बनाए गए।

इकाई: 2 बोद्धिक अक्षमता :परिभाषा एवं वर्गीकरण

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थायें AAMR, DSM, ICD-WHO

2.4 मानसिक मंदता की परिभाषा AAMR 1983, 1992, 2002 और उनका तुलनात्मक विश्लेषण

2.5 मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण और विशेषताएँ

2.5.1 मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण

2.5.2 शैक्षिक-वर्गीकरण

2.5.3 आवश्यक विशिष्ट सहायता के आधार पर वर्गीकरण

2.5.4 विशेषताएँ

2.6 सारांश

2.7 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप मानसिक मंदता की आधारभूत संकल्पनाओं से परिचित होंगे। मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थायें से परिचित होंगे। मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण और उनकी विशेषताओं का अध्ययन करने के साथ ही मानसिक मंदता की परिभाषा में आ रहे क्रमिक परिवर्तन, परिभाषा के पीछे की जटिलता, एवं मान्यताएं आदि के बारे में भी जानोगे।

2.2 उद्देश्य

इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. प्रचलित आधार पर मानसिक मंदता को परिभाषित कर सकेंगे।
2. मानसिक मंदता को परिभाषित करने में अग्रणी संस्थाओं के बारे में बता सकेंगे।
3. मानसिक मंदता की परिभाषा और उसके नैदानिक मानदण्डों की व्याख्या कर सकेंगे।

4. विभिन्न संस्थाओं द्वारा दी गयी मानसिक मंदता की परिभाषा का तुलनात्मक/ विश्लेषण कर सकेंगे।
5. मानसिक मंदता युक्त बालको के विभिन्न वर्गीकरण की व्याख्या कर सकेंगे।
6. मानसिक मंद बालकों के विभिन्न वर्गीकरण की तुलनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेंगे।
7. मानसिक मंद बालकों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को समझ सकेंगे।

2.3 मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थायें AAMR, DSM, ICD-WHO

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलिक्चुअल एवं डेवलपमेंटल डिसेबिलिटी, विश्व का सबसे पुराना और सबसे बड़ा व्यावसायिक संगठन है जो मानसिक मंद बालकों के लिये कार्य करने में अग्रणी माना जाता है। इसकी स्थापना 1876 ई में मानसिक मंदता के कल्याणार्थ की गयी थी। इसकी स्थापना 1876 में सेंगुइन ने की थी। सेंगुइन ने असोसिएशन ऑफ मेडिकल ऑफिसर्स ऑफ अमेरिकन इंस्टीच्यूसंस फॉर इडिओटिक एण्ड फीबल माइंडेड पर्सनल $\frac{1}{4}$ Association of Medical Officers of American Institution for Idiotic & Feeble Minded Persons-AMOAIIIFMP $\frac{1}{2}$ की स्थापना की। बाद में यह संस्था मानसिक मंदता में काम करने वाली विश्व की अग्रणी संस्था बन गई और अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिसिएंसी $\frac{1}{4}$ American Association of Mental Deficiency-AAMD $\frac{1}{2}$ अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन $\frac{1}{4}$ American Association of Mental Retardation-AAMR $\frac{1}{2}$ जैसे परिवर्तित नामों का सफर तय करते हुए सन् 2007 में जब एक मत से मानसिक मंदता का नाम बदलकर 'बौद्धिक अक्षमता' कर दिया गया और तदुसार अमेरिकन असोसिएशन ऑफ रिटार्डेशन का नाम बदल कर अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलिक्चुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज $\frac{1}{4}$ American Association of Intellectual & Developmental Disabilities-AAIDD $\frac{1}{2}$ कर दिया गया है। ए.ए.आई.डी.डी. ने मानसिक मंदता की परिभाषा और उसे नैदानिक मानदण्ड आदि के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है और मानसिक मंदता की संकल्पना को समयानुकूल, सकारात्मक करने का प्रयास करती रही है।

ए.ए.आई.डी.डी. मूलतः निम्नांकित सिद्धांतों पर आधारित कार्य करती है:

1. बौद्धिक एवं विकासात्मक अक्षमता युक्त बालकों का पूर्ण सामाजिक समावेश एवं भागीदारी।
2. समानता, व्यक्तिगत सम्मान एवं मानवधिकारों की वकालत।
3. व्यक्तिगत इच्छाओं को व्यक्त करने एवं आत्म निर्णय की क्षमता का प्रोत्साहन।
4. बौद्धिक अक्षमता युक्त व्यक्तियों के योगदान को प्राप्ताहित कर उनके प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
5. जीवन के सभी पक्षों में बौद्धिक विकलांग व्यक्तियों की भागीदारी को प्राप्ताहित करना।

डी.एस.एम. (DSM) डायनोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल

डी.एस.एम. (DSM) का पूरा नाम डायनोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिजांडर है। यह अमेरिकन साइकियाट्रिक असोसिएशन $\frac{1}{4}$ American Psychiatric Association $\frac{1}{2}$ के द्वारा प्रकाशित किया जाता है एवं मनोविकारों के वर्गीकरण एवं निदान के वैश्विक मानक प्रस्तुत करता है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका में सैनिकों के चयन, परीक्षण और उपचार में बड़ी संख्या में मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सकों ने भाग लिया। 1949 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ICD $\frac{1}{4}$ International Clarification of Disease $\frac{1}{2}$ का छठा भाग प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने पहली बार उसके एक भाग के रूप में मानसिक विकृतियों को शामिल किया। ICD के समानांतर अमेरिकन मनोचिकित्सक संगठन $\frac{1}{4}$ APA $\frac{1}{2}$ को विशेष रूप से अमेरिका में प्रयोग किए जाने हेतु, मानसिक विकारों के लक्षण एवं निदान के मानक निर्धारित करने का कार्य सौंपा गया और उसके फलस्वरूप डायनोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल का प्रथम अंक $\frac{1}{4}$ DSM-1 $\frac{1}{2}$ 1952 में प्रकाशित किया गया जिसमें 130 पृष्ठों में 106 मानसिक विकृतियों के लक्षण एवं निदान प्रस्तुत किया गया।

इस दौरान मनोचिकित्सक विलियम सी. मैनिनजर की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने 1943 में अमेरिकी सेना द्वारा प्रयोग किए जाने हेतु मानसिक विकारों का वर्गीकरण मेडिकल 203 के नाम से प्रस्तुत किया।

DSM-I इसी मेडिकल 203 का संशोधित रूप था बाद में समयानुसार आवधिक रूप में डी.एस.एम. को संशोधित किया जाता है। वर्तमान में डी.एस.एम. 5, डी.एस.एम. का अद्यतन संशोधित रूप है जो 18 मई 2013 को प्रकाशित किया गया है। डी.एस.एम. की शुरुआत से लेकर अब तक के उसके महत्वपूर्ण संशोधन निम्नांकित है।

क्र.सं.	DSN संशोधन वर्ष	संशोधित अंक/भाग
1	1952	DSM-I
2	1968	DSM-II
3	1980	DSM-III
4	1987	DSM-III R
5	1994	DSM-IV
6	2000	DSM-IV TR
7	2013	DSM V

डी.एस.एम. मनोविकारों के वर्गीकरण की समसामयिक एवं वृहत मानक प्रस्तुत करता है और वैश्विक स्तर पर स्वीकाग्र है।

व्याधियों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (**International Clarification of Disease**)
आई.सी.डी. (**ICD**)

आई.सी.डी. (**ICD**) का पूरा नाम है व्याधियों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (**International Clarification of Disease**) जो कि विभिन्न बिमारियों के निदान का एक मानक टूल है जिसका प्रमुख उद्देश्य है विभिन्न बीमारियों के अभिलक्षण, निदान एवं स्वास्थ्य प्रबंधन के मानक तय करना। 1994 से अब तक **ICD -10** प्रयोग किया जा रहा है और इसका अगला संशोधन **ICD-11** 2015 में प्रस्तावित है।

सन् 1893 में फ्रांसीसी चिकित्सक जैकस बर्टिलीन ने बटिलोन क्लासिफिकेशन ऑफ कॉलेज ऑफ डेथ (**Bartillon Clarification of Causes of Death**) अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान, शिकागो में प्रस्तुत किया जिसे कई राष्ट्रों द्वारा स्वीकार किया गया बाद में अमेरिकन जन

स्वास्थ्य संगठन ने प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर इसके संशोधन की अनुसंधान और तदनुसार एक समिति के द्वारा इसका संशोधन किया जाता रहा। इसके छोटे संशोधन से पहले तक इसमें कुछ बड़ा परिवर्तन नहीं आया। 1948 से, इसके 10 वर्षों के अंतराल पर संशोधन का कार्य WHO को सौंप दिया गया और इस प्रकार WHO के द्वारा पहली बार ICD-6 1949 में प्रकाशित किया गया। समय के साथ यह महसूस किया गया कि संशोधन हेतु 10 वर्ष का अंतराल कम है फलतः इस निर्धारित समयावधि को 'आवश्यक तानुसार' कर दिया गया।

ICIDH (International Clarification of Impairment Disability & Handicap)- विश्व स्वास्थ्य संगठन के विभिन्न वर्गीकरणों में से एक है जो ICD का एक भाग है। यह सर्वप्रथम डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा 1980 में प्रकाशित किया गया जिसका उद्देश्य था विभिन्न बीमारियों के परिणामों की व्याख्या एवं अक्षमता से संबंधित विभिन्न लक्षणों की मानकीकृत व्याख्या करना। इसे ICD का पूरक माना जा सकता है। बाद में 2001 में इसे संशोधित किया गया है और इसका नाम (ICF $\frac{1}{4}$ International Clarification of Functioning, Disability and Health $\frac{1}{2}$ रखा गया है जिसका मुख्य उद्देश्य है स्वास्थ्य के विभिन्न घटक और अक्षमता का एक मानकीकृत वर्गीकरण करना। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण परिवार का एक भाग है जो विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं और स्वास्थ्य संबंधी वर्गीकरण का कार्य करता है।

उपरोक्त तीनों संस्थाएं समानांतर स्वतंत्र रूप से, मानसिक विकारों, और मानसिक अक्षमताओं के मानक और कोड निर्धारित करती हैं हालांकि उपरोक्त तीनों संस्थाओं द्वारा दिए गए बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा का तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्प होगा परंतु यह हमारे अध्ययन क्षेत्र में नहीं है। वर्तमान संदर्भ में हम, मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की ए.ए.आई.डी.डी. नवीन परिभाषाओं तक हम अपने अध्ययन को सीमित रखेंगे।

अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित पदों पर विस्तार कीजिए:

1. AAIDD
2. ACIDH
3. DSM
4. ICFDH

5. AAMR
 6. AAIDD की स्थापना इटार्ड ने की थी। (सत्य/असत्य)
 7. WHO पहली बार ICD-6, 1960 में प्रकाशित किया गया। (सत्य/असत्य)
 8. ICD -11, 2020 में प्रस्तावित है। (सत्य/असत्य)
 9. DSM का प्रकाशन APA करती है। (सत्य/असत्य)
 10. DSM-5, 2010 में प्रकाशित किया गया। (सत्य/असत्य)
-

2.4 मानसिक मंदता की परिभाषा AAMR 1983, 1992, 2002 और उनका तुलनात्मक विश्लेषण

मानसिक मंदता के क्षेत्र में काम करने वाली अग्रणी संस्था अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एवं डेवलपमेंटल डिसेबिलिटी ए.ए.आई.डी.डी. ने 1908 से लेकर अब तक 11 बार मानसिक मंदता की परिभाषा, उसके नैदानिक मानदण्ड आदि को संशोधित किया पर हम यहाँ पर 1980 के बाद की मानसिक मंदता की परिभाषा का अध्ययन करेंगे।

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन (ए.ए.एम.आर.) की ओर से ग्रासमैन (1983) ने मानसिक मंदता की परिभाषा दी है जिसके अनुसार मानसिक मन्दता का तात्पर्य तात्त्विक रूप से औसत से कम ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप अनुकूली ब्रूवहार में संगामी असामान्यता आ जाती है या जो संगामी अपसामान्यता से जुड़ी होती है और जो विकासात्मक अवधि के दौरान अभिव्यक्त होती है।

“सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया” इस प्रयोजन के लिए विकसित और क्षेत्र/देष विशेष की परिस्थितियों के अनुकूल बनाए गए मानकीकृत सामान्य बौद्धिक परीक्षण किये जाने पर प्राप्त होने वाले परिणामों को सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया कहा जाता है।

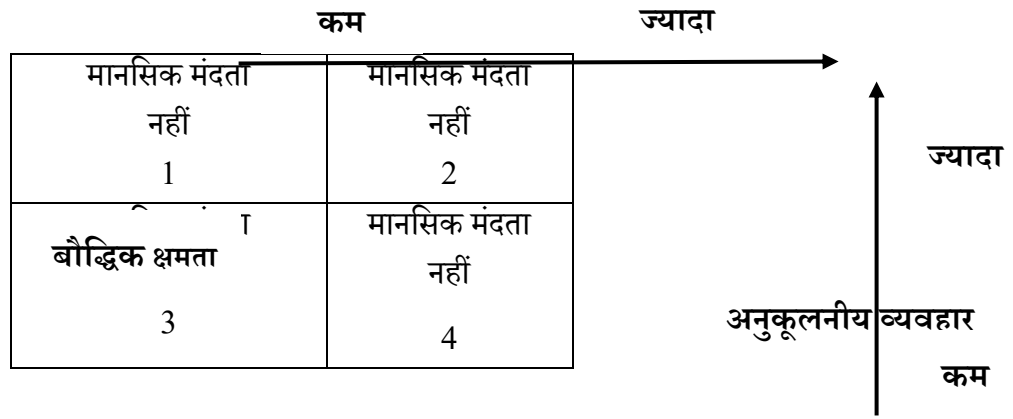
“स्पष्ट रूप से औसत से कम” से अभिप्राय है बुद्धि के व्यक्तिगत रूप से प्रशासित (दो मानक विचलन कम) मानकीकृत माप पर 70 या उससे कम बुद्धिलब्धि।

“अनुकूली (अडेडिटव) व्यवहार” वह स्तर है जिस पर कोई व्यक्ति विशेष आत्म-निर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के उन मानकों को पूरा करता है जिसकी उस आयु और सांस्कृतिक समूह के व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है।

ग्रॉसमैन की इस परिभाषा के अनुसार मानसिक मंदता के नैदानिक मानदण्ड निम्नांकित था:

- IQ 70 या उससे कम।
- अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी।
- 18 वर्ष की आयु तक इसका आरंभ।

मानसिक मंदता का नैदानिक मानदण्ड



अगर हम उरोक्त टेबल का विश्लेषण करें तो निम्नांकित चार परिस्थितियाँ सामने आती हैं:

परिस्थितियाँ		मानसिक मंदता
1	उच्च बौद्धिक क्षमता + सीमित अनुकूलनीय व्यवहार	नहीं
2	उच्च बौद्धिक क्षमता + उच्च अनुकूलनीय व्यवहार	नहीं
3	सीमित बौद्धिक क्षमता + उच्च अनुकूलनीय व्यवहार	नहीं
4	सीमित बौद्धिक क्षमता + सीमित अनुकूलनीय व्यवहार	हाँ

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा पर अगर गौर करें तो उपरोक्त में परिस्थिति (4) है, जो मानसिक मंदता को इंगित करती है बर्ते कि इसका आरंभ 18 वर्ष से पूर्व हुआ हो। इस परिस्थिति (4) में भी अगर, इसका आरंभ 18 वर्ष की आयु के बाद हुआ हो तो वह मानसिक रोग की श्रेणी में आयेगा।

ग्रॉसमैन द्वारा दी गयी यह परिभाषा काफी महत्वपूर्ण और समसामयिक है। हालांकि इस परिभाषा के बाद भी कई संशोधन हुए हैं परन्तु उन सभी में उपरोक्त वर्णित परिभाषा में वस्तुनिष्ठता, और सकारात्मकता लाने का प्रयास किया गया है पर नैदानिक मानदण्ड मूलतः समान रखे गये हैं।

1992 में ल्यूकेसॉन ने उक्त परिभाषा को संशोधित किया और उसमें स्पष्टता और वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास किया। AAMR की ओर से ल्यूकेसॉन 1992 के द्वारा मानसिक मंदता की संशोधित परिभाषा 1992 में दी गई जिसके अनुसार-

मानसिक मंदता का अर्थ व्यक्ति की वर्तमान क्रियाशीलता में महत्वपूर्ण कमी से है। जिसमें महत्वपूर्ण रूप से कम अधोऔसत बौद्धिक क्रियाशीलता के साथ निम्नलिखित क्षेत्रों में से दो या अधिक क्षेत्रों में संबद्ध कमी पाई जाती है

स्व-सहायता, दैनिक कार्य, सामाजिक कौशल, सामुदायिक कौशल, स्व-निर्देश स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, कार्यात्मक शिक्षा/ज्ञान, मनोसंरचात्मक एवं कार्य।

मानसिक मंदता 18 वर्ष से पूर्व प्रकट होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ल्यूकेसॉन ने 1992 में, ग्रॉसमैन (1983) द्वारा दी गई मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा को वस्तुनिष्ठ (objective) बनाने का प्रयास किया है। ल्यूकेसॉन के इस प्रयास को आगे बढ़ाते हुए श्लेलाक (shlallok) ने 2002 में, और वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास किया है।

AAMR (अमेरिकन असोसियेशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन) 2002, श्लेलाक एवं अन्य के अनुसार

मानसिक मंदता एक अक्षमता है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है और यह कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में परिलक्षित होती है। इस अक्षमता का आरंभ 18 वर्ष से पूर्व होता है।

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज American Association of Intellectual & Developmental Disabilities-AAIDD^{1/2} 2012 श्लेडॉक एवं अन्य के अनुसार

‘बौद्धिक अक्षमता’ एक अक्षमता है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है और यह कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में परिलक्षित होती है। इस अक्षमता का आरंभ 18 वर्ष से पूर्व होता है।

उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर आपको निम्नलिखित विशेषताएं प्राप्त होंगी।

- i. कमानसिक मंदता एक अक्षमता है।
- ii. इस अक्षमता में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में ‘महत्वपूर्ण कमी’ पायी जाती है।
- iii. व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में दिखायी देती हैं।
- iv. इस अक्षमता की शुरुआत 18 वर्ष से पूर्व होती है।

अब जरा परिभाषा के चारों उपभागों का थोड़ी गहराई से विश्लेषण करें।

क. मानसिक मंदता एक अक्षमता है। $\frac{1}{4}$ Disability $\frac{1}{2}$

सामान्य भाषा में ‘अक्षमता’ का तात्पर्य है किसी व्यक्ति के शारीरिक भाग/भागों में ऐसी विचलन जिससे उसकी दैनिक कार्य क्षमता सामान्य व्यक्ति के सापेक्ष कम हो जाती है। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति का दुर्घटना में एक पैर कट जाये तो उसके पैर की कार्यक्षमता एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम हो जाती है। ठीक इसी प्रकार मानसिक मंदता एक अक्षमता है क्योंकि इससे प्रभावित व्यक्ति का मस्तिष्क सामान्य की तुलना में कम काम करने की वजह से उसकी दैनिक कार्यक्षमता सीमित हो जाती है।

ख. इस अक्षमता में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में ‘महत्वपूर्ण कमी’ पायी जाती है।

मानसिक मंदता में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार दोनों में सामान्य अर्थों से महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है।

अनुकूलनीय व्यवहार से हमारा तात्पर्य उन दैनिक क्रियाओं से है जिसके द्वारा हम वातावरण को अपने अनुकूल बनाने के लिये करते हैं। उदाहरण के लिये हमें ठंड लगती है तो हम चादर आढ़ते हैं या गर्म कपड़े पहनते हैं।

ग. व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में दिखायी देती हैं।

अवधारणात्मक (Conceptual) कौशल

- भाषा (अभिव्यक्ति/ग्राह्य)
- पढ़ना, लिखना
- धन संबंधी संकल्पना
- स्व-निर्देश आदि

समाजिक (Social) कौशल के उदाहरण:

- जिम्मेदारी
- अंतवैयक्तिक संबंध
- आत्म सम्मान
- सरलता
- नियमों का पालन
- उत्पीड़न में बचाव आदि

प्रायोगिक कौशल के उदाहरण:

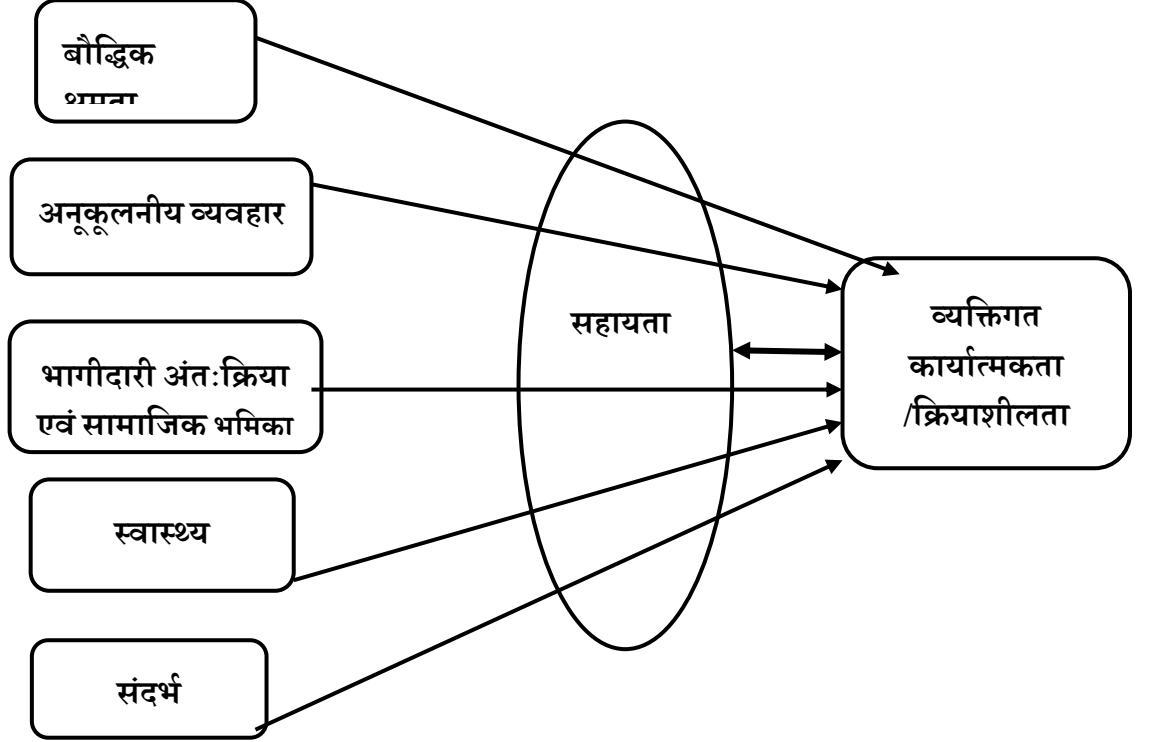
- दैनिक क्रियाएं/स्व सहायता कौशल यथा: नहाना, कपड़े पहनना, सजना आदि
- दैनिक नियमित कार्य: घरेलू काम, दवाई, दवाई लेना, फोन का प्रयोग, रूपए पैसे का हिसाब, आवागमन आदि
- स्वास्थ्य संबंधी क्रियाएं
- व्यावसायिक कौशल
- सुरक्षित वातावरण संबंधी कौशल
- सुरक्षित वातावरण संबंधी कौशल

घ. इस अक्षमता की शुरुआत 18 वर्ष से पूर्व होती है।

मानसिक मंदता की परिभाषा का एक महत्वपूर्ण पहलू है परिभाषा के पीछे ली गयी मान्यताएँ या पूर्वानुमान। ए.ए.एम.आर. द्वारा दी गयी मानसिक मंदता की परिभाषा पाँच मान्यताओं पर आधारित हैं:

- i. व्यक्ति की वर्तमान क्रियाशील में कमी पर विचार करते समय व्यक्ति के हम उम्र व्यक्तियों एवं उसकी संस्कृति का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है जब भी हम मानसिक मंदता का मूल्यांकन कर रहे हों, तब हमें संदर्भित व्यक्ति के हम उम्र और उसके सांस्कृतिक पहलुओं को सदैव ध्यान में रखना होगा। उदाहरण के लिये: एक गाँव का बच्चा प्रायः बड़ी उम्र तक भी हाथ से खाना खाता है चम्मच से नहीं। अब यदि हमने उसके वातावरण को ध्यान में रखे बिना, चूँकि वह चम्मच का प्रयोग करके खाना नहीं खाता, अतः हम उसे 'मानसिक मंदता ग्रस्त' घोषित करें, यह गलत है।
- ii. वैध आकलन में सांस्कृतिक, भाषिक, संप्रेषण, संवेदी, गामक एवं व्यवहारिक वैयक्तिक भिन्नताओं पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए।
- iii. एक व्यक्ति के अंदर कमियों के साथ-साथ अच्छाइयाँ भी मौजूद होती हैं।
- iv. कमियों की व्याख्या का उद्देश्य व्यक्ति के लिये आवश्यक सहायता की पहचान करना होना चाहिए।
- v. अर्थात् यदि हम किसी व्यक्ति की 'मानसिक मंदता' का आकलन कर रहे हैं तो हमारा उद्देश्य उसके नमारात्मक पहलुओं को उजागर करना नहीं, बल्कि उन विशेष आवश्यकताओं और उपयुक्त सहायता की तलाश होना चाहिए जो उस व्यक्ति की सामान्य जीवन जीने में मदद कर सकें।
- vi. एक निश्चित समय तक उपयुक्त व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराये जाने पर मानसिक मंदता युक्त बालकों/व्यक्तियों को जीवन स्तर में सुधार होगा।
- vii. इस प्रकार हम देखते हैं कि 2002 की मानसिक मंदता की परिभाषा मानसिक मंदता का एक बहुआयामी मॉडल है जिसमें किसी व्यक्ति में मानसिक मंदता की उपस्थिति पर विचार करते हुए हमें पाँच पक्षों को ध्यान में रखना चाहिए।
 - i. बौद्धिक क्षमता
 - ii. अनुकूलनीय व्यवहार जिसमें अवधारिक, सामाजिक एवं प्रायोगिक कौशल शामिल हैं।
 - iii. व्यक्ति की समाज में भागीदारी, सामाजिक अंतर्क्रिया, और उसकी सामाजिक भूमिकाएँ।
 - iv. व्यक्ति का स्वास्थ्य (शारीरिक और मानसिक दोनों)।
 - v. परिस्थितियाँ (संदर्भ एवं संस्कृति)।

इसे निम्नांकित आरेख के द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।



AAMR द्वारा प्रकाशित 10वें मैनुअल, 2002 से साभार

अभी आपने महसूस किया होगा कि 'मानसिक मंदता' की परिभाषा जितनी सामान्य दिखती है, उससे कहीं ज्यादा जटिल है। शुरुआती दौर में मानसिक मंदता को परिभाषित करने का प्रयास अपनी नकारात्मकता के कारण मानसिक मंद व्यक्तियों को, उनकी कमियाँ बताकर समाज से काटता है, परन्तु धीरे-धीरे मानसिक मंदता की परिभाषा सकारात्मकता की ओर बढ़ा है।

2.5 मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण और विशेषताएँ

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता एवं 'सापेक्ष' एक जटिल संकल्पना है जो 'बौद्धिक क्षमता' 'अनुकूलनीय व्यवहार' और 'विकासात्मक अवधि' (Developmental Period) की अवधारणा पर आधारित है। चूंकि समय के साथ उपरोक्त तीनों की परिभाषा और मान्यताएँ बदलती रही हैं, अतः

तदनुसार मानसिक मंदता बौद्धिक अक्षमता की संकल्पना में भी परिवर्तन होते रहे हैं जैसा कि आपने पिछली इकाई 19 में देखा है। मानसिक मंदता, बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा में शामिल संकल्पनाओं के परिवर्तनशील प्रवृत्तियों की वजह से, इसका वर्गीकरण अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसके अलावा किसी बालक पर मानसिक मंदता, विकलांगता की किसी श्रेणी का 'लेवल' लगाने से उसके संपूर्ण जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इन वजहों से, मानसिक मंदता, बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण भी उसकी परिभाषा के साथ-साथ परिवर्तित होता रहा है।

जैसा कि ल्यूकेसॉन एवं टीव ने चिन्हित किया है:

वर्गीकरण एक जटिल विषयवस्तु है जिसमें वैज्ञानिक, वित्तीय एवं शैक्षणिक हितों के अलावा, भावनात्मक, राजनैतिक एवं नैतिक सरोकारों भी सम्मिलित हैं। (ल्यूकेसॉन एवं रीव, 2001)

किसी भी संकल्पना का विभिन्न मानदण्डों के आधार पर वर्गीकरण करने का उद्देश्य होता है उसका विश्लेषण। मानसिक मंदता का वर्गीकरण भी अलग-अलग मानदण्डों एवं उद्देश्यों के आधार पर किया गया है परन्तु यहाँ हम तीन वर्गीकरणों के बारे में विस्तृत चर्चा करेंगे:

1. मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण
2. शैक्षिक वर्गीकरण
3. विशिष्ट सहायता पर आधारित वर्गीकरण

2.5.1 मानसिक मंदता का मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण: (Psychological Classification of MR/ID)

यह मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का सबसे प्राचीन वर्गीकरण है जिसका मुख्य आधार है बौद्धिक परीक्षण पर प्राप्त अंक 'बुद्धि-लब्धि'। वर्तमान समय में, दो प्रमुख कारणों से इस वर्गीकरण का प्रचलन काफी कम होता जा रहा है। पहला कारण है: मानसिक मंदता स्पष्ट करने में बौद्धिक क्षमता के साथ साथ अनुकूलनीय व्यवहार पर बढ़ता जोर, और दूसरा कारण है वर्गीकरण के पीछे की नकारात्मकता जो यह बताता है कि बच्चे की बुद्धि बस इतनी ही है, जिसका प्रयोग कर के वह कुछ सीमित कार्यों में सक्षम है।

मनोवैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार, बुद्धिलब्धि के अनुसार, मानसिक मंदता के निम्नांकित चार वर्ग हैं:

1. सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
2. मध्यम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
3. गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
4. अतिगंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

क्र. सं.	शब्दावली	बुद्धिलब्धि
1.	सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता	50-70
2.	मध्यम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता	35.49
3.	गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता	20-35
4.	अतिगंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता	20 से नीचे

यहाँ ध्यातव्य है कि:

- चौथी श्रेणी में 20 से नीचे आई. क्यू. लिया गया है, 0-20 नहीं। इसका कारण है कि प्रायः यह माना जाता है कि बच्चे जन्मजात बुद्धि होती है अतः बुद्धि कम हो सकती है, शून्य नहीं।
- मानसिक मंदता सुनिश्चित करने में सिर्फ बुद्धिलब्धि ही नहीं बल्कि बालक के अनुकूलनीय व्यवहार को भी बराबर महत्व दिया जाना चाहिए।

2.5.2 मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का शैक्षणिक वर्गीकरण (Educational Classification of ID)

सर्वप्रथम आपने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का मनोवैज्ञानिक, वर्गीकरण देखा जिसमें मानसिक मंदता बौद्धिक अक्षमता को चार वर्गों सौम्य, मध्यम, गम्भीर और अतिगम्भीर में बांटा गया है। आगे के पृष्ठों में हम प्रचलित शैक्षिक वर्गीकरण का अध्ययन करेंगे जिसका मानदंड शैक्षिक उपलब्धियों की पूर्वापेक्षा है। हालांकि मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के प्रति समाज के बदलते दृष्टिकोण के कारण शैक्षणिक वर्गीकरण का प्रचलन भी धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

शैक्षिक पूर्वापेक्षा के आधार पर- विद्वानों ने मानसिक मंदता को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जिनका विवरण निम्नांकित है:

क्र. सं.	प्रयुक्त शब्दावली	अनुमानित IQ	शैक्षणिक अपेक्षाएँ
----------	-------------------	-------------	--------------------

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

1.	शिक्षणीय मानसिकता मंदता (Educable Mental Retardation)	50 से 75-80 तक	1. विद्यालय में छठी कक्षा तक पढ़ाई करने में सक्षम 2. सामाजिक समायोजन में सक्षम 3. स्वतंत्र व्यवसाय में सक्षम कुछ क्षेत्रों में आंशिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है। 4. अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में कठिनाई
2.	प्रशिक्षण मानसिक मंदता (Trainable Mental Retardation).	20 से 50-55 तक	स्वसहायता कौशल में प्रशिक्षणोपरांत सक्षम अल्प शैक्षणिक उपलब्धि प्रायः तीसरी चौथी कक्षा तक, सामाजिक समायोजन घर एवं पड़ोसियों तक सीमित, व्यावसायिक दृष्टिकोण से आश्रय कार्यशाला (Sheltered Workshop) तक उपयुक्त
3.	संरक्षणीय मानसिक मंदता (Custodial Mental Retardation)	आई.क्यू 20 से कम	अत्यधिक देखरेख की आवश्यकता सामान्यतः अपनी दैनिक क्रियाकलापों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते।

कुछ लेखकों ने, मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण की तरह ही धीमी गति से सीखने वाले बालक (Slow learners) IQ 70-75-90 तक को भी शैक्षणिक वर्गीकरण में शामिल किया है परंतु वर्तमान लेखक के दृष्टिकोण से यह उपयुक्त प्रतीत नहीं होता क्योंकि मानसिक मंदता की प्रथम शर्त है: आई. क्यू 70 से कम। फिर इससे अधिक आई. क्यू वाले बालकों को मानसिक मंदता की श्रेणी में कैसे रखा जा सकता है ?

2.5.3 विशिष्ट आवश्यक सहायता के आधार पर मानसिक मंदता का वर्गीकरण (Classification of Mental Retardation/ Intellectual Disability based on needed support)

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

यह मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का नवतीनतम वर्गीकरण है। जैसा कि आपने अभी तक पढ़ा, मानसिक मंदता/बौद्धिक असमता एक सापेक्ष संकल्पना है, जो मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई 'बुद्धि लब्धि' की मान्यता पर आधारित है। 'बुद्धिलब्धि' एक असपष्ट पद है, जिसकी अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा उपलब्ध नहीं है। इन सबके अतिरिक्त 'बौद्धिक क्षमता' और 'अनुकूलनीय व्यवहारों' को पूर्णतया अलग करना कठिन है, कई परिस्थितियों में दोनों समान प्रतीत होते हैं।

इस संदर्भ में, अधिकांश मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत वेशलर (Weschler) की बौद्धिक क्षमता की परिभाषा के अनुसार 'बौद्धिक क्षमता किसी व्यक्ति की उद्देश्य पूर्ण कार्य करने की, तर्कपूर्ण चिंतन की, एवं अपने वातावरण से प्रभावी समायोजन की संपूर्ण/सार्वभौम क्षमता है। 'यदि बौद्धिक क्षमता की इस परिभाषा से तुलना करें तो, व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ समायोजन अर्थात् उसका अनुकूलनीय व्यवहार उसकी बौद्धिक क्षमता का अभिन्न अंग है। उपरोक्त कारणों एवं मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त व्यक्तियों के प्रति परिवर्तित सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण के कारण, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक वर्गीकरण से इतर, वर्गीकरण इस क्षेत्र की अग्रणी संस्था ए.ए.आई.डी.डी. द्वारा सुझाया गया है जिसके अनुसार, मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालक निम्नांकित श्रेणियों में रखे जा सकते हैं-

क्रम सं.	शब्दावली	आवश्यक सहायता
1.	सविराम (असतत) सहायता (Intermittent)	अल्प अवधि की सहायता, जब आवश्यक हो अर्थात् हमेशा नहीं, धीरे धीरे सहायता में कमी, केवल कुछ क्षेत्रों में कभी कभी सहायता आवश्यक, तत्पश्चात्, स्वतंत्र जीवन के योग्य।
2.	सीमित सहायता (Limited)	स्विराम श्रेणी से कुछ अधिक समय तक कुछ अधिक क्षेत्रों में, अधिक गहन, सहायता, परन्तु सतत सहायता नहीं, अल्प सहायता के साथ जीवनयापन करने में सक्षम।
3.	विस्तृत सहायता (Extensive)	अधिक गहन सहायता, जो कुछ क्षेत्रों में सतत (Continuous) भी हो सकती है; आवश्यक सहायता की समय सीमा, तीव्रता और क्षेत्र जयादा गहन, सभी में नहीं परन्तु कुछ क्षेत्रों में आजीवन सहायता आवश्यक।

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

4.	अति विस्तृत/व्यापक सहायता (Pervasive)	अधिकांश क्षेत्रों में जीवनपर्यन्त सत्त सहायता आवश्यक सहायता की गहनता (Intensity) अत्यधिका।
----	---------------------------------------	--

*मानसिक मंदता: परिभाषा, वर्गीकरण और सहयोग प्रणाली, 2002 10 वाँ मैनुअल, AAMR से साभार

मानसिक मंदता के विभिन्न वर्गीकरणों की समतुल्यता

आपने तीन प्रमुख मानदण्डों: आई. क्यू., शैक्षणिक पूर्वापेक्षा और आवश्यक सहयोग के आधार पर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण देखा। आपके मन में ये प्रश्न उठ रहे होंगे क्या ये सभी अलग-अलग हैं? उत्तर है- नहीं। तीनों वर्गीकरण समतुल्य है सिर्फ अंतर है लिए गए मानदण्डों का, जो मानसिक मंदता की पहचान के उद्देश्य पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण (अपने नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण) प्रचलन से बाहर हो रहे हैं और 'आवश्यक सहायता' पर आधारित वर्गीकरण पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। आइये हम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के तीनों महत्वपूर्ण वर्गीकरणों की समतुल्यता पर विचार करें।

क्र. सं.	आई. क्यू.	आवश्यक सहायता के आधार पर वर्गीकरण	मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण	शैक्षणिक वर्गीकरण
1.	50-70	सविराम (असतत) (Intermittent)	सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Mild)	शिक्षणीय मानसिक मंदता (EMR)
2.	35-49	सीमित सहायता (Limited)	मध्यम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Moderate)	प्रशिक्षणीय मानसिक मंदता (TMR)
3.	20-34	विस्तृत सहायता (Extensive)	गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Severe)	

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

4.	20 से कम	अति विस्तृत/व्यापक सहायता (Pervasive)	अतिगंभीर मानसिक मंदता/अक्षमता (Profound)	संरक्षणीय मानसिक मंदता
----	----------	---------------------------------------	--	------------------------

2.5.4 मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की विशेषताएं

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का तात्पर्य आयु के सापेक्ष बौद्धिक क्षमता एवं अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी से है जो बालक में जीवन पर्यंत पाया जाता है। हालांकि उपयुक्त प्रशिक्षण के द्वारा मानसिक मंदता युक्त बालकों के अनुकूलनीय व्यवहार को उन्नत किया जा सकता है परंतु अधिकांश बालक आजीवन इससे प्रभावित रहते हैं। सौम्य (Mild) मानसिक मंदता वाले अधिकांश बालकों की प्रायः तब तक वह पहचान नहीं हो पाती जब तक के स्कूल जाने नहीं लगते। सर्वाधिक मानसिक मंदता युक्त बालक (लगभग 85%) सौम्य मानसिक मंदता से ग्रसित पाए जाते हैं। इन्हें प्रायः संप्रेषण कौशल, स्व-सहायता कौशल अथवा छठी-सातवी कक्षा तक के शैक्षणिक व्यवहार में ज्यादा समस्या नहीं आती। मध्य श्रेणी (Moderate) की मानसिक मंदता वाले बालक प्रायः विकासात्मक मील के पत्थर (Developments Mile Stores) को देर से प्राप्त कर पाते हैं साथ ही उनमें प्री-स्कूल के समय में भी उम्र के उपयुक्त व्यवहारों का देर से विकास होता है। ये जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं इनकी आयु और उपयुक्त व्यवहारों के मध्य अंतर बढ़ता जाता है और कई बार स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याएं भी दृष्टिगोचर होती हैं। गंभीर और अति गंभीर मानसिक मंदता युक्त बालकों की पहचान प्रायः जन्म से ही या उसके कुछ दिनों बाद हो जाया करती है। इनमें से अधिकांश बालकों में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) की गंभीर विकृति पाई जाती है। हालांकि बुद्धि लब्धि के आधार पर गंभीर एवं अति गंभीर बालकों की पहचान की जा सकती है परंतु विभिन्न कार्यात्मक (Functional) कौशलों की कमी भी स्पष्ट होती है।

सामान्यतः मानसिक मंदता युक्त बालक निम्नलिखित विशेषताएं प्रदर्शित करते हैं:

1. शारीरिक विशेषताएं

- अधो-सामान्य शारीरिक विकासा
- शारीरिक विकृतियां।
- स्थूल गामक (Gross Motor) और सूक्ष्म गामक कौशल (Fine Motor) आयु के अनुपयुक्त।
- आँखों और हाथों में समन्वय का अभाव।

2. मानसिक विशेषताएं

- i. अधो औसत बुद्धि लब्धि (70 से कम)।
- ii. किसी कार्य में रुचि का अभाव।
- iii. कभी-कभी आक्रामकता एवं अकेले रहना।
- iv. अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में कठिनाई।
- v. सोचने की सीमित क्षमता।
- vi. कमजोर स्मृति
- vii. कमजोर ध्यान केंद्रित क्षमता
- viii. कमजोर आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान।
- ix. सीमित सामाजिक समायोजन क्षमता।
- x. सीखे गए कौशलों के सामान्यीकरण में कठिनाई।
- xi. रूपएँ पैसे के लेन-देन में समस्या।
- xii. भाषा (अभिव्यक्ति एवं ग्राह्य) संबंधी समस्या।

3. मनसिक मंदता ग्रस्त बालकों की सामाजिक विशेषताएं:

- i. सामाजिक समायोजन क्षमता अनुपयुक्त
- ii. सहपाठियों एवं शिक्षकों से अंतर्संबंध बनाने में कठिनाई
- iii. कभी-कभी दूसरों एवं स्वयं को नुकसान पहुँचाने वाले व्यवहार
- iv. सामाजिक अवसरों पर उपयुक्त व्यवहार का अभाव
- v. शोषण से बचाव संबंधी कौशलों का अभाव
- vi. अपनी इच्छाएं अभिव्यक्त अभिव्यक्त करने में उपयुक्त कौशलों का अभाव

4. भावात्मक विशेषताएं

- i. भावात्मक असंतुलन एवं अस्थिरता।
- ii. पूर्व या देर से प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति।
- iii. भावनात्मक संबंधों को समझने में कठिनाई।
- iv. कई बार मानसिक मंदता से जुड़ी अन्य मानसिक एवं शारीरिक बीमारियां यथा फिट्स, अवसाद आदि।

2.6 सारांश

अभी तक आपने वर्तमान इकाई मानसिक मंदता की परिभाषा, वर्गीकरण एवं विशेषताओं को पढ़ा। मानसिक मंदता एवं बौद्धिक अक्षमता का तात्पर्य प्रायः सीमित (70 से कम) बुद्धि लब्धि, एवं सीमित

अनुकूलनीय व्यवहार से है जो दैनिक क्रिया-कलापों में प्रदर्शित होती है। इसका प्रादुर्भाव प्रायः 18 वर्ष की आयु से पूर्व होता है आपने यह भी देखा कि मानसिक मंदता, मानसिक, रूग्णता से कई मानदंडों यथा बुद्धि लब्धि, दवाइयों की प्रभाविता, सामान्य होने की संभावना, वर्गीकरण आदि में पूर्णतया भिन्न है। मुख्यतः मानसिक मंदता एम 'अवस्था' है जिस पर न तो दवाइयाँ प्रभावी है, और न ठीक किया जा सकता है और यह अक्सर 18 वर्ष से पूर्व प्रकट होता है जबकि मनोयोग बीमारी का प्रकार है जिसका रोगी दवाइयों एवं चिकित्सा से पूरी तरह ठीक हो सकता है साथ ही मनोरोग किसी को भी किसी आयु में हो सकता है। आपने मानसिक मंदता के शैक्षिक, आवश्यक सहायता एवं बुद्धि लब्धि पर आधारित वर्गीकरण भी देखे और उनकी समतुल्यता देखी।

आपने पढ़ा कि मनोवैज्ञानिक मानसिक मंदता को IQ के आधार पर चार वर्गों में: सौम्य, मध्यम, गंभीर एवं अतिगंभीर में बाँटते हैं वही शिक्षा विद् शैक्षिक पूर्वापेक्षा के आधार तीन भागों-षिक्षणीय, प्रषिक्षणीय एवं संरक्षणीय भागों में बाँटते हैं। आधुनिक समय में इसे, आवश्यक सहायता के आधार पर, असतत्, सीमित, विस्तृत एवं अतिविस्तृत सहायता के वर्गों में विभाजित किया है।

2.7 निबंधात्मक प्रश्न

1. मानसिक मंदता परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थाओं AAIDD, DSM और WHO-ICD का परिचय प्रस्तुत करें।
2. मानसिक मंदता की 1983 और 1992 की AAMR की परिभाषा का तुलनात्मक विवरण दें।
3. मानसिक मंदता की 2012 और 2002 की AAMR की परिभाषा की व्याख्या प्रस्तुत करें, साथ ही इसके पीछे ली गई मान्यताओं का विवरण दें।
4. मानसिक मंदता के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण का विवरण दें एवं दोनों की तुलना करें।
5. मानसिक मंदता के विभिन्न वर्गीकरणों की चर्चा करें और उनकी समतुल्यता पर प्रकाश डालें।

इकाई 3 मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की स्क्रीनिंग व पहचान

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की स्क्रीनिंग एवं पहचान
- 3.4 परीक्षण - उद्देश्य , प्रकार एवं परीक्षण टूल्स
 - 3.4.1 परीक्षण उसके उद्देश्य उसके प्रकार
 - 3.4.2 परीक्षण टूल्स
 - 3.4.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में परीक्षण टूल्स
- 3.5 सारांश
- 3.6 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाईयों में आपने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा , उसका वर्गीकरण, एवं उसकी विशेषताओं के बारे में पढ़ा। इस इकाई में हम मानसिक मंदता की स्क्रीनिंग एवं पहचान के बारे में पढ़ेंगे। स्क्रीनिंग और पहचान के अर्थों के साथ ही इस इकाई में हम राष्ट्रीय विकास के विभिन्न मील के पत्थर के अतिरिक्त सिकंदराबाद मानसिक विकलांग संस्थान ,द्वारा मानसिक मंदता की स्क्रीनिंग एवं पहचान के लिए विकसित अनुसूचियों का अध्ययन करेंगे।

साथ ही हम मानसिक मंदता के आकलन/परीक्षण (Assessment) के बारे में जानेंगे जिसमें सर्वप्रथम , आकलन/परीक्षण की परिभाषा , उनके लिये प्रयुक्त टूल एवं उसके उद्देश्यों का अध्ययन करेंगे , तत्पश्चात् हम मानसिक मंदता के आकलन/परीक्षण हेतु विभिन्न टूलो के बारे में जानेंगे साथ ही भारत में बहुतापत से प्रयोग दिये जा रहे तीन टूल्स: मदास विकासात्मक कार्यक्रम प्रणाली (MDPS), फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग (FACP) , और विहैवियर असेसमेंट स्केल फॉर इंडियन चिल्ड्रेल विथ मंटल रिटार्डेशन (BASIC MR) विस्तृत अध्ययन करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप

1. स्क्रीनिंग एवं पहचान की परिभाषा और उनकी आवश्यकता के बारे में बता सकेंगे।
2. स्क्रीनिंग एवं पहचान (मानसिक मंदता के विशेष संदर्भ में) के विभिन्न टूलों के बारे में बता सकेंगे।
3. विकास के मील के पत्थरों को बता पाने में सक्षम होंगे।
4. मानसिक मंदता के परीक्षण हेतु विभिन्न टूलों के बारे में बता सकेंगे।
5. भारत में प्रयोग किये जा रहे तीन टूलों MDPS, FACP और BASIC (MR) की मुख्य विशेषतायें और कमियाँ बता पाने में सक्षम होंगे।

3.3 मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की स्क्रीनिंग एवं पहचान

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता अनेकों कारणों से हो सकती है। गर्भाधान से लेकर विकासात्मक अवस्था (18 वर्ष) तक असंख्य ऐसे कारक हैं जो मानसिक मंदता के लिए उत्तरदायी हैं। स्क्रीनिंग का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत किसी व्यक्ति/बालक में मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की संभावना दिखती है और तब उसके निदान हेतु आगे के परीक्षण किए जाते हैं यँ तो मानसिक मंदता की पहचान हेतु बहुत सारे चिकित्सकीय उपकरण यथा अल्ट्रासोनोग्राफी, अमीनोसिनटेसिस, फीटोस्कोपी, इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम (ECG), इको-कार्डियोग्राम, मैग्नेटिक रेनोनेंस इमेजिंग (MRI) आदि उपलब्ध हैं, परंतु वर्तमान इकाई में हम सिर्फ उन स्क्रीनिंग टूल का अध्ययन करेंगे जो बच्चे के व्यवहारों का अध्ययन करके मानसिक मंदता की संभावनाओं और उनके निदान में अत्यंत सहयोगी हैं। पहचान (Identification) स्क्रीनिंग का परिणाम है। भारत में मानसिक मंदता की पहचान के लिए राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH) सिकंदराबाद ने कई जाँच सूचियाँ बनाई हैं जिसके आधार पर मानसिक मंदता का आगे का परीक्षण, उसकी गंभीरता निर्धारित करने के लिए किया जा सकता है। जन्म के बाद से, पूरी विकासात्मक अवधि के दौरान, एक बालक एक निश्चित समय पर कुछ क्रियाएं आरंभ कर देता है, जिन्हें विकास के मील के पत्थर कहते हैं। मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता निर्धारण के लिए आइए सर्वप्रथम हम देखते हैं कि एक बच्चा विभिन्न मील के पत्थर किस उम्र विशेष में सीख जाता है।

विकास के मील के पत्थर (Developmental Milestones)

विकास के सामान्य मील पत्थर

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

क्र.सं.	अवस्था	आयु
1.	किसी को देखकर मुस्कराता है।	4 माह
2.	सिर सीधा रखता है।	4 माह
3.	मुँह में वस्तुएँ डालता है।	4 माह
4.	पेट के बल करवट लेकर आ जाता है।	6 माह
5.	चीजें पकड़ने के लिए पूरी हथेली का इस्तेमाल करता है।	7 माह
6.	अन्ना, अम्मा, दादा बोलता है।	7 माह
7.	सहारे के बिना बैठता है।	8 माह
8.	नाम बोलने पर समझता है।	10 माह
9.	घुटनों के बल खिसकता है।	10 माह
10.	किसी वस्तु को पकड़कर खड़ा होता है।	10 माह
11.	अँगूठे और तर्जनी से वस्तु पकड़ता है।	10 माह
12.	सहारे के बिना खड़ा होता है।	10 माह
13.	अम्मा, अक्का, अत्ता को पहचान कर उन्हें बुलाता है।	15 माह
14.	सहारे के बिना चलता है।	15 माह
15.	अपना नाम बोलता है।	18 माह
16.	ग्लास से स्वयं पीता है।	21 माह
17.	नाम लेने पर शरीर के अंगों के बारे में बताता है।	24 माह
18.	शौचादि की आवश्यकताओं को बताता है।	24 माह
19.	छोट-छोटे वाक्य बोलता है।	30 माह
20.	कपड़ों के बटन खोल लेता है।	36 माह
21.	सीधे सादे प्रश्नों के अर्थपूर्ण मौखिक उत्तर देता है।	36 माह
22.	छोटे और बड़े में अन्तर करता है।	36 माह
23.	लड़के या लड़की को पहचानता है।	36 माह

24.	कपड़ों के बटन लगा लेता है।	40 माह
25.	बालों में कंघी कर लेता है।	48 माह

स्क्रीनिंग एवं पहचान टूल्स

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता निर्धारित करने के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण विकासात्मक अनुसूची है। अधोलिखित जांच सूची राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सिकंदराबाद द्वारा विकसित किया गया है जिसका उपयोग मानसिक मंदता के वर्तमान कार्यात्मक स्तर का निर्धारण किया जा सकता है। यह 0 से 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों के निर्धारण के लिए उपयोगी है।

निर्धारण जांच सूची

आयु वर्ग 0-6 माह

1. क्या बच्चा दूसरों को देखकर मुस्काराता है? (हाँ/नहीं)
2. क्या बच्चा अपना सिर सीधे खड़ा रहता है जब पेट के बल लिटाया जा है। (हाँ/नहीं)
3. क्या बच्चा ता-ता-ता, न, न, न जैसी ध्वनियां निकालता है? (हाँ/नहीं)
4. क्या बच्चा पेट के बल लुढ़क सकता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 7-12 माह

5. क्या नाम पुकारने पर बच्चा अनुक्रिया व्यक्त करता है? (हाँ/नहीं)
6. क्या बच्चा बिना सहायता के बैठ सकता है? (हाँ/नहीं)
7. क्या बच्चा पेट के बल रेंगता है? (हाँ/नहीं)
8. क्या बच्चा किसी वस्तु को पकड़ कर खड़ा हो सकता है? (हाँ/नहीं)
9. क्या बच्चा अपने अंगूठे और तर्जनी से किसी वस्तु को उठा सकता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 1-2 वर्ष

10. क्या बच्चा बिना सहायता के खड़ा हो सकता है? (हाँ/नहीं)
11. क्या बच्चा अम्मा, अत्ता, टा-टा बोलता है? (हाँ/नहीं)
12. क्या बच्चा बिना किसी सहायता के चल सकता है? (हाँ/नहीं)
13. क्या बच्चा स्वयं ही किसी गिलास या कप में से पेय पदार्थ पी सकता है? (हाँ/नहीं)

14. क्या बच्चा, जब कहा जाए तब, अपने शरीर के अंग दिखाता है? (हाँ/नहीं)
15. क्या वह याद दिलाए जाने पर अन्य व्यक्तियों का अभिवादन करता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 2-3 वर्ष

16. क्या बच्चा अपने दोनों पैरों से एक साथ कूद सकता है? (हाँ/नहीं)
17. क्या बच्चा सरल प्रश्नों का मौखिक उत्तर दे सकता है? (हाँ/नहीं)
18. क्या बच्चा पेंसिल सही ढंग से पकड़ सकता है? (हाँ/नहीं)
19. क्या बच्चा अपनी शौचादि संबंधी आवश्यकताओं को बता सकता है? (हाँ/नहीं)
20. क्या बच्चा अपना नाम बोल सकता है? (हाँ/नहीं)
21. क्या बच्चा 2-3 शब्दों के सरल वाक्य बोल सकता है? (हाँ/नहीं)
22. क्या बच्चा रंगों की पहचान कर सकता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 3-4 वर्ष

23. क्या बच्चा अपने दांतों पर ब्रश कर सकता है? (हाँ/नहीं)
24. क्या बच्चा अपने पहने हुए कपड़े उतार सकता है? (हाँ/नहीं)
25. क्या बच्चा वस्तुओं के उपयोग के आधार पर वस्तु को इंगित कर सकता है? (हाँ/नहीं)
26. क्या बच्चा स्वयं खाना खा सकता है? (हाँ/नहीं)
27. क्या बच्चा छोटी आकार की वस्तुओं में से बड़ी वस्तुओं की पहचान कर सकता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 4-5 वर्ष

28. क्या बच्चा गोल, सीधी या तिरछी लकीरें नकल करके खींच सकता है? (हाँ/नहीं)
29. क्या बच्चा अपने कपड़ों के बटन बंद कर सकता है? (हाँ/नहीं)
30. क्या बच्चा बिना किसी सहायता के अपने बालों में कंघी कर सकता है? (हाँ/नहीं)
31. क्या बच्चा बिना किसी सहायता के अपने चेहरा धो सकता है? (हाँ/नहीं)
32. क्या बच्चा नियतकालिक कार्य कर सकता है? (हाँ/नहीं)
33. क्या बच्चा 10 तक गिनती बोल सकता है? (हाँ/नहीं)
34. क्या बच्चा वस्तु को दिखाने पर उसका रंग बता सकता है? (हाँ/नहीं)

आयु वर्ग 5-6 वर्ष

- | | |
|---|------------|
| 35. क्या बच्चा दो असंबंधित अनुदेशों को समझ सकता है? | (हाँ/नहीं) |
| 36. क्या बच्चा सप्ताह के दिन के नाम अनुक्रम से बता सकता है? | (हाँ/नहीं) |
| 37. क्या बच्चा सरल शब्दों को समझ सकता है? | (हाँ/नहीं) |
| 38. क्या बच्चा 10 तक सही गिनती गिन सकता है? | (हाँ/नहीं) |
| 39. क्या बच्चा एक-एक पैर रखकर सीढ़ी चढ़ सकता है? | (हाँ/नहीं) |

यदि किसी बच्चो में 1-11 तक में दी गई मदों में से किसी एक मद का विलम्ब से होना पाया जाता है और यदि बच्चे को दौरे पड़ते हैं या शारीरिक असमर्थता है तो मानसिक रूप से मंद होने का संदेह हो सकता है।

जांच अनुसूची सं. 1 (3 वर्ष से कम)

क्रम सं.	मद	सामान्य आयु वर्ग	अवस्था में विलम्ब यदि निम्न माह तक अपेक्षित कार्य न कर सके
1	नाम/आवाज लेकर बुलाए जाने पर प्रतिक्रिया दिखाता है।	1-3 माह	चौथे माह
2	किसी को देखकर मुस्कराता है।	1-4 माह	छठे माह
3	धीरे-धीरे सिर को संभालता है।	2-6 माह	छठे माह
4	सहारे के बिना बैठता है।	5-10 माह	बारहवें माह
5	सहारे के बिना खड़ा होता है।	9-18 माह	अठारहवें
6	ठीक से चलता है।	10-20 माह	बीसवें माह
7	2-3 शब्दों के वाक्य बोलता है।	16-30 माह	तीसरे वर्ष
8	स्वयं खाता पीता है।	2-3 वर्ष	चौथे वर्ष
9	अपना नाम बोलता है।	2-3 वर्ष	चौथे वर्ष
10	शौचादि पर नियंत्रण रख सकता है।	3-4 वर्ष	चौथे वर्ष
11	साधारण खतरों से बचता है।	3-4 वर्ष	चौथे वर्ष

12	अन्य कारण दौरे पड़ते हैं।	हाँ	नहीं
13	शारीरिक असमर्थकता होती है।	हाँ	नहीं

जांच सूची सं. 2 (3 से 6 वर्ष)

निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें।

1. दूसरे बच्चों की तुलना में क्या बच्चे ने बैठना, खड़ा होना या चलना अपेक्षाकृत अत्यधिक देर से शुरू किया?
(हाँ/नहीं)
2. क्या बच्चे को सुनने में कोई कठिनाई होती हुई दिखाई पड़ती है?
(हाँ/नहीं)
3. क्या बच्चे को देखने में कठिनाई होती है?
(हाँ/नहीं)
4. जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते तो क्या उसे आपकी बात समझने में परेशानी होती है?
(हाँ/नहीं)
5. क्या बच्चे के अंगों में कमजोरी और/या एंठन है और/या अपनी बाजू को घुमाने फिराने में कठिनाई होती है?
(हाँ/नहीं)
6. क्या बच्चे को कभी कभार दौरा पड़ता है? उग्र हो जाता है या अचेत हो जाता है?
(हाँ/नहीं)
7. क्या बच्चे को अपनी आयु के अन्य बच्चों की तरह कुछ सीखने में कठिनाई आती है?
(हाँ/नहीं)
8. क्या बच्चा कुछ भी बोलने में असमर्थ होता है? (शब्दों में स्वयं समझ नहीं सकता/कोई स्पष्ट (सार्थक) शब्दों को बोल नहीं सकता)
(हाँ/नहीं)
9. क्या बच्चे के बोलने का ढंग सामान्य बच्चों से किसी रूप में भिन्न है (अपने परिवार के सिवाय लोगों द्वारा कही गई बात को स्पष्ट समझ नहीं पाता है?)
(हाँ/नहीं)
10. अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चा किसी भी तरह से पिछड़ा, उदासीन या मंदबुद्धि पड़ता है?
(हाँ/नहीं)

यदि उपर्युक्त मदों में से किसी मद का उत्तर हाँ है तो मानसिक रूप में मंद का अनुमान लगाया जा सकता है।

जांच सूची 3 (7 वर्ष और उससे अधिक)

1. क्या बच्चे ने दूसरे बच्चों की तुलना में बैठना, खड़े होना या चलना अत्यधिक देर से शुरू किया है? (हाँ/नहीं)
2. क्या बच्चा खाने, कपड़े पहनने, नहाने और तैयार होने जैसे अपने काम नहीं कर सकता है? (हाँ/नहीं)
3. क्या बच्चे को समझने में कठिनाई होती है जब आप कहते हैं कि यह करो या वह करो? (हाँ/नहीं)
4. क्या बच्चे की बोली स्पष्ट नहीं है? (हाँ/नहीं)
5. क्या बच्चे को पूछे बिना स्पष्ट करने में कठिनाई होती है जो कुछ भी उसने सुना या देखा हो? (हाँ/नहीं)
6. क्या बच्चे के अंग कमजोर हैं और/या ऐंठन है और/या अपने बाजू को घुमान फिराने में कठिनाई होती है? (हाँ/नहीं)
7. क्या बच्चे में कभी कभार दौर पड़ते हैं, उम्र हो जाता है या अचेत हो जाता है? (हाँ/नहीं)
8. अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चा किसी भी तरह से पिछड़ा हुआ, उदासीन या मंदबुद्धि दिखाई पड़ता है? (हाँ/नहीं)

यदि उपर्युक्त मदों में से किसी भी एक मद का उत्तर हाँ हो तो मानसिक रूप से मंदन का संदेह करें।

टिप्पणी

जांच अनुसूची सं. 2 और 3 में ऐसे अधिकांश प्रश्न हैं जिनमें अधिक जानकारी शामिल है अर्थात् ऐसे बच्चों की पहचान की जा सकती है जिनमें शारीरिक मंदन न हों केवल श्रवण दोष या शारीरिक विकलांगता या मिरगी हो। इन दो जांच अनुसूचियों से प्रत्येक मानसिक रूप से मंद बच्चे की शीघ्र पहचान सुनिश्चित रूप से की जा सकती है।

अभ्यास प्रश्न

1. बच्चा नाम पुकारे जाने पर 1-3 महीने में प्रतिक्रिया देना आरंभ करता है। (सत्य/असत्य)
2. बच्चा 2-3 वर्ष में अपना नाम बोलना आरंभ कर देता है। (सत्य/असत्य)
3. बच्चा 1-2 वर्ष की आयु में शौचादि पर नियंत्रण करने लगता है। (सत्य/असत्य)
4. बच्चा 1 माह की आयु से सिर को संभालना शुरू कर देता है। (सत्य/असत्य)
5. 4 वर्ष वें एक बच्चे को कही गई बात समझने में कठिनाई होती है। बच्चे में मानसिक मंदता की संभावना है। (सत्य/असत्य)
6. बच्चा अन्य बच्चों की तुलना में पिछड़ा दिखाई देता है। बच्चे में मानसिक मंदता की कोई संभावना नहीं है। (सत्य/असत्य)
7. बच्चा चौथे माह तक भी अपनी आवाज सुनकर प्रतिक्रिया नहीं देना। उसमें मानसिक मंदता हो सकती है। (सत्य/असत्य)
8. बच्चा 18 माह तक बिना सहारे के नहीं बैठ पा रहा है। उसमें मानसिक मंदता की संभावना हो सकती है। (सत्य/असत्य)
9. पांच वर्ष के बच्चे की आवाज स्पष्ट नहीं है और कभी-कभी उग्र हो उठता है। बच्चे में मानसिक मंदता हो सकती है। (सत्य/असत्य)
10. बच्चे ने विकास के मील के पत्थर देर से प्राप्त किए हैं। बच्चे में मानसिक मंदता हो सकती है। (सत्य/असत्य)

3.4 परीक्षण उसके उद्देश्य उसके प्रकार एवं परीक्षण टूल्स

3.4.1 परीक्षण (Assessment) उसके उद्देश्य उसके प्रकार

परीक्षण (Assessment)

साधारण शब्दों में परीक्षण का तात्पर्य है किसी व्यक्ति के बारे में विभिन्न माध्यमों से सूचनायें एकत्रित करके उनका विश्लेषण करना।

वैलेस एवं लारेसन (1982) के अनुसार, 'परीक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति से संबंधित सूचनायें एकत्र करना, उन्हें संग्रहित करना एवं उनका विश्लेषण करना शामिल है ताकि उसके लिए शैक्षिक, निर्देश नात्मक, अथवा प्रशासनिक निर्णय लिये जा सकें।

उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर परीक्षण से संबंधित निम्नांकित तथ्य सामने आते हैं।

- i. परीक्षण एक प्रक्रिया है।
- ii. परीक्षण की प्रक्रिया में किसी व्यक्ति के बारे सूचनायें एकत्र करके, उसे संग्रहित करना और उनका विश्लेषण करना शामिल है।
- iii. सूचनाओं का विश्लेषण करके उन पर आधारित जानकारी का प्रयोग संदर्भित व्यक्ति से संबंधित शैक्षणिक, प्रशासनिक अथवा निर्देशात्मक निर्णय लिया जा सके।

वस्तुतः 'परीक्षण' एक विस्तृत पद है जिसमें विभिन्न प्रकार एवं माध्यमों से किसी व्यक्ति के बारे में सूचनायें एकत्र की जाती हैं। सूचनाएँ संग्रहित एकत्र करने की तकनीकों में निम्नांकित सम्मिलित है।

- i. बच्चे का परोक्ष एवं प्रत्यक्ष जाँच
- ii. बच्चे के शिक्षक /अभिभावकों से साक्षात्कार
- iii. विभिन्न प्रकार की 'प्रक्षेप्य' (Projective) एवं और अप्रक्षेप्य परीक्षण

मानसिक मंदता के परीक्षण का उद्देश्य (Purpose of Assessment)

सामान्यता मानसिक मंदता ध् बौद्धिक अक्षमता के संदर्भ में परीक्षण के निम्नांकित उद्देश्य हो सकते हैं।

- i. मानसिक मंदता की प्रारंभिक जाँच एवं पहचान
- ii. शैक्षणिक कार्यक्रम एवं रणनीतियों के पूर्वनिर्धारण हेतु
- iii. मानसिक मंदतायुक्त बालक के वर्तमान निष्पादन स्तर एवं शैक्षणिक आवश्यकता का पूर्व निर्धारण
- iv. वर्गीकरण एवं शैक्षिक नियोजन के निर्धारण के लिए
- v. व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम के विकास के लिए।
- vi. व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम (IEP) की प्रभाविता का सर्वाधिक मूल्यांकन करने के लिए।

परीक्षण के प्रकार (Types of Assessment)

परीक्षण विभिन्न मानदंडों के आधार पर विभिन्न प्रकार हो सकते हैं यथा मानकीकरण (Standardization) के आधार पर मानकीकृत परीक्षण प्रकार हो सकते हैं। इसी प्रकार, यदि हम परीक्षण के उद्देश्यों की बात करें तो उसके अनुवार परीक्षण के निम्नांकित प्रकार हो सकते हैं।

- i. शैक्षिक परीक्षण
- ii. मनावैज्ञानिक परीक्षण
- iii. चिकित्सकीय परीक्षण
- iv. पाठ्यक्रम आधारित परीक्षण

v. कार्यात्मक परीक्षण

लेखक आपसे आशा करता है कि आप परीक्षण एवं परीक्षणों के प्रकार के बारे में अन्य इकाइयों में यथास्थान पढ़ चुके होंगे।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बुद्धि परीक्षण:

- i. बिने कीमत परीक्षण इंटरलिजेंस डॉ.वी के भाटिया, 1955 इससे पाँच उप टेस्ट:
- ii. ब्लॉक डिजाइन टेस्ट
- iii. एलेक्जेन्डर पास एलाग टेस्ट
- iv. इमिडियेट मेमरी टेस्ट
- v. पिक्चर कंस्ट्रक्शन टेस्ट

भारतीय परिप्रेक्ष्य में

- i. VSMS: विनलैंड सोशल मैचुरिटी स्केल
- ii. ABS: एडेप्टिव विहैविर स्केल

3.4.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में परीक्षण टूल्स

बौद्धिक अक्षमता/मानसिक मंदता युक्त बालकों के परीक्षण एवं उनके लिए कार्यक्रम बनाने के लिए यूं बहुत सारे टूल्स उपलब्ध हैं परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रायः निम्नांकित टूल प्रयोग में लाए जा रहे हैं:

- i. MDPS: मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम
- ii. FACP: फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग
- iii. BASIC MR: विहैविरल असेसमेंट स्केल फॉर इंडियन चिल्ड्रेन विद मेंटल रिटार्डेशन

1. **मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम (MDPS)** - मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम, प्रो. पी. जयचंद्रन एवं वी. बिमला द्वारा 1968 में विकसित किया गया एक बहुतायत से प्रयोग किया जाने वाला परीक्षण एवं कार्यक्रम विकास का टूल है। मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम में कुल 360 आइटम हैं जो बच्चों के विकास के आरोही क्रम में रखे गए हैं। यह परीक्षण 18 क्षेत्रों (क्वउंपदे) में बांटा है और प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम रखे गए हैं प्रत्येक क्षेत्रों में सभी आइटमों को सरल से कठिन क्रियाओं की ओर सजाया गया है। मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम के अद्वारह क्षेत्र निम्नलिखित है:

- i. स्थूल गामक कौशल
- ii. सूक्ष्म गामक कौशल गामक कौशल

iii.	भोजन संबंधित क्रियायें	
iv.	कपड़े पहनना	
v.	सजना संवरना	स्व सहायता/व्यक्तिगत कौशल
vi.	शौच क्रिया	
vii.	ग्रहणशील भाषा	
viii.	अभिव्यक्ति की भाषा	भाषा/संप्रेषण कौशल
ix.	सामाजिक कौशल	
x.	कार्यात्मक पठन	
xi.	कार्यात्मक लेखन	
xii.	संख्या संबंधित कौशल	कार्यात्मक शैक्षणिक क्रियायें
xiii.	पैसा संबद्ध कौशल	
xiv.	समय संबद्ध कौशल	
xv.	घरेलू व्यवहार	
xvi.	समुदायिक संपर्क	
xvii.	मनोरंजनात्मक कौशल	मनोरंजनात्मक क्रियायें
xviii.	व्यावसायिक कौशल	

मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम की विशेषतायें

1. निरीक्षणीय एवं मापनीय शब्दों में लिखित।
2. अलग निर्मित 18 क्षेत्र जो बच्चे का वर्तमान स्तर निर्धारित करने में वस्तुनिष्ठता प्रदान करते हैं।
3. सभी आइटम सकारात्मक आकलन करने के लिए सकारात्मक भाषा में लिखे गये हैं अर्थात् सभी आइटम में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि बच्चा क्या और किस कठिनाई स्तर तक करता है। बच्चा क्या नहीं कर सकता इसकी चर्चा नहीं की गयी है।
4. प्रत्येक क्षेत्र में समान संख्या में आइटम रखे गये हैं।
5. सभी आइटम सरलता से कठिन के क्रम में सजाये गये हैं।
6. वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित अंकन प्रणाली जो बच्चे के क्रमिक विकास का सरल वर्णन करता है।

मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम की सीमायें

1. यह टूल काफी पुराना हो चुका है, परंतु इसमें समानुकूल परिवर्तन नहीं आये हैं।

2. टूल की अंकन पद्धति सिमित है जो हाँ या ना पर आधारित है।
3. टूल का प्रयोग करने में।

अंकन प्रारूप (Progress Record)- मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम में अंकन का एक प्रारूप होता है जिसमें बच्चे के निष्पादन का अन्तरालिक अंकन होता (1 तिमाही, 2 मिमाही या तिमाही) तथा इसे परिवार को तथा अन्य को बताया जा सकता है जो विद्यार्थी के शिक्षा से जुड़े हुए हैं। परीक्षण पर अगर विद्यार्थी क्रिया का निष्पादन नहीं करता है इसको 'A' अंकित करते हैं। स्केल में रंगीन कोड भरने की व्यवस्था भी है। जिसमें 'A' को नीला तथा 'B' को लाल से भरते हैं। प्रत्येक तिमाही में प्रगति के आधार पर लाल को नीले रंग से ढंका जा सकता है। टूल में एक मेनुअल है समूहीकरण तथा कार्यक्रम बनाने में सहायक होता है। यह विशेष शिक्षक के लिए अन्तरालिक परीक्षण तथा IEP कार्य योजना के लिए लाभप्रद है।

2. **फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग ¼FACP½-** फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सिंकदराबाद द्वारा विकसित एक कार्यक्रम निर्माण एवं असेसमेंट उपकरण है, जो मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों के परीक्षण एवं कार्यक्रम निर्माण हेतु प्रयुक्त किया जाता है। यह चेकलिस्ट सामान्यीकरण के सिद्धांत (Principle of Normalization) पर आधारित है। यह चेकलिस्ट मानसिक मंद बालकों (3-18 वर्ष) के लिए विशेष रूप से, निर्मित है जो उनकी योग्यता और उनकी आयु दोनों को ध्यान में रखते हुए, उनके विभिन्न कक्षाओं में पढ़ाए जाने का विकल्प प्रस्तुत करता है।

एफ.ए.सी.पी. के अनुसार मानसिक मंदता युक्त बालकों की क्षमता और उनकी उम्र के अनुरूप उनकी कक्षा का चयन: एफ.ए.सी.पी. कुल सात खण्डों में बांटा है प्रत्येक खण्ड बच्चे की आयु और योग्यता के अनुरूप उसे किसी एक कक्षा में नियोजित करने का सुझाव देते हैं। ये सात खण्ड और उनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है:

प्रत्येक खण्डों को जांच क्षेत्रों में बांटा गया है। संदर्भित क्षेत्र हैं:

1. व्यक्तिगत क्रियाएं
2. समाजिक क्रियाएं
3. शैक्षणिक क्रियाएं
4. व्यावसायिक क्रियाएं
5. मनोरंजनात्मक क्रियाएं

जैसा कि आपने ऊपर देखा कि फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग के सात खण्ड, निम्नांकित सात कक्षाओं में मानसिक मंद बालकों को उनकी योग्यता एवं आयु के अनुसार उन्हें नियोजित करता है।

- i. पूर्व प्राथमिक: यह बच्चे का प्रवेश स्तर है, जिसमें 3-6 वर्ष के बच्चे रखते जाते हैं। इस चेकलिस्ट पर परीक्षण करके उपरोक्त आयुवर्ग के बच्चों का समूहीकरण किया जाता है।
- ii. प्राथमिक स्तर: प्राथमिक स्तर दो भागों में बंटा है-प्राथमिक 1 एवं प्राथमिक 2

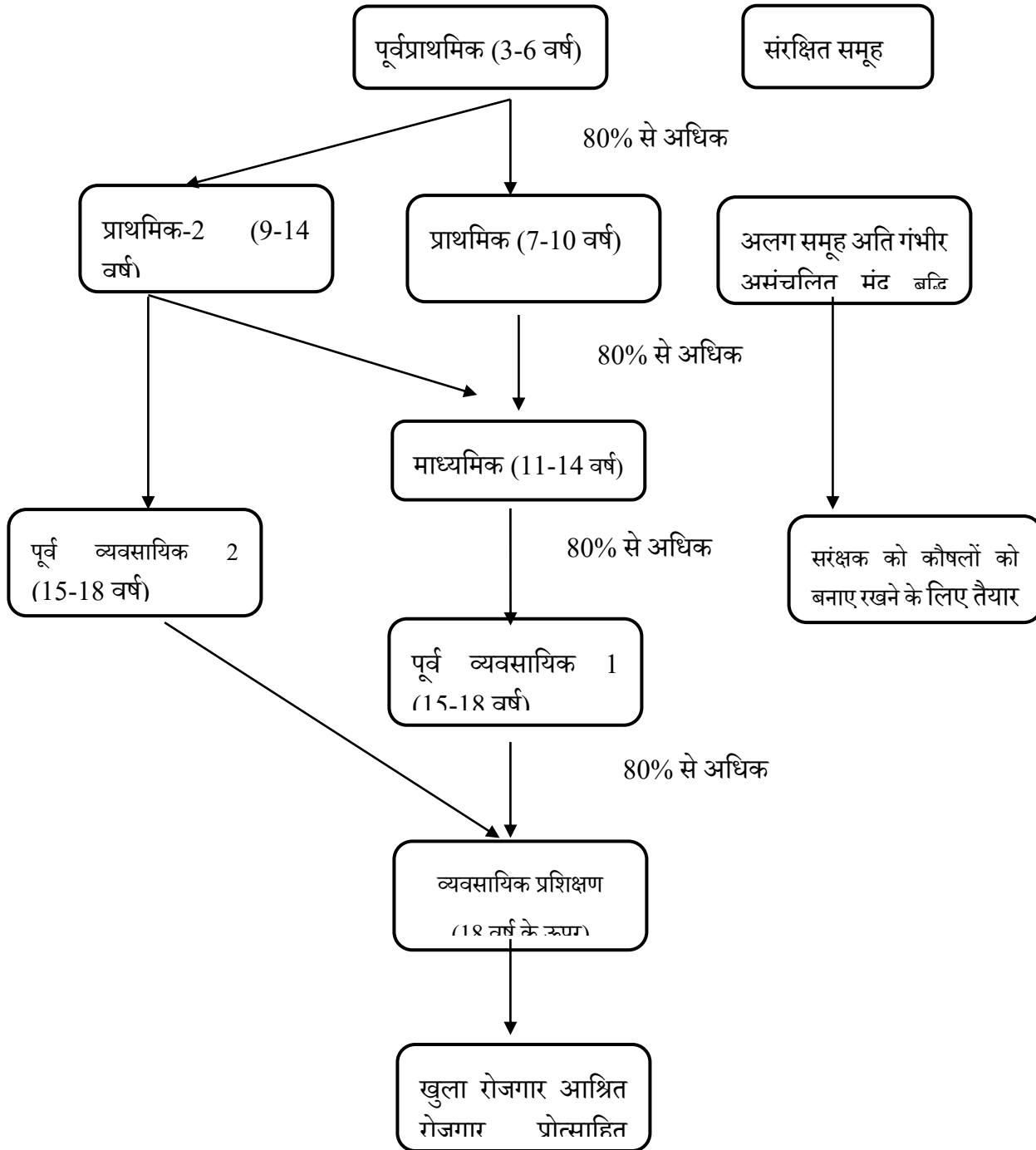
प्राथमिक-1: वे विद्यार्थी जो 80% पूर्व प्राथमिक जांच तालिका में प्राप्त कर लेते हैं उनको प्राथमिक-1 स्तर में उन्नति दी जाती है तथा विद्यार्थी जो इस स्तर में आते हैं उनकी आयु लगभग 7 वर्ष होती है। कुछ विद्यार्थी पास होने का मापदण्ड प्राप्त करने के लिए एक वर्ष और इस स्तर में रह सकते हैं। (जैसे एक विद्यार्थी 7 वर्ष का है प्राथमिक जांच तालिका में मूल्यांकन करने पर 60% उपलब्धि की है वह उसी कक्षा में अधिक समय के लिए रह सकता है उसके बाद यह देखा जाएगा कि वह होने वाला मानदण्ड प्राप्त करता है या नहीं/सफलता)

प्राथमिक-2: विद्यार्थी जो 8 वर्ष की आयु के बाद भी प्राथमिक स्तर की जांच तालिका में 80% प्राप्त नहीं करते हैं उनको प्राथमिक-2 में विस्थापित कर दिया जाता है। संभवतः ये बच्चे अल्प कार्यात्मक योग्यता वाले होते हैं। इस समूह में 8-14 आयु वर्ष के बच्चे आते हैं तथा इनको माध्यमिक स्तर में कक्षोन्नति दी जा सकती है यदि वे 14 वर्ष से पहले 80% अंक प्राप्त कर पाते हैं। अगर 15 वर्ष की आयु में भी 80% से कम हासिल करते हैं तब उन्हें पूर्व व्यवसायिक-2 में स्थानांतरित किया जाता है।

माध्यमिक समूह: इस समूह में 11-14 आयु वर्ष के बच्चे आते हैं। यह मिश्रित समूह है (जिसमें प्राथमिक-1 तथा 2 दोनों से बच्चे आते हैं) कक्षा में 80% उपलब्धि प्राप्त करने पर विद्यार्थी को पूर्व व्यवसायिक-1 में कक्षोन्नति दी जाती है तथा जो बच्चे 80% कम हासिल करते हैं उन्हें पूर्व व्यवसायिक-2 में विस्थापित कर दिए जाते हैं।

पूर्व व्यवसायिक-1 तथा 2: दोनों ही समूहों में विद्यार्थी आयु 15-18 वर्ष के बीच होती हैं। प्रशिक्षण केंद्र बिंदु विद्यार्थियों को मूलभूत कार्य कौशलों तथा धरेलू कार्यों में प्रशिक्षित करना है। इस प्रकार जांच तालिका में आने वाले मुख्य विषय व्यवसायिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र है।

FACP के अनुसार मानसिक मंद बालकों की पदोन्नति/कक्षोन्नति की विधि



18 वर्ष आयु के ऊपर के मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण इकाइयों में उनकी संकलित मूल्यांकन रिपोर्टों के साथ आगे की कार्यक्रम योजना के लिए भेज दिया। इस पाठ्यक्रम में जांच तालिका में व्यवसायिक क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

संरक्षित समूह

इस समूह में बहुत ही अल्प बौद्धिक क्षमता वाले वे बच्चे आते हैं (बिस्तर पर पड़े रहने वाले अति गंभीर विकलांग) तथा जांच तालिका के विषय, मूलभूत कौशल जैसे पानी पीना खाना खाना, शौच तथा मूलभूत गामक गतियां और संप्रेषण में प्रशिक्षण आंशिक रूप से निष्पादन में ध्यान केंद्रित करते हैं अगर वे असंचरित बने रहते हैं तो आयु बढ़ने के साथ-साथ अभिभावक/संरक्षक को बच्चे को स्कूल में लाना कठिन हो सकता है। ऐसे में साथ-साथ सीखे गए कौशलों को बनाए रखने के लिए संरक्षक को तैयार करना आवश्यक हो जाता है। यह अच्छा है कि इस समूह के बच्चों को पूर्व व्यवसायिक कक्षा में प्रारंभ करके प्रत्येक कक्षा में बांट देना चाहिए इससे उनको उद्दीपित वातावरण मिलेगा। फिर भी इन्हें संरक्षित समूह की जांच तालिका द्वारा परीक्षण किया जाना चाहिए वह चाहे जिस भी समूह में विस्थापित हो।

विषय सूची

प्रत्येक जांच तालिका में विषय मुख्य क्षेत्रों से, जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक शैक्षणिक, व्यवसायिक तथा मनोरंजन क्षेत्र से हैं जैसाकि विभिन्न तथा पर्यावरणीय माहौल से आते हैं प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को जोड़ने तथा हटाने का प्रावधान होता है।

अंकन प्रारूप (Progress Record)

फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग (FACP) में अंकन का प्रारूप इस प्रकार से तैयार किया गया है कि कार्यक्रम तैयार करने वाला परीक्षण सूचनाएं (प्रवेश स्तर) दर्ज कर सकता है तथा प्रगति को अंतरालिक (प्रत्येक त्रैमासिक) लगभग 3 वर्ष के लिए दर्ज कर सकता है जैसा कि माना जाता है कि एक दिए गए स्तर पर बच्चा अधिक से अधिक 3 वर्ष तक ठहर सकता है। अंत में मूल्यांकन के बाद सभी क्षेत्रों में दी गई तालिका में बच्चे की प्रगति अंतरालिक रूप से दर्ज कर सकते हैं।

जांच तालिका में विद्यार्थी के निष्पादन को रिकार्ड करने का प्रावधान 3 वर्ष तक होता है। अगर एक विद्यार्थी एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उसे '+' अंकित किया जाता है अगर नहीं करता तो '-' अंकित किया जाता है। फिर भी विद्यार्थी के वर्तमान स्तर के परीक्षण में सहायता प्राप्ताहन के रूप में दी जाती है। प्राप्ताहन जैसे कि दृष्य प्राप्ताहन, संकेतिक प्राप्ताहन, मॉडलिंग, शारीरिक प्राप्ताहन,

परीक्षण के दौरान यह देखा जा सकता है कि बच्चा किस प्रोत्साहन से निष्पादन करता है। जैसे अगर वह सांकेतिक प्रोत्साहन से एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उसे GP उस क्रिया के सामने अंकित किया जाता है।

आइटम जो 'यस' या '+' अंकित होते हैं उन्हें एक अंक के रूप में गिना जाता है जबकि अन्य को जैसे PP VP NE को अंकित तो किया जाता है पर अंक नहीं जोड़े जाते हैं। अन्तोगत्वा इसका उद्देश्य दिए गए क्रिया क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना होता है जिन क्रियाओं में बच्चा स्वतंत्र रूप से बच्च निष्पादन करता है या कभी-कभी इशारे करने पर करता है। ऐसे आइटम्स को परिमाणित करने के लिए विचार किया जा सकता है। ऐसे विषय जिनमें AN अंकित होता है प्रतिशत का गणन करते समय सीख जाने वाले कुल विषयों से हटा दिए जाते हैं। उसी प्रकार अतिरिक्त विशिष्ट विषयों को प्रतिशत का गणना करने के लिए सम्मिलित होने चाहिए। जांच तालिका में 80% उपलब्धि एक स्तर से दूसरे स्तर में पदोन्नति के लिए विचारणीय होगी। जैसे बच्चे जो 80% पूर्व प्राथमिक जांच तालिका में प्राप्त करेंगे उन्हें प्राथमिक स्तर में पदोन्नति कर देंगे। यहाँ पर फिर भी सावधान किया जाता है कि खराब शिक्षण के कारण बच्चे में कमी या सीखने की अयोग्यता नहीं होनी चाहिए।

मनोरंजन के अन्तर्गत दिए गए विषयों को परिमाण के लिए नहीं गिना जाना चाहिए क्योंकि यह विषय रुचिपरक है। दी जाने वाली श्रेणियों में A रुचि लेता है तथा प्रभावशाली ढंग से भाग लेता है B भाग लेता है जब दूसरे प्रारंभ करते हैं C स्वतः को सम्मिलित करता है, लेकिन नियम मालूम नहीं होते हैं D रुचि से अवलोकन करता है E उदासीन रहता है NE कोई अवसर पहले नहीं मिला। जैसा नीचे बताया गया मनोरंजन क्रियाओं के बच्चे के साथ संलग्न होने का वर्णन करती है। ऐसे प्राप्तांक सामान्य स्कूलों के तंत्रों के समानांतर होते हैं। आखिरी पेज पर संकलित प्राप्तांक वह श्रेणी हो सकती है जिसे मनोरंजन विषयों के जांच सबसे अधिक श्रेणी मिलती हैं। अगर एक से अधिक श्रेणियों को बराबर प्राप्तांक मिलते हैं तो शिक्षक को अपने विवेक का प्रयोग करके निर्णय लेना पड़ता है।

प्रगति रिपोर्ट लेखन

अंतरालिक मूल्यांकन आंकड़े तथा अंकित करने की सुविधा के प्राविधान के अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा की गयी प्रगति के अंकन का प्रावधान भी है। यह टूल व्यापक है तथा शिक्षकों के प्रयोग के लिए आसान है जैसे इसमें अंतरालिक जांच सुविधा तथा संक्षिप्त कार्यक्रम तैयार करने के लिए लेखन हेतु आसान प्रारूप भी है।

FACP की विशेषताएं

- i. कार्यात्मक उपागम पर आधारित

- ii. नये व्यवहारों के अंकन का प्रावधान
- iii. सामान्यीकरण सिद्धांत पर आधारित
- iv. कक्षा नियोजन के स्पष्ट विकल्प का प्रावधान
- v. मानकीकृत (Standardized)
- vi. अंकन प्रारूप उपलब्ध

बच्चे का परीक्षण आसानी से किया जा सकता है।

FACP की सीमायें

- i. नये आइटम जोड़ने की सुविधा फलतः परीक्षण विश्वसनीयता और वैधता प्रभावित हो सकती है।
- ii. छात्र की प्रगति का रिकार्ड रखने हेतु विशेषज्ञ की आवश्यकता अनावश्यक पेपर कार्य
- iii. विशेष शिसा का विकल्प, समावेशी शिक्षा का नहीं। लंबे समय से पुनरावृत्ति नहीं।
- iv. समस्यात्मक व्यवहार के लिये कोई क्षेत्र नहीं।

बेसिक एम.आर.

बेसिक एम.आर. दो भागों में बाँटा गया है: प्रथम भाग में कौशल व्यवहार और द्वितीय भाग में समस्यात्मक व्यवहारों के परीक्षण को प्रावधान है। प्रथम भाग में कुल 280 आइटम है जो सात विभिन्न क्षेत्रों में बँटे हैं। के सात क्षेत्र निम्नांकित है। प्रत्येक क्षेत्र में 40 आइटम संकलित हैं। बेसिक एम.आर.

- i. गामक एवं सहन-सहन से संबंधित क्रियाएं
- ii. भाषा से संबद्ध व्यवहार
- iii. शैक्षणिक/पठन-पाठन से संबद्ध क्रियाएं
- iv. टंक एवं समय का ज्ञान
- v. घरेलू सामाजिक व्यवहार
- vi. पूर्व-व्यवसायिक ज्ञान

बेसिक एम.आर. के दूसरे भाग को 10 अलग-अलग खंडों में बाँटा गया है। जिनमें कुल 75 आइटम हैं। समस्यात्मक व्यवहारों के आकलन हेतु निर्मित इस भाग के 10 क्षेत्र निम्नलिखित है:

- i. उग्र एवं विनाशक व्यवहार
- ii. चिड़चिड़ापन एवं झल्लाहट
- iii. दूसरों के लिए घातक व्यवहार

- iv. स्वयं के लिए घातक व्यवहार
- v. पुनरावृत्ति की आदत
- vi. विचित्र व्यवहार
- vii. अति चंचलता
- viii. विद्रोही व्यवहार
- ix. असामाजिक व्यवहार
- x. भय

प्रत्येक भाग में आइटम की संख्या भिन्न-भिन्न है।

बेसिक एम.आर. की विशेषताएं

- i. समस्यात्मक व्यवहारों के आकलन की सुविधा
- ii. आवधिक आकलन की सुविधा
- iii. मापनीय प्रत्यक्ष व्यवहारों पर आधारित
- iv. विशेष रूप से भारतीय बालकों के लिए निर्मित

3.5 सारांश

इकाई संख्या (20) में आपने मानसिक मंदता के स्क्रीनिंग मंदत के स्क्रीनिंग एवं पहचान के बारे में और उसमें प्रयोग किए जा रहे जांच सूचियों के बारे में पढ़ा। स्क्रीनिंग का तात्पर्य है विभिन्न लक्षणों के आधार पर मानसिक मंदता संभावित व्यक्तियों की पहचान करना ताकि उन्हें मानसिक मंदता से संबद्ध आवश्यक जांच के लिए व्यवहारों के आधार पर राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान ने मानसिक मंदता की प्रारंभिक जांच सूची बनाई है जिसके आधार पर मानसिक मंदता संभावित व्यक्तियों की पहचान की जा सकती है। इसके अतिरिक्त आपने परीक्षण और उसके प्रकार देखें और पढ़ा कि परीक्षण का तात्पर्य किसी व्यक्ति के बारे में सूचनाएं एकत्र करना, उनका विश्लेषण करना एवं रिकार्ड रखना है ताकि व्यक्ति के बारे में प्रशासनिक शैक्षणिक निर्णय लिए जा सकें। इसके अलावा, भारतीय परिप्रेक्ष्य में मानसिक मंदता के परीक्षण के लिए प्रयोग किए जा रहे विभिन्न टूलों FACP, MDPS तथा BASIC (MR)के बारे में विस्तार से पढ़ा।

3.6 निबंधात्मक प्रश्न

1. मानसिक मंदता की स्क्रीनिंग एवं पहचान आप कैसे करेंगे?
2. मानसिक मंदता के परीक्षण एवं कार्य योजना के लिए भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत दो टूलों का संक्षिप्त विवरण दें।
3. परीक्षण (Assessment) से आप क्या समझते हैं? इसके उद्देश्य एवं विभिन्न प्रकार बताइए।

इकाई 4- मूल्यांकन

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 मूल्यांकन- परिभाषा
- 4.4 मूल्यांकन के मौलिक घटक
- 4.5 छात्र मूल्यांकन के प्रकार और उद्देश्य
- 4.6 मूल्यांकन के तरीके
- 4.7 सारांश
- 4.8 सहायक सामग्री
- 4.9 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

मूल्यांकन का शिक्षक शैक्षिक तत्परता, सीखने की प्रगति, कौशल अधिग्रहण, या छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करने, मापने और दस्तावेज़ करने के लिए उपयोग करते हैं। मूल्यांकन शिक्षार्थी केंद्रित होना चाहिये। प्रस्तुत इकाई में आप छात्र मूल्यांकन के प्रकार और उद्देश्य मूल्यांकन के मौलिक घटक और मूल्यांकन के तरीके के बारे में अध्ययन करेंगे। मूल्यांकन छात्रों के सीखने और विकास के बारे में अनुमान लगाने के लिए व्यवस्थित आधार है। मूल्यांकन के माध्यम से छात्र अधिगम को मापना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दोनों प्रशिक्षकों और छात्रों को इस बात के लिए उपयोगी प्रतिक्रिया प्रदान करता है कि छात्र सफलतापूर्वक सीखने के उद्देश्यों को किस हद तक पूरा कर रहे हैं।

4.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- मूल्यांकन को परिभाषित कर पायेंगे।
- मूल्यांकन के विभिन्न मौलिक घटकों के बारे में जान पायेंगे।

- छात्र मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों से अवगत हो पायेंगे।
- मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्यों के बारे में जान पायेंगे।

4.3 मूल्यांकन- परिभाषा

शिक्षा में, शब्द मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के तरीकों या उपकरणों को संदर्भित करता है जो शिक्षक शैक्षिक तत्परता, सीखने की प्रगति, कौशल अधिग्रहण, या छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करने, मापने और दस्तावेज़ करने के लिए उपयोग करते हैं।

जबकि मूल्यांकन अक्सर पारंपरिक परीक्षणों से युक्त होते हैं - विशेष रूप से परीक्षण लैब द्वारा विकसित मानकीकृत परीक्षण और छात्रों की बड़ी आबादी के लिए प्रशासित - शिक्षक मूल्यांकन उपकरण के विभिन्न प्रकार का उपयोग करते हैं और एक चार साल की उम्र के किंडरगार्टन के लिए तत्परता से लेकर बारहवीं कक्षा के छात्र की उन्नत भौतिकी की समझ से सब कुछ मापने के लिए तरीकों का उपयोग करते हैं।

जिस तरह अकादमिक पाठ में अलग-अलग कार्य होते हैं, आकलन आमतौर पर सीखने के विशिष्ट तत्वों को मापने के लिए तैयार किए जाते हैं - उदाहरण के लिए, एक छात्र के पास पहले से ही ज्ञान या कौशल के बारे में ज्ञान का स्तर है जबकि शिक्षक जो ग्रंथों और पठन को सिखाने या विभिन्न प्रकार के शिक्षण को समझने और विश्लेषण करने की क्षमता के लिए योजना बना रहा है।

मूल्यांकन की विभिन्न परिभाषाएँ-

मूल्यांकन की विभिन्न परिभाषाएँ और शिक्षण और सीखने में मूल्यांकन की भूमिका

मूल्यांकनके अंतर्गत छात्र अधिगम पर अनुभवजन्य आंकड़े का उपयोग, कार्यक्रमों को परिष्कृत करने और छात्र अधिगम में सुधार शामिल है। (एलन द्वारा 2004 तक उच्च शिक्षा में शैक्षणिक कार्यक्रमों का आकलन)

मूल्यांकन, छात्रों को उनके शैक्षिक अनुभवों के परिणामस्वरूप उनके ज्ञान, समझ, और उनके ज्ञान के साथ क्या कर सकता है, इसकी गहरी समझ विकसित करने के लिए कई और विविध स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करने और चर्चा करने की प्रक्रिया है; इस प्रक्रिया का समापन तब होता है जब मूल्यांकन परिणाम का उपयोग बाद में सीखने में सुधार के लिए किया जाता है। (कॉलेज कैम्पसों पर शिक्षार्थी केंद्रित मूल्यांकन: हुबा और फ्रीड 2000 तक शिक्षण से ध्यान केंद्रित करना)

मूल्यांकन छात्रों के सीखने और विकास के बारे में अनुमान लगाने के लिए व्यवस्थित आधार है। यह छात्रों के सीखने और विकास को बढ़ाने के लिए जानकारी को परिभाषित करने, चयन करने, डिजाइन करने, एकत्र करने, विश्लेषण करने, व्याख्या करने और उपयोग करने की प्रक्रिया है। (स्टूडेंट लर्निंग एंड डेवलपमेंट का आकलन: एर्विन द्वारा कॉलेज के परिणामों को निर्धारित करने के सिद्धांतों, लक्ष्यों और तरीकों के लिए एक गाइड)

मूल्यांकन छात्र के सीखने और विकास में सुधार लाने के उद्देश्य से किए गए शैक्षिक कार्यक्रमों के बारे में जानकारी का व्यवस्थित संग्रह, समीक्षा और उपयोग है। (अनिवार्य मूल्यांकन: पलौम्बा और बेंटा 1999 द्वारा उच्च शिक्षा में मूल्यांकन की योजना, कार्यान्वयन और सुधार)

4.4 मूल्यांकन के मौलिक घटक

शिक्षार्थी केंद्रित मूल्यांकन के मौलिक तत्व:

इच्छित सीखने के परिणामों का विवरण तैयार करना (Formulating Statements of Intended Learning Outcomes) - छात्रों को क्या जानना चाहिए, समझना चाहिए और शिक्षित होने पर अपने ज्ञान के साथ क्या करना चाहिए के बारे में उद्देश्यों का वर्णन।

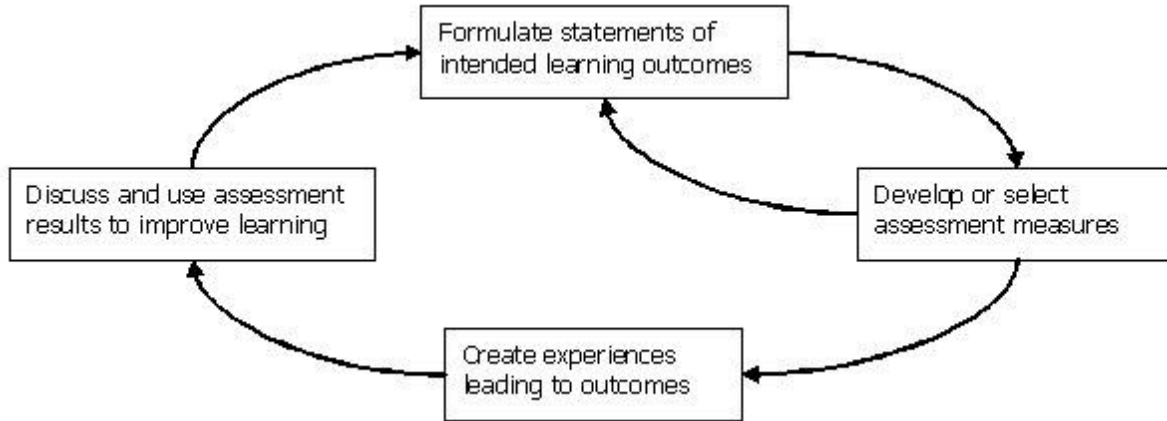
मूल्यांकन उपायों का विकास या चयन (Developing or Selecting Assessment Measures) - यह जानने के लिए कि हमारे इच्छित सीखने के परिणाम प्राप्त हुए हैं या नहीं, इसका आकलन करने के लिए आंकड़े एकत्र करने के उपायों को डिजाइन करना या चयन करना। इसके अनतर्गत शामिल हैं-

प्रत्यक्ष आकलन (Direct assessments) - परियोजनाएं, उत्पाद, अनुसंधान पत्र / शोध, प्रदर्शनियां, प्रदर्शन, केस स्टडी, नैदानिक मूल्यांकन, पोर्टफोलियो, साक्षात्कार, और मौखिक परीक्षा - जो छात्रों को यह दिखाने के लिए कहते हैं कि वे क्या जानते हैं या अपने ज्ञान के साथ क्या कर सकते हैं।

अप्रत्यक्ष आकलन (Indirect assessments) - स्व-रिपोर्ट उपाय जैसे कि सर्वेक्षण - जिसमें उत्तरदाता अपने ज्ञान के साथ क्या कर सकते हैं या क्या कर सकते हैं, इसके बारे में अपनी धारणाएं साझा करते हैं।

परिणाम के लिए अग्रणी अनुभव का निर्माण (Creating Experiences Leading to Outcomes) - यह सुनिश्चित करना कि छात्रों को अपने पाठ्यक्रमों के भीतर और बाहर दोनों तरह के अनुभव हैं जो उन्हें सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में मदद करते हैं।

शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए मूल्यांकन परिणामों का विवेचन और उपयोग करना
(Discussing and Using Assessment Results to Improve Teaching and Learning)
-व्यक्तिगत रूप से छात्र के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए परिणामों का उपयोग करना।



मूल्यांकन चक्र- वेस्टमिंस्टर ने इन मूलभूत घटकों का मूल्यांकन चक्र में अनुवाद किया है जिसमें चार चरण शामिल हैं: योजना-क्या करना-निरीक्षण-कृत्य (Plan-Do-Check-Act).

योजना – जो मैं चाहता हूँ छात्र वो सीखें।

इस चरण में मूल्यांकन का पहला मूलभूत घटक शामिल है: इच्छित सीखने के परिणामों का विवरण तैयार करना (Formulating Statements of Intended Learning Outcomes)

क्या करना - मैं प्रभावी ढंग से कैसे सिखाऊँ?

इस चरण में दूसरे और तीसरे मूलभूत घटक शामिल हैं: मूल्यांकन के परिणामों का विकास करना या चयन करना और परिणामों के लिए अग्रणी अनुभव बनाना।

निरीक्षण करना - क्या मेरे परिणाम पूरे हो रहे हैं?

इस चरण में मूल्यांकित आंकड़ों का मूल्यांकन शामिल है (चौथे घटक का हिस्सा)।

कृत्य - मैंने जो सीखा है उसका उपयोग कैसे करूँ?

इस चरण में सफल प्रथाओं को मजबूत करना और सीखने को बढ़ाने के लिए अभ्यास करना शामिल है(चौथे घटक का हिस्सा)।

4.5 छात्र मूल्यांकन के प्रकार और उद्देश्य (Forms and Purposes of Student Assessment)

मूल्यांकन के माध्यम से छात्र अधिगम को मापना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दोनों प्रशिक्षकों और छात्रों को इस बात के लिए उपयोगी प्रतिक्रिया प्रदान करता है कि छात्र सफलतापूर्वक सीखने के उद्देश्यों को किस हद तक पूरा कर रहे हैं। आम तौर पर छात्र मूल्यांकन के दो रूप हैं जो शिक्षण और सीखने के संदर्भ में सबसे अधिक चर्चा करते हैं।

पहला, योगात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment) , वह मूल्यांकन है जो अध्ययन के पाठ्यक्रम के अंत में लागू किया जाता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य एक ऐसा माप तैयार करना है जो छात्र सीखता है उसको जोड़ कर रखे। योगात्मक मूल्यांकन व्यापक प्रकृति का है और मूल रूप से सीखने के परिणामों से संबंधित है। जबकि छात्र की उपलब्धि के प्रतिमान के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए योगात्मक मूल्यांकन अक्सर उपयोगी होता है, यह छात्रों को सुधार के लिए चिन्हित क्षेत्रों में विकास को दर्शाते और प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किए बिना ऐसा करता है और प्रशिक्षक के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षण रणनीति को संशोधित करने के लिए मौका प्रदान नहीं करता है। योगात्मक मूल्यांकन के उदाहरणों में व्यापक अंतिम परीक्षा या प्रश्नपत्र शामिल हैं।

दूसरा रूप, औपचारिक मूल्यांकन में छात्र के सीखने के समय के दौरान का मूल्यांकन शामिल है। इसका मूल उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्रों के सीखने को बढ़ाने के लिए छात्रों की उपलब्धि के स्तर का अनुमान लगाना है। इस मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों के प्रदर्शन की व्याख्या करके और उनके साथ परिणाम साझा करना, प्रशिक्षक छात्रों को "उनकी ताकत और कमजोरियों को समझने और उन्हें इस बात पर चिंतन करने में मदद करते हैं कि उन्हें अपनी शेष पढ़ाई के दौरान कैसे सुधार करना है।" औपचारिक मूल्यांकन में पाठ्यक्रम कार्य शामिल हैं - जहां छात्रों को प्रतिक्रिया मिलती है जो भविष्य के कार्यों के लिए शक्तियों, कमजोरियों और अन्य चीजों को ध्यान में रखते हैं - प्रशिक्षकों और छात्रों के बीच चर्चा, और अंत-की-इकाई परीक्षाएं जो छात्रों को महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करने का ओर अपने लिए आवश्यक वृद्धि और विकास के लिए अवसर प्रदान करती हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त मूल्यांकन भी विभिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न तरीकों से तैयार किए गए हैं:-

1. मानकीकृत मूल्यांकन (Standardized assessments) , मानक, या सुसंगत, तरीके से निर्मित, प्रशासित और बनाए जाते हैं। वे अक्सर बहु-विकल्प प्रारूप का उपयोग करते हैं, हालांकि कुछ में खुले-बंद, लघु-उत्तर वाले प्रश्न शामिल होते हैं। ऐतिहासिक रूप से, मानकीकृत परीक्षणों में अंडाकारों की पंक्तियाँ दिखाई गईं जो छात्रों ने दो नंबर वाली पेंसिल से भरी थीं, लेकिन तेजी से परीक्षण कंप्यूटर आधारित हैं। मानकीकृत परीक्षणों को एक राज्य, क्षेत्र, या देश में एक ही आयु या ग्रेड स्तर की

बड़ी छात्र आबादी के लिए प्रशासित किया जा सकता है, और परिणामों की तुलना व्यक्तियों और छात्रों के समूहों में की जा सकती है। एक मानकीकृत परीक्षण परीक्षण का कोई भी रूप है (1) सभी परीक्षार्थियों को समान प्रश्नों के उत्तर देने के लिए, या सामान्य प्रश्नों के प्रश्नों का चयन उसी तरह करना होता है, और (2) यह "मानक" में या सुसंगत तरीके से स्कोर किया जाता है, जो व्यक्तिगत छात्रों या छात्रों के समूहों के सापेक्ष प्रदर्शन की तुलना करना संभव बनाता है। मानकीकृत परीक्षण के सबसे सामान्य रूपों के कुछ प्रतिनिधि उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

उपलब्धि परीक्षण (Achievement tests) स्कूल में सीखे गए ज्ञान और कौशल को मापने या उस शैक्षणिक प्रगति को निर्धारित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जो उन्होंने समय के साथ बनाए हैं।
अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude tests) एक छात्र की बौद्धिक या शारीरिक प्रयास में सफल होने की क्षमता का अनुमान लगाने का प्रयास करता है, उदाहरण के लिए, गणितीय क्षमता, भाषा दक्षता, अमूर्त तर्क, मोटर समन्वय या संगीत प्रतिभा का मूल्यांकन।
कॉलेज-प्रवेश परीक्षण (College-admissions tests) का उपयोग यह तय करने की प्रक्रिया में किया जाता है कि छात्रों को महाविद्यालय संबन्धी कार्यक्रम (collegiate program) में प्रवेश दिया जाएगा।
मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological tests), बुद्धि परीक्षण सहित, का उपयोग किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं और मानसिक, भावनात्मक, विकासात्मक और सामाजिक विशेषताओं को मापने के लिए किया जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग अक्सर सीखने की अक्षमता या अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की पहचान करने के लिए किया जाता है जो उन्हें विशिष्ट सेवाओं के लिए योग्य बनाते हैं।

2. मानक-संदर्भित या मानकों-आधारित आकलन (Standards-referenced or standards-based assessments) को यह मापने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि छात्रों ने स्थानीय, राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर सीखने के मानकों में वर्णित विशिष्ट ज्ञान और कौशल में कितनी अच्छी तरह से महारत हासिल की है। मानकीकृत परीक्षण और उच्च-दांव परीक्षण विशिष्ट शिक्षण मानकों पर आधारित हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं, और अलग-अलग स्कूल और शिक्षक अपने स्वयं के मानकों-संदर्भित या मानकों-आधारित आकलन का विकास कर सकते हैं।

3. सामान्य मूल्यांकन (Common assessments) का उपयोग किसी स्कूल या जिले में यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि सभी शिक्षक अधिक, सुसंगत, विश्वसनीय और प्रभावी तरीके से छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन कर रहे हैं। सामान्य मूल्यांकन का उपयोग शिक्षकों के बीच शिक्षण और मूल्यांकन में अधिक स्थिरता को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है, जो एक ही सामग्री को पढ़ाने के लिए जिम्मेदार हैं, उदा- एक ग्रेड स्तर, विभाग, या सामग्री क्षेत्र के भीतर। वे शिक्षकों को कई कक्षाओं, पाठ्यक्रमों, स्कूलों और / या सीखने के अनुभवों में प्रदर्शन के परिणामों

की तुलना करने की अनुमति देते हैं (जो कि संभव नहीं है जब शिक्षक अलग-अलग सामग्री सिखाते हैं और व्यक्तिगत रूप से अपने स्वयं के अलग-अलग मूल्यांकन विकसित करते हैं)। सामान्य मूल्यांकन समान प्रारूप साझा करते हैं और सुसंगत तरीके से प्रशासित होते हैं - जैसे, शिक्षक छात्रों को मूल्यांकन पूरा करने के लिए एक ही निर्देश और एक ही समान समय अवधि देते हैं, या वे परिणामों की व्याख्या करने के लिए एक ही स्कोरिंग गाइड का उपयोग करते हैं।

4. प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance assessments) के अंतर्गत आमतौर पर छात्रों को एक जटिल कार्य पूरा करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि लेखन कार्य, विज्ञान प्रयोग, भाषण, प्रस्तुति, प्रदर्शन, या लंबी अवधि की परियोजना (लांग-टर्म प्रोजेक्ट)। उदाहरण के लिए शिक्षक अक्सर मूल्यांकन किए गए सामान्य मूल्यांकन, स्कोरिंग गाइड, हेडिंग (रुब्रिक्स) और अन्य तरीकों का उपयोग करके मूल्यांकन करेंगे कि क्या छात्रों द्वारा उत्पादित कार्य से पता चलता है कि उन्होंने वह सीखा है जो वे सीखना चाहते थे। प्रदर्शन मूल्यांकन को "प्रामाणिक मूल्यांकन" भी कहा जा सकता है, क्योंकि उन्हें कुछ शिक्षकों द्वारा पारंपरिक परीक्षणों की तुलना में सीखने की उपलब्धि का अधिक सटीक और सार्थक मूल्यांकन माना जाता है।

5. पोर्टफोलियो-आधारित मूल्यांकन (Portfolio-based assessments) अकादमिक कार्य का संग्रह हैं - उदाहरण के लिए, असाइनमेंट, प्रयोगशाला परिणाम, लेखन के नमूने, भाषण, छात्र-निर्मित फिल्में, या कला परियोजनाएं - जो छात्रों द्वारा संकलित की जाती हैं और शिक्षकों द्वारा लगातार तरीकों से मूल्यांकन की जाती हैं। पोर्टफोलियो-आधारित आकलन अक्सर "ज्ञान के शरीर" का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किया जाता है — यानी, समय के साथ विविध ज्ञान और कौशल का अधिग्रहण।

4.6 मूल्यांकन के तरीके (Methods of assessment)-

मूल्यांकन मापने के लिए सीखने के परिणामों के आधार पर तरीके अलग-अलग होंगे। प्रत्यक्ष विधियाँ तब होती हैं जब छात्र यह प्रदर्शित करते हैं कि उन्होंने सीखने का परिणाम या उद्देश्य प्राप्त कर लिया है। अप्रत्यक्ष तरीके हैं जब छात्र (या अन्य) धारणाओं की रिपोर्ट करते हैं कि छात्रों ने कितना अच्छा उद्देश्य या परिणाम प्राप्त किया है।

A. प्रत्यक्ष विधियों के उदाहरण

Capstone पाठ्यक्रम: एक वरिष्ठ संगोष्ठी या नामित मूल्यांकन पाठ्यक्रम हो सकता है। कार्यक्रम सीखने के परिणामों को असाइनमेंट में एकीकृत किया जा सकता है।

केस स्टडीज: एक विशिष्ट घटना में एक व्यवस्थित जांच शामिल है, उदा। व्यक्तिगत, घटना, कार्यक्रम, या प्रक्रिया। डेटा को गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग करते हुए कई तरीकों से एकत्र किया जाता है।

क्लासरूम असेसमेंट: अक्सर अलग-अलग फैकल्टी के लिए डिज़ाइन किया जाता है, जो एक विशिष्ट पाठ्यक्रम के अपने शिक्षण में सुधार करना चाहते हैं। एक कार्यक्रम के लिए छात्र के सीखने के परिणामों का आकलन करने के लिए एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण किया जा सकता है।

सामूहिक पोर्टफोलियो: संकाय विभिन्न कक्षाओं से छात्र के काम के नमूने इकट्ठा करता है और विशिष्ट कार्यक्रम सीखने के परिणामों का आकलन करने के लिए "सामूहिक" का उपयोग करता है। विभागों का मूल्यांकन स्कोरिंग रुब्रिक्स का उपयोग करके किया जा सकता है; विभागों की जांच से पहले उम्मीदों को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

सामग्री विश्लेषण: एक ऐसी प्रक्रिया है जो लिखित दस्तावेजों की सामग्री को वर्गीकृत करती है। विश्लेषण अवलोकन की इकाई की पहचान करने के साथ शुरू होता है, जैसे कि एक शब्द, वाक्यांश या अवधारणा, और फिर सार्थक श्रेणियां बनाना जिससे प्रत्येक आइटम को सौंपा जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक छात्र का कथन है कि "मैंने सीखा कि मैं किसी अन्य संस्कृति से किसी के साथ सहज हो सकता हूँ" को "सकारात्मकता के बारे में सकारात्मक विवरण" की श्रेणी में सौंपा जा सकता है। इस प्रकार की प्रतिक्रिया के बाद हुई घटनाओं की संख्या को एक ही श्रेणी को संबोधित करते हुए तटस्थ या नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से तुलना की जा सकती है।

असाइनमेंट के लिए अंतःस्थापित प्रणाली प्रश्न (Embedded Questions to Assignments) : प्रोग्राम सीखने के परिणामों से संबंधित प्रश्न पाठ्यक्रम परीक्षा के भीतर अंतःस्थापित हैं। उदाहरण के लिए, "अनुसंधान विधियों" के सभी खंडों में आपके कार्यक्रम सीखने के परिणामों से संबंधित प्रश्न या प्रश्नों का सेट शामिल हो सकता है। संकाय स्कोर और परीक्षा को हमेशा की तरह ग्रेड और फिर परीक्षा के प्रश्नों को कॉपी करते हैं जो विश्लेषण के लिए कार्यक्रम सीखने के परिणामों से जुड़े होते हैं।

स्थानीय रूप से विकसित निबंध प्रश्न: संकाय उन निबंध प्रश्नों को विकसित करता है जो कार्यक्रम सीखने के परिणामों के साथ सँखित करते हैं। परिणाम प्राप्त करने से पहले प्रदर्शन की उम्मीदों को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के साथ स्थानीय रूप से विकसित परीक्षाएं (Locally developed essay questions): संकाय एक उद्देश्य परीक्षा का निर्माण करता है जिसे कार्यक्रम सीखने के परिणामों से जोड़ा जाता है। परिणाम प्राप्त करने से पहले प्रदर्शन की उम्मीदों को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

अवलोकन (Observations) : किसी भी सामाजिक घटना के हो सकते हैं, जैसे छात्र प्रस्तुतियाँ, पुस्तकालय में काम करने वाले छात्र, या छात्र सहायता डेस्क पर बातचीत। टिप्पणियों को एक कथा के रूप में या एक उच्च संरचित प्रारूप में दर्ज किया जा सकता है, जैसे कि एक चेकलिस्ट, और उन्हें विशिष्ट व्यावसायिक उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

प्राथमिक विशेषता विश्लेषण (Primary Trait Analysis) : प्राथमिक लक्षणों को परिभाषित करके छात्र असाइनमेंट को स्कोर करने की एक प्रक्रिया है, जिसका मूल्यांकन किया जाएगा, और फिर प्रत्येक विशेषता के लिए स्कोरिंग रूब्रिक लागू किया जाएगा।

चिंतनशील निबंध (Reflective Essays): आम तौर पर पहचाने गए सीखने के परिणामों से संबंधित विषयों पर संक्षिप्त (पांच से दस मिनट) निबंध होते हैं, हालांकि होमवर्क के रूप में सौंपे जाने पर वे लंबे समय तक हो सकते हैं। छात्रों को एक चयनित मुद्दे पर प्रतिबिंबित करने के लिए कहा जाता है। परिणामों का विश्लेषण करने के लिए सामग्री विश्लेषण का उपयोग किया जाता है।

स्कोरिंग रूब्रिक्स (Scoring Rubrics): का उपयोग किसी भी उत्पाद या प्रदर्शन जैसे निबंध, पोर्टफोलियो, रिकॉल, मौखिक परीक्षा, अनुसंधान रिपोर्ट, आदि के लिए समग्र रूप से किया जा सकता है। एक विस्तृत स्कोरिंग रूब्रिक जो स्तरों के बीच भेदभाव करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंड का विकास और स्कोरिंग के लिए उपयोग किया जाता है। आम तौर पर प्रत्येक उत्पाद की समीक्षा करने के लिए दो चूहे का उपयोग किया जाता है और विसंगतियों को हल करने के लिए एक तीसरा रेटर नियुक्त किया जाता है।

मानकीकृत उपलब्धि और स्व-रिपोर्ट परीक्षण (Standardized Achievement and Self-Report Tests) : मानकीकृत परीक्षण चुनें जो आपके विशिष्ट कार्यक्रम सीखने के परिणामों से जुड़े हों। डेटा का स्कोर, संकलन और विश्लेषण करना। समय-समय पर उपलब्धि को ट्रैक करने के लिए स्थानीय मानदंड विकसित करें और राष्ट्रीय मानदंडों का उपयोग करके देखें कि आपके छात्र अन्य परिसरों में उनकी तुलना कैसे करते हैं।

B. अप्रत्यक्ष तरीकों के उदाहरण

साक्षात्कार से बाहर निकलना (Exit Interviews): विश्वविद्यालय छोड़ने वाले छात्रों, आमतौर पर स्नातक छात्रों का साक्षात्कार लिया जाता है या प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण किया जाता है। प्राप्त डेटा किसी संस्थान या कार्यक्रम की ताकत और कमजोरियों को संबोधित कर सकता है और प्रासंगिक अवधारणाओं, सिद्धांतों या कौशल का आकलन कर सकता है।

फोकस समूह (Focus Groups): 6-10 उत्तरदाताओं के सजातीय समूहों के बीच सावधानीपूर्वक नियोजित चर्चाओं की एक श्रृंखला है, जिन्हें उनकी मान्यताओं, दृष्टिकोणों और अनुभवों के बारे में खुले-समाप्त प्रश्नों की सावधानीपूर्वक निर्मित श्रृंखला से पूछा जाता है। सत्र आम तौर पर दर्ज किया जाता है और बाद में रिकॉर्डिंग को विश्लेषण के लिए स्थानांतरित किया जाता है। आंकड़ों का अध्ययन प्रमुख मुद्दों और प्रतिनिधि टिप्पणियों के साथ-साथ पुनरावर्ती विषयों के लिए किया जाता है।

साक्षात्कार (Interviews) : एक व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ बातचीत या प्रत्यक्ष पूछताछ है। साक्षात्कार व्यक्ति या टेलीफोन पर आयोजित किए जा सकते हैं। एक साक्षात्कार की लंबाई 20 मिनट से एक घंटे से अधिक हो सकती है। साक्षात्कारकर्ताओं को सहमत-प्रक्रियाओं (प्रोटोकॉल) का पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

मेट्रिसेस/सांचा (Matrices) : मेट्रिसेस/सांचा का उपयोग कार्यक्रम उद्देश्यों और पाठ्यक्रमों, पाठ्यक्रम असाइनमेंट, या पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम के बीच संबंधों को संक्षेप में करने के लिए किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी उद्देश्यों को पाठ्यक्रम में संरचित किया गया है या नहीं।

सर्वेक्षण: आमतौर पर ओपन एंडेड और क्लोज एंडेड प्रश्नों के साथ उपयोग किया जाता है। बंद किए गए सवालों के जवाब की प्रदान की गई सूची से सवाल का जवाब देने के लिए उत्तरदाताओं की आवश्यकता होती है। आमतौर पर, सूची एक प्रगतिशील पैमाने है जो निम्न से उच्च तक होती है, या दृढ़ता से असहमत होने के लिए दृढ़ता से सहमत होती है।

प्रतिलिपि विश्लेषण/ ट्रांसक्रिप्ट एनालिसिस (Transcript Analysis): यह देखने के लिए जांच की जाती है कि क्या छात्रों ने अपेक्षित नामांकन पैटर्न का पालन किया है या विशिष्ट शोध प्रश्नों की जांच करने के लिए, जैसे कि स्थानांतरण और नए छात्रों के बीच अंतर का पता लगाने के लिए।

4.7 सारांश

शिक्षा में, शब्द मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के तरीकों या उपकरणों को संदर्भित करता है जो शिक्षक शैक्षिक तत्परता, सीखने की प्रगति, कौशल अधिग्रहण, या छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करने, मापने और दस्तावेज करने के लिए उपयोग करते हैं। मूल्यांकन छात्रों के सीखने और विकास के बारे में अनुमान लगाने के लिए व्यवस्थित आधार है। यह छात्रों के सीखने और विकास को बढ़ाने के लिए जानकारी को परिभाषित करने, चयन करने, डिजाइन करने, एकत्र करने, विश्लेषण करने, व्याख्या करने और उपयोग करने की प्रक्रिया है। (स्टूडेंट लर्निंग एंड डेवलपमेंट का आकलन: एर्विन द्वारा कॉलेज के परिणामों को निर्धारित करने के सिद्धांतों, लक्ष्यों और तरीकों के लिए एक गाइड)। शिक्षार्थी केंद्रित मूल्यांकन के चार मौलिक तत्व हैं। इच्छित सीखने के परिणामों का विवरण

तैयार करना , मूल्यांकन उपायों का विकास या चयन, प्रत्यक्ष आकलन, अप्रत्यक्ष आकलन, अप्रत्यक्ष आकलन, परिणाम के लिए अग्रणी अनुभव का निर्माण, शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए मूल्यांकन, परिणामों का विवेचन और उपयोग करना

4.8 सहायक सामग्री

<https://www.westminster.edu/about/accreditation-assessment/definition.cfm>

<https://www.edglossary.org/assessment/>

<https://ivypanda.com/essays/interviews-questionnaires-and-observations/>

<https://education.nsw.gov.au/teaching-and-learning/professional-learning/evaluation-resource-hub/collecting-data/observation#Advantages0>

<https://academicprograms.calpoly.edu/content/assessment-methods>

<http://cei.ust.hk/teaching-resources/action-research/observation-techniques>

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. छात्र मूल्यांकन के प्रकार और उद्देश्य के बारे में बताइये?
2. मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों का वर्णन कीजिये?

इकाई 5 - मूल्यांकन - प्रकार और दृष्टिकोण (Assessment - Types and approaches)

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 उद्देश्य
- 5.3 परिचय
- 5.4 सामान्य/मानक-संदर्भित परीक्षण
- 5.5 मानदंड-संदर्भित परीक्षण
- 5.6 पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन
- 5.7 सारांश
- 5.8 सहायक सामग्री
- 5.9 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

आकलन महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बच्चे को ज्ञान, कौशल और समझ प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करते हैं। चाहिए। मानकीकृत और अनौपचारिक उपकरणों और प्रक्रियाओं सहित कई उपायों के उपयोग के माध्यम से डेटा के संग्रह को संदर्भित करने के लिए मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है। इन उपायों से एक व्यक्तिगत छात्र के बारे में व्यापक मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा प्राप्त होता है। प्रस्तुत इकाई में आप मानक-संदर्भित परीक्षण, मानदंड-संदर्भित परीक्षण, पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे। इन परीक्षणों और मूल्यांकन के विभिन्न लक्ष्यों और इनके परीक्षण के समर्थन के प्रति दिये गये कथनों के बारे में अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

सामान्य/मानक-संदर्भित परीक्षण के बारे में अवगत हो पायेंगे।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण के बारे में जान पायेंगे।

पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन के बारे में अवगत हो सकेंगे।

5.3 परिचय

विभिन्न अक्षमता वाले छात्रों का आकलन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कुछ छात्र, जैसे कि एडीएचडी और ऑटिज़्म वाले, परीक्षण स्थितियों से जूझते हैं और ऐसे आकलन को पूरा करने के लिए लंबे समय तक काम में नहीं रह सकते हैं। लेकिन आकलन महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बच्चे को ज्ञान, कौशल और समझ प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करते हैं। असाधारणताओं वाले अधिकांश शिक्षार्थियों के लिए, एक पेपर-एंड-पेंसिल कार्य मूल्यांकन रणनीतियों की सूची में सबसे नीचे होना चाहिए। मानकीकृत और अनौपचारिक उपकरणों और प्रक्रियाओं सहित कई उपायों के उपयोग के माध्यम से डेटा के संग्रह को संदर्भित करने के लिए मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है। इन उपायों से एक व्यक्तिगत छात्र के बारे में व्यापक मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा प्राप्त होता है। निरंतर प्रगति की निगरानी के परिणामों को व्यक्तिगत और कक्षा के आकलन के हिस्से के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आकलन डेटा के इन स्रोतों में से कई से जानकारी यह सुनिश्चित करने में मदद करने के लिए उपयोग की जानी चाहिए कि व्यापक आकलन और मूल्यांकन यह दर्शाता है कि एक व्यक्तिगत छात्र कैसा प्रदर्शन कर रहा है।

5.4 सामान्य/मानक-संदर्भित परीक्षण Norm-Referenced Tests (NRT)-

सामान्य/मानक-संदर्भित परीक्षण का अर्थ

सामान्य-संदर्भित, मानकीकृत परीक्षणों को संदर्भित करता है जो एक दूसरे के संबंध में परीक्षार्थियों की तुलना और रैंक करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। एक मानक-संदर्भित परीक्षण शिक्षा में उपयोग किया जाने वाला एक प्रकार का मूल्यांकन है जो शिक्षकों को छात्र के अपने सहकर्मी समूह में किसी और के छात्र के परिणामों की तुलना करने की अनुमति देता है। इसके अलावा, वे सैद्धांतिक औसत के आधार पर प्रदर्शन को मापते हैं। इसके अलावा, यह एक सांख्यिकीय रूप से चयनित समूह के परिणाम की तुलना करता है।

आम तौर पर संदर्भित परीक्षण रिपोर्ट करते हैं कि क्या परीक्षार्थियों ने एक काल्पनिक औसत छात्र की तुलना में बेहतर या बुरा प्रदर्शन किया है, जो कि समान रूप से एक ही उम्र या ग्रेड स्तर के परीक्षार्थियों

के सांख्यिकीय रूप से चयनित समूह के प्रदर्शन परिणामों के खिलाफ स्कोर की तुलना करके निर्धारित किया जाता है, जो परीक्षा पहले ही ली जा चुकी है। मानदंड-संदर्भित स्कोर की गणना को "मानक प्रक्रिया" कहा जाता है और तुलना समूह को "मानक समूह" के रूप में जाना जाता है। सामान्य रूप से समूह में आमतौर पर पिछले परीक्षार्थियों का केवल एक छोटा सा उपसमुच्चय होता है, न कि सभी या पिछले परीक्षार्थियों का।

यह छात्रों की स्थिति निर्धारित करता है। साथ ही, यह उनके प्रदर्शन का आकलन करता है और उनके व्यवहार को मापता है। यह पहचानता है कि छात्रों का परीक्षण दूसरों की तुलना में बेहतर या बुरा है।

सामान्य-संदर्भित परीक्षण अक्सर एक बहु-विकल्प प्रारूप का उपयोग करते हैं, हालांकि कुछ में खुले-बंद, लघु-उत्तर वाले प्रश्न शामिल होते हैं। वे आमतौर पर राष्ट्रीय मानकों के कुछ प्रारूप पर आधारित होते हैं, न कि स्थानीय स्तर पर निर्धारित मानकों या पाठ्यक्रम के आधार पर। IQ परीक्षण सबसे प्रसिद्ध मानक-संदर्भित परीक्षणों में से हैं, जैसा कि विकासात्मक-स्क्रीनिंग परीक्षण हैं, जिनका उपयोग छोटे बच्चों में सीखने की अक्षमताओं की पहचान करने या विशेष-शिक्षा सेवाओं के लिए पात्रता निर्धारित करने के लिए किया जाता है। कुछ प्रमुख मानक-संदर्भित परीक्षणों में कैलिफ़ोर्निया अचीवमेंट टेस्ट, आयोवा टेस्ट ऑफ़ बेसिक स्किल्स, स्टैनफोर्ड अचीवमेंट टेस्ट और टेरानोवा शामिल हैं।

निम्नलिखित कुछ प्रतिनिधि उदाहरण हैं कि कैसे मानक-संदर्भित परीक्षण और स्कोर का उपयोग किया जा सकता है:

- स्कूल-पूर्व या बालवाड़ी के लिए एक छोटे बच्चे की तत्परता निर्धारित करने के लिए। ये परीक्षण मौखिक-भाषा की क्षमता, दृश्य-मोटर कौशल और संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास को मापने के लिए डिज़ाइन किए जा सकते हैं।
- बुनियादी पढ़ने, लेखन और गणित कौशल का मूल्यांकन करने के लिए। परीक्षण के परिणामों का उपयोग विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जैसे कि शैक्षणिक प्रगति को मापना, पाठ्यक्रम का काम करना, ग्रेड पदोन्नति के लिए तत्परता का निर्धारण करना या अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता की आवश्यकता की पहचान करना।
- बौद्धिक रूप अक्षम अथवा अधिगम अक्षमताओं की पहचान करने के लिए, जैसे कि आत्मकेंद्रित, डिस्लेक्सिया, या अशाब्दिक शिक्षा विकलांगता, या विशेष-शिक्षा सेवाओं के लिए पात्रता निर्धारित करने के लिए।

- कार्यक्रम-पात्रता या कॉलेज-प्रवेश निर्णय लेने के लिए (इन मामलों में, सामान्य रूप से संदर्भित स्कोर का मूल्यांकन आमतौर पर एक छात्र के बारे में अन्य जानकारी के साथ किया जाता है)। SAT (Scholastic Assessment Test- स्कूली मूल्यांकन परीक्षा) या ACT (American College Testing- अमेरिकन कॉलेज परीक्षण) परीक्षा में स्कोर एक सामान्य उदाहरण है।

लक्ष्य (Goal) –

1. NRT को वैश्विक भाषा क्षमताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किया गया है, अर्थात् समग्र अंग्रेजी भाषा दक्षता।
2. इस तरह के परीक्षण पर प्रत्येक छात्र के स्कोर को अन्य सभी छात्रों के स्कोर के सापेक्ष व्याख्या की जाती है जिन्होंने परीक्षा दी थी।
3. यह तुलना सामान्य-वितरण की अवधारणा के संदर्भ में की जाती है।
4. NRT का उद्देश्य छात्रों को अंकों के एक निरंतरता के साथ बाहर फैलाना है ताकि कम क्षमता वाले लोग सामान्य-वितरण के एक छोर पर हों, जबकि उच्च क्षमताओं वाले लोग दूसरे छोर पर हों।
5. जबकि छात्र एनआरटी (उदाहरण के लिए, बहु-विकल्प, टी-एफ) पर प्रश्नों के सामान्य प्रारूप को जान सकते हैं, वे आम तौर पर परीक्षण से पहले यह नहीं जान पाएंगे कि उन प्रश्नों द्वारा क्या विशिष्ट सामग्री या कौशल कवर किया जाएगा।
6. कई मानकीकृत शैक्षिक परीक्षण NRT हैं।
7. मानक-संदर्भित परीक्षण में, लक्ष्य आम तौर पर एक दूसरे के सापेक्ष उनके प्रदर्शन की तुलना करने के लिए परीक्षार्थियों के पूरे सेट को रैंक करने के लिए होता है।
8. एनआरटी पर सफलता के लिए एक परीक्षार्थी का अवसर परीक्षण लेने वाले अन्य व्यक्तियों के प्रदर्शन के सापेक्ष होता है।
9. "आदर्श समूह" आम तौर पर व्यक्तियों का एक बड़ा समूह होता है जो उन व्यक्तियों के समान होते हैं जिनके लिए परीक्षण डिज़ाइन किया गया है।

10. एनआर परीक्षणों के विकास में, मानक समूह को परीक्षण दिया जाता है, और फिर इस समूह के प्रदर्शन की विशेषताओं, या मानदंडों का उपयोग परीक्षण लेने वाले अन्य छात्रों के प्रदर्शन की व्याख्या के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में किया जाता है।

11. प्रदर्शन विशेषताओं, या मानदंडों को आमतौर पर संदर्भ बिंदुओं के रूप में सबसे अधिक उपयोग किया जाता है, या समूह का औसत स्कोर है, और एसडी, जो इस बात का सूचक है कि समूह के स्कोर कैसे फैलते हैं।

5.5 मानदंड-संदर्भित परीक्षण Criterion-Referenced Test (CRT)

मानदंड-संदर्भित परीक्षण और आकलन पूर्व निर्धारित मानदंडों या सीखने के मानकों के एक निश्चित सेट के प्रति छात्र के प्रदर्शन को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं यानी, संक्षिप्त, लिखित विवरण जो छात्रों को उनकी शिक्षा के विशिष्ट चरण में जानने और करने में सक्षम हैं। प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा में, मानदंड-संदर्भित परीक्षण का उपयोग यह मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है कि छात्रों ने ज्ञान का एक विशिष्ट भाग सीखा है या एक विशिष्ट कौशल सेट हासिल किया है। उदाहरण के लिए पाठ्यक्रम एक कोर्स, शैक्षणिक कार्यक्रम या सामग्री क्षेत्र में पढ़ाया जाता है।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण अक्सर छात्रों को "बुनियादी," "कुशल" और "उन्नत" जैसी श्रेणियों में रखने के लिए "कट स्कोर" का उपयोग करते हैं।

यदि छात्र स्थापित अपेक्षाओं पर या उससे ऊपर प्रदर्शन करते हैं - उदाहरण के लिए, कुछ निश्चित प्रश्नों के सही उत्तर देकर - वे परीक्षा पास करेंगे, अपेक्षित मानकों को पूरा करेंगे, या "कुशल" माने जाएंगे।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण पर, परीक्षा लेने वाला प्रत्येक छात्र सैद्धांतिक रूप से असफल हो सकता है यदि वे अपेक्षित मानक को पूरा नहीं करते हैं; वैकल्पिक रूप से, प्रत्येक छात्र उच्चतम संभव अंक अर्जित कर सकता है। मानदंड-संदर्भित परीक्षणों पर, यह न केवल संभव है, बल्कि वांछनीय है कि प्रत्येक छात्र के लिए परीक्षा उत्तीर्ण करना या एक पूर्ण स्कोर अर्जित करना है।

एक मानदंड-संदर्भित परीक्षण को कुछ मानक या मानदंडों के प्रति छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन को मापने के लिए डिज़ाइन किया गया है। छात्रों को परीक्षा शुरू करने से पहले यह मानक या मानदंड पूर्व निर्धारित है। स्कूल या जिले एक मानक का चयन करते हैं। छात्र का स्कोर तब उन प्रगति को दर्शाता है जो उन्होंने सहमत-मानक की ओर की है - यदि वे कम हो जाते हैं, तो उन्हें मानक की ओर काम करना जारी रखना चाहिए। एक उदाहरण: जब आप अपना तापमान लेते हैं, तो स्वीकृत स्वस्थ मानक 98.6 डिग्री फ़ारेनहाइट होता है। यदि आपका तापमान अधिक है, तो आप स्वास्थ्य के लिए मानक को पूरा नहीं कर रहे हैं और संभवतः बीमार हैं।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण की तुलना ड्राइवर-लाइसेंस परीक्षाओं से की गई है, जिसके लिए लाइसेंस प्राप्त करने के लिए न्यूनतम पासिंग स्कोर प्राप्त करने के लिए ड्राइवरों की आवश्यकता होगी।

मानदंड-संदर्भित परीक्षणों में बहुविकल्पीय प्रश्न, सही-गलत प्रश्न, "मुक्त-बंद" (open-ended) प्रश्न (जैसे, प्रश्न जो छात्रों को एक छोटी प्रतिक्रिया या एक निबंध लिखने के लिए कहते हैं), या प्रश्न प्रकारों के संयोजन शामिल हो सकते हैं। व्यक्तिगत शिक्षक एक विशिष्ट पाठ्यक्रम में उपयोग के लिए परीक्षण डिजाइन कर सकते हैं, या वे बड़ी कंपनियों के लिए विशेषज्ञों की टीमों द्वारा बनाए जा सकते हैं, जिनके पास शिक्षा के राज्य विभागों के साथ अनुबंध हैं। मानदंड-संदर्भित परीक्षण उच्च-दांव परीक्षण हो सकते हैं - अर्थात्, ऐसे परीक्षण जिनका उपयोग छात्रों, शिक्षकों, स्कूलों, या जिलों के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए किया जाता है - या वे व्यक्तिगत छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को मापने के लिए "न्यून-दांव परीक्षण" हो सकते हैं। सीखने की समस्याओं की पहचान करें, या अनुदेशात्मक समायोजन को सूचित करें।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उत्तीर्ण स्कोर - या "कट-ऑफ स्कोर" - मानदंड-संदर्भित परीक्षण किसी व्यक्ति या समूहों द्वारा किए गए निर्णय-पुकार हैं। यह सैद्धांतिक रूप से संभव है, उदाहरण के लिए, एक दी गई परीक्षण-विकास समिति, अगर यह अलग-अलग पृष्ठभूमि और दृष्टिकोण वाले अलग-अलग व्यक्तियों से बनी होती, तो एक निश्चित परीक्षण के लिए अलग-अलग पासिंग स्कोर निर्धारित किए जाते। उदाहरण के लिए, एक समूह यह निर्धारित कर सकता है कि न्यूनतम उत्तीर्ण स्कोर 70 प्रतिशत सही उत्तर है, जबकि दूसरा समूह कट-ऑफ स्कोर 75 प्रतिशत सही पर स्थापित कर सकता है।

व्यक्तिगत शिक्षकों द्वारा बनाए गए मानदंड-संदर्भित परीक्षण भी पब्लिक स्कूलों में बहुत आम हैं। उदाहरण के लिए, एक इतिहास शिक्षक द्वितीय विश्व युद्ध पर एक इकाई की समझ और अवधारण का मूल्यांकन करने के लिए एक परीक्षण तैयार कर सकता है। इस मामले में मापदंड में युद्ध के कारण और समय शामिल हो सकते हैं, जो राष्ट्र शामिल थे, बड़ी लड़ाई की तारीखें और परिस्थितियां और कुछ नेताओं के नाम और भूमिकाएं। शिक्षक मानदंडों की छात्र समझ का मूल्यांकन करने और न्यूनतम उत्तीर्ण स्कोर निर्धारित करने के लिए एक परीक्षण डिजाइन कर सकता है।

जबकि मानदंड-संदर्भित परीक्षण स्कोर अक्सर प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए जाते हैं, और कई में न्यूनतम उत्तीर्ण स्कोर होते हैं, परीक्षा परिणाम भी वैकल्पिक तरीकों से स्कोर या रिपोर्ट किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, परिणामों को व्यापक उपलब्धि श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है - जैसे कि "बुनियादी से नीचे," "बुनियादी," "कुशल," और "उन्नत" - जो 1-5 संख्यात्मक पैमाने पर रिपोर्ट करते हैं, जिसमें संख्या उपलब्धि के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करती है। न्यूनतम उत्तीर्ण अंकों

के साथ, प्रवीणता स्तर व्यक्तियों या समूहों द्वारा किए गए निर्णय आधारित होते हैं जो प्रवीणता के स्तर को संशोधित करके या कम करके चुन सकते हैं।

निम्नलिखित कुछ प्रतिनिधि उदाहरण हैं कि मानदंड-संदर्भित परीक्षण और स्कोर का उपयोग कैसे किया जा सकता है:

- यह निर्धारित करने के लिए कि छात्रों ने अपेक्षित ज्ञान और कौशल सीखा है या नहीं। यदि ग्रेड-प्रमोशन या डिप्लोमा पात्रता के बारे में निर्णय लेने के लिए मानदंड-संदर्भित परीक्षणों का उपयोग किया जाता है, तो उन्हें "उच्च-दांव परीक्षण" माना जाएगा।
- यह निर्धारित करने के लिए कि क्या छात्रों के पास अधिगम-अंतराल या अकादमिक कमी हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है।
- एक पाठ्यक्रम, शैक्षणिक कार्यक्रम या शिक्षण अनुभव की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए "पूर्व-परीक्षण" और "उत्तर-परीक्षण" ("individualized education plan") का उपयोग करके शिक्षण अवधि की अवधि में सीखने की प्रगति को मापने के लिए।
- नौकरी के प्रदर्शन के मूल्यांकन में परीक्षण के परिणामों को विभाजित करके शिक्षकों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- विकलांग छात्रों के लिए "व्यक्तिगत शिक्षा योजना" में वर्णित लक्ष्यों और उद्देश्यों की दिशा में प्रगति को मापने के लिए।
- यह निर्धारित करने के लिए कि कोई छात्र या शिक्षक उपाधि या प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए योग्य है या नहीं।
- छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को मापने के लिए, आमतौर पर स्कूलों और जिलों के बीच अकादमिक प्रदर्शन की तुलना करने के लिए।
- किसी दिए गए देश में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को मापने के लिए, आमतौर पर राष्ट्रों के बीच अकादमिक प्रदर्शन की तुलना करने के लिए।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण भी शिक्षकों और स्कूलों द्वारा मानदंड /प्रवीणता-आधारित सीखने का अभ्यास करने के लिए उपयोग किया जाता है, वह शब्द जो निर्देश, मूल्यांकन, ग्रेडिंग और शैक्षणिक

रिपोर्टिंग की प्रणालियों को संदर्भित करता है, जो उन छात्रों के ज्ञान और कौशल की महारत का प्रदर्शन करने पर आधारित होते हैं जिनसे उन्हें सीखने की उम्मीद होती है। इससे पहले कि वे अगले पाठ के लिए आगे बढ़ें, अगले ग्रेड स्तर तक पदोन्नत हो जाएं, या एक डिप्लोमा प्राप्त करें। ज्यादातर मामलों में, मानदंड-आधारित प्रणालियां अकादमिक अपेक्षाओं को निर्धारित करने और किसी दिए गए पाठ्यक्रम, सामग्री क्षेत्र या ग्रेड स्तर में "मानदंड/प्रवीणता" को परिभाषित करने के लिए राज्य सीखने के मानकों का उपयोग करती हैं। मानदंड-संदर्भित परीक्षण मानकों के संबंध में शैक्षणिक प्रगति और उपलब्धि को मापने के लिए उपयोग की जाने वाली एक विधि है।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण के समर्थन के प्रति दिये गये कुछ तर्क :-

- ये परीक्षण आदर्श-संदर्भित परीक्षाओं की तुलना में सीखने की प्रगति को मापने के लिए बेहतर हैं, और वे शिक्षकों को ऐसी जानकारी देते हैं जिसका उपयोग वे शिक्षण और स्कूल के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं।
- मानक-संदर्भित परीक्षणों (Norm-Referenced Tests) की तुलना में परीक्षण छात्रों के लिए उचित हैं क्योंकि वे छात्रों के सापेक्ष प्रदर्शन की तुलना नहीं करते हैं; वे मानदंडों के एक सामान्य और लगातार लागू सेट के खिलाफ उपलब्धि का मूल्यांकन करते हैं।
- परीक्षण सभी छात्रों के लिए समान शिक्षण मानक लागू करते हैं, जो अन्य छात्रों की तरह ही उच्च प्रत्याशित छात्रों को वंचित या वंचित कर सकते हैं। ऐतिहासिक रूप से, वे छात्र जो अंग्रेजी में कुशल नहीं हैं, कम आय वाले घरों के छात्र हैं, और शारीरिक या सीखने की अक्षमता वाले छात्र कम शैक्षणिक उपलब्धि से पीड़ित हैं, और कई शिक्षकों का तर्क है कि अंडरपरफॉर्मर्स के इस पैटर्न में कम से कम कुछ अंश, कम शैक्षणिक अपेक्षाओं से। इन छात्र समूहों के लिए शैक्षणिक अपेक्षाओं को बढ़ाना, और यह सुनिश्चित करना कि वे उन अपेक्षाओं तक पहुँचते हैं, माना जाता है कि यह शिक्षा में अधिक इक्विटी को बढ़ावा देता है।
- परीक्षण का निर्माण ओपन एंडेड प्रश्नों और कार्यों के साथ किया जा सकता है, जिनके लिए छात्रों को उच्च स्तर के संज्ञानात्मक कौशल जैसे महत्वपूर्ण सोच, समस्या को हल करने, तर्क करने, विश्लेषण या व्याख्या करने की आवश्यकता होती है। बहुविकल्पी और सही-गलत सवाल याद और तथ्यात्मक याद को बढ़ावा देते हैं, लेकिन वे छात्रों से यह पूछने के लिए

नहीं पूछते हैं कि उन्होंने एक चुनौतीपूर्ण समस्या को हल करने के लिए क्या सीखा है या उदाहरण के लिए एक जटिल मुद्दे के बारे में समझदारी से लिखें।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण के आलोचकों द्वारा दिए गए तर्क निम्नलिखित हैं:

- परीक्षण केवल उन मानकों के रूप में सटीक या निष्पक्ष हैं, जिन पर वे आधारित हैं। यदि मानकों का अस्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, या यदि वे मूल्यांकन किए जा रहे छात्रों के लिए बहुत कठिन या बहुत आसान हैं, तो संबंधित परीक्षा परिणाम त्रुटिपूर्ण मानकों को प्रतिबिंबित करेंगे। ग्यारहवीं कक्षा में आयोजित एक परीक्षा जो आठवीं कक्षा में ज्ञान और कौशल के छात्रों के स्तर को दर्शाती है, एक सामान्य उदाहरण होगा। वैकल्पिक रूप से, परीक्षण सीखने के मानकों के साथ उचित रूप से "संरेखित" नहीं किया जा सकता है, भले ही मानक स्पष्ट रूप से लिखे गए हों, उम्र उपयुक्त हो, और सही ज्ञान और कौशल पर ध्यान केंद्रित किया जाए, परीक्षण मानकों की उपलब्धि के लिए पर्याप्त रूप से डिज़ाइन नहीं किया जा सकता है।
- प्रवीणता के स्तर को निर्धारित करने और मानदंड-संदर्भित परीक्षणों पर स्कोर पारित करने की प्रक्रिया अत्यधिक व्यक्तिपरक या भ्रामक हो सकती है - और संभावित परिणाम महत्वपूर्ण हो सकते हैं, खासकर यदि परीक्षण का उपयोग छात्रों, शिक्षकों और स्कूलों के बारे में उच्च-स्तरीय निर्णय लेने के लिए किया जाता है। क्योंकि रिपोर्ट की गई "प्रवीणता/ मानदंड" प्रवीणता/ मानदंड का निर्धारण करने के लिए उपयोग किए गए मानकों या कट-ऑफ स्कोर के सीधे संबंध में उगती है और गिरती है, यह संभव है कि मानकों और उत्तीर्ण अंकों को कम करके या कम करके परीक्षा परिणामों की धारणा और व्याख्या में हेरफेर संभव है। और जब परीक्षण स्कोर के आधार पर शिक्षकों का मूल्यांकन किया जाता है, तो उनकी नौकरी की सुरक्षा संभावित भ्रामक या त्रुटिपूर्ण परिणामों पर आराम कर सकती है। यहां तक कि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणालियों की प्रतिष्ठा भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है जब छात्रों का एक बड़ा प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय मूल्यांकन पर "प्रवीणता/ मानदंड" प्राप्त करने में विफल रहता है।
- प्रवीणता के स्तर की व्यक्तिपरक प्रकृति राजनीतिक उद्देश्यों के लिए परीक्षणों का शोषण करने की अनुमति देती है ताकि यह प्रतीत हो सके कि स्कूल वास्तव में बेहतर हैं या बदतर हैं। उदाहरण के लिए, कुछ राज्यों पर "प्रवीणता" प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए मानकीकृत परीक्षणों की प्रवीणता मानकों को कम करने का आरोप लगाया गया है, और इस

तरह के परिणामों से बर्चे- नकारात्मक प्रेस, सार्वजनिक आलोचना, बड़ी संख्या में छात्रों को वापस आयोजित किया जा रहा है या डिप्लोमा से वंचित किया गया है (कहा गया है कि टेस्ट स्कोर पर बेस ग्रेजुएशन की पात्रता) -इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में छात्र अपेक्षित या आवश्यक दक्षता स्तर हासिल करने में असफल हो सकते हैं।

- यदि परीक्षण मुख्य रूप से बहुविकल्पीय प्रश्नों का उपयोग करते हैं - जो, मानकीकृत परीक्षण के मामले में, तेजी से और कम खर्चीला बना देता है क्योंकि यह मानव स्कोरर के बजाय कंप्यूटर द्वारा किया जा सकता है - वे स्कूलों में रट कर याद करना और तथ्यात्मक प्रत्यास्मरण को बढ़ावा देंगे, जिसकी बजाय उच्च-क्रम की सोच कौशल छात्रों को कॉलेज, करियर और वयस्क जीवन में आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, मानकीकृत परीक्षण का अति प्रयोग या दुरुपयोग "परीक्षण को पढ़ाने" के रूप में ज्ञात एक घटना को प्रोत्साहित कर सकता है, जिसका अर्थ है कि शिक्षक परीक्षण की तैयारी पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं और अन्य महत्वपूर्ण विषयों और कौशल की कीमत पर अकादमिक सामग्री जिसका मूल्यांकन मानकीकृत परीक्षणों द्वारा किया जाता है।

मानदंड-संदर्भित बनाम सामान्य-संदर्भित परीक्षण-

सामान्य-संदर्भित परीक्षण परीक्षार्थियों को "घंटीनुमा वक्र", या स्कोर के वितरण के लिए डिजाइन किया गया है, जो जैसा दिखता है, जब रेखांकन होता है, तो घंटी की रूपरेखा - अर्थात्, खराब प्रदर्शन करने वाले छात्रों का एक छोटा प्रतिशत, सबसे अधिक औसत प्रदर्शन, और छोटे प्रतिशत अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रत्येक बार एक घंटीनुमा वक्र का उत्पादन करने के लिए, परीक्षण प्रश्नों को सावधानीपूर्वक परीक्षार्थियों के बीच प्रदर्शन के अंतर को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है - यह निर्धारित करने के लिए नहीं कि क्या छात्रों ने निर्दिष्ट सीखने के मानक, आवश्यक सामग्री, या विशिष्ट कौशल हासिल किए हैं। मानक-संदर्भित परीक्षणों के विपरीत, मानदंड-संदर्भित परीक्षण मानदंडों के एक निश्चित सेट के खिलाफ प्रदर्शन को मापते हैं।

5.6 पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन (Curriculum-Based Assessment)-

पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन, जिसे पाठ्यक्रम-आधारित माप (CBM) भी कहा जाता है, छात्र प्रगति के परीक्षण और मापन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। पाठ्यक्रम-आधारित मापन (CBM) एक विधि है जिसका उपयोग शिक्षक यह जानने के लिए करते हैं कि छात्र गणित, पढ़ने, लिखने और वर्तनी जैसे बुनियादी शैक्षणिक क्षेत्रों में कैसे प्रगति कर रहे हैं।

सीबीएम माता-पिता के लिए सहायक हो सकता है क्योंकि यह उनके बच्चों द्वारा की जा रही प्रगति पर वर्तमान, सप्ताह-दर-सप्ताह की जानकारी प्रदान करता है। जब आपके बच्चे के शिक्षक सीबीएम का उपयोग करते हैं, तो उन्हें पता चलता है कि शैक्षणिक वर्ष के लिए सामग्री सीखने में आपका बच्चा कितनी अच्छी प्रगति कर रहा है। सीबीएम आपके बच्चे को मिलने वाले निर्देश की सफलता पर भी नज़र रखता है - यदि आपके बच्चे का प्रदर्शन उम्मीदों पर खरा नहीं उतर रहा है, तो शिक्षक आपके बच्चे को पढ़ाने के तरीके को बदल देता है और आपके बच्चे को निर्देश की मात्रा और प्रकार खोजने की कोशिश करने के लिए पर्याप्त प्रगति करने की आवश्यकता होती है। शैक्षणिक लक्ष्यों को पूरा करना।

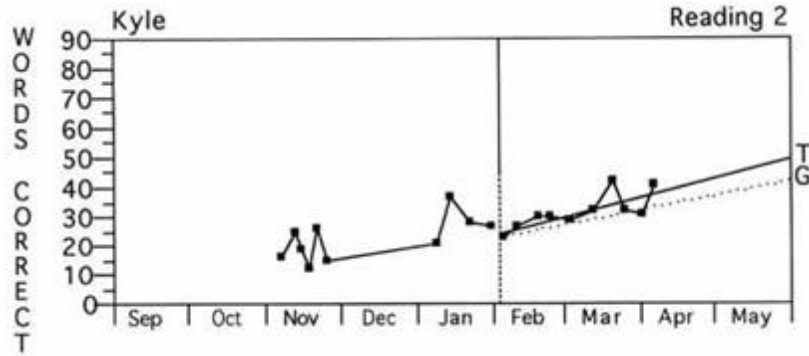
पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन (CBA) एक मूल्यांकन प्रक्रिया है जो सीधे सिखाई गई सामग्री से चयनित शैक्षणिक सामग्री का उपयोग करती है। यह मानदंड-संदर्भित मूल्यांकन का एक रूप है जो छात्र प्रगति और सीखने की चुनौतियों दोनों के शिक्षकों को सूचित करके अनुदेशात्मक कार्यक्रमों के साथ मूल्यांकन को जोड़ता है। सीबीएम की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह प्रत्यक्ष माप का एक रूप प्रदान करता है जहां शिक्षक सटीक रूप से आकलन कर रहे हैं कि वे क्या पढ़ाते हैं, जो हमेशा अप्रत्यक्ष या आदर्श-संदर्भित आकलन के साथ नहीं होता है जो विशेष रूप से विशेष कक्षा में शामिल विशिष्ट सामग्री को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

CBA के विभिन्न दृष्टिकोण प्रत्यक्ष जांच का उपयोग करते हैं, संक्षिप्त जांच जिसमें अन्य जांच या अन्य कक्षा के प्रत्यक्ष कौशल, सामग्री और संदर्भ पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। अधिकांश जांच में 1 से 5 मिनट लगते हैं और आमतौर पर स्कोर करना आसान होता है, जिससे CBA समय के साथ छात्र के प्रदर्शन के निरंतर मूल्यांकन का एक रूप बन जाता है। डेटा का बार-बार संग्रह आम तौर पर दृश्य विश्लेषण के लिए रेखांकन किया जाता है, जो उभरते हुए कौशल, त्रुटि पैटर्न या रीमेडियेशन की आवश्यकता वाले कौशल को लक्षित करने की क्षमता को सक्षम करता है।

सीबीएम की रणनीतियों और प्रक्रियाओं के उदाहरणों में शामिल हैं जैसे पढ़ने में आने वाले मुद्दों, आकलन, प्रतिस्थापन, चूक, उत्क्रमण या पाठ में प्रदर्शित नहीं किए गए शब्दों को पढ़ने के लिए गलत विश्लेषण। अनौपचारिक पठन सूची का उपयोग छात्रों के लिए उपयुक्त पठन सामग्री या पठन समूहों में समूह प्लेसमेंट के लिए किया जा सकता है। विस्तार से छात्र के प्रदर्शन को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करने के लिए चेकलिस्ट और रेटिंग स्केल का उपयोग किया जा सकता है। छात्र के काम के नमूने का संग्रह भी छात्र मूल्यांकन के लिए एक पोर्टफोलियो मूल्यांकन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है जो मूल्यांकन के लिए अंतिम उत्पादों के अतिरिक्त प्रगति पर है।

सीबीएम कैसे काम करता है?

जब सीबीएम का उपयोग किया जाता है, तो प्रत्येक सप्ताह प्रत्येक बच्चे का संक्षिप्त परीक्षण किया जाता है। परीक्षण आम तौर पर 1 से 5 मिनट तक रहता है। शिक्षक बच्चे के स्कोर को खोजने के लिए आवंटित समय में किए गए सही और गलत प्रतिक्रियाओं की संख्या को गिनता है। उदाहरण के लिए, पढ़ने में, बच्चे को एक मिनट के लिए जोर से पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। प्रत्येक बच्चे के अंक एक ग्राफ पर दर्ज किए जाते हैं और उस वर्ष की सामग्री पर अपेक्षित प्रदर्शन की तुलना में। ग्राफ शिक्षक और आप को यह देखने की अनुमति देता है कि बच्चे का प्रदर्शन अपेक्षाओं की तुलना कैसे करता है। (नीचे दिया गया आंकड़ा एक उदाहरण है कि CBM ग्राफ कैसा दिखता है।)



ग्राफ पर स्कोर दर्ज किए जाने के बाद, शिक्षक तय करता है कि क्या उसी तरह से निर्देश जारी रखना है, या इसे बदलना है। वर्ष के लिए लक्ष्य को पूरा करने के लिए बच्चे की सीखने की प्रगति की दर कम होने की स्थिति में बदलाव को कहा जाता है।

शिक्षक किसी भी तरह से निर्देश बदल सकता है। उदाहरण के लिए, वह अनुदेशात्मक समय बढ़ा सकता है, एक शिक्षण तकनीक या सामग्री पेश करने का तरीका बदल सकता है, या एक समूह व्यवस्था बदल सकता है (उदाहरण के लिए, छोटे-समूह अनुदेश के बजाय व्यक्तिगत निर्देश)। परिवर्तन के बाद, आप और शिक्षक - ग्राफ पर साप्ताहिक स्कोर से देख सकते हैं कि क्या परिवर्तन आपके बच्चे की मदद कर रहा है। यदि यह नहीं है, तो शिक्षक अनुदेश में एक और बदलाव की कोशिश कर सकता है, और इसकी सफलता को साप्ताहिक माप के माध्यम से ट्रैक किया जाएगा।

सीबीएम की प्रक्रिया

यह समझने के लिए कि पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन कैसे काम करता है, तीसरी कक्षा को पढ़ाने वाले शिक्षक श्री स्मिथ के मामले पर विचार करते हैं। वह कई वर्षों से अपनी कक्षा में

सीबीएम का उपयोग कर रहा है और उसने पाया है कि यह उसे पिछले तरीकों की तुलना में छात्र की प्रगति की बहुत स्पष्ट तस्वीर देता है। वह अभी भी यूनिट टेस्ट, प्रोजेक्ट और क्विज़ देता है। इस प्रकार के मूल्यांकन अभी भी कक्षा में एक स्थान रखते हैं और प्रत्येक छात्र की प्रगति पर अतिरिक्त जानकारी प्रदान कर सकते हैं।

लेकिन श्री स्मिथ विशिष्ट, बुनियादी कौशल पर अपने छात्रों की अल्पकालिक प्रगति की अधिक बारीकी से निगरानी करने के लिए सीबीएम का उपयोग करते हैं। वह एक विशिष्ट कौशल को लक्षित करने वाले प्रश्नों की जांच, या छोटी गतिविधियों या सेट बनाता है, जो छात्रों की प्रगति का आकलन करता है। इन जांचों को सीधे पाठ्यक्रम सामग्री से लिया जाता है और कक्षा शिक्षक द्वारा बनाया जाता है, बजाय किसी बाहरी कंपनी से।

अपने पढ़ाने की कक्षा में, श्री स्मिथ सीबीएम के कई तरीकों का उपयोग करते हैं जो अनुसंधान द्वारा समर्थित हैं। उदाहरण के लिए, प्रवाह का परीक्षण करने के लिए, श्री स्मिथ पाठ्यक्रम में एक पढ़ने की किताब से छोटे मार्ग चुनता है। वह तब बैठता है और छात्रों को एक-एक करके आता है और 3 मार्ग पढ़ता है, प्रत्येक एक मिनट के लिए। जब छात्र पढ़ रहे हैं, श्री स्मिथ गलतियों को चिह्नित कर रहे हैं, जो छात्र उत्तीर्ण होने की अपनी प्रति पर करता है

जब एक छात्र पैसेज से पढ़ता है, तो वह यह पता लगाकर अपने स्कोर की गणना करता है कि छात्र प्रत्येक पास से कितने शब्द सही ढंग से पढ़ता है और मध्य स्कोर पाता है। वह इसे छात्र का असली स्कोर मानते हैं। श्री स्मिथ तब इस स्कोर की तुलना पिछले स्कोर से कर सकते हैं, उन्हें एक ग्राफ पर रखकर, जो छात्र के प्रवाह विकास की एक स्पष्ट तस्वीर देता है।

यह महत्वपूर्ण क्यों है?

CBA का उपयोग छात्र प्रगति का मूल्यांकन और दस्तावेजीकरण करने के लिए एक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण है जो शिक्षकों को नियोजन, वितरण और शिक्षा के मूल्यांकन के लिए एक मूल्यवान उपकरण प्रदान करता है। CBA की अभी तक चल रही सरल प्रकृति का अर्थ है कि निर्देश को आवश्यकतानुसार बदलते हुए शिक्षक शिक्षण प्रक्रियाओं को नियमित रूप से संशोधित करने और निर्देशात्मक उद्देश्यों को अनुकूलित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

5.7 सारांश

विभिन्न अक्षमता वाले छात्रों का आकलन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। असाधारणताओं वाले अधिकांश शिक्षार्थियों के लिए, एक पेपर-एंड-पेंसिल कार्य मूल्यांकन रणनीतियों की सूची में सबसे नीचे होना चाहिए। सामान्य-संदर्भित, मानकीकृत परीक्षणों को संदर्भित करता है जो एक

दूसरे के संबंध में परीक्षार्थियों की तुलना और रैंक करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। एक मानक-संदर्भित परीक्षण शिक्षा में उपयोग किया जाने वाला एक प्रकार का मूल्यांकन है जो शिक्षकों को छात्र के अपने सहकर्मी समूह में किसी और के छात्र के परिणामों की तुलना करने की अनुमति देता है। मानदंड-संदर्भित परीक्षण और आकलन पूर्व निर्धारित मानदंडों या सीखने के मानकों के एक निश्चित सेट के प्रति छात्र के प्रदर्शन को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं यानी, संक्षिप्त, लिखित विवरण जो छात्रों को उनकी शिक्षा के विशिष्ट चरण में जानने और करने में सक्षम हैं। पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन, जिसे पाठ्यक्रम-आधारित माप (CBM) भी कहा जाता है, छात्र प्रगति के परीक्षण और मापन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। पाठ्यक्रम-आधारित मापन (CBM) एक विधि है जिसका उपयोग शिक्षक यह जानने के लिए करते हैं कि छात्र गणित, पढ़ने, लिखने और वर्तनी जैसे बुनियादी शैक्षणिक क्षेत्रों में कैसे प्रगति कर रहे हैं।

5.8 सहायक सामग्री

<http://www.ldonline.org/article/54711>

<https://www.slideshare.net/Azia1980/nrt-vs-crt>

<https://www.edglossary.org/norm-referenced-test/>

<https://www.renaissance.com/edwords/criterion-referenced-test/>

<https://www.renaissance.com/2018/07/11/blog-criterion-referenced-tests-norm-referenced-tests/>

<https://www.edglossary.org/criterion-referenced-test/>

<https://www.readingrockets.org/article/what-curriculum-based-measurement-and-what-does-it-mean-my-child>

<https://study.com/academy/lesson/curriculum-based-assessment-definition-examples.html>

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. मानक-संदर्भित परीक्षण से आप क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन कीजिये?
2. पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन के विषय में विस्तृत वर्णन कीजिये?

इकाई 6- आंकलन का प्रलेखन, परिणाम व्याख्या और रिपोर्ट लेखन (Documentation of Assessment, result interpretation and report writing)

- 6.1 प्रस्तावना
- 6.2 उद्देश्य
- 6.3 आंकलन-परिचय
- 6.4 आंकलन की योजनाएं
- 6.5 आंकलन योजनाओं और रिपोर्टों का प्रारूप
- 6.6 परिणाम व्याख्या
- 6.7 स्कोरिंग गाइड
- 6.8 सारांश
- 6.9 सहायक सामग्री
- 6.10 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

शिक्षा के लिए एक मूल्यांकन योजना का मूल्य उन साक्ष्यों में निहित है जो समग्र शैक्षिक कार्यक्रम की ताकत और कमजोरियों के बारे में प्रस्तुत करता है, और साक्ष्य में यह परिवर्तन प्रदान करता है। प्रभावी मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण घटक नियोजन प्रक्रिया है। आंकलन /मूल्यांकन पर एक अनुभाग सहित, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए नेतृत्व द्वारा विभागों और कार्यक्रमों की अक्सर आवश्यकता होती है। यह जानकारी वार्षिक रिपोर्ट, या एक अलग दस्तावेज़ का हिस्सा हो सकती है। एक व्यापक कार्यक्रम मूल्यांकन योजना और

रिपोर्ट प्रमुख परिणामों पर विभागों के लिए एक प्रस्तुति के रूप में सरल हो सकती है या यह कार्यक्रम में सीखने के परिणामों का आकलन करने पर प्रोवोस्ट को एक विस्तृत रिपोर्ट हो सकती है। परिणामों की रिपोर्टिंग करते समय, निष्कर्षों को सही ठहराने के लिए निष्कर्षों पर विस्तार से चर्चा करना महत्वपूर्ण है। मूल्यांकन रिपोर्ट में परिणाम पेश करते समय, परिणाम प्रदर्शित करने के लिए माध्यम चुनें जो विभिन्न प्रकार के दर्शकों को सबसे स्पष्ट रूप से परिणाम प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत इकाई में आप आकलन/मूल्यांकन के विषय में, योजनाओं ओर रिपोर्ट के निर्माण के बारे में अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- आंकलन योजना के विषय में जान पायेंगे।
- आंकलन रिपोर्ट के बारे में अवगत हो पायेंगे।
- परिणाम व्याख्या के बारे में जान पायेंगे।
- स्कोरिंग गाइड के बारे में जान पायेंगे।

6.3 आंकलन-परिचय

मानसिक मंदता मोटर, भाषा, सामाजिक, आत्म-देखभाल और संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली में न्यूनता/ कटौती करते हुए सभी विकासात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। इस स्थिति में दौरे या वाक/बोलने में देरी, व्यवहार की समस्याएं और संवेदी या मोटर हानि जैसी अतिरिक्त या संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए ऐसे दृष्टिकोण का आकलन करने की आवश्यकता है जिसमें बहु अनुशासनिक इनपुट शामिल हैं, क्योंकि मानसिक मंदता वाले व्यक्ति के सामने आने वाली चुनौतियाँ समवर्ती हैं। स्थिति की जटिलता को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक मूल्यांकन विधि और उपकरण आवश्यक है जो मानसिक प्रतिशोध वाले व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए एक व्यक्तिगत कार्यक्रम की योजना बना सके। चुनौतियों की जटिल प्रकृति के कारण, मूल्यांकन के लिए एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण की

सिफारिश की जाती है। यह मूल्यांकन में मानदंड और कार्यात्मक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। मानसिक मंदता के लिए कार्यात्मक वर्गीकरण दृष्टिकोण से जारी, मूल्यांकन में ऐसे आइटम शामिल होने चाहिए जो किसी दिए गए मात्रा और मानसिक स्तर के स्तर के लिए कार्यात्मक अनुकूलन के लिए प्रासंगिक और प्रासंगिक हैं। अनुकूली व्यवहार का आकलन, जो एक व्यक्ति को मानसिक विकलांगता से अन्य विकलांगों से अलग करता है, एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है

हेबर अनुकूली व्यवहार का वर्णन करता है, “ वह प्रभाव जिसके साथ व्यक्ति अपने पर्यावरण की प्रकृति और सामाजिक मांगों का सामना करता है ”। अनुकूली व्यवहार तराजू और बुद्धि परीक्षणों के विकास से पहले, सामाजिक अक्षमता का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया गया था कि कोई व्यक्ति मानसिक रूप से मंदा था या नहीं (Nihira, 1969)। मानसिक मंदता वाले व्यक्ति के मूल्यांकन का एक अन्य घटक उसकी कमियों और शक्तियों का एक साथ आकलन करना है। इस दृष्टिकोण को कमी का आकलन करने के लिए विकासात्मक मानदंडों के साथ तुलना की आवश्यकता है और उन्हें अवशिष्ट अनुकूली क्षमता के साथ मेल खाना चाहिए जो कार्यात्मक / अनुकूली पुनर्वास के लिए प्राथमिकता वाले लक्ष्यों का चयन करने में महत्वपूर्ण है।

जब शिक्षक यह देखते हैं कि एक बच्चे ने क्या हासिल किया और पूरा किया, वे विभिन्न प्रकार के आकलन को देखते हैं। यह निर्धारित करने के लिए कि हमारे छात्रों ने क्या हासिल किया है। हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुछ आकलन इस प्रकार हैं: परीक्षण, परियोजनाएं, स्व मूल्यांकन, मौखिक प्रस्तुतियां, विभागों, पत्रिकाओं, टिप्पणियों, निबंध। विभिन्न प्रकार के आकलन का उपयोग करने से शिक्षकों को समग्र रूप से बच्चे की उपलब्धियों और उपलब्धियों को देखने में मदद मिलती है।

आंकलन/ मूल्यांकन शिक्षक की मदद करते हैं:-

- यह देखने के लिए परीक्षण करें कि बच्चा किस स्तर पर है
- यह निर्धारित करें कि क्या बच्चे ने ग्रेड स्तर के मानक बनाए हैं

- निरीक्षण की ताकत और कमजोरियां
- पाठ्यक्रम प्रभावशीलता का मूल्यांकन
- वर्ष दर वर्ष वृद्धि दिखाएं
- शिक्षा में सुधार

शिक्षा के लिए एक मूल्यांकन योजना का मूल्य उन साक्ष्यों में निहित है जो समग्र शैक्षिक कार्यक्रम की ताकत और कमजोरियों के बारे में प्रस्तुत करता है, और साक्ष्य में यह परिवर्तन प्रदान करता है। आपके सभी कार्यों से वास्तविक मूल्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण कारक यह है कि आपने प्रभावी विश्लेषण और व्याख्या प्रथाओं का उपयोग करके आपके द्वारा एकत्र की गई जानकारी का अधिकतम लाभ उठाया है।

साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने और परिवर्तन कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप शैक्षिक प्रथाओं, प्रक्रियाओं और नीतियों को बढ़ाना और सुधार करना मूल्यांकन प्रक्रिया का उद्देश्य है, और मूल्यांकन चक्र का मुख्य क्रैक्स है। प्रक्रिया के परिणामी और परिणामस्वरूप निर्णय लेने का आयोजन, पारदर्शी और जवाबदेह होने के लिए महत्वपूर्ण है।

6.4 आकलन की योजनाएं (Assessment Plans)-

प्रभावी मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण घटक नियोजन प्रक्रिया है। नियोजन महत्वपूर्ण है क्योंकि जब यह होता है, तो मूल्यांकन प्रक्रिया के सभी पहलुओं पर उचित ध्यान दिया जाता है:

- लक्ष्य या परिणाम का आकलन करने के लिए उपयुक्त कार्यप्रणाली
- आंकड़ों के विश्लेषण की जरूरत है और उपलब्ध संसाधन
- प्रतिदर्श (नमूने) के लिए विकल्प
- परिणामों का उपयोग और समीक्षा करें

- परिणाम कैसे साझा किया जाएगा
- शिक्षण और शिक्षण में सुधार या संस्थागत प्रभावशीलता के लिए जानकारी का उपयोग कैसे किया जाएगा

आकलन योजना एक ऐसी गतिविधि है जिसे एक कार्यक्रम या विभाग को अपने मूल्यांकन चक्र की समय सीमा की शुरुआत में शुरू करना चाहिए, जो आमतौर पर शैक्षणिक वर्ष होता है। इस प्रकार, योजना प्रक्रिया को देर से गर्मियों तक शुरू किया जाना चाहिए और योजना को लागू करने के लिए पर्याप्त समय की अनुमति देने के लिए गिरावट सेमेस्टर में जल्दी से अंतिम रूप से एक मूल्यांकन योजना को अंतिम रूप दिया जाना चाहिए।

आकलन/मूल्यांकन योजना क्या है (What is an assessment plan) ?

सबसे बुनियादी स्तर पर, एक मूल्यांकन योजना एक दस्तावेज है (उदाहरण के लिए, वर्ड या एक्सेल में) जो रेखांकित करता है:-

- उस शैक्षणिक वर्ष के दौरान मूल्यांकन किए जाने वाले छात्र या विभागीय लक्ष्य |
- प्रत्येक परिणाम या लक्ष्य की प्राप्ति को प्रदर्शित करने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मूल्यांकन विधियों का उपयोग किया जाता है।
- आंकड़ों के स्रोत/स्रोतों सहित मूल्यांकन विधियों की संक्षिप्त व्याख्या।
- प्रत्येक विधि द्वारा किस परिणाम (मों) या लक्ष्य का पता लगाया जाता है।
- अंतराल / समयसीमा जिस पर डेटा एकत्र और समीक्षा की जाती है।
- आंकड़ों के संग्रह / समीक्षा के लिए व्यक्तिगत/व्यक्तिगतों को जिम्मेदार।

एक मूल्यांकन योजना के अतिरिक्त घटकों में विभाग या कार्यक्रम के पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम के साथ परिणामों को संरेखित करने वाले पाठ्यक्रम मानचित्र, और प्रत्येक विधि या परिणाम / लक्ष्य के लिए एक विस्तृत कार्यान्वयन योजना शामिल हो सकती है। अक्सर एक मूल्यांकन योजना का खाका होता है जो कॉलेज या डिवीजन के भीतर सभी विभागों

द्वारा उपयोग किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि योजना प्रक्रिया के सभी पहलुओं को समीक्षा के लिए नेतृत्व करने के लिए एक सुसंगत प्रारूप में संबोधित और प्रस्तुत किया गया है।

आकलन रिपोर्ट

एक बार एक आकलन /मूल्यांकन योजना लागू होने और डेटा एकत्र किए जाने के बाद, मूल्यांकन की जानकारी साझा करने, रिपोर्टिंग के लिए विभिन्न आवश्यकताओं और अन्य विकल्पों पर विचार करने के लिए और आगे बढ़ने का समय है। आकलन /मूल्यांकन पर एक अनुभाग सहित, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए नेतृत्व द्वारा विभागों और कार्यक्रमों की अक्सर आवश्यकता होती है। यह जानकारी वार्षिक रिपोर्ट, या एक अलग दस्तावेज़ का हिस्सा हो सकती है। मूल्यांकन योजनाओं के साथ, एक मूल्यांकन रिपोर्ट टेम्पलेट अक्सर एक विभाजन या कॉलेज के भीतर विभागों या कार्यक्रमों के बीच रिपोर्टिंग में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए बनाया जाता है। मूल्यांकन रिपोर्ट्स को हितधारकों को उपलब्ध कराना साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया की पारदर्शिता को बढ़ाने का एक तरीका है।

एक मूल्यांकन रिपोर्ट क्या है?

एक मूल्यांकन रिपोर्ट अनिवार्य रूप से मूल्यांकन योजना का विस्तार है। कभी-कभी विभाग या कार्यक्रम एक दस्तावेज़ का उपयोग करते हैं जो योजना और रिपोर्ट दोनों के रूप में कार्य करता है। दस्तावेज़ का अधिकांश हिस्सा नियोजन प्रक्रिया के दौरान पूरा हो जाता है, और एक बार डेटा एकत्र करने, समीक्षा करने और चर्चा करने के बाद, रिपोर्टिंग घटकों को पूरा किया जाता है। एक मूल्यांकन रिपोर्ट को निम्नलिखित पूरा करना चाहिए:

- मूल्यांकन चक्र समय सीमा के दौरान मूल्यांकन किए गए छात्र सीखने या कार्यक्रम के परिणामों या लक्ष्यों को रेखांकित करें।
- परिणामों या लक्ष्यों के लिए साक्ष्य एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट मूल्यांकन विधि (ओं) को पहचानें और उनका वर्णन करें।
- डेटा के विशिष्ट स्रोत की पहचान करें।

- प्रत्येक विधि और परिणाम या लक्ष्य हासिल करने की सीमा तक संक्षिप्त परिणाम प्रदान करें।
- मूल्यांकन प्रक्रिया और परिणामों के बारे में एक सारांश या निष्कर्ष प्रदान करें।
- पहचानें कि परिणाम कैसे और किसके साथ साझा किए जाएंगे।
- यह पहचानें कि मूल्यांकन डेटा निर्णय लेने में कैसे योगदान देता है और जानकारी के परिणामस्वरूप जो कार्रवाई की जाएगी

अगले वर्ष के लिए मूल्यांकन योजना पिछले वर्ष से मूल्यांकन रिपोर्ट के पहलुओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए, क्योंकि मूल्यांकन शैक्षिक प्रथाओं, प्रक्रियाओं और नीतियों में सुधार के लिए एक व्यवस्थित और निरंतर चक्र और तंत्र है।

प्रभावी आकलन योजना और रिपोर्ट तैयार करना (Preparing Effective Assessment Plans & Reports)-

इसके सबसे बुनियादी में, आपकी रिपोर्ट में पाँच बुनियादी सवालों के जवाब देने के लिए पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए:-

- तुमने क्या किया?
- तुमने ऐसा क्यों किया?
- आपको क्या मिला?
- आप इसका उपयोग कैसे करेंगे?
- आकलन का अपना मूल्यांकन क्या है?

6.5 आकलन योजनाओं और रिपोर्टों का प्रारूप (Format of the Assessment Plans and Reports)

एक व्यापक कार्यक्रम मूल्यांकन योजना और रिपोर्ट प्रमुख परिणामों पर विभागों के लिए एक प्रस्तुति के रूप में सरल हो सकती है या यह कार्यक्रम में सीखने के परिणामों का आकलन करने पर प्रोवोस्ट को एक विस्तृत रिपोर्ट हो सकती है। वास्तविकता यह है कि मूल्यांकन में संलग्न होने के लिए एक कार्यक्रम का केवल एक ही उद्देश्य है। इसलिए, आप उन रिपोर्टों को विकसित करना चाह सकते हैं जो विशेष रूप से उन श्रोताओं के अनुरूप हैं जिन्हें आपको संबोधित करने की आवश्यकता है।

औपचारिक रिपोर्ट (Formal Reports)-

यदि आपने एक औपचारिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने का निर्णय लिया है, तो आपकी रिपोर्ट को प्रत्येक पहचाने गए दर्शकों को संबोधित करना चाहिए और इसमें निम्नलिखित में से कुछ या सभी शामिल हो सकते हैं:-

- मूल्यांकन गतिविधि क्यों की गई इसका संक्षिप्त विवरण
- प्रमुख, लक्ष्यों, उद्देश्यों और सीखने के परिणामों का संक्षिप्त विवरण
- विश्लेषण कैसे किया गया था और किस पद्धति का उपयोग किया गया था, इसकी व्याख्या
- प्रमुख निष्कर्षों की एक प्रस्तुति
- कार्यक्रम सुधार के लिए परिणामों का उपयोग कैसे किया जा रहा है, इसकी चर्चा
- मूल्यांकन योजना / प्रक्रिया का मूल्यांकन
- अगले चरणों की रूपरेखा (प्रोग्रामेटिक, करिकुलर और असेसमेंट-संबंधित)
- एक परिशिष्ट जिसमें पाठ्यक्रम विश्लेषण मैट्रिक्स, प्रासंगिक असाइनमेंट और परिणाम, डेटा संग्रह के तरीके, और अन्य जानकारी या सामग्री उपयुक्त हो।

आकलन रिपोर्ट को प्रभावी होने के लिए आवश्यक नहीं है कि पाठ और रेखांकन के पृष्ठ ही पृष्ठ हों। आप एक रिपोर्ट तैयार करना चुन सकते हैं जो संक्षेप में और सफलतापूर्वक आपके मूल्यांकन कार्यक्रम के परिणामों को रेखांकित करती है। मुख्य बिंदुओं और महत्वपूर्ण परिणामों को उजागर करके, आप एक संक्षिप्त तरीके से बता सकते हैं कि आप क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे थे, आपने क्या किया और क्या हासिल नहीं किया, और परिणामस्वरूप आप किन बदलावों को लागू करेंगे।

मूल्यांकन

मानसिक मंदता मोटर, भाषा, सामाजिक, आत्म-देखभाल और संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली में न्यूनता/ कटौती करते हुए सभी विकासात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। इस स्थिति में दौरे या वाक/बोलने में देरी, व्यवहार की समस्याएं और संवेदी या मोटर हानि जैसी अतिरिक्त या संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए ऐसे दृष्टिकोण का आकलन करने की आवश्यकता है जिसमें बहु अनुशासनिक इनपुट शामिल हैं, क्योंकि मानसिक मंदता वाले व्यक्ति के सामने आने वाली चुनौतियाँ समवर्ती हैं। स्थिति की जटिलता को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक मूल्यांकन विधि और उपकरण आवश्यक है जो मानसिक प्रतिशोध वाले व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए एक व्यक्तिगत कार्यक्रम की योजना बना सके। चुनौतियों की जटिल प्रकृति के कारण, मूल्यांकन के लिए एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण की सिफारिश की जाती है। यह मूल्यांकन में मानदंड और कार्यात्मक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। मानसिक मंदता के लिए कार्यात्मक वर्गीकरण दृष्टिकोण से जारी, मूल्यांकन में ऐसे आइटम शामिल होने चाहिए जो किसी दिए गए मात्रा और मानसिक स्तर के स्तर के लिए कार्यात्मक अनुकूलन के लिए प्रासंगिक और प्रासंगिक हैं। अनुकूली व्यवहार का आकलन, जो एक व्यक्ति को मानसिक विकलांगता से अन्य विकलांगों से अलग करता है, एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है

हेबर अनुकूली व्यवहार "का वर्णन करता है, " वह प्रभाव जिसके साथ व्यक्ति अपने पर्यावरण की प्रकृति और सामाजिक मांगों का सामना करता है "। अनुकूली व्यवहार तराजू और बुद्धि परीक्षणों के विकास से पहले, सामाजिक अक्षमता का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया गया था कि कोई व्यक्ति मानसिक रूप से मंदा था या नहीं (Nihira,

1969)। मानसिक मंदता वाले व्यक्ति के मूल्यांकन का एक अन्य घटक उसकी कमियों और शक्तियों का एक साथ आकलन करना है। इस दृष्टिकोण को कमी का आकलन करने के लिए विकासात्मक मानदंडों के साथ तुलना की आवश्यकता है और उन्हें अवशिष्ट अनुकूली क्षमता के साथ मेल खाना चाहिए जो कार्यात्मक / अनुकूली पुनर्वास के लिए प्राथमिकता वाले लक्ष्यों का चयन करने में महत्वपूर्ण है।

6.6 परिणाम व्याख्या (Result Interpretation)

Presenting Results (प्रस्तुत परिणाम) - परिणाम सांख्यिकीय और विश्लेषणात्मक डेटा का एक सारांश है जो यह निर्धारित करने के लिए एकत्र किया गया था कि छात्रों ने एक विशेष सीखने के परिणाम को कितनी अच्छी तरह हासिल किया। परिणाम संक्षेप में बताते हैं कि प्रशिक्षकों, कार्यक्रमों, कॉलेजों और / या विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और परिणामों को प्राप्त करने में छात्र कितने सफल हैं। चूंकि परिणाम डेटा की एक विस्तृत व्याख्या है, व्यक्तिगत स्कोर या कच्चे डेटा को परिशिष्ट में सूचित किया जाना चाहिए, बजाय परिणाम अनुभाग में, जब तक कि एक दृष्टांत के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है। परिणाम अनुभाग में सभी प्रासंगिक परिणामों पर चर्चा की जानी चाहिए। परिणामों की रिपोर्टिंग करते समय, निष्कर्षों को सही ठहराने के लिए निष्कर्षों पर विस्तार से चर्चा करना महत्वपूर्ण है। मूल्यांकन रिपोर्ट में परिणाम पेश करते समय, परिणाम प्रदर्शित करने के लिए माध्यम चुनें जो विभिन्न प्रकार के दर्शकों को सबसे स्पष्ट रूप से परिणाम प्रस्तुत करता है।

Tables & Figures (तालिका और आंकड़े)- तालिका और आंकड़े, जिनमें ग्राफ, चित्र और चित्र शामिल हैं, का उपयोग आगे के निष्कर्षों के लिए किया जाता है। तालिकाएँ और आंकड़े सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदर्शित करते हैं। रिपोर्ट में तालिकाओं और आंकड़ों का उपयोग करते समय, रिपोर्ट के पाठ के भीतर उनका उल्लेख करें, और पाठकों को बताएं कि उन्हें तालिकाओं / आंकड़ों में किस जानकारी को देखना चाहिए। तालिकाओं और आंकड़ों का उपयोग करके आप अपनी मूल्यांकन रिपोर्ट में निष्कर्षों को कैसे संप्रेषित कर सकते हैं, इसे बढ़ा सकते हैं और सरल बना सकते हैं।

तालिका सटीक मान प्रदान करने और जटिल परिणामों और आपके निष्कर्षों का विश्लेषण प्रस्तुत करने में उपयोगी हैं।

आंकड़े, जिसमें बार ग्राफ, लाइन ग्राफ, पाई चार्ट, चित्र और चित्र शामिल हैं, परिणामों की दृश्य व्याख्याएं हैं। आंकड़ों की तुलना करते समय और आंकड़ों में दिखाए गए संबंधों को दर्शाने में आंकड़े मदद करते हैं।

Types of Data and Analyses (आंकड़े और विश्लेषण के प्रकार)-

1. Nominal Data (नाममात्र का आंकड़ा)-

इस प्रकार के डेटा को केवल-नाम या श्रेणीबद्ध, डेटा कहा जाता है। नाममात्र डेटा संख्याओं से जुड़ा नहीं है और डिग्री या ऑर्डर की कोई अवधारणा नहीं है (उदाहरण के लिए, एक श्रेणी किसी अन्य की तुलना में उच्च या निम्न है)। नाममात्र डेटा बस जानकारी को विभिन्न श्रेणियों में अलग करता है।

विश्लेषण: नाममात्र डेटा (जैसे गणना या तुलना के साधन) पर किसी भी अंकगणितीय संचालन को करना उचित नहीं है। प्रत्येक श्रेणी में आने वाले मामलों की संख्या की आवृत्ति और प्रतिशत नाममात्र डेटा के लिए सबसे उपयुक्त प्रकार का विश्लेषण हो सकता है।

उदाहरण: कुछ जनसांख्यिकीय जानकारी, जैसे कि प्रजाति / जातीयता / राष्ट्रीय मूल, नाममात्र है। इस प्रकार के डेटा के लिए, आप प्रत्येक श्रेणी में आने वाले लोगों की संख्या और प्रतिशत की रिपोर्ट कर सकते हैं।

2. Ordinal Data (साधारण आंकड़ा)-

साधारण डेटा जानकारी के लिए एक क्रम निर्दिष्ट करता है। हालाँकि, डेटा बिंदुओं के बीच की जगह या दूरी की मात्रा निश्चित या ज्ञात नहीं है। एक सर्वेक्षण उपकरण से स्केल अंक क्रमिक डेटा का एक उदाहरण है। उदाहरण के लिए, दृढ़ता से सहमत होना सहमति से "उच्च" होना माना जाता है, लेकिन सहमत और दृढ़ता से सहमत के बीच की दूरी ज्ञात नहीं है।

विश्लेषण - श्रेणीबद्ध डेटा की तरह, उस पर अंकगणितीय गणना (जैसे गणना या तुलना के साधन) करने के लिए आवश्यक डेटा को क्रमिक डेटा पूरा नहीं करता है और डेटा विश्लेषण का सबसे उपयुक्त प्रकार डेटा बिंदुओं के लिए आवृत्तियों और प्रतिशत की गणना हो सकता

है। यदि आप क्रमिक डेटा के लिए गणना के साधनों का चयन करते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि मान्यताओं का उल्लंघन व्याख्या को कैसे प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, 4 के माध्य की व्याख्या 2 के माध्य से दो बार नहीं की जा सकती है, क्योंकि डेटा बिंदुओं के बीच की दूरी न तो बराबर है और न ही ज्ञात है।

3. Interval Data (अंतराल आंकड़ा)- अंतराल आंकड़ा डेटा बिंदुओं के बीच समान, निश्चित और मापने योग्य दूरी के साथ डेटा के लिए एक क्रम निर्दिष्ट करता है। अंतराल डेटा का एक उदाहरण तापमान है। 20 डिग्री फ़ारेनहाइट और 30 डिग्री फ़ारेनहाइट के बीच का अंतर 30 डिग्री और 40 डिग्री के बीच का अंतर है। हालाँकि, अंतराल डेटा में एक पूर्ण शून्य (या शून्य किसी चीज़ की पूर्ण कमी का संकेत) नहीं होता है। फ़ारेनहाइट पैमाने पर तापमान के मामले में, शून्य तापमान की कमी का संकेत नहीं देता है।

विश्लेषण - अंतराल डेटा कुछ अंकगणितीय संचालन करने के लिए आवश्यक धारणाओं को पूरा करता है, जैसे कि इसके अलावा और घटाव, लेकिन फिर भी गुणन या विभाजन करने के लिए मान्यताओं का उल्लंघन करता है। जैसा कि क्रमिक डेटा के लिए उदाहरण में, यह सार्थक (या निरपेक्ष) शून्य के बिना है, 4 के स्कोर का अनिवार्य रूप से 2 का स्कोर दोगुना नहीं होगा। हालाँकि, यदि आप इस तरह से डेटा की व्याख्या नहीं करने में सावधान हैं, तो उदाहरण का उपयोग कोई भी अंकगणितीय ऑपरेशन न्यायोचित हो सकता है। संभावित विश्लेषण में केंद्रीय प्रवृत्ति के उपाय (जैसे कि माध्य, माध्य और मोड की गणना), वितरण प्रसार के उपाय (जैसे विचरण या मानक विचलन), रिश्ते के उपाय (जैसे सहसंबंध या प्रतिगमन), या माध्य जेल (जैसे) शामिल हो सकते हैं। टी-परीक्षण या विचरण का एक तरीका विश्लेषण)।

उदाहरण - एक परीक्षण पर स्कोर अंतराल डेटा हो सकता है यदि 90 और 95 के बीच का अंतर 95 और 100 के बीच का अंतर या 80 और 85 के बीच का अंतर है। हालाँकि, एक परीक्षण पर स्कोर अनुपात डेटा नहीं माना जाएगा (नीचे देखें)

क्योंकि परीक्षण पर 0 आवश्यक रूप से विषय वस्तु या सीखने के परिणाम पर ज्ञान की पूरी कमी का संकेत नहीं देगा।

4. Ratio Data (अनुपात डेटा)

अंतराल डेटा की तरह, अनुपात डेटा डेटा बिंदुओं के बीच एक आदेश और निश्चित अंतराल निर्दिष्ट करता है। हालाँकि, अनुपात डेटा में एक अर्थपूर्ण (निरपेक्ष) शून्य या एक शून्य बिंदु है जो कि जो भी मापा जा रहा है, उसकी पूरी कमी को इंगित करता है।

विश्लेषण - अनुपात डेटा उस पर कोई अंकगणितीय ऑपरेशन करने के लिए आवश्यक मान्यताओं को पूरा करता है। संभावित विश्लेषण में केंद्रीय प्रवृत्ति (जैसे कि माध्य, माध्य और मोड) की गणना, वितरण प्रसार के उपाय (जैसे विचरण या मानक विचलन), रिश्ते के उपाय (जैसे सहसंबंध या प्रतिगमन), या माध्य जेल (जैसे) शामिल हो सकते हैं। टी-परीक्षण या विचरण का एक तरीका विश्लेषण।

उदाहरण - शायद ही कभी छात्र अधिगम मूल्यांकन को डेटा का संग्रह के रूप में अनुपात-स्तर में शामिल हो। अनुपात डेटा के कुछ उदाहरणों में ऊंचाई, लंबाई और समय शामिल हैं।

6.7 स्कोरिंग गाइड (Scoring Guides)

मूल्यांकन परियोजना की योजना बनाने में एक महत्वपूर्ण विचार यह निर्धारित कर रहा है कि आप अपने द्वारा सीखने वाले परिणामों की उपलब्धि को कैसे मापेंगे। स्कोरिंग गाइड छात्र के काम का अंदाजा लगाने की परिभाषा के लिए एक साझा संरचना प्रदान करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि एक स्कोरिंग गाइड सीधे छात्र के सीखने के परिणाम से बंधा होता है जो इसे माप रहा है।

कॉमन स्कोरिंग गाइड के उदाहरण-

1. रुब्रिक
2. संरचित अवलोकन मार्गदर्शिकाएँ

संरचित अवलोकन गाइड स्कोरिंग गाइड के अधिक गुणात्मक प्रकार हैं।

लाभ

वे छात्र प्रदर्शन या काम के समृद्ध विवरण के लिए अनुमति देते हैं।

वे उन गुणों के मूल्यांकन के लिए उपयोगी हो सकते हैं, जो क्रियात्मक रूप से परिभाषित करने में मुश्किल होते हैं, जैसे दृष्टिकोण या मूल्य

हानि

स्कोरिंग के लिए यह अधिक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण है।

स्कोरिंग की मात्रात्मक विधियों की तुलना में परिणामों का विश्लेषण करना अधिक कठिन है।

6.8 सारांश

एक व्यापक कार्यक्रम मूल्यांकन योजना और रिपोर्ट प्रमुख परिणामों पर विभागों के लिए एक प्रस्तुति के रूप में सरल हो सकती है या यह कार्यक्रम में सीखने के परिणामों का आकलन करने पर प्रोवोस्ट को एक विस्तृत रिपोर्ट हो सकती है। शिक्षा के लिए एक मूल्यांकन योजना का मूल्य उन साक्ष्यों में निहित है जो समग्र शैक्षिक कार्यक्रम की ताकत और कमजोरियों के बारे में प्रस्तुत करता है, और साक्ष्य में यह परिवर्तन प्रदान करता है। आकलन /मूल्यांकन पर एक अनुभाग सहित, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए नेतृत्व द्वारा विभागों और कार्यक्रमों की अक्सर आवश्यकता होती है। यह जानकारी वार्षिक रिपोर्ट, या एक अलग दस्तावेज़ का हिस्सा हो सकती है। आकलन रिपोर्ट को प्रभावी होने के लिए आवश्यक नहीं है कि पाठ और रेखांकन के पृष्ठ ही पृष्ठ हों। आप एक रिपोर्ट तैयार करना चुन सकते हैं जो संक्षेप में और सफलतापूर्वक आपके मूल्यांकन कार्यक्रम के परिणामों को रेखांकित करती है। परिणाम सांख्यिकीय और विश्लेषणात्मक डेटा का एक सारांश है जो यह निर्धारित करने के लिए एकत्र किया गया था कि छात्रों ने एक विशेष सीखने के परिणाम को कितनी अच्छी तरह हासिल किया।

6.9 सहायक सामग्री

<https://www.fredonia.edu/about/campus-assessment/assmtinforesources/document>

<https://academicprograms.calpoly.edu/analysis-assessment-results>

<https://offices.depaul.edu/center-teaching-learning/assessment/assessing-learning/Pages/analysis-and-interpretation.aspx>

<https://seshagun.gov.in/sites/default/files/publication/modulea7.pdf>

6.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. आकलन/मूल्यांकन योजना क्या है। विस्तार से वर्णन कीजिये?
2. आकलन रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?

इकाई 7- मानसिक मंद व्यक्तियों के स्वतंत्र जीवन यापन में मूल्यांकन का महत्व

- 7.1 प्रस्तावना
- 7.2 उद्देश्य
- 7.3 मूल्यांकन क्या है
 - 7.3.1 मूल्यांकन की उपयोगिता
 - 7.3.2 मूल्यांकन का स्वरूप
- 7.4 परिवर्तन आयु(transition age)में मूल्यांकन के आयाम
- 7.5 व्यस्क स्तर पर मूल्यांकन क्रियाकलाप
 - 7.5.1 अवलोकन
 - 7.5.2 साक्षात्कार
 - 7.5.3 रिकार्ड समीक्षा
 - 7.5.4 जाँच प्रक्रिया
- 7.6 व्यवसायिक मूल्यांकन क्या है
 - 7.6.1 व्यवसायिक मूल्यांकन के उद्देश्य
 - 7.6.2 व्यवसायिक मूल्यांकन के तत्व
 - 7.6.3 व्यवसायिक क्रियात्मक मूल्यांकन
 - 7.6.4 सामुदायिक व्यवसायिक मूल्यांकन

- 7.7 व्यवसायिक पशिक्षण के स्तर
 - 7.7.1 आवश्यकता का मूल्यांकन
 - 7.7.2 चिकित्सकीय जाँच
 - 7.7.3 व्यापक व्यवसायिक मूल्यांकन
- 7.8 व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियाँ
- 7.9 पशिक्षण संबंधी कौशल का मूल्यांकन
 - 7.9.1 जातिगत(generic) कौशल का मूल्यांकन
 - 7.9.2 विशिष्ट कौशल का मूल्यांकन
- 7.10 मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून
- 7.11 पाठ सारंशिकरण
- 7.12 पारिभाषिक शब्दावली
- 7.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 7.14 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 7.15 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री
- 7.16 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

इस अध्याय के माध्यम से हम मूल्यांकन संबंधी उन सभी पहलुओं का अध्ययन करेंगे तथा उन सूचनाओं /तथ्यों का अवलोकन करेंगे जिसके अंतर्गत परिवर्तन आयु(transition age) के युवा के रोजगार संबंधी विकास,मूल्यांकन क्रियाकलाप,तथा व्यवसायिक मूल्यांकन इत्यादि आते हैं |यह अध्याय आप को मूल्यांकन के स्तर | उस की

उपयोगिता तथा उसके विविध आयाम की आधारभूत जानकारी दिलाने में सहायक होगा | युवा जब किशोरावस्था से व्यस्क अवस्था की तरफ अग्रसर होता है तब उसे समाजिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत तथा आर्थिक स्तर पर अनेक प्रकार के बदलाव का ज्ञापन करना पड़ता है | इसके साथ ही विशेष रूप से सक्षम युवाओं के विकास तथा बदलाव की इस प्रक्रिया से भलीभांति गुजरने के लिए यह आवश्यक है की युवा अपने लिए बेहतर जिविकोपार्जन के विकल्प का चुनाव कर अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर सकें | इस दशा में मूल्यांकन युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिय प्रयासरत है। इस अध्याय में हम मूल्यांकन के द्वारा किए गए इस प्रयास की चर्चा करेंगे। जैसे कि हम जानते हैं कि PWIDs की आवश्यकताएँ अलग होती हैं तथा बेहतर शिक्षण-प्रशिक्षण सुविधा, उनका भविष्य सुनिश्चित करने में सहायक है, के अभाव में उनका जीवन कठिन हो सकता है तथा वे समाज में आत्मगौरव के साथ जीने में सक्षम नहीं हो सकते। इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि मूल्यांकन के माध्यम से किस प्रकार इन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हम मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून को भी चर्चा करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात् आप

- मूल्यांकन, उसका स्वरूप तथा उपयोगिता को समझ सकेंगे।
- परिवर्तन आयु (transition age) में मूल्यांकन के आयाम की व्याख्या कर सकेंगे।
- व्यस्क स्तर पर मूल्यांकन क्रियाकलाप की अवधारण को स्पष्ट कर सकेंगे।
- व्यवसायिक/रोजगार संबंधी मूल्यांकन को परिभाषित कर सकेंगे।
- व्यवसायिक प्रशिक्षण के स्तर को समझने में सक्षम होंगे।
- व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियों के विषय में जान सकेंगे।
- प्रशिक्षण संबंधी कौशल के मूल्यांकन को अवधारणा को स्पष्ट कर पाएँगे।
- मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून के बारे में जानकारी प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

7.3 मूल्यांकन क्या है

जैसे कि हम जानते हैं मूल्यांकन व्यक्ति विशेष से संबंधित वे सभी क्रियाकलापों का अध्ययन करता है जो किसी शिक्षण प्रक्रिया के पुरे होने के बाद व्यक्ति के अंदर हुए बदलाव के कारण आते हैं। ये बदलाव दरअसल शिक्षण प्रक्रिया के लक्ष्य होते हैं। इसी प्रकार किसी भी व्यवसायिक प्रशिक्षण के दौरान भी ये सभी बदलाव लक्षित होते हैं। मूल्यांकन उन सभी विशिष्ट व्यक्तियों के लिए उपयोगी है जिन्हें विशिष्ट अध्यापन क्रिया अथवा व्यवसायिक प्रशिक्षण के द्वारा आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने का प्रयत्न किया जाता है। मूल्यांकन सही अर्थों में व्यक्ति को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की तरफ किए गए शैक्षणिक, प्रशैक्षणिक प्रयास का अहम हिस्सा है, इसके बिना किसी भी ऐसे प्रयास की सफलता की उम्मीद नहीं की जा सकती क्योंकि इसके बिना उस निश्चित अंतर का पता लगाना असंभव है जो व्यक्ति के वर्तमान तथा अध्यापन अथवा प्रशिक्षण प्रक्रिया के अंतर्में पाए जाने वाले लक्ष्य के बीच में उपस्थित होता है। मूल्यांकन इस अंतर को स्पष्ट करता है तथा व्यवस्था के लिए निश्चित बदलाव को रेखांकित करता है।

मूल्यांकन की प्रक्रिया अकादमिक, शैक्षणिक, व्यवहारिक बदलाव इत्यादि सम्मिलित हैं। इन सभी पहलुओं में छात्र की उस विशेष समय की उपलब्धि एवं प्रशिक्षण के जरिए उन सभी क्षेत्रों में प्राप्त किए जाने वाले वांछित लक्ष्य के बीच का अंतर पता लगाया जाता है। और इस प्रकार यह सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है कि सभी आवश्यक बदलाव को लाने के लिए कौन से महत्वपूर्ण योजनाएँ शामिल की जाएँ जिससे प्रशिक्षण प्रक्रिया अधिक अर्थपूर्ण एवं प्रभावशाली हो सके तथा जिस से उस विशेष अंतर को कम करने में सहायता मिल सके। इस प्रकार मूल्यांकन किसी भी शिक्षण अथवा प्रशिक्षण प्रक्रिया में वह विशेष स्थान रखता है जिस के द्वारा व्यक्ति विशेष की आने वाले समय में सामाजिक भूमिका की रूपरेखा तय होती है।

7.3.1 मूल्यांकन की उपयोगिता

मानसिक मंद व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन की अनेक अर्थों में आवश्यकता होती है। बोरगेन तथा एमंडसन, 1995 के अनुसार “प्रभावशाली भविष्य योजना तथा मूल्यांकन, परिवर्तन आयु के युवाजन को विविध चुनाव की, स्वेच्छा से कार्य करने

की, अकादमिक एवं भविष्य निर्माण की योजनाओं से स्वयं को जोड़ने की था स्वयं को आलोचनात्मक सूचनाओं से लैस करने की क्षमता प्रदान करते हैं।” इस से निम्न बिंदु स्पष्ट हैं-

- पुराने समय में वे सभी मानसिक मंद व्यक्ति अपने जीवन में अपने अन्य सक्षम मित्रों की तरह अपने रोजगार के विकल्प की तलाश स्वयं नहीं कर पाते हो, अन्य लोगों की तरह उन्हें चुनाव करने की स्वतंत्रता नहीं थी, अधिकांशत वे सभी अपनी जीवन निर्वहन ले लिए परिवार पर आश्रित थे परन्तु मूल्यांकन उन्हें भी आगे बढ़ कर अपने स्वयं लेने के लिए अवसर प्रदान कर रहा है।
- सभी विशिष्ट व्यक्ति अपने ही रोजगार चुनाव में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाते थे। अब वे इस चुनाव में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित हैं और दूसरों के फैसले पर निर्भर नहीं है।
- अनेक ऐसे अपना हाईस्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात् भी अपनी रुचि, क्षमता एवं कौशल से परिचित नहीं हो पाते थे एवं स्वयं को अपने व्यवसाय के चुनाव के लिए तैयार नहीं कर पाते थे, मूल्यांकन इन सभी व्यक्तियों की स्वयं की क्षमता एवं अभिरुचि से परिचित कराने में तथा इनका विकास करने में सहायक है।

7.3.2 मूल्यांकन का स्वरूप

मूल्यांकन का प्रमुख लक्ष्य यह है कि वह व्यक्ति को आंतरिक रूप से सुदृढ़ तथा सक्षम बना कर उसे अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम बना सके। इस से सब से बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति विशेष की शिक्षण प्रशिक्षण तंत्र पर से निर्भरता खत्म हो जाती है, तथा मूल्यांकन का ध्येय भी यही होना चाहिए। पूरी तरह से आत्मनिर्भर व्यक्ति उपलब्ध कराए गए विकल्प में से किसी एक का चुनाव करने में समर्थ हो सकता है। मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है जो व्यक्ति विशेष को स्वयं ही अपनी क्षमता, अपने लक्ष्य तथा अपनी आवश्यकता से परिचित होने में सक्षम बनती है। मूल्यांकन प्रक्रिया कुछ विशेष बिन्दुओं का ध्यान रखना आति आवश्यक है तथा ये निम्न हैं-

- किसी भी मूल्यांकन प्रक्रिया का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए, चाहे वह छोटी समयावधि की मूल्यांकन प्रक्रिया हो अथवा बड़ी समयावधि की।
- मूल्यांकन के दौरान न केवल व्यक्ति की प्राप्तियों का ध्यान रखना चाहिए बल्कि व्यक्ति के वातावरण तथा उसे प्रभावित करने वाले तत्वों को ध्यान में रखना भी आवश्यक है।
- औपचारिक मूल्यांकन में उपकरणों का चुनाव ध्यानपूर्वक करना चाहिए।
- उपकरणों की वैधता तथा विश्वसनीयता पर भी ध्यान देना आवश्यक अन्याय परिणाम की गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ता है।
- औपचारिक मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया का संचालन तथा क्रियान्वन योग्य व्यक्तियों के द्वारा ही किया जाना चाहिए।
- मूल्यांकन के विवरण की भाषा को अधिकाधिक सरल एवं स्पष्ट रखने का प्रयत्न करना चाहिए।
- यह आवश्यक है कि मूल्यांकन संबंधी जो क्रियाकलाप निर्धारित किए जा रहे हैं वे सभी सकारात्मक हो तथा स्त-रचनात्मकता से प्रेरित हों।

इन सभी आवश्यक बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया गया मूल्यांकन उचित परिणाम देता है। यह प्रभावशाली भी हिता है। मूल्यांकन के लिए एक अन्य विशेष बिंदु है मूल्यांकन का सरल तथा स्पष्ट होना क्योंकि इस से व्यक्ति विशेष के बारे में एकत्रित की गई सूचनाओं की व्याख्या करने में कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता तथा यह प्रशिक्षक को मूल्यांकन को स्पष्ट रूप से समझ कर व्यक्ति विशेष के भविष्य की योजनाओं के निर्माण करने में सहायक है।

अभ्यास प्रश्न

- 1) मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
- 2) मूल्यांकन का स्वरूप कैसा होना चाहिए?

7.4 परिवर्तन आयु(transition age)में मूल्यांकन के आयाम

परिवर्तन आयु वह विशेष आयु है जिस के दौरान व्यक्ति विशेष के जीवन में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा वैधानिक, इन सभी स्तर पर बदलाव लक्षित किए जाते हैं। इस आयु में एक बच्चा व्यस्क होता है तथा विद्यालय के वातावरण से बाहर निकलकर बाहरी दुनिया में अपने लिए संभावनाएँ तलाश करता है। इन संभावनाओं में रोजगार के अवसर भी सम्मिलित होते हैं। इस आयु में मानसिक मंद व्यक्तियों के लिए व्यस्क स्तर का मूल्यांकन सहायक सिद्ध होता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया बहुआयामी होती है। परिवर्तन आयु का मूल्यांकन मुख्यतः चार आयामों में वर्गीकृत है। प्रमुख रूप से ये आयाम मूल्यांकन में विशेष भूमिका रखते हैं जो निम्न हैं-

i) शैक्षणिक मूल्यांकन आयाम

ii) व्यवसायिक मूल्यांकन आयाम

iii) मनोवैज्ञानिक आयाम

iv) चिकित्सकीय आयाम

ये सभी आयाम चूँकि मूल्यांकन का ही अंग हैं इसलिए कभी-कभी यह भी पाया जाता है कि किसी एक आयाम का परिणाम दूसरे के लिए उपयोगी सिद्ध हो जाता है। यह उस दूसरे आयाम के लिए व्यक्ति की आधारभूत समस्याओं के लिए उपयोगी हो जाता है।

आइए अब हम देखें कि शैक्षणिक तथा व्यवसायिक आयाम किन बिन्दुओं का मापन करने हैं। शैक्षणिक तथा व्यवसायिक आयाम में मुख रूप से व्यक्ति के उस निश्चित समय तक के ज्ञान का मापन किया जाता है, जब मूल्यांकन का प्रारंभ हो रहा होता है। इसके आलावा व्यक्ति का कौशल स्तर, रुचि, अभिरुचि, अनुभव तथा शारीरिक कार्य करने की औसत क्षमता का मापन भी किया जाता है। इस आयाम के मूल्यांकन प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही विभिन्न प्रशिक्षक शैक्षणिक, प्रशैक्षणिक तथा रोजगार-संबंधी योजनाओं का निर्माण करता है। इन योजनाओं का चयन व्यक्ति की बौद्धिक व्यवहारिक परिस्थिति के साथ-साथ पारिवारिक स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है।

इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक तथा चिकित्सकीय आयामों का कार्य व्यक्ति से संबंधित मानसिक दुर्बलताओं तथा शरीर संबंधी –कमजोरियों की पहचान करना होता है। ये उन सभी दुर्बलताओं अथवा मानसिक परेशानियों को जानने का प्रयत्न करते हैं जिससे व्यक्ति की अकादमिक प्रगति, शारीरिक कार्य क्षमता, तथा व्यवहारिक कौशल प्रभावित होता है। इसके पश्चात् इनके निदान के लिए योजनाएँ उनके विद्यालय, घर एवं कार्यस्थल के वातावरण को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं। इसके लिए इन सभी स्थलों के वातावरण संबंधी मूल्यांकन एक निश्चित समयावधि के अंतराल पर कराए जाते हैं। चिकित्सकीय तथा मनोवैज्ञानिक आयाम के मूल्यांकन लाइसेंस प्राप्त चिकित्सकों तथा मनोवैज्ञानिकों के द्वारा ही संचालित होते हैं।

मूल्यांकन के इन आयामों के परिणाम निर्धारण करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि इनमें से किसी एक का परिणाम अपने आप में स्वतंत्र अथवा पूर्ण नहीं है। इन सभी का सम्मिलित एवं संगठित परिणाम ही व्यक्ति विशेष के विषय में निष्कर्ष पूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है तथा व्यक्ति विशेष के लिए प्रभावशाली एवं सटीक भविष्य योजना तैयार करने में सहायता प्रदान कर सकता है।

7.5 व्यस्क स्तर पर मूल्यांकन क्रियाकलाप

व्यस्क स्तर पर मूल्यांकन क्रियाकलाप कि मूल्यांकन प्रक्रिया में विशेष भूमिका है। मूल्यांकन क्रियाकलाप को हम ऐसी गतिविधि के रूप में समझ सकते हैं जिस से विशिष्ट युवाजन को चुनाव करने में सहायता मिलती है। यह चुनाव वस्तुओं अथवा अवसरों के विकल्प में से किसी एक वस्तु अथवा अवसर के विकल्प के चयन संबंधी सक्षमता से संबंधित है। साधारण तौर पर हम ख सकते हैं कि वह व्यवहारिक, समाजिक अथवा व्यवसायिक स्तर पर विकल्प का चुनाव करने में सक्षम हो सकता जो उसके लिए सबसे उपयुक्त है। इसके फलस्वरूप मानसिक मंद युवाजन विद्यालय की शिक्षा की समाप्ति के बाद रोजगार संबंधी वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। मूल्यांकन क्रियाकलाप के प्रयोग से विभिन्न निर्देशक, भविष्य योजना निर्माता तथा व्यवसायिक प्रशिक्षक व्यक्ति विशेष के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ एकत्रित कर उनके कौशल, क्षमता तथा अभिरुचि को ध्यान में रखकर उनके लिए विशेष व्यक्ति केन्द्रित व्यवसायिक योजना का निर्माण कर सकते हैं। मूल्यांकन

संबंधी डाटा के एकत्रीकरण के लिए चार प्रकार के क्रियाकलाप मुख्य रूप से निर्धारित हैं (i) अवलोकन (ii) साक्षात्कार (iii) रिकार्ड समीक्षा एवं (iv) जाँच प्रक्रिया (testing)

7.5.1 अवलोकन

- अवलोकन की प्रक्रिया के अंतर्गत व्यक्ति विशेष का व्यवहारिक मूल्यांकन तथा उपलब्धियों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया जाता है।
- इसमें संबद्ध सूचनाओं का एकत्रीकरण किया जाता है।
- यह प्रक्रिया किसी निश्चित संरचना में अथवा संरचना के बिना भी पूरी की जाती है अर्थात् इसका स्वरूप निश्चित अथवा अनिश्चित ही सकता है।
- यस प्रक्रिया औपचारिक अथवा अनैपचारिक ही सकती है साथ ही यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष हो सकती है।
- चूँकि अवलोकन के दौरान विभिन्न अवलोकनकर्ता अलग-अलग परिणाम तक पहुँच सकते हैं इसलिए अवलोकनकर्ताओं की संख्या एक से अधिक होनी चाहिए तथा परस्पर वाद-विवाद के बाद ही किसी निष्कर्ष की ओर पहुँचना चाहिए।

7.5.2 साक्षात्कार

- साक्षात्कार व्यक्ति विशेष से साक्षात्कर्ता के द्वारा किया गया एक वार्तालाप होता है जिसके द्वारा साक्षात्कर्ता अपने विशेष उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयत्न करता है।
- साक्षात्कार किसी निश्चित आकार का अथवा परिस्थिति के अनुरूप बिना किसी निश्चित आकार का हो सकता है।
- इसका उद्देश्य व्यक्ति विशेष से मौखिक प्रश्नोत्तर की सहायता से विविध प्रकार की सूचनाएँ एकत्र करने का होता है।

- अवलोकन की तरह साक्षात्कार भी औपचारिक अथवा अनौपचारिक हो सकता है।
- एक साक्षात्कार इसलिए अधिक उपयोगी है क्योंकि एक कुशल साक्षात्कर्ता व्यक्ति विशेष से प्रश्नों के माध्यम से उसके विषय में आसानी सूचनाएँ एकत्रित करने में सक्षम होता है।
- साक्षात्कर्ता व्यक्ति विशेष के साथ विश्वास का संबंध स्थापित कर उसके भविष्य की योजनाओं के निर्माण में विशेष भूमिका निभा सकता है।

7.5.3 रिकार्ड समीक्षा

- रिकार्ड समीक्षा के अंतर्गत सभी प्राथमिक मूल्यांकन के परिणाम की समीक्षा सम्मिलित की जाती हैं।
- इसमें व्यक्ति विशेष के विधालयी तथा अन्य सभी रिकार्ड के परिणाम की समीक्षा जाती है।
- रिकार्ड व्यक्ति विशेष की सभी प्राप्त उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है उदाहरण के लिए शैक्षणिक एवं अकादमिक प्राप्तियाँ वह व्यक्ति के आधारभूत बौद्धिक योग्यता को भी दर्शाता है।
- रिकार्ड समीक्षा में इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि सभी रिकार्ड पुराने न हो वरन उनमें से कुछ तात्कालिक भी हो।
- यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि सभी जानकारियाँ स्रोत से अच्छी तरह संश्लेषित की गई हो।

7.5.4 जाँच प्रक्रिया (testing)

- जाँच प्रक्रिया मूल्यांकन का विस्तृत एवं आवश्यक हिस्सा है।

- इस प्रक्रिया में व्यक्ति की जाँच प्रश्न श्रंखला के द्वारा की जाती है तथा इस से एक 'स्कोर' प्राप्त किया जाता है।
- यह औपचारिक होता है तथा इसके डाटा का एकत्रीकरण किसी विशेष संरचना के तहत ही किया जाता है।
- जाँच प्रक्रिया के संचालन के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।
- यह प्रक्रिया एक हद तक पूर्ण होती है तथा इस ट्रिक्स से मानक परिणाम निकाले जा सकते हैं जो उच्च गुणवत्ता के होते हैं।
- यह प्रक्रिया कार्य अनुभव का सर्वोत्तम मूल्यांकन करती है।
- इस से व्यक्ति के विषय में लिखित तथा वस्तुनिष्ठ डाटा की प्राप्ति की जाती है जिस के द्वारा व्यक्ति के व्यवहारिक व बौद्धिक क्षमता के अध्ययन में सुविधा होती है।

7.6 व्यवसायिक मूल्यांकन क्या है

व्यवसायिक अथवा रोजगार संबंधी मूल्यांकन किसी भी जनसमुदाय के मानसिक मंद अथवा विशेष व्यक्तियों के लिए रोजगार की संभावनाएँ तलाश करने का प्रयत्न करता है। इसका कार्य विशिष्ट युव व्यक्तियों की बौद्धिक व्यवहारिक क्षमता तथा कौशल को ध्यान में रखते हुए उनके जीवन यापन को आर्थिक रूप से स्वतंत्र करने के लिए तथा परिवार पर उनकी निर्भरता को हटाने के लिए उनके लिए रोजगार का प्रबंध करना है। व्यवसायिक मूल्यांकन अपने आप में विविध प्रक्रियाओं की एक कड़ी है। इनमें व्यक्ति विशेष के वातावरण संबंधी सभी तत्वों को ध्यान में रखा जाता जिनसे वे प्रभावित होते हैं। इसके आलावा व्यक्ति संबंधी सभी समस्याओं की जानकारी प्राप्त की जाती है तथा उनके निदान तथा निवारण के विकल्प ढूंढे जाते हैं। इसके पश्चात् व्यक्ति विशेष की विभिन्न समस्याएँ, उदाहरण के लिए मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक अथवा चिकित्सकीय इत्यादि का निदान कर व्यक्ति की सर्वोत्तम क्षमता का आँकलन किया जाता है। इन सभी समस्याओं का निदान व्यक्ति को अधिकाधिक सुदृढ़ बनता है, तथा उसका व्यवसायिक मूल्यांकन

उसकी अधिकतम क्षमता का पता लगाने में समर्थ हो जाता है। इस प्रक्रिया के बाद व्यक्ति के रोजगार संबंधी कौशल (जो रोजगार उनके लिए यथार्थपरक तथा उपयुक्त हो)का विकास कर उन्हें जिविकोपार्जन के लिए आर्थिक अवसर प्रदान किया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा मानसिक रूप से मंद व्यक्ति विशेष के लिए सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर उसे समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का तथा सभी प्रकार से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

7.6.1 व्यवसायिक मूल्यांकन के उद्देश्य

व्यवहार संबंधी मूल्यांकन के उद्देश्य निम्न हैं-

- व्यक्ति के विकास के लिए एक पूर्णकालिक क्रिया प्रणाली की योजना तैयार करना।
- व्यक्ति के ज्ञान में बढोत्तरी करना (बौद्धिक तथा व्यवहारिक) तथा रोजगार संबंधी निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
- किसी यथार्थपरक योजना का निर्माण करना, जो व्यक्ति के बुद्धि तथा कौशल की क्षमता से अधिक आवश्यकता न रखता हो तथा उसका प्रयोग यथार्थपरक रोजगार के लिए करना, जो समुदाय में उपलब्ध हो सके।
- योजना का आरंभ करने के लिए रोजगार सुनिश्चित करना।

7.6.2 व्यवसायिक मूल्यांकन के तत्व

व्यवसायिक मूल्यांकन के तत्व निम्नलिखित हैं-

- औपचारिक रोजगार संबंधी मूल्यांकन के लिए विशेषीकृत उपकरणों का चयन तथा प्रयोग।
- मूल्यांकन क परिणाम से निकाले गए निष्कर्ष के आधार पर व्यक्ति की व्यवसायिक क्षमता का अनुमान लगाना, (हालाँकि कुछ स्थितियों में यह संभव है

कि परिणाम का संबंध उस समय उस विशेष समुदाय के भीतर उपलब्ध अवसरों से न हो)

- रोजगार के लिए व्यक्ति विशेष का चयन।

7.6.3 रोजगार संबंधी/व्यवसायिक क्रियात्मक मूल्यांकन

रोजगार संबंधी क्रियात्मक ऐसी मूल्यांकन प्रक्रिया है जिसमें मुख्य रूप से कार्य कौशल की जानकारी प्रदान की जाती है। इसके अंतर्गत समुदाय के भीतर ही उपयुक्त रोजगार के अवसरों की पहचान की जाती है। इसके पश्चात् यह निश्चित किए गए व्यवसायिक विकल्प पर सूचनाएँ प्रदान करता है। इस मूल्यांकन के लिए स्थल विशेष का चुनाव तथा उसका निर्धारण किया जाता है। इस बात पर विशेष बल दिया जाता है प्रशिक्षण की प्रक्रिया रोजगार स्थल पर ही हो, जिस से व्यक्ति स्वयं को कार्यस्थल के वातावरण से परिचित करा सके। इस मूल्यांकन के द्वारा व्यक्ति के कार्य संबंधी कौशल तथा कार्य व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है। इस के द्वारा मूल्यांकन की समाप्ति पर सभी मूल्यांकित प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिए रोजगार का चयन किया जाता है। इसके अलावा चयनित रोजगार धारक को कार्य करने में आवश्यक सहायता भी प्रदान की जाती है।

7.6.4 सामुदायिक व्यवसायिक मूल्यांकन

इस प्रकार के मूल्यांकन के अंतर्गत सभी रोजगार प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे व्यक्तियों को समुदाय के भीतर ही रोजगार के अवसर ढूंढने में मदद करता है। तथा प्रशिक्षण के बाद उनका भविष्य सुनिश्चित करता है। इस प्रक्रिया में पहले रोजगार स्थलों की जानकारी प्राप्त की जाती है तथा उन्हें सुचिबद्ध किया जाता है। यह डाटा रोजगार अथवा व्यवसायिक प्रशिक्षकों को दिया जाता है। इस सूचना के आधार पर प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षुओं के लिए उस विशेष कौशल के प्रशिक्षण की योजना तैयार करते हैं। जिनकी उपयोगिता यथार्थ रोजगार क्षेत्र में होती है। प्रथम क्रं में समुदाय के भीतर ही विशेष प्रकार के स्थानीय कार्यों की सूची तैयार की जाती है। यह व्यवसाय क्रिया की अलग-अलग व्यवसाय क्षेत्र में तथा व्यवसाय को अलग-अलग प्रकार में विभाजित करता है। सूची को तैयार करने के पश्चात् व्यवसाय कार्यक्रम का निर्धारित रोजगार प्रदान करने वाले व्यक्ति अथवा समूह से संपर्क करता है। इसके बाद उस व्यक्ति या समूह से साक्षात्कार कर प्रशिक्षकर्ता व्यवसाय संबंधी

विशेष कौशल की जानकारी प्राप्त करता है। रोजगार के अवसर में प्रयुक्त होने वाले कौशल की जानकारी प्राप्त करना रोजगार संबंधी प्रशिक्षण प्रक्रिया का सब से महत्वपूर्ण अंग है। इस से एकत्रित सूचनाएँ प्रशिक्षक को व्यक्ति के लिए उचित योजना का निर्माण करने में आवश्यक सहायता करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

3) व्यवसायिक मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?

7.7 व्यवसायिक प्रशिक्षण के मूल्यांकन के स्तर

व्यवसायिक मूल्यांकन तीन प्रमुख स्तरों पर किया जाता है। ये सभी व्यवसायिक स्तर पर व्यक्ति के रोजगार के विकल्प को दिया निर्देशित करने का प्रयास करते हैं।

7.7.1 आवश्यकता आँकलन

आवश्यकता आँकलन का अर्थ होता है व्यक्ति की समसामयिक स्थिति तथा उस वांछित स्थिति के बीच का स्तर स्पष्ट करना जो कि प्रशिक्षण के अंत में लक्षित होनी चाहिए। इस 'अंतर' को ज्ञात करने के पश्चात् ही कार्य योजना का निर्धारण किया जाता है। इस अंतर का आँकलन व्यक्ति के प्रशिक्षण के प्रारूप के निर्धारण के लिए अहम है। इस के आँकलन के निम्न बिन्दुओं का प्रयोग किया जाता है-

- व्यक्ति विशेष के साथ साक्षात्कार करना।
- दैनिक अथवा रूटीन को एकत्रित करना।
- व्यक्ति विशेष के कथन पर विश्वास कर उससे सूचनाएँ एकत्रित करना।
- पूर्व कार्यों से प्राप्त उपलब्धियों का विवरण जुटाना।
- व्यक्ति विशेष की क्रियात्मक अथवा व्यवसाय संबंधी क्षमताओं का आँकलन करना।
- एक सीमा तक विशेषकृत अथवा मानक जाँच की प्रक्रिया को पूरा करना।

7.7.2 चिकित्सकीय मूल्यांकन

चिकित्सकीय मूल्यांकन का प्रयोग व्यक्ति विशेष की स्थिति का घन अध्ययन के संदर्भ में किया जाता है। इसमें व्यक्ति के व्यवसायिक क्षेत्र से संबंधित कौशल की जाँच तथा उसकी क्षमता का निर्धारण प्रमुख बिन्दुओं द्वारा किया जाता है।

- इसमें व्यक्ति विशेष के साथ अतिरिक्त साक्षात्कार किए जाते हैं।
- इसके पश्चात् प्राप्त परिणामों को एकत्रित कर फाइलबद्ध किया जाता है।
- व्यक्ति के लिए उचित व्यवसाय की तलाश की जाती है।
- इसमें व्यवसाय से संबंधित काउंसिलिंग की जाती है।
- व्यक्ति के मनोविज्ञान संबंधी जाँच पड़ताल कराई जाती है।
- कौशल का प्रशिक्षण किया जाता है।
- व्यक्ति विशेष तथा उपलब्ध व्यवसाय के अवसर की समीक्षा कर उनका मिलान किया जाता है।
- व्यक्ति के व्यवसायिक क्रियान्वन के लिए सहायक तकनीक पर विचार किया जाता है।

7.7.3 व्यापक व्यवसायिक मूल्यांकन

व्यापक व्यवसायिक मूल्यांकन के अंतर्गत वे सभी बिंदु आते हैं जिनका प्रयोग आवश्यकता आँकलन तथा चिकित्सकीय मूल्यांकन में किया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख हैं-विशेषकृत साक्षात्कार , एकत्रित की गई सूचनाओं का अध्ययन , वे सभी कौशल जो व्यक्ति किए जाते हैं, उन सभी के विकास का आँकलन तथा व्यवसाय की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता का आँकलन अथवा चिकित्सकीय मूल्यांकन की अपेक्षा व्यक्ति का अध्ययन गहन रूप से किया जाता है। इस के अंतर्गत होने वाले मूल्यांकन का उद्देश्य व्यक्ति विशेष के सूक्ष्म स्तर के आँकलन के लिए किया जाता है। इसमें चिकित्सकीय तथा मनोवैज्ञानिक डाटा के साथ-साथ, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक सूचनाओं का

अध्ययन भी किया जाता है इस से मूल्यांकन के उद्देश्य की प्राप्ति संभव हो। इस के अंतर्गत एकत्रित किए गए डाटा को सभी विशेषज्ञ को दिया जाता है। यह उनके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसका प्रयोग वे व्यक्ति विशेष की क्षमताओं का पता लगाकर उसकी क्षमता के अनुरूप लक्ष्य निर्धारण कर उसकी सहायता करते हैं तथा चयनित कार्य को अच्छी तरह से पूरा करने में सहायता प्रदान करते हैं।

7.8 व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियाँ

व्यवसायिक मूल्यांकन को अच्छी तरह से क्रियान्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि उस से संबंधित कुछ नीतियों का निर्माण कर उस के अंतर्गत ही अपनी योजना का क्रियान्वन करना चाहिए। इसके लिए इससे संबंधित नीतियों का निर्माण करने के लिए कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। सबसे पहले हमें यह सोचना चाहिए कि जो भी नीतियों हमारे द्वारा अपनाई जा रही हो, उन में माता-पिता तथा परिवार का पूर्ण समर्थन एवं सहयोग प्राप्त हो। इसके अलावा व्यक्ति विशेष के आर्थिक स्तर को भी ध्यान में रखना चाहिए। माता-पिता अथवा परिवार का समर्थन एवं आर्थिक स्तर की अनुरूपता से घर पर भी विकास संबंधी प्रक्रिया में सहयोग प्राप्त होता है जिस में घर पर एक अच्छे वातावरण का निर्माण शामिल है। इसके पश्चात् नीतियों अथवा योजनाओं के निर्माण से पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सभी नीतियों का निर्माण यथार्थवादी परिस्थिति को ध्यान में रख कर हो रहा है जिसके अंतर्गत किसी यथार्थपरक कार्य का निश्चय किया गया हो, तथा जिसकी सहायता से प्रशिक्षक एवं काउंसलर, व्यक्ति विशेष को रोजगार दिलाने में मदद कर सकें। नीतियों के निर्माण में एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि सभी नीतियों अथवा योजनाएँ दीर्घकालिक न हो वरन इनमें से कुछ अल्पकालिक भी हों, जिस से एक निश्चित अंतराल के बाद इन में बदलाव या सुधार की आवश्यकता होने पर इनमें सुधार किया जा सके। कार्य योजना की तरह ये सभी लचीली होनी चाहिए। ये सभी व्यक्ति के समसायिक रिकार्ड के अनुसार बदली जनि चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

4) व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियों की विशेषता बताएँ।

7.9 प्रशिक्षु कौशल का मूल्यांकन

प्रशिक्षु कौशल के मूल्यांकन में दो मुख्य पहलू होते हैं।

- 1.)जातिगत(generic)कौशल का मूल्यांकन
- 2)विशिष्ट(specific)कौशल का मूल्यांकन

7.9.1 प्रशिक्षु (generic) कौशल का मूल्यांकन

जातिगत कौशल वे सभी पूर्व निर्धारित कौशल हैं जिनकी आवश्यकता किसी भी रोजगार अथवा व्यवसाय में जाने से पहले पड़ती है अथवा जो रोजगार के प्रशिक्षण अथवा रोजगार हेतु चुनाव के लिए आवश्यक होते हैं। इनके अंतर्गत व्यक्तिगत, रोजगार ,अकादमिक ,घरेलू ,सुरक्षा संबंधी एवं कार्य करने की क्षमता इत्यादि से संबंधित कौशल का परीक्षण अभ्यर्थी के अंदर किया जाता है। जातिगत कौशल के लगभग 80 प्रकार हैं, इसका निर्धारण कि अभ्यर्थी के लिए कौन से कौशल का परीक्षण करना है यह रोजगार के प्रकार पर निर्भर करता है।

7.9.2 विशिष्ट(specific)कौशल का मूल्यांकन

ये सभी कौशल सामुदायिक मूल्यांकन,साक्षात्कार ,तथा रोजगार अथवा व्यवसाय के व्यक्ति संबंधी विश्लेषण के दौरान प्राप्त किए जाते हैं। कौशल के मूल्यांकन कि आवश्यकता तब पड़ती है जब किसी विशेष समुदाय के भीतर विभिन्न प्रकार के निश्चित रोजगार अवसरों का पता लगाया जाता है तथा ,व्यवसाय उपलब्ध कराने वाले के साक्षात्कार से यह प्राप्त सूचनाओं के आधार पर व्यवसाय का विश्लेषण कर लिया जाता है। इसकी आवश्यकता इसलिए होती है कि रोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् यह तय किया जाता है की उसके लिए कौन से कौशल वांछित हैं तथा उस कौशल से संबंधित मापदण्ड संबंधी आवश्यकताओं का प्रारूप तैयार कर उनका विकास मानसिक मंद विधार्थी में करना होता है जिस से व्यवसाय कार्य मिलने के पश्चात् उसमें अपने निश्चित कार्य को पूरा करने की क्षमता विकसित हो चुकी हो, अथवा वह आसानी से चयनित हो सके। इस के अलावा अभ्यर्थी के लिए उस प्रकार के व्यवसाय का चुमाव करना भी सरल हो जाता है जिसका मापदण्ड उसके कौशल संबंधित मापदंड से मेल खता हो।

अभ्यास प्रश्न

5)जातिगत(generic)कौशल एवं विशिष्ट कौशल मं अंतर स्पष्ट करें।

7.10 मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून

मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून विशेष रूप से सक्षम व्यक्ति की समाज में स्थिति सुदृढ़ करने हेतु बनाए जाते हैं। विशिष्ट युवाजनों तथा मानसिक रूप से मंद युवाओं के लिए सरकार अलग से प्रयत्न करती है तथा कानून निर्माण करती है केन्द्रीय कानून के अंतर्गत मूल्यांकन दो प्रकार के होते हैं।

(i)आवश्यक(mandated)मूल्यांकन:-इस प्रकार का मूल्यांकन सभी प्रकार के अभ्यर्थियों के लिए होता है।

(ii)अनुमति प्राप्त(permitted)मूल्यांकन:-इस प्रकार का मूल्यांकन कुछ ही अभ्यर्थियों को उपलब्ध कराया जाता है जो किसी विशेष परिस्थिति के अंतर्गत यह अनुमति प्राप्त करते हैं।

मूल्यांकन से संबंधी कानून विशेष रूप से सक्षम व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाए जाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कानून निम्नलिखित हैं:-

- सामाजिक सुरक्षा अधिनियम 1935, एवं संशोधन
- इंडिविजुअल विद डिसएबिलिटी, शिक्षा सुधार अधिनियम,2004
- नो चाइल्ड लेफ्ट बिहाइंड अधिनियम 2001
- वर्कफोर्स इन्वेस्टमेंट अधिनियम 1998
- पुनर्वास अधिनियम 1973
- पुनर्वास अधिनियम सुधार 1998

इन सभी अधिनियमों में आवश्यक मूल्यांकन तथा अनुमति प्राप्त मूल्यांकन की अलग-अलग वैधानिक व्यवस्थाएँ हैं। ये सभी अधिनियम यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं कि समाज में मानसिक मंद अथवा अन्य विशेष रूप से सक्षम युवाजन अपने

विकास के समान अवसर प्राप्त कर सकें तथा आर्थिक तथा समाजिक उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकें।

7.11 पाठ सारांशीकरण

- मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति विशेष में निश्चित बदलाव लक्षित करने के लिए की जाती है।
- मूल्यांकन के द्वारा मानसिक मंद व्यक्ति विशेष अपने लिए समान अवसर प्राप्त कर पाने में सक्षम हैं।
- मूल्यांकन का मुख्य कार्य व्यक्ति को आंतरिक रूप से सुदृढ़ कर उसके अंदर निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना है।
- परिवर्तन आयु में मूल्यांकन रोजगार की संभावनाएँ तलाश करने में सहायक है।
- व्यस्क स्तर पर मूल्यांकन चार क्रियाकलापों क्रमशः अवलोकन, साक्षात्कार, रिकार्ड समीक्षा तथा जाँच प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता है।
- व्यवसायिक मूल्यांकन समुदाय के भीतर ही व्यक्ति विशेष के लिए रोजगार के अवसर एवं स्थान निर्धारित करता है।
- व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियों यथार्थपरक होनी चाहिए जो व्यक्ति को निश्चित रोजगार दिलाने की दिशा में कार्य कर सकें।
- जातिगत एवं विशिष्ट कौशल का किसी भी व्यवसाय अथवा रोजगार कार्य के लिए व्यक्ति का चुनाव करने के पूर्व ऑकलन किया जाता है।
- मूल्यांकन संबंधी केन्द्रीय कानून विशिष्ट रूप से सक्षम व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करते हैं एवं समाज में उन्हें उचित अवसर दिलाने की ओर उन्मुख एवं प्रयासरत होते हैं।

7.12 पारिभाषिक शब्दावली

1. विशिष्ट अध्यापन क्रिया:-विशिष्ट छात्रों के लिए प्रयोग की जाने वाली अध्यापन प्रक्रिया
2. अभिरुचि:-अभिरुचि किसी विशेष कार्य को करने की जन्मजात आंतरिक क्षमता है
3. प्रशिक्षण तंत्र:-प्रशिक्षण तंत्र से तात्पर्य है वह समूह या वर्ग जो प्रशिक्षण के प्रक्रिया में सम्मिलित है जैसे-प्रशिक्षक ,विशेष शिक्षक या को-आर्डिनेटर इत्यादि।
4. शैक्षणिक/व्यवहारिक प्राप्ति:-शिक्षण प्रक्रिया से मिला हुआ ज्ञान अथवा विकसितबौद्धिक /व्यवहारिक क्षमता
5. औपचारिक मूल्यांकन:-विशेष संरचना का मूल्यांकन
6. व्यक्ति विशेष व्यवसायिक योजना:-ऐसी व्यवसायिक योजना जो व्यक्ति की क्षमता के अनुकूल हो।
7. 'स्कोर':-'अंक' के स्वरूप में मिले हुए परिणाम
8. रिकार्ड:-व्यक्ति के विषय में प्राप्त विभिन्न सूचनाओं का संग्रह
9. सहायक तकनीक:-कार्य के दौरान प्रयुक्त होने वाले उपकरण जो व्यक्ति को सक्षमता से कार्य करने में सहायक हों।

7.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1:- मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया को कहते हैं जिसके अंतर्गत विशिष्ट अध्यापन क्रिया अथवा व्यवसायिक प्रशिक्षण के दौरान व्यक्ति की समसामयिक अवस्था एवं शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया के अंत में वांछित परिणाम के बीच के अंतर का पता लगाया जाता है। इसके तहत उस अंतर को काम करने के लिए विविध योजनाएँ बनाई जाती हैं। मूल्यांकन विभिन्न स्तर पर शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया को दिशा निर्देशित करता है तथा उसे आवश्यक गति प्रदान करता है। मूल्यांकन उन सभी मानसिक मंद व्यक्तियों एवं अन्य विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए आवश्यक है जिन्हें विशिष्ट अध्यापन क्रिया एवं व्यवसायिक

प्रशिक्षण के द्वारा आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयत्न किया जाता है।

उत्तर 2:- मूल्यांकन प्रक्रिया का संचालन करते समय हमें ध्यान में रखना चाहिए कि मूल्यांकन का लक्ष्य स्पष्ट हो ताकि योजना के चुनाव में कोई दुविधा न रहे। इसके अंतर्गत व्यक्ति की प्राप्ति के साथ-साथ उसके वातावरण की समीक्षा भी की जानी चाहिए। यह वातावरण घरेलू अथवा कार्यस्थल से जुड़ा हुआ हो सकता है। औपचारिक मूल्यांकन के तहत चुने गए उपकरणों के संबंध में उनकी वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। मूल्यांकन का संचालन योग्य व्यक्तियों अथवा विशेषज्ञों के द्वारा किया जाना चाहिए। मूल्यांकन का विवरण देते समय इसकी भाषा सरल एवं स्पष्ट रखनी चाहिए। मूल्यांकन से संबंधित क्रियाकलाप रचनात्मक तथा सकारात्मक होने चाहिए।

उत्तर 3:-व्यवसायिक अथवा रोजगार संबंधी मूल्यांकन किसी भी जनसमुदाय के भीतर ही मानसिक मंद अथवा अन्य विशेष व्यक्तियों के लिए रोजगार की संभावनाएँ तलाश करने का कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य व्यक्ति विशेष की बौद्धिकव्यवहारिक क्षमता एवं कौशल को ध्यान में रखते हुए उनके लिए ऐसे रोजगार की तलाश करना है, जिस के कार्य की करने के उनमें क्षमता विकसित हो। इसके द्वारा मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के लिए समुदाय के भीतर ही रोजगार उपलब्ध कराकर उनके लिए सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है।

उत्तर 4:-व्यवसायिक मूल्यांकन संबंधी नीतियों में माता-पिता अथवा परिवार की अनुमति आवश्यक होती है। इसके लिए व्यक्ति के आर्थिक सामाजिक परिवेश का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। जो भी नीतियाँ व्यक्ति के लिए बनाई जा रही हों, वह यथार्थपरक होनी चाहिए, इसका तात्पर्य यह है कि वे असल परिस्थिति में समुदाय के भीतर किसी निश्चित रोजगार के लिए व्यक्ति विशेष को तैयार करने की तरफ अग्रसर हों। व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई इन नीतियों में कुछ अल्पकालिक तथा कुछ दीर्घकालिक होनी चाहिए। अल्पकालिक नीतियों से लाभ यह है कि वे व्यक्ति में आ रहे बदलाव के अनुसार किसी अंतराल के पश्चात् पुनर्मूल्यांकन के परिणामों के अनुसार बदली जा सकती हैं।

उत्तर 5:-जातिगत कौशल के पूर्व निर्धारित आवश्यक कौशल हैं जिनकी किसी भी रोजगार अथवा व्यवसाय में जाने से पूर्व व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है। इसके अंतर्गत व्यक्तिगत कौशल, सामाजिक कौशल, अकादमिक कौशल, सुरक्षा संबंधी कौशल तथा कार्य-कुशलता इत्यादि आते हैं। जबकि विशिष्ट कौशल ऐसे कौशल हैं जो कि सामुदायिक मूल्यांकन, साक्षात्कार तथा रोजगार अथवा व्यवसाय के व्यक्ति संबंधी विश्लेषण के दौरान पाए जाते हैं तथा जिनका उपयोग किसी विशेष रोजगार अथवा व्यवसाय के लिए किया जाता है।

7.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Berkell, D.E. Brown, J.M. Transition from school to work for person with disabilities, London, longman.
- Everson, J Metal (1987) 'Achieving outcomes: a guide to integracy training in transition and supported employment, project work in Virginia commonwealth university, Virginia.
- Thressiakutty. A.T (1992) Job Analysis and on the job training for persons with mental retardation series 1,2,3 NINH, Secunderabad.
- Wehman P. (1981) Competitive employment: New horizons for severaly disdoted individuals. Baltimore: Paul.H. Brookes Publising Co.
- Wehman P, and Hoon, M.S, Supported vocational rehabilitation and supported employment

- Wright G.N (1980) Total Rehabilitation Boston little, Brown & co.
- Newbert D(1985) Use of Vocational evaluation on recommendation in selected public school setting career development for exceptional individuals.

7.15 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

- Flexer, R.Simmons, T.Luft.P & Baer R(2001) Transition planning for secondary students with disabilities upper saddle river, N J :Prentice hall.
- Kapes.J & Whitfield .E.A(2002) A counselor's guide to career assessment instruments(4 th) Tulsa, ok: National career development association.
- Salvia J & Ysseldyke J.E(2004) Assessment in special and inclusive education (9 th) New York:Houghton Mifflin.

7.16 निबंधात्मक प्रश्न

- 1) मूल्यांकन की विशेषता, उसकी विशिष्ट युवाओं के जीवन में उपयोगिता तथा उसके स्वरूप पर प्रकाश डालें।
- 2) व्यवसायिक मूल्यांकन क्या है? उसकी उद्देश्य एवं तत्व सहित विवेचना करें।

इकाई 8- स्कूल से कार्यस्थल तक के बदलाव के लिए मूल्यांकन

(मूल्यांकन को फाइलबद्ध करना, परिणाम की व्याख्या तथा रिपोर्ट लेखन: मूल्यांकन के दूरगामी परिणाम तथा सामुदायिक जीवन मापन के लिए मूल्यांकन का महत्त्व)

- 8.1 प्रस्तावना
- 8.2 उद्देश्य
- 8.3 विधालय स्तर से कार्य स्तर तक परिवर्तन : एक अवलोकन
 - 8.3.1 परिवर्तन प्रक्रिया के मुख्य उद्देश्य
 - 8.3.2 परिवर्तन प्रक्रिया के पूर्व आवश्यक कार्य
 - 8.3.3 परिवर्तन प्रारूप एवं उसकी आवश्यकता
- 8.4 पूर्व व्यवसायिक स्तर पर मूल्यांकन
 - 8.4.1 पूर्व व्यवसायिक स्तर पर परिवर्तन योजना का मूल्यांकन
- 8.5 विधालय स्तर के पश्चात् मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य
- 8.6 व्यवसायिक परिवर्तन मूल्यांकन के उद्देश्य
- 8.7 परिवर्तन प्रक्रिया में विविध योजनाओं के अंतर्गत मूल्यांकन
 - 8.7.1 व्यक्तिमूलक शिक्षा योजना (IEP)
 - 8.7.2 व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना (IVTP)
- 8.8 विश्लेषण द्वारा व्यवसाय मूल्यांकन

- 8.9 मूल्यांकन को फाइलबद्ध करना
 - 8.9.1 कार्य व्यवहार
- 8.10 परिणाम की व्याख्या तथा रिपोर्ट लेखन
 - 8.10.1 परिणाम व्याख्या की क्रियाविधि
 - 8.10.2 रिपोर्ट लेखन
- 8.11 मूल्यांकन के दूरगामी परिणाम
- 8.12 सामुदायिक जीवनयापन के लिए मूल्यांकन का महत्त्व
- 8.13 पाठ सारांश
- 8.14 पारिभाषिक शब्दवाली
- 8.15 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 8.16 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 8.17 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री
- 8.18 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

पिछले अध्याय में हम पढ़ चुके हैं कि मानसिक मंद युवा (PWIDs) के जीवन में मूल्यांकन की क्या भूमिका है, किस प्रकार से वह युवाजन को उनके व्यवसाय के चुनाव में सहायक सिद्ध होता है तथा समाज में उनकी भूमिका तय करने का जिम्मेदार होता है। इस अध्याय में हम विशेष युवाजन के स्कूल स्तर से कार्य स्तर तक के परिवर्तन के लिए मूल्यांकन की भूमिका को देखेंगे। भारत जैसे देश में जहाँ 70 लाख के आस पास मानसिक मंद युवा है वहाँ मूल्यांकन जैसी प्रक्रिया की भूमिका अत्यधिक बढ़ जाती है। बहुत से ऐसे युवा बेहतर सुविधाओं के अभाव में, जो उन्हें बेहतर व्यवसायिक केन्द्रों (Vocational

center) तथा बेहतर योजनाओं के न होने की वजह से नहीं मिल पाती, ऐसी स्थिति में मूल्यांकन प्रक्रिया टीम की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, कि वे अपने कार्य क्षेत्र को और अधिक विस्तृत एवं प्रभावशाली बनाने का प्रयास करें। इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि मूल्यांकन टीम के द्वारा मूल्यांकन का दस्तावेज बनाना परिणाम की समीक्षा तथा रिपोर्ट लेखन किस प्रकार से किया जाता है। इस के अलावा हम यह जानने का भी प्रयत्न करेंगे कि मूल्यांकन के दूरगामी परिणाम क्या हैं तथा किस प्रकार यह किसी व्यक्ति विशेष के समुदाय में जीवन-निर्वहन को प्रभावित करता है तथा इस से युवाओं के सामुदायिक विकास में किस प्रकार सहायता मिलती है।

8.2 उद्देश्य

इस अध्याय की समाप्ति के पश्चात् आप:-

- विद्यालय स्तर से कसरी के परिवर्तन में मूल्यांकन की भूमिका को समझने में सक्षम होंगे।
- परिवर्तन प्रक्रिया के उद्देश्य को जान सकेंगे।
- विद्यालय स्तर के पश्चात् एवं पूर्व व्यवसायिक स्तर पर परिवर्तन योजना के मूल्यांकन की अवधारण को स्पष्ट कर सकेंगे।
- विविध योजनाओं के अंतर्गत मूल्यांकन को समझने में सक्षम होंगे।
- मूल्यांकन को फाइलबद्ध करने के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- परिणाम व्याख्या की प्रक्रिया की आवश्यक जानकारी प्राप्त सकेंगे।
- मूल्यांकन के दूरगामी परिणाम एवं सामाजिक जीवन यापन के लिए मूल्यांकन के परिणाम को समझने में सक्षम होंगे।

8.3 विद्यालय स्तर से कार्य स्तर तक परिवर्तन: एक अवलोकन

विद्यालय स्तर से कार्य स्तर तक का परिवर्तन वह स्थिति है जिस में व्यक्ति, व्यवहारिक, बैद्धिक, सामाजिक आर्थिक तथा अन्य स्तर पर स्वयं को परिवर्तन की

दशा में पाता है। विशेष रूप से सक्षम युवाओं के लिए परिवर्तन का यह काल बहुत महत्वपूर्ण होता है। जब यह परिवर्तन विद्यालय से कार्य स्तर के बीच हो रहा होता है, तब बहुत से महत्वपूर्ण बदलाव पाए जाते हैं। जैसा कि हम जानते हैं विद्यालय स्तर पर जो शिक्षण की प्रक्रिया होती है उसका लक्ष्य कार्य स्तर के प्रशिक्षण के लक्ष्य से भिन्न होता है। दोनों ही स्थितियों के क्रियाकलाप भिन्न उद्देश्यों को पूर्ति के लिए कार्य करते हैं। जहाँ विद्यालय तथा उस से जुड़े क्रियाकलाप व्यक्ति की सीखने की क्षमता का विकास करते हैं तथा उसके दैनिक जीवन संबंधी क्रियाकलापों को सुचारू रूप से संचालित करने के विषय में प्रशिक्षण देते हैं वहीं कार्य स्तर पर कुछ विशेष उद्देश्य देखने को मिलती हैं। कार्य स्थल का वातावरण से बेहद अलग होता है। इस के अलावा कार्य स्तर का प्रशिक्षण व्यक्ति को अधिक से अधिक जिम्मेदार बनाने का प्रयत्न करता है, तथा उसे एक अंतिम स्थिति तक पहुँचाने का कार्य करता है जहाँ वह स्वयं पर भरोसा कर, आत्मनिर्भर हो कर अपना जीवन जी सके, और उसे आगे के लिए किसी भी संस्था पर निर्भरता से स्वतंत्र करने का प्रयास करता है। यह उसके जीवन का सब से अहम पड़ाव है क्योंकि इस के पश्चात् वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो चुका होता है। विद्यालय स्तर से कार्य स्तर तक के परिवर्तन के लिए अलग-अलग प्रकार के परिवर्तन पद्धति (transition model) की आवश्यकता होती है।

8.3.1 परिवर्तन प्रक्रिया के मुख्य उद्देश्य

परिवर्तन प्रक्रिया (transition process) के अंतर्गत मानसिक मंद युवजनों के लिए व्यवसाय उपलब्ध कराने हेतु योजना निर्माण में इस प्रक्रिया में कुछ उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं-

- विद्यालय के दौरान ही व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए एक उचित योजना का निर्माण करना।
- माता-पिता एवं रोजगार उपलब्ध करने वाले समूह अथवा संस्था के साथ मिलकर एक औपचारिक योजना की नींव रखना।
- समुदाय के भीतर ही विभिन्न स्थानीय व्यवसाय संबंधी स्थानों को खोज करना।

- प्रशिक्षण प्रक्रिया के दौरान तथा उसके पश्चात् जितने भी अलग-अलग रोजगार के विकल्पों की खोज की गई है उन सभी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए रोजगार प्रदान करने वाले समूह के साथ मिलकर विमर्श करना तथा संभव सहयोग देना।

चूँकि परिवर्तन प्रक्रिया की योजना भूत आवश्यक योजना है तथा इसका पहले अथवा देर से बहुत ही निश्चयकारी होता है तथा व्यक्ति के भविष्य पर बड़ा अंतर डाल सकता है इसलिए जहाँ तक संभव हो सकता हो, इसका निर्माण विधालय छोड़ने से पहले ही कर लेना चाहिए, ताकि विधालय छोड़ने के तुरंत बाद इसका क्रियान्वन आरंभ हो सके।

8.3.2 परिवर्तन प्रक्रिया के पूर्व आवश्यक कार्य

परिवर्तन प्रक्रिया के पूर्व हमें व्यक्ति विशेष के विषय में कुछ विशेष तथा आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त कर लेनी चाहिए। विशेषकर उन सभी क्षेत्रों से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित कर लेनी चाहिए। जिनका प्रभाव उनके व्यवसाय विकल्प पर पड़ता है तथा जो उनके भविष्य निर्धारण में सहायक होते हैं और इसीलिए सूचनाओं की आवश्यकता भविष्य के योजना निर्माण में होती है। इसमें अलग-अलग क्षेत्रों जैसे अकादमिक क्षेत्र, कार्य कौशल क्षेत्र एवं स्वतंत्रता के स्तर से विभिन्न सूचनाओं को एकत्रित करने की आवश्यकता होती है।

क) अकादमिक उपलब्धि के अंतर्गत

- व्यक्ति विशेष की अकादमिक क्षमता तथा उसके आधारभूत कौशल क्या हैं
- व्यक्ति की सीखने की नीति किस प्रकार की है
- उसका कक्षा कोर्स के साथ सामंजस्य कैसा है

ख) कार्य कौशल के अंतर्गत

- व्यक्ति विशेष को किस प्रकार के अनुभव प्राप्त है
- उसकी करियर परीक्षण पद्धति किस प्रकार की है

- क्या उसका किसी कार्य विशेष के लिए रुझान है
- उसकी किसी विशेष कार्य में दक्षता है अथवा नहीं
- उसकी सामाजिक रूचि किस प्रकार की है

ग)स्वतंत्रता के स्तर के अंतर्गत

- उसका जीवन कौशल(life skill) कैसा है
- क्या वह स्वयं को किसी कार्य को करने अथवा ण करने के पक्ष में सुझाव डे सकता है
- उसका जिम्मेदारी का स्तर क्या है

8.3.3 परिवर्तन प्रारूप (transition model) तथा उस की आवश्यकता

विधालय स्तर से कार्य सरत तक के बदलाव को निर्देशित करने के लिए विशेष योजना की आवश्यकता होती है। विधालय स्तर से कार्य स्तर तक का परिवर्तन स्वयं में एक निश्चित परिणाम देने वाली प्रक्रिया है, इसलिए अगर इस बदलाव की प्रक्रिया से हमें अच्छे व लाभदायक परिणाम प्राप्त करने हों जो व्यक्ति विशेष का भविष्य सुनिश्चित करने में हमारी सहायता कर सके तो इसके लिए हम एक निश्चित परिवर्तन प्रारूप की सहायता लेते हैं। इसके प्रयोग से हमें एक निश्चित योजना पर अमल करने में सहायता मिलती है जिसके परिणाम स्वरूप व्यवसायिक स्तर पर व्यक्ति विशेष में व्यवहारिक परिवर्तन तथा कार्य कौशल संबंधी आवश्यक सकारात्मक बदलाव लाने की एक संरचना तैयार हो जाती है। परिवर्तन प्रारूप(transition model) विभिन्न प्रकार के होते हैं,उनमें से कुछ मुख्य हैं-

1. परिवर्तन की OSER परिभाषा(विल 1984)
2. वेमैन, क्रीग्ल तथा वार्कस -1984 परिवर्तन प्रारूप
3. पैथवेज प्रारूप
4. हार्पन का संशोधित परिवर्तन प्रारूप 1985
5. NIMH परिवर्तन प्रारूप

परिवर्तन दरअसल साझेदारी का कार्य है जिस को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए विधालय, समुदाय तथा माता-पिता को मिलकर कार्य करना होता है। इन सब को साथ मिलकर यह सुनिश्चित करना होता है कि व्यक्ति विशेष को आवश्यक सुविधाएँ तथा सेवाएँ लगातार सुचारू रूप से प्राप्त हो रही हों। बदलाव की इस प्रक्रिया में माता-पिता की भूमिका बेहद अहम होती है। वे व्यक्ति के भविष्य के लिए संघर्ष करते हैं तथा आर्थिक योजनाएँ तैयार करते हैं।

आवश्यकता

इस प्रकार की पुनर्वास सेवा का उद्देश्य मुख्यतः व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रदान करना है। मानसिक मक्षमता के युवाओं की संख्या विधालय के भीतर बढ़ने से इसकी आवश्यकता में और वृद्धि हो गई है, तथा विधालय के बाद यह आवश्यक है कि बच्चे जीवन भर अपने आर्थिक स्रोत के लिए माता-पिता अथवा परिवार के दूसरे सदस्यों पर निर्भर न रहें। इसके अलावा चूँकि यह भूत आवश्यक है कि मानसिक अक्षमता से जुड़े व्यक्ति समाज कि मुख्यधारा से अलग न जाँ बल्कि इसमें शामिल हो कर अपना जीवन निर्वहन कर सकें। चूँकि ये सभी समाज की मुख्य धारा से हटकर जीवन यापन करने को केवल इसलिए विवश थे क्योंकि उनके लिए अलग तथा प्रभावी योजनाओं का प्रबंध नहीं था। इस प्रकार के व्यक्ति विशेष के अंदर आत्मसम्मान की भावना का विकास करना आवश्यक था और उन्हें हीन भावना से मुक्ति दिलानी थी तथा उनके जीवन को आर्थिक रूप से स्वतंत्र करना अनिवार्य था। इसके अलावा उनके वैवाहिक जीवन में भी बहुत सारी परेशानियाँ आती थी। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन प्रारूप(transition model) का विकास करना आवश्यक था।

अभ्यास प्रश्न

- 1) परिवर्तन प्रक्रिया (transition process) के मुख्य उद्देश्य क्या हैं।
- 2) परिवर्तन प्रारूप क्या होता है? इसके उदाहरण दीजिए।

8.4 पूर्व व्यवसायिक स्तर पर मूल्यांकन

पूर्व व्यवसायिक स्तर एक ऐसा चरण है जिसमें यह निर्धारित किया जाता है कि विगत वर्षों में उपलब्ध कराए गए अनुभव (अकादमिक अथवा कार्य कौशल संबंधी) का कितना सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति विशेष पर पड़ा है तथा उसके भविष्य में उसका क्या महत्व है। इस चरण में व्यक्ति कैरियर उन्मुख कार्यक्रम की तरफ निर्देशित होती है। इस स्तर पर मूल्यांकन का अर्थ विधार्थी को पूर्व व्यवसायिक स्तर के पहले उपलब्ध कराए गए अनुभव का तथा पूर्व व्यवसायिक स्तर पर प्राप्त कराए गए प्रशिक्षण का व्यक्तिगत सामाजिक कौशल सुरक्षा संबंधी कौशल तथा कार्य कौशल के रूप में विधार्थी में क्या विकास हुआ है।

8.4.1 पूर्व व्यवसायिक स्तर पर परिवर्तन योजना का मूल्यांकन

पूर्व व्यवसायिक स्तर पर परिवर्तन योजना का दो स्तर पर मूल्यांकन किया जाता है।

क) प्राथमिक स्तर-प्राथमिक स्तर पर परिवर्तन योजना का मूल्यांकन किशोर के साधारण क्रियाकलापों को ध्यान में रखकर उनके आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए टेबल साफ करना, कुर्सी टेबल को व्यक्तिगत करना, बेकार चीजों को कूड़ेदान में डालना, एक जगह से दूसरी जगह वस्तुएँ पहुँचना। यह व्यवसाय संबंधी कौशल के सुधार का अच्छा माध्यम है। इसके द्वारा प्रशिक्षक किशोर की क्षमता, कमजोरी एवं रुचि को पहचान कर उसे अलग-अलग व्यवसाय के परिप्रेक्ष्य में प्रशिक्षण के लिए तैयार कर सकता है। इससे प्रशिक्षक कार्य एवं मुद्रा की अवधारणा का विकास कर मूल्यांकन कर सकता है।

ख) द्वितीय स्तर –द्वितीय स्तर के क्रियाकलापों का निर्धारण इस आधार पर किया जाता है प्राथमिक स्तर पर व्यक्ति का रुझान किस प्रकार के क्रियाकलाप की ओर रहा है। इस स्तर पर मूल्यांकन का उद्देश्य विभिन्न क्रियाकलापों के द्वितीय स्तर का अध्ययन करने के साथ-साथ कुछ विशेष महत्व के विषय जैसे बाहरी वेश-भूषा, सम्प्रेषण, तथा उचित सामाजिक व्यवहार का आकलन भी किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

3) पूर्व व्यवसायिक स्तर पर परिवर्तन योजना के मूल्यांकन के प्राथमिक तथा द्वितीय स्तर में क्या अंतर है?

8.5 विधालय स्तर के पश्चात् मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य

विधालय स्तर के पश्चात् मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य निम्न हैं:-

- समुदाय के भीतर उपलब्ध रोजगार के अवसरों का आँकलन करना।
- व्यवसायिक पाठ्यक्रम/कोर्स के लिए चेकलिष्ट का निर्माण करना।
- जिसके अंतर्गत आवश्यक व्यवसायिक कौशल सम्मिलित हों।
- विधार्थी की रुचि एवं अभिरुचि का मूल्यांकन करना।
- माता-पिता तथा रोजगार दिलाने वाली संस्था के मिलकर विधालय के अंतिम दिनों में विधालय छोड़ने से पूर्व व्यक्तिमूलक परिवर्तन योजना का निर्माण करना

विधालय स्तर के पश्चात् सभी आवश्यक परिवर्तन योजनाएँ मूल्यांकन के इन सभी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं।

8.6 व्यवसायिक परिवर्तन मूल्यांकन के उद्देश्य

व्यवसायिक परिवर्तन मूल्यांकन व्यक्ति के भीतर आए व्यवसायिक स्तर पर बदलाव की समीक्षा करता है। इसके मुख्य उद्देश्य हैं:-

- सामुदायिक मूल्यांकन करना
- संभाव्य व्यवसाय के अवसरों के लिए जनसंख्या तथा स्थान विशेष का चयन करना
- विधार्थी का क्रियासंबंधी मूल्यांकन करना
- प्रशिक्षण स्थान की तलाश करना
- विशेष निश्चित समय अंतराल पर मूल्यांकन करना तथा सुधार करना
- स्कूल से कार्यस्थल तक की प्रक्रिया में मूल्यांकन के लिए निर्धारित नीतियों का मूल्यांकन करना

8.7 परिवर्तन प्रक्रिया में विविध योजनाओं के अंतर्गत मूल्यांकन

परिवर्तन प्रक्रिया के अंतर्गत जो मूल्यांकन किया जाता है वह विविध योजनाओं की सहायता से कराया जाता है। ये सभी योजनाएँ विशेष शिक्षकों, तथा विविध प्रकार की टीम के साथ मिलकर बनाई जाती हैं।

8.7.1 व्यक्तिमूलक शिक्षा योजना(IEP)

व्यक्तिमूलक शिक्षा योजना(IEP) का विकास, विशेष शिक्षकों द्वारा किया जाता है जिसके साथ एक बहु अनुशासनिक टीम(multi-disciplinary team) भी कार्य करती है। इसमें मुख रूप से शिक्षा संबंधी सेवा प्रदान करने वाली संस्था कार्य करती है। इस योजना के अंतर्गत क्लासरूम की गतिविधियों के दौरान ही विद्यार्थी की अभिरुचि, क्लासरूम व्यवहार अर्थात् क्लासरूम में सामंजस्य तथा साथियों के साथ सहयोग, साधारण कौशल, साधारण तथा विशिष्ट व्यवहार इत्यादि का आँकलन किया जाता है। इसके द्वारा छात्र की इन सभी गतिविधियों का भलीभांति मूल्यांकन कर उसकी व्यवसायिक योजनाओं के विकास में सहायता मिलती है।

8.7.2 व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना(IVTP)

व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना(IVTP)द्वितीय स्तर पर विशेष शिक्षकों तथा माता-पिता, रोजगार प्रदान करने वाली संस्था, व्यवसायिक स्टाफ के सम्मिलित प्रयास से तयार होने वाली परिवर्तन योजना है। इससे द्वारा पूरी की जाने वाली मूल्यांकन प्रक्रिया के द्वारा छोटी समयावधि के लक्ष्य के साथ-साथ स्कूल के अंत में वांछित बदलाव का भी मूल्यांकन किया जाता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति के कार्य के दौरान क्रियात्मक मूल्यांकन, समुदाय में उसके व्यवहारिक कौशल का आँकलन किया जाता है। विधालय स्तर पर व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना का संचालन विशेष शिक्षक करता है जब कि कार्य व्यवसायिक स्तर पर यह जिम्मेदारी व्यवसायिक स्टाफ की होती है। इस योजना के अंतर्गत सर्वप्रथम विद्यार्थियों की आवश्यकता की पहचान की जाती है। इसके पश्चात् परिवर्तन सेवा(transition service)की 'आवश्यकता' की पहचान की जाती है। इसके पश्चात् IVTP की मीटिंग बुलाई जाती है IVTP के विकास तथा इसके लागू करने की प्रक्रिया को संचालित किया जाता है। इसमें व्यवसायिक प्रशिक्षक, विधालय कर्मचारी तथा

व्यवसायिक कर्मचारी के बीच मध्यस्थता करता है। वह IVTP की मीटिंग में भी शामिल होता है। व्यवसायिक प्रशिक्षक व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं कार्य योजना तैयार करने के लिए IVTP टीम के साथ मिलकर योजनाओं का निर्माण करता है। वह विधार्थी के मूल्यांकन में भी सक्रिय भूमिका निभाता है और उसे रोजगार के लिए प्रशिक्षित करने में सहायता करता है।

अभ्यास प्रश्न

4) व्यक्तिमूलक शिक्षा योजना (IEP) तथा व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना (IVTP) में अंतर स्पष्ट करें।

8.8 विश्लेषण द्वारा व्यवसाय मूल्यांकन

व्यवसाय मूल्यांकन समुदाय के भीतर ही व्यक्ति विशेष को रोजगार दिलाने के लिए किए जाने वाले प्रयास में अहम भूमिका निभाता है। समुदाय के भीतर रोजगार के आँकलन के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति विशेष के लिए समुदाय के भीतर ही उपलब्ध व्यवसाय के अवसर का मूल्यांकन करें। इस प्रक्रिया के मुख्य बिंदु निम्न हैं।

- रोजगार अथवा कार्य स्थल का निरीक्षण करना।
- निश्चित समय में कार्यस्थल पर अन्य व्यक्तियों अथवा कर्मियों द्वारा किए गए निश्चित कार्य की समीक्षा।
- निरीक्षक तथा अन्य सहकर्मियों से मिलना।
- रूटीन क्रियाकलाप की जानकारी प्राप्त करना।
- रोजगार के कार्य समय के दौरान किए गए विविध कार्यों के प्रकार की जानकारी प्राप्त करना।
- कार्यों की समीक्षा करना।
- रोजगार दिलाने वाले की सहमति प्राप्त करना।

- संभाव्य प्रशिक्षण नीतियों का निर्माण करना तथा रोजगार की पुनर्संरचना के लिए संभव तरीके तलाश करना।
 - व्यापक एवं विस्तृत प्रशिक्षण योजन को तैयार करना।
-

8.9 मूल्यांकन को फाइलबद्ध करना

मूल्यांकन की प्रक्रिया के माध्यम से निकले अलग-अलग मूल्यांकन को एकत्रित कर फाइलबद्ध करना एक वृहत् प्रक्रिया है। इस के अंतर्गत व्यक्ति विशेष के द्वितीय स्तर के शिक्षण प्रक्रिया के प्रारंभ से लेकर उसके व्यवसायिक स्तर तक के अलग-अलग मूल्यांकन का एकत्रीकरण किया जाता है। इस की जिम्मेदारी मूल्यांकन टीम की होती है। मूल्यांकन को एकत्र करते समय यह ध्यान रखा जाता है की व्यक्ति विशेष के विविध जाँच क्षेत्रों के परिणाम के मूल्यांकन का एकत्रीकरण अच्छी तरह से हुआ हो। उसके विविध प्रकार में से कुछ मुख्य प्रकार निम्न हैं।-

1) अकादमिक उपलब्धि अथवा उपलब्धि जाँच:- ये सभी जाँच लेखन, पठन अथवा गणित की जाँच के लिए किए जाते हैं। यह ऐसे क्षेत्र के ऊपर केन्द्रित होते हैं जिनमें मुख्य रूप से अकादमिक अथवा विधालयी शिक्षा सम्मिलित होती है। इनमें सामान्य शिक्षण विकास परीक्षा, विधालय संबंधी अभिरुचि जाँच इत्यादि सम्मिलित हैं। इन सभी का उपयोग सामान्य शिक्षण विकास का मापन करने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग यह जानने के लिए भी किया जाता है कि मौजूदा शिक्षण व्यवस्था में क्या कमी हैं तथा समय समय पर उन कमियों को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं।

2) बोध क्षमता जाँच:- इसका प्रयोग व्यक्ति विशेष का बैद्धिक स्तर, तथा मनोवैज्ञानिक त्रुटियों के मापन के लिए किया जाता है। मुख रूप से इसमें 10 टेस्ट का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग से सामान्य ज्ञान, मोटर व्यवहार, शब्दावली, यादाश्त, अनुरूप तर्क इत्यादि का पता लगाया जाता है। इस प्रकार के टेस्ट यह निर्धारित करने में सहायता करते हैं कि व्यक्ति व्यवसायिक स्तर पर किस प्रकार के कार्य कर पाने में सक्षम होगा।

3) व्यवहारिक, सामाजिक तथा भावनात्मक परीक्षण:- यह विधालय एवं वर्कफोर्स प्रिपेरेशन कार्यक्रम के लिए प्रयोग किया जाता है जिसके द्वारा मानसिक अक्षमता से प्रभावित व्यक्ति

विशेष के व्यवहारिक भावनात्मक परेशानियाँ, सामाजिक व्यवहार संबंधी परेशानियाँ तथा निर्भरता का पता लगाया जाता है तथा उनका संभव निदान किया जाता है। इन परेशानियों की पहचान के द्वारा काउंसिलिंग एवं चिकित्सकीय समाधान करना सरल हो जाता है। इस प्रक्रिया को संचालित करने में वैधानिक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता तथा अन्य विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। सामाजिक तथा जीवन कौशल का एक ढांचा सरणी सं.19.1 में दिया गया है

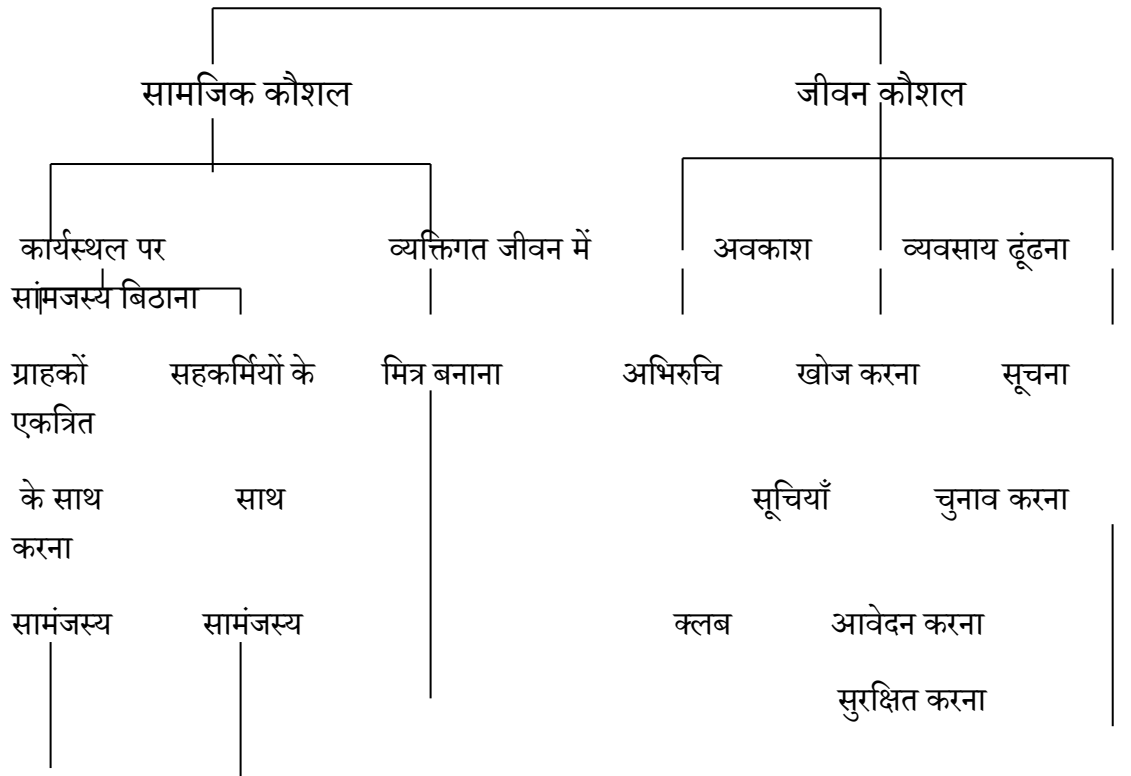
4) व्यवसायिक अभिरुच तथा कौशल का परीक्षण:- यह सभी विद्यालय वर्कफोर्स कार्यक्रम के तहत किसी व्यक्ति विशेष की क्षमता अथवा उस के संभाव्य का पता लगाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इन पेन/पेंसिल टेस्ट का प्रयोग किया जाता है। इसी के अंतर्गत कार्य व्यवहार की समीक्षा भी की जाती है जो व्यक्ति के कार्य व्यवहार का पता लगाने के लिए बेहद उपयोगी होता है क्योंकि इसके द्वारा यह तय किया जाता है कि मौजूदा स्थिति में वह रिजगार के मानक मापदण्ड के कितने नजदीक है। इसका प्रयोग भी अकादमिक मूल्यांकन की तरह ही किया जाता है। इसमें पेन-पेपर टेस्ट, अवलोकन, कार्य संबंधी क्रियाकलाप का निरीक्षण तथा शारीरिक क्षमता का निरीक्षण किया जाता है। कार्य व्यवहार की चर्चा हम 8.9.1 में करेंगे।

5) व्यवसाय विशिष्ट प्रमाणन परीक्षण:- ये मूल्यांकन लाइसेंसधारी बोर्ड, व्यवसायिक संस्थाओं तथा वर्कफोर्स प्रिपेरेशन के तहत किए जाते हैं। ये सामुदायिक कॉलेज, तकनीकी संस्थान, अथवा वर्कफोर्स विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत संचालित किए जाते हैं। ये सभी किसी व्यक्ति की निजी उपलब्धियों का मूल्यांकन तथा किसी विशेष व्यवसायिक कार्य को करने की क्षमता का आँकलन करते हैं। ये सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव के मापन के लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

6) शारीरिक एवं क्रियात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन:- ये सभी मूल्यांकन विद्यालय, वर्कफोर्स प्रिपेरेशन केन्द्र, चिकित्सा केन्द्र, पुनर्वास सुविधा प्रदान कराने वाले संस्थाओं के द्वारा किया जाता है। यह व्यक्ति विशेष की किसी विशेष परिस्थिति में कार्य करने की क्षमता का भी आँकलन करता है। ये मूल्यांकन शारीरिक क्षमता तथा क्रियात्मक सीमाओं को मापते हैं तथा यह तय करते हैं व्यक्ति विशेष किसी कार्य को कितने सक्षम रूप से कर सकता है।

इन सभी विविध प्रकार के मूल्यांकन का एकत्रिकरण करना मूल्यांकन प्रक्रिया को परिणामदायक बनाता है। सामान्य तौर पर इन सभी मूल्यांकन को एकसाथ एकत्रित करने के द्वारा ही निर्देशक, व्यवसायिक योजना के निर्माणकर्ता, अथवा व्यवसाय उपलब्ध करने वाली संस्था को सभी व्यक्ति विशेषों के बारे में उनकी बुद्धि, उनके कौशल, उनकी शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सक्षमता, कार्य प्रणाली तथा अभिरुचियों का आँकलन करने का अवसर प्राप्त हो पता है तथा इन सूचनाओं का प्रयोग विभिन्न कार्य के लिए उन्हें अवसर प्राप्त करने के लिए तैयार कर सकते हैं। इन सभी से सबसे अधिक लाभ व्यक्ति विशेष के प्रशिक्षक को होता है। इसके द्वारा प्रशिक्षक व्यक्ति विशेष के लिए निश्चित व्यवसायिक कार्य का निर्धारण कर सकता है तथा उससे संबंधित प्रशिक्षण कार्य के लिए प्रभावी योजना तैयार कर सकता है।

सामाजिक एवं जीवन कौशल



आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

बिक्री करना बनाना	मेल जोल करना	उत्तेजना का	खाना
स्वागत करना	झगड़े की उपेक्षा	निरोध	मरम्मत
पैसे को	करना		रुपए
फॉर्म	आदेश पालन		संभालना
भरना	संवाद		नियम

स्रोत:-Mnapower Service Commision 1977

Instruction guide to social and lifeskill, London(HMSO)

सरणी संख्या-1.9

8.9.1 कार्य व्यवहार

कार्य व्यवहार के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति विशेष के कार्य संबंधी, कार्यस्थल पर किए जाने व्यवहार आते हैं तथा इनके मूल्यांकन को कार्य व्यवहार मूल्यांकन कहा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं यह व्यवसायिक अभिरुचि तथा कौशल का परीक्षण के अंतर्गत किया जाता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति के समय का पाबंद होना, सहकर्मियों के साथ संबंध, कार्य करने की शारीरिक क्षमता, शुद्धता, गति, संवाद की क्षमता इत्यादि का आंकलन किया जाता है। इसके अलावा व्यक्ति कितने हद तक दवाब को सहन कर सकता है, वह कितनी समय सीमा तक बिना अंतराल के कार्य कर सकता है, इन सब का मूल्यांकन भी कार्य व्यवहार के अंतर्गत किया जाता है।

कार्य व्यवहार के मूल्यांकन की संरचना

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय	125	
-------------------------------	-----	--

टिप्पणी

कौशल/व्यवहार	तारीख				
	1	2	3	4	5
1.नियमितता					
2.समय की पाबंदी					
3.निर्देश का पालन करना					
4.आवश्यकताओं का सम्प्रेषण					
5.कार्य का दर					
6.कार्य की गुणवत्ता					
7.दिए गए कार्य को पूर्ण करना					
8.लचीलापन					
9.पृष्ठपोषण के प्रति प्रतिक्रिया					
10.उचित वेश-भूषा					
11.कार्य स्वतंत्रता/ कार्य की शुरुआत करना					
12.कार्य संबंधी समस्याओं का समाधान करना					
13.निरीक्षक,सहकर्मियों समूह के साथ कार्य करना					

14.उपकरणों का प्रयोग							
15.सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर ध्यान देना							
16.अतिरिक्त कार्य कौशल							

8.10 परिणाम की व्याख्या एवं रिपोर्ट लेखन

मूल्यांकन को फाइलबद्ध अथवा एकत्रित करने के बाद का चरण है परिणाम की व्याख्या। इस प्रक्रिया के अंतर्गत हम मौजूद सूचनाओं के आधार पर व्यक्ति विशेष के परिणामों की व्याख्या की जाती है। इस उपलब्ध डाटा में उसके सभी मूल्यांकन के परिणाम शामिल होते हैं। परिणामों की व्याख्या के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है, इनकी सहायता से परिणामों की व्याख्या शि तरीके से की जा सकती है। सर्वप्रथम, परिणाम की व्याख्या करते समय व्यक्ति के ण सिर्फ तुलनात्मक पक्ष को देखा जाना चाहिए, अर्थात व्यक्ति की उसके आथियों तथा सहपाठियों से तुलना करने के साथ-साथ स्वयं से भी उसका तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए तथा एक निश्चित अंतराल पर उसके भीतर हुए बदलावों के मूल्यांकन का भी परिणाम ध्यान में रखा जाना चाहिए। कभी-कभी व्यक्ति का स्वयं से तुलनात्मक अध्ययन के परिणाम को ध्यान में रखकर की गई व्याख्या उसके समूह के दूसरे विधार्थियों के साथ की गई तुलना से अधिक लाभदायक सिद्ध ही जाता है। व्यक्ति का स्वयं के साथ किया तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि व्यक्ति का किसी निश्चित समय के भीतर व्यवहारिक, कौशल संबंधी तथा अन्य कार्य-संबंधी विकास कितना है तथा वह वांछित विकास दर से कितना कम या अधिक है।

8.10.1 परिणाम व्याख्या की क्रियाविधि

परिणाम व्याख्या की क्रियाविधि के अंतर्गत निम्न बिन्दु हैं

1. माता-पिता से सहमति प्राप्त करना, अगर वे मौजूद न हों तो परिवार के सदस्यों/अभिभावकों से सहमति प्राप्त करना।

2. माता-पिता अथवा परिवार से व्यक्ति विशेष की प्रगति, मूल्यांकन के परिणाम, पारिवारिक संरचना, व्यक्ति विशेष के परिवार से संबंध तथा स्वतंत्र सामंजस्यपूर्ण व्यवहारिक क्रियान्वन की जाँच करना।
3. व्यक्तित्व संबंधी सूचनाओं का मूल्यांकन करना।
4. व्यक्ति से संबंधित चिकित्सकीय समस्याओं की जाँच पड़ताल करना।
5. घर के वातावरण से संबंधित समस्याओं का पता लगाना।
6. व्यक्ति की सीखने संबंधी क्षमता का निरीक्षण।
7. भावनात्मक अथवा व्यवहारिक समस्याओं को ध्यान में रखना।

ये सभी समस्याएँ व्यक्ति के टेस्ट को ध्यान के परिणाम को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं इसलिए परिणाम की शि व्याख्या के लिए इन सब को ध्यान में रखना आवश्यक है क्योंकि अगर उन्हें इन की उपेक्षा कर के टेस्ट के परिणामों की व्याख्या की जाती है तो संभव है कि पाया जाने वाला परिणाम व्यक्ति की क्षमता का आँकलन कर सकता है।

8.10.2 रिपोर्ट लेखन

परिणाम की व्याख्या के बाद रिपोर्ट लेखन किया जाता है। परिणामों के लेखन का सब से मुख्य उद्देश्य सभी शैक्षणिक सेवा प्रदान करने वाली संस्थाओं को अर्थपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करा सकें।

रिपोर्ट लेखन की विधि

विधालय स्तर पर रिपोर्ट लेखन में सूचनाओं की पहचान करने के बाद हम डाटा के लिए पृष्ठभूमि से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित करने हैं तथा आवश्यक सारगर्भित संदर्भ सूचनाएँ एकत्रीत करते हैं। उसके पश्चात् माता-पिता से आवश्यक सूचनाएँ एकत्रित करने का प्रयास करते हैं तथा अंत में उसका सरांशीकरण के पश्चात् नई बातें सुझाव के रूप में प्रस्तुत करते हैं। रिपोर्ट लेखन के पश्चात् उससे आवश्यक निष्कर्ष निकाल कर आगे के लिए नए मूल्यांकन का सुझाव देते हैं।

8.11 मूल्यांकन के दूरगामी परिणाम

मूल्यांकन की प्रक्रिया अपने आप में एक लम्बी तथा जटिल प्रक्रिया है। उस में विभिन्न स्तर पर प्रशिक्षकों, विशेष शिक्षकों तथा मूल्यांकन टीम के अथक व निरन्तर प्रयास से व्यक्ति विशेष को समुदाय के भीतर बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। इनमें से कुछ मुख्य हैं:-

- प्रभावशाली तथा लाभदायक मूल्यांकन पद्धति के प्रयोग से व्यक्ति विशेष का विकास प्रशिक्षण के मानक परिणामों तक पहुँच जाता है।
- मूल्यांकन विधालय से लेकर कार्य स्तर तक आवश्यक समय अंतराल पर अपने परिणाम द्वारा प्रभावशाली दिशा निर्देश तथा योजनाएँ बनाने में सहायता करता है, जिससे व्यक्ति के विकास की गति आवश्यक के बराबर हो जाती है तथा व्यक्ति विशेष को इससे अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं, तथा उसे व्यवसाय दिलाने में अथवा रोजगार के विकल्प का चुनाव करने में सहायक होते हैं।
- मूल्यांकन व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनता है जिस से समय आने पर वह अपने निर्णय स्वयं ले सके।
- छात्र को अपने जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए प्रत्यक्ष भूमिका दिलाता है।
- परिवार पर से व्यक्ति की निर्भरता को खत्म कर उसे आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाता है।
- व्यक्ति विशेष के आत्मसम्मान को बनाए रखने में सहायता करता है।

8.12 सामुदायिक जीवन यापन के लिए मूल्यांकन का महत्व

मूल्यांकन मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के जीवन में निर्णायक भूमिका रखता है। व्यक्ति के सामुदायिक जीवन यापन की सफलता अथवा असफलता इस बात पर निर्भर करती है

कि उसकी मूल्यांकन प्रक्रिया कितनी प्रभावशाली तथा लाभदायक रही है। मूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी करने में विशेषज्ञों की टीम तथा विशेष शिक्षक तथा प्रशिक्षक मिल कर कार्य करते हैं। उनके अथक प्रयासों के कारण ही प्रभावशाली मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्माण तथा क्रियान्वन संभव हो पता है। मानसिक मंद व्यक्ति मूल्यांकन के प्रभाव के कारण ही किसी स्थापित सेट-अप में कार्य करने का अवसर प्राप्त कर पाता है। इसके द्वारा व्यक्ति विशेष उत्पादक कार्य में संलग्न होकर अर्थव्यवस्था के असल कार्यों को पूर्ण करता है। इसके द्वारा व्यक्ति की निश्चित अंतराल पर लगातार भुगतान प्राप्त होता रहता है जिसके प्रभाव से व्यक्ति की सामुदायिक हिस्सेदारी के नए अवसर प्राप्त होते हैं। इसके द्वारा कार्य उपलब्ध करने वाला व्यक्ति उसे उसकी उत्पादकता के आधार पर भुगतान करने में सफल हो जाता है। यह सामाजिक रूप से व्यक्ति की स्थिति को मजबूत करता है तथा मानसिक मंद व्यक्ति को ऐसा अवसर देता है जिसके आधार पर वे अपने पैरों पर खड़े होकर अपना पोषण स्वयं कर सकता है। इस के द्वारा व्यक्ति कुशल व्यक्तियों के प्रशिक्षार्थी के रूप में भी कार्य कर सकता है।

अभ्यास प्रश्न

5) सामुदायिक जीवन यापन में मूल्यांकन का महत्व है?

8.13 पाठ सारांश

- विधालय स्तर से कार्य स्तर के परिवर्तन में व्यक्ति व्यवहारिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य स्तर पर परिवर्तन की अवस्था से गुजरता है।
- परिवर्तन प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य विधालय से कार्य स्तर तक के बदलाव की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति विशेष को व्यवसायिक सफलता दिलाना है।
- परिवर्तन प्रक्रिया के पहले व्यक्ति के लिए आवश्यक योजना निर्माण के पूर्व उसकी उपलब्धियों, कार्य कौशल तथा स्वतंत्रता के स्तर को ध्यान में रखकर ही योजनाओं का निर्माण किया जाता है।

- विधालय स्तर से कार्य स्तर तक के बदलाव को निर्देशित करने के लिए विशेष योजना की आवश्यकता होती है, यह परिवर्तन प्रारूप के अंतर्गत आता है।
- पूर्व व्यवसायिक स्तर के प्राथमिक स्तर पर परिवर्तन योजना का मूल्यांकन किशोर के साधारण क्रियाकलापों को ध्यान में रखकर उसके आधार पर किया जाता है।
- द्वितीय स्तर पर विशेष महत्व के विषय मसलन वेश-भूषा, बाह्य साज-सज्जा, सम्प्रेषण तथा उचित सामाजिक व्यवहार का आँकलन भी किया जाता है।
- व्यवसायिक परिवर्तन मूल्यांकन व्यक्ति के व्यवसायिक बदलावों की समीक्षा करता है।
- व्यवसायिक परिवर्तन योजना का संचालन विधालय स्तर पर विशेष शिक्षकों द्वारा किया जाता है जब कि कार्य स्तर पर यह जिम्मेदारी व्यवसायिक कर्मचारियों की होती है।
- परिणाम की व्याख्या करते समय परिणाम की व्याख्या व्यक्ति के दूसरों के साथ तुलना के साथ-साथ व्यक्ति की स्वयं से तुलना करने के परिणाम को भी ध्यान में रखना चाहिए।
- रिपोर्ट लिखन का प्रमुख उद्देश्य सभी शैक्षणिक एवं व्यवसायिक सेवा प्रदान वाले संस्थानों की व्यक्ति के विषय में अर्थपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करना है।

8.14 पारिभाषिक शब्दावली

1. व्यवसायिक केन्द्र :--एसे केन्द्र जो व्यक्ति को रोजगार के अवसर उपलब्ध कृते हैं।
2. परिवर्तन प्रक्रिया:--स्कूल से कार्यस्तर तक के बदलाव को निर्देशित करने वाली प्रक्रिया।
3. सुरक्षा संबंधी कौशल:--कार्य-स्थल पर संयंत्रों/उपकरणों से सुरक्षा से संबंधित कौशल।

4. कार्य व्यवहार:--कार्य स्थल पर कार्य संबंधी व्यवहार तथा लोगों के साथ संबंध।
5. चेकलिस्ट:--चेकलिस्ट एक प्रकार सूचना प्रदान करने वाला व्यवसायिक उपकरण है जिसके द्वारा कार्य की निरंतरता सुनिश्चित की जाती है।
6. बहु-अनुशासमिक टीम:--बहु-अनुशासमिक टीम ऐसे कार्यकर्ताओं का समूह है जिनके पास अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित योग्यता, कौशल एवं अनुभव होते हैं तथा जो संगठन के विशेष उद्देश्य के लिए एक साथ मिलकर कार्य करते हैं।
7. मोटर व्यवहार:--मोटर व्यवहार का उपयोग मोटर गति, मोटर नियंत्रण तथा मोटर शिक्षण के लिए सम्मिलित रूप से किया जाता है।
8. अनुरूप तर्क:--अनुरूप तर्क दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच तुलनात्मक रूप से तर्क देने को कहा जाता है।
9. पेन/पेंसिल टेस्ट:--इस के उपयोग से कार्य संबंधी जानकारीयों, जैसे कौशल, कार्य संबंधी ज्ञान तथा कौशल संबंधी योग्यता को जाँच की जाती है।

8.15 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1:-परिवर्तन प्रक्रिया के अंतर्गत मानसिक मंद युवजनों के लिए रोजगार उपलब्ध करने हेतु योजनाएँ बनाई जाती हैं। इसका उद्देश्य विधालय के दौरान व्यक्ति के लिए उचित योजना का निर्माण कर माता-पिता तथा रोजगार देने वाली संस्था से मिलकर औपचारिक योजना की नींव रखना है। इसके पश्चात् यह समुदाय के भीतर स्थानीय व्यवसाय संबंधी स्थलों की खोज कर रोजगार प्रदान करने वाले समूह के साथ मिलकर विमर्श करता है तथा संस्था को हर संभव देता है।

उत्तर 2:-विधालय से कार्य स्तर तक के बदलाव को निर्देशित करने के लिए विशेष योजना का निर्माण किया जाता है, बदलाव की इस प्रक्रिया से निश्चित तथा अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए परिवर्तन प्रारूप की सहायता ली जाती है। इसके कुछ उदाहरण हैं-परिवर्तन की OSER परिभाषा, वेमैन, क्रिगल तथा वर्क्स 1984 परिवर्तन प्रारूप, पैथवेज प्रारूप, हार्पन का संशोधित परिवर्तन प्रारूप 1985 इत्यादि।

उत्तर 3:-पूर्व व्यवसायिक स्तर के प्राथमिक स्तर पर परिवर्तन योजना का मूल्यांकन किशोर के साधारण क्रियाकलापों को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण के लिए चीजों को साफ करना, एक जगह से दूसरी जगह तक संवाद अथवा वस्तुएँ पहुँचना इत्यादि परन्तु इसके द्वितीय स्तर के मूल्यांकन में कुछ विशेष महत्व के विषय जैसे बाह्य वेष-भूषा, सम्प्रेषण का तरीका, तथा उचित सामाजिक व्यवहार का आँकलन भी किया जाता है।

उत्तर 4:-व्यक्तिमूलक शिक्षा योजना का विकास विशेष शिक्षकों तथा बहु अनुशासनिक टीम के साथ मिलकर किया जाता है। इस के अंतर्गत क्लासरूम की गतिविधियों के अंतर्गत ही विद्यार्थी की अभिरुचि, क्लासरूम व्यवहार, साधारण एवं विशिष्ट कौशल इत्यादि का आँकलन किया जाता है जबकि व्यक्तिमूलक व्यवसायिक परिवर्तन योजना के अंतर्गत द्वितीयक स्तर पर विशेष शिक्षकों, माता-पिता, रोजगार प्रदान करने वाली संस्था के साथ मिलकर कार्य के दौरान क्रियात्मक मूल्यांकन, तथा समुदाय में उसके व्यवहारिक कौशल का आँकलन किया जाता है। यह व्यक्ति को रोजगार के लिए प्रशिक्षित करने में विशेष भूमिका है।

उत्तर 5:-मूल्यांकन मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के जीवन की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाता है। यह उसके सामुदायिक जीवन यापन की सफलता तय करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति उत्पादक क्रियाकलाप में सलग्न होकर अर्थव्यवस्था से जुड़ जाता है तथा आत्मनिर्भर होकर अपनी उत्पादक के आधार पर आर्थिक उन्नति कर पाने सक्षम हो जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति उत्पादकता के द्वारा भुगतान प्राप्त करता है तथा जिसके प्रभाव से उसे सामुदायिक हिस्सेदारी के नए अवसर प्राप्त होते हैं।

8.16 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Bellamy, G. Rhodes, L. Mank. D & Albin J (1987) Supported Employment- A Community implementation guide. Baltimore: Paul H. Books Publishing Co.
- Bellamy G. T. et al (1988) Supported employment-A Company implementation guide, Baltimore: Paul Brooks Pub. Co.

- Berkell,D.Brown,J.MTransition from svhool to work for the person with disabilities, London, Longman.
- Thressiakutty,AT(1992) Job Analysis and on-the-job waining for persons with mental retardation series 1,2,3,4, NIMH Secunderabad.
- Transition of persons with mental retardation from school to work-A Guide-A.T Thressiakutty,L.Govinda Rao.
- Neubert D(1985) Use of vocational evaluation recommendation in selected Public school setting, Carrer development for exceptional individuals.
- Manpower service commission 1977, Instruction guide to social & life skill,London(HMSO)

8.17 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

- Everson,J.Metal(1987) Achieving outcomes: a guide to integracy training in transition and supported employment. Project work in Virginia Commenwealth University,Virginia.
- Wehman P(1981)Competitive employment: New horizons for severaly disabled individuals.Baltimore:Paul H Brookes Publiing Co.
- Wehman,P.& Moon, M.S Supported Vocational rehabilitation and Supported employment.

8.18 निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:-परिवर्तन प्रारूप की व्याख्या करें तथा उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 2:-परिवर्तन प्रक्रिया में विविध योजनाओं के अंतर्गत मूल्यांकन कैसे कियस जाता है? व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 3:-मूल्यांकन को फाइलबद्ध करते समय कौन से मूल्यांकन क्षेत्रों को रखना आवश्यक हैं?

प्रश्न 4:-मूल्यांकन के परिणाम तथा सामुदायिक जीवन यापन में मूल्यांकन के महत्व को रेखांकित करें।

इकाई 9-स्वतंत्र जीवन यापन के लिए मूल्यांकन उपकरण

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 मूल्यांकन उपकरण(Assessment tools) क्या हैं
- 9.4 मूल्यांकन उपकरण/पैमाने की आवश्यकता
 - 9.4.1 मानसिक मंद व्यक्ति के लिए मूल्यांकन विधि
 - 9.4.2 भारत में मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के लिए उपयोग किए जाने वाले मूल्यांकन पैमाने
- 9.5 VAPS-व्यवसायिक मूल्यांकन कार्यक्रमतंत्र
 - 9.5.1 व्यवसायिक रूपरेखा
 - 9.5.2 जातिगत (generic) कौशल मूल्यांकन चेकलिस्ट
 - 9.5.3 व्यवसाय निरीक्षण रूपरेखा
 - 9.5.4 मंदबुद्धि व्यक्तियों के लिए कार्य व्यवहार मूल्यांकन चेकलिस्ट
- 9.6 BASAL-MR क्या है
 - 9.6.1 किशोरावस्था में जीवन यापन के लिए व्यवहारिक मूल्यांकन पैमाना-मानसिक अक्षमता BASAL-MR (भाग-A)
 - 9.6.2 किशोरावस्था में जीवन यापन के लिए व्यवहारिक मूल्यांकन पैमाना-मानसिक अक्षमता BASAL-MR(भाग-B)

- 9.6.3 BASAL-MR(भाग-A) के लिए शब्दवाली
 - 9.6.4 साम्रगी सूची
 - 9.7 पाठ सारंशीकरण
 - 9.8 पारिभाषिक शब्दवाली
 - 9.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
 - 9.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
 - 9.11 सहायक उपयोगी पाठ्य साम्रगी
 - 9.12 निबंधात्मक प्रश्न
-

9.1 प्रस्तावना

पिछले कुछ वर्ष मानसिक रूप से मंद युवाजन के लिए विशिष्ट भूमिका रखते हैं। इन वर्षों में इन सभी युवाओं के विकास के लिए सामाजिक जागरूकता अधिक हुई है। माता-पिता एवं व्यवसाय उपलब्ध कराने वाले मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के संभाव्य तथा उनकी कार्य-क्षमताओं से अधिक से अधिक परिचित हो पाए हैं। इसके अतिरिक्त 1995, पर्सनस विद डिसएबिलिटी अनुच्छेद के कारण इन सभी व्यक्ति विशेष के लिए 'आवश्यकता' आधारित व्यवसाय की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। यह अनुच्छेद वैधानिक रूप से इनकी सहायता करने की दिशा में सकारात्मक प्रयास है। इसके जीवन को प्रबंधित किया है तथा नए उपकरणों की सहायता से इन्हें बेहतर सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। इन सभी विषयों के कारण, यह निश्चित करना आवश्यक हो गया कि व्यक्ति के विकास पर केन्द्रित ऐसी योजनाओं का निर्माण हो, जो व्यक्ति की क्षमता को ध्यान में रखकर बना हो तथा अधिक विशेषीकृत हो। इन योजनाओं के निर्माण के साथ ही व्यक्ति विशेष के प्रशिक्षण तथा व्यवसाय प्रबंधन पर बल देना भी अनिवार्य हो गया जिसकी सहायता से मानसिक मंद व्यक्ति विशेष समाज में अपने लिए स्वतंत्रता तथा समान सामाजिक दायित्व के साथ जीवन-निर्वहन कर सकें।

इन योजनाओं के निर्माण में मूल्यांकन उपकरण (Assessment tools)की बेहद अहम भूमिका रही है। चूँकि मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के लिए मौजूदा समय में भी व्यवसाय उपलब्ध कराने की आधारभूत व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है, तथा बहुत से ऐसे युवा बेरोजगार हैं, इसके अतिरिक्त कुछ व्यक्ति विशेष जो रोजगार में संलग्न हैं, उनमें भी बहुत से युवा विशेष विधालयों में शोर्टर्ड इम्प्लायमेंट के तहत कार्य कर रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि उन्हें अभी भी रोजगार के सीमित अवसर ही प्राप्त हैं। मूल्यांकन उपकरण इस पुरानी संरचना को बदलने का प्रयास कर रहे हैं।

9.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात् आप-

- मूल्यांकन उपकरण की विशेषता बता सकेंगे।
- मूल्यांकन उपकरण की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- VAPS-व्यवसायिक मूल्यांकन एवं कार्यक्रम तंत्र को समझ सकेंगे।
- BASAL-MR के विशेष में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- BASAL-MR भाग-A तथा भाग-B के बारे में आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर सकेंगे।

9.3 मूल्यांकन उपकरण(Assessment tools) क्या हैं

मूल्यांकन उपकरण(Assessment tools) अथवा मूल्यांकन पैमाना वह आवश्यक उपकरण है जिस की आवश्यकता से व्यक्ति विशेष की विशिष्ट अभितृति एवं उसकी कार्य क्षमता को ध्यान में रखकर उसके बैद्धिक स्तर के अनुरूप की उसका सतत विकास किया जा सके। आधारभूत तौर पर मूल्यांकन उपकरणों की सहायता से व्यक्ति के समस्या व्यवहार को सही तरीके से पता लगा कर उसका निदान किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति किसी व्यवहारिक समस्या से ग्रस्त है जैसे कोई डर अथवा विकार उसके भीतर मौजूद है तो उसका पता लगाकर उस धीरे-धीरे निदान किया

जाता है तथा एक निश्चित अंतराल पर बार-बार मूल्यांकन किया जाता है। इस के अंतर्गत कार्यसंबंधी समस्याओं तथा व्यक्तिगत समस्याओं, दोनों की पहचान पर बल दिया जाता है। इसके तहत व्यक्ति के कार्य व्यवहार की कुशलता का आँकलन कर उसे धीरे-धीरे कार्य के लिए अधिक सक्षम बनाया जाता है। यह कार्यस्थल के वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाने में व्यक्ति की मदद करता है तथा उसके साथ समयबद्धता एवं संस्था से जुड़े अन्य नियमों की जानकारी प्रदान कर व्यक्ति को उसके अनुरूप ढालने की चेष्टा करता है। संक्षिप्त रूप से मूल्यांकन उपकरण व्यक्ति को समस्याओं से बाहर निकाल कर उसे एक स्वस्थ एवं आर्थिक भविष्य की ओर अग्रसर करते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. मूल्यांकन उपकरण क्या हैं?

9.4 मूल्यांकन उपकरण/पैमाने की आवश्यकता

हाल्पर्न, क्लोज तथा नेल्सन 1986 के अनुसार 'मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के द्वारा अनुभव किए गए सबसे कठिन कार्य पैसे के प्रबंधन को बताया गया है।' हाल्पर्न इत्यादि के द्वारा मानसिक मंद व्यक्ति विशेष द्वारा अनुभव की गई कठिनायों का दिया गया क्रम निम्न है

1. पैसे का प्रबंधन
2. सामाजिक संचार
3. गृह प्रबंध
4. खाद्य प्रबंध
5. खे गए कार्य को करने तथा सहायता मांगने के बीच अंतर्विरोध
6. व्यवसाय/रोजगार
7. यातायात
8. समस्या को निपटाना/की उपेक्षा करना

इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, एक ऐसे कार्यक्रम की योजना बनानी आवश्यक हो गई, जिसके अंतर्गत न केवल व्यवसायिक कौशल का प्रशिक्षण हो,

बल्कि व्यक्ति के व्यक्तिगत, सामाजिक, दैनिक जीवन-यापन के तत्व से यह जुड़ा हुआ हो। इसलिए मूल्यांकन पैमाने के अंतर्गत ये सभी पहलू सम्मिलित कर लिए गए ताकि इनकी सहायता से व्यक्ति विशेष तथा उसके परिवार को अधिक से अधिक स्वतंत्रता तथा उत्पादकता के लक्ष्य के अंतर्गत ही मिल सकें। इस लिए मूल्यांकन पैमाने का केन्द्रबिन्दू मानसिक मंद व्यक्तियों का आर्थिक-सामाजिक पुनर्वास निर्धारित किया गया। यह व्यक्ति को आर्थिक के साथ सामाजिक समस्याओं से भी मुक्त करता है।

अभ्यास प्रश्न

2. मूल्यांकन पैमाने की क्या आवश्यकता है?

9.4.1 मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के लिए मूल्यांकन विधि

निचे दिए हुए टेबल के अंतर्गत विविध संगठनों द्वारा मानसिक मंद व्यक्तियों के मूल्यांकन की साधारण रूप से प्रचलित क्रियाविधि दर्शाई गई है।

क्र.सं.	मूल्यांकन क्रियाविधि	संगठन/संस्था(N=17)
1.	साक्षात्कार-अवलोकन-औपचारिक मूल्यांकन	12
2.	साक्षात्कार-अवलोकन	03
3.	अवलोकन-औपचारिक मूल्यांकन	01
4.	साक्षात्कार- औपचारिक मूल्यांकन	01

9.4.2 भारत में मानसिक मंद व्यक्ति विशेष के लिए उपयोग किए जाने वाले मूल्यांकन पैमाने

क्र.सं.	मूल्यांकन उपकरण(tool)	पता
1.	मद्रास डेवलपमेन्टल पोर्ग्रमिंग सिस्टम	पी.जयचन्द्रन एंड विमला विजय हुमान

सर्विसेज,6,लक्ष्मीपुरम

स्ट्रीट,रोयापेटटा

,चेन्नई

2. बिहैवियरल असेसमेंट स्केल फॉर इण्डियन चिल्ड्रेन विद रिटार्डेशन हैडीकेपड (BASIC-MR) डिपार्टमेंट ऑफ क्लिनिकल सायकोलोजी ,नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर द मेंटली सिकंदराबाद,ए.पी.
3. NIMH वोकेशनल प्लेसमेंट एंड नेशनल प्रोफाइल चेकलिस्ट डिपार्टमेंट ऑफ वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट फॉर द मेंटली हैडीकेपड, सिकंदराबाद,ए.पी.
4. वोकेशनल ट्रेनिंग चेकलिस्ट एंड फॉर इन्डिविजुआ लाईण्ड एजुकेशन मेंटली हैडीकेपड,नई दिल्ली
5. असेसमेंट ऑफ वोकेशनल रेडीनेस डी.जे.के.काँनेलियस एंड स्मिता रुक्मानी नयन ज्योतिट्रस्ट,चेन्नई
6. वर्कशॉप आँब्जर्वेशन स्केल बी.एम.इंस्टिट्यूट अहमदाबाद
7. स्टूडेंट प्रोफाइल चेकलिस्ट तमन्ना स्पेशल स्कूल,नई दिल्ली
8. प्रोफोर्मा ऑन डेवलपमेंटल डाटा एंड एकेडमिक्स जय वकील स्कूल फॉर चिल्ड्रेन विद स्पेशल नीड्स,मुम्बई

9.	असेसमेंट कम करिकुलमगाइड निलेश	दिलीप कुरानी लियोनी मिरांडा
	लाइंस फॉर्मेट फॉर वोकेशनल स्कूल	शाने एंड ती.डी.शार्फ़, जय वकील
	ट्रेनिंग स्कूल एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर	फॉर चिल्ड्रेन विद स्पेशल नीड्स, मुम्बई
10.	एडल्ट असेसमेंट फॉर्म इण्डिया,	स्पेस्टीक सोसाइटी ऑफ ईस्टर्न कलकत्ता।

9.5 VAPS-व्यवसायिक मूल्यांकन तथा कार्यक्रम तंत्र

VAPS(vocational assessment & programming system) मानसिक रूप से मंद व्यक्ति विशेष के लिए कार्य करता है। जैसा कि आप जानते हैं किसी भी व्यवसायिक मूल्यांकन का उद्देश्य व्यक्ति विशेष को अलग-अलग मूल्यांकन क्षेत्र के अंतर्गत मूल्यांकित कर उसे अपनी क्षमता के अनुसार रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना होता है। VAPS भी इसी दिशा में एक सुनियोजित कदम है। VAPS के अंतर्गत प्रशिक्षु के मूल्यांकन के तहत जातिगत (generic) मूल्यांकन किया जाता है। इसके अंतर्गत जिन मुख्य विषयों का मूल्यांकन व्यक्ति में किया जाता है, वे हैं-

- (1) व्यक्तिगत संप्रेषण
- (2) सामाजिक व्यवहार
- (3) क्रियात्मक क्षेत्र (functional academics)
- (4) सुरक्षा संबंधी कौशल
- (5) हाथ संबंधी क्रियात्मक कौशल

(6)व्यवसायिक कौशल

इन सभी विषयों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के साथ-साथ ही सामुदायिक मूल्यांकन के द्वारा व्यवसाय की पहचान भी कर ली जाती है ताकि व्यक्तिगत के प्राप्त कौशल तथा क्षमता के अनुकूल व्यवसाय का निर्धारण किया जाए। इसके पश्चात व्यवसायिक प्रशिक्षण, व्यवसाय संबंधी कौशल के विकास तथा कार्य व्यवहार के विकास के द्वारा व्यक्ति का विकास किया जाता है। इसके बाद व्यक्ति के लिए कार्य-स्थल पर ही आवश्यक प्रशिक्षण का प्रबंध करने का प्रयास किया जाता है तथा उसे उसके संबंधित व्यवसाय से पूर्ण रूप से जोड़ने का प्रयत्न किया जाता है।

व्यवसायिक मूल्यांकन तथा कार्यक्रम तंत्र(VAPS) के अंतर्गत विभिन्न विषयों के परीक्षण के लिए विभिन्न मूल्यांकन चेकलिस्ट का प्रयोग किया जाता है।

आइए इस संदर्भ में हम NIMH व्यवसायिक मूल्यांकन तथा कार्यक्रम तंत्र के द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले मूल्यांकन चेकलिस्ट को देखें।

सर्वप्रथम व्यक्ति की स्थिति/परिस्थिति के विषय में जानने के लिए उसके रुपरेखा (profile) के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है।

इस अध्याय में हम व्यक्ति के कार्य क्षेत्र में जाने से पहले किए जाने वाले मूल्यांकन के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

9.5.1 व्यवसायिक रुपरेखा(vocational profile)

1. पहचान संबंधी डाटा

9.1 प्रशिक्षु का नाम :

(मानसिक मंद व्यक्ति जिसकी आयु 15 वर्ष से अधिक हो)

1.2 लिंग/आयु/जन्म तिथि :

1.3 मानसिक अक्षमता का स्तर :

1.4 वैवाहिक स्थिति :

1.5	पिता/अभिभावक का नाम, व्यवसाय तथा पता	:
2.	पारिवारिक इतिहास(वंशावली चार्ट)	:
3.	सामाजिक आर्थिक स्थिति	:
3.1	माता-पिता की मासिक आय	:
3.2	ग्रामीण/अर्थ शहरी/शहरी	:
4.	जातिगत (generic) कौशल (जातिगत कौशल मूल्यांकन पर आधारित)	:
4.1	व्यक्तिगत कौशल	:
4.2	संप्रेषण	:
4.3	सामाजिक व्यवहार	:
4.4	कार्य-संबंधी(क्रियात्मक) एकेडमी	:
4.5	सुरक्षा संबंधी कौशल	:
4.6	घरेलू व्यवहार	:
4.7	गतिशीलता एवं हस्त कार्य	:
4.8	व्यवसायिक कौशल	:
5.	सह-स्थिति(चिह्नित करें)	
a.	मिरगी	:
b.	शारीरिक विकलांगता	:
c.	श्रवण विकलांगता	:

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

- d. द्रश्य विकलांगता :
- e. मानसिक रोगों से संबंधित रूपरेखा :
6. प्रशिक्षण प्राप्त
- a. सामान्य विधालय :
- b. विशिष्ट विधालय :
- c. व्यवसायिक प्रशिक्षण :
- d. अन्य :
7. दैनिक रूटीन
- 06:00 प्रातः-9:00 प्रातः :
- 9:00 प्रातः-1:00दोपहर :
- 1:00दोपहर-5:00शायं :
- 5:00 शायं-9:00रात्रि :
8. रोजगार संबंधी अनुभव
- 8.1 घरेलू कार्य :
- 8.2 अगर कहीं कार्य करते थे,कहाँ?किस प्रकार का कार्य?भुगतान?
9. रोजगार कि संभावनाएँ
- 9.1 परिवार के सदस्य किस प्रकार के व्यवसाय में सम्मिलित थे?

- 9.2 आस-पास के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ अथवा अवसर :
- 9.3 स्व-रोजगार(self-employment) की संभावना :
- 9.4 प्रशिक्षु किस प्रकार का कार्य करना चाहता हैं? :
- 9.5 माता-पिता अपने पुत्र/पुत्री के लिए किस प्रकार का सहारा चाहते हैं? :
- 9.6 माता-पिता अपने पुत्र/पुत्री के व्यवसाय के किस प्रकार का सहारा चाहते हैं? :
- 9.7 आर्थिक स्थिति :
10. वे क्षेत्र जिन में पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता हैं(चिह्नित करें) :
- a. चिकित्सकीय :
- b. शिक्षा-संबंधी :
- c. परिवार की काउंसिलिंग :
- d. रोजगार चुनने में पथ-प्रदर्शन :
- e. व्यवसायिक प्रशिक्षक :
- f. फंड की आवश्यकता :

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

- g. प्रोजेक्ट तैयार करना :
- h. अन्य :
11. उचित व्यवसाय का चुनाव :
- (जातिगत कौशल मूल्यांकन तथा व्यवसायिक रूपरेखा पर आधारित)
- 11.1 चुना हुआ उचित व्यवसाय-प्रथम विकल्प :
- चुनाव के कारण
- a.
- b.
- c.
- d.
- 11.2 उचित व्यवसाय –द्वितीय विकल्प :
- चुनाव के कारण
- a.
- b.
- c.
- d.
- 11.3 उचित व्यवसाय-तृतीय विकल्प :
- चुनाव के कारण
- a.

b.

c.

d.

12. अन्य रिमार्क :

9.5.2 जातिगत(generic)कौशल मूल्यांकन चेकलिस्ट

व्यवसायिक कौशल के प्रशिक्षण के लिए पूर्व निर्धारित आवश्यक कौशल

प्रशिक्षु का नाम: निश्चित अंतराल में मूल्यांकन

उम्र: तारीख:

(i) व्यक्तिगत

1.आवश्यकता का अनुमान लगता है,

स्वतन्त्रतापूर्ण रूप से शैचालय का

प्रयोग करता है।

2.साफ-सफाई रखता है(ब्रश करना,नहाना,

बाल बनाना)

3.अच्छी तरह खाता है तथा बिना निरिक्षण के

ही पारिवारिक में शिष्टाचार के साथ रहता है।

4.बिना किसी सहायता के कपड़े पहनता है तथा

साफ सुथरा दिखता है।

कुल प्राप्त अंक

(ii)सम्प्रेषण

- | | | | | |
|---|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| 1.मौखिक सम्प्रेषण के साथ संबंधित संकेतों का प्रयोग कर सकता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 2.शब्दों के प्रयोग से सम्प्रेषण करता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 3.शब्दों अथवा संकेतों के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति कर सकता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 4.वाक्यों का इस्तेमाल कर सम्प्रेषण करते है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 5.अर्थपूर्ण वाद-विवाद में हिस्सा लेता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| कुल प्राप्त अंक | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |

(iii)सामाजिक व्यवहार

- | | | | | |
|--|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| 1.कक्षा में ठीक से बैठता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 2.सहपाठियों तथा बड़ों का अच्छी तरह अभिवादन करता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 3.समूह की स्थिति में हाथ बटाता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 4.बिना कहे आवश्यकता पड़ने पर मदद करता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 5.स्वीकार करने योग्य अभिवादन कर पाता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 6.अपनी सम्पत्ति को पहचानता तथा सुरक्षित रखता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| 7.दूसरों की वस्तुएँ इस्तेमाल करने से पूर्व आज्ञा मांगता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |
| चिन्हित करें (हाँ)स्वतंत्र (ना)निर्भर | | | | |
| 8.अनुशासन बना कर रखता है | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/> |

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

9.सामान्य क्रियाकलापों में सहपाठियों का नेतृत्व करता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
10.रूटीन का पालन करता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
कुल प्राप्त अंक	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
(iv)क्रियात्मक अकादमी(functional academics)			
1.अपना नाम पढ़ लेता/लेती है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
2.अपना पता पढ़ सकता/सकती है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
3.विशेष शब्द(जहर,आदमी,औरत,गर्म,रुकना,शौचालय इत्यादि) पढ़ पता है।	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
4.पढ़े हुए शब्द का अर्थ समझने में सक्षम है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
5.साधारण वाक्य पढ़ सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
6.अपना नाम लिख सकता/सकती है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
7.अपना पता लिख सकता/सकती है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
8.साधारण वाक्य लिख सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
9. 1 से 10 तक गिन सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
10. 10 तक की संख्याएँ पहचान तथा लिख सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
11.100 तक गिन सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
12.100 तक की संख्याएँ पहचान तथा लिख सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
13.साधारण संख्याएँ जोड़ सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
14.साधारण दो अंको का योग कर सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

15.साधारण एक अंकीय घटाव कर सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
16.साधारण द्विय अंकीय घटाव कर सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
17.हर प्रकार के सिक्कों की पहचान करता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
18.हर प्रकार के नोटों की पहचान करता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
19.1 रु. के संदर्भ में सिक्के का ले-दे कर सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
20.दिन और रात, सुभ और शाम,आने वाले दिन तथा बीते हुए दिन का ठीक-ठीक हिसाब डे सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
21.घड़ी के लम्बी तथा छोटी सुइयों की स्थिति बता सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
22.घड़ी के अंक पढ़ सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
23.अपना जन्मदिन बता सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
24.मिनट तक घड़ी का समय बता सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
25.घण्टे,30 मिनट,15 मिनट,45 मिनट इत्यादि बता सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
26.दैनिक रूटीन से समय को जोड़ सकता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
कुल प्राप्त अंक	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

(v)सुरक्षा संबंधी कौशल

1.सीढियों एवं बरामदो का सुरक्षित रूप से प्रयोग करता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
2.वातावरण के खतरों के प्रति सचेत है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
3.आग के खतरे को जनता है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
4.ट्रैफिक सिग्नल के प्रति सचेत है	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

5. गली सुरक्षित रूप से पार करता है

6. नुकीली वस्तुओं का सुरक्षित प्रयोग करता है

7. घरेलू बिजली के उपकरणों का सावधानी से इस्तेमाल करता है

कुल प्राप्त अंक

(vi) घरेलू व्यवहार

1. कमरों को बुहारता है

2. फर्नीचर को झाड़ता/पोड़ता है

3. लंच के लिए टेबल लगाता है

4. थाली को धोता तथा सुखाता है

5. ग्रिंडर अथवा मिक्सी का इस्तेमाल करता है

6. कपड़े धोता है, सुखाता है

7. आवश्यकता के समरा सूची प्रदान किए जाने पर खाना पकाने

संबंधी वस्तुएँ खरीदता है

8. काँफी बनाता है

9. खाना तैयार करता है तथा परोसता है

10. साइकिल चलाता है

11. आवश्यक संदेश किसी खास व्यक्ति तक पहुँचा सकता है

12. टेलीफोन कॉल उठा सकता है तथा बात कर सकता है

कुल प्राप्त अंक

(vii)व्यवसायिक कौशल

- 1.दिए गए आवश्यक कार्य को एक घंटे तक बिना किसी की मदद लिए कर सकता है
- 2.रीमाइण्डर के बिना निर्धारित किए हुए क्षेत्र में रूटीन कार्यक्रम के अंतर्गत जाता है।
- 3.किसी कार्य को समझता एवं पूरा करता है
- 4.निर्देशित किए जाने पर कार्य की गति बढ़ाता है
- 5.समय पर उठता है तथा शैक्षणिक स्थल के लिए समय से निकलता है
- 6.बस के द्वारा स्वतंत्र रूप से यात्रा करता है

जातिगत(generic) कौशल मूल्यांकन डाटा

कौशल क्षेत्र	कुल	तारीख	निश्चित अंतराल पर
मूल्यांकन			
1.व्यक्तिगत			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
2.सम्प्रेषण			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
3.सामाजिक व्यवहार			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
4.क्रियात्मक अकादमी			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
5.सुरक्षा संबंधी कौशल			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
6.घरेलू व्यवहार			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
7.गतिशीलता एवं हस्त क्रिया			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
8.व्यवसायिक			<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
कुल			

प्रशिक्षु के अंदर पाए गए विशिष्ट रुचियों तथा अभिरुचि विवरण दें

9.5.3 व्यवसाय निरीक्षण रुपरेखा

(i)चुनाव हुआ व्यवसाय

- 1.व्यवसाय का नाम
- 2.व्यवसाय का स्थल
- 3.व्यवसाय का प्रशिक्षक
- 4.व्यवसाय का संचालक

(ii) मुख्य कार्य क्षेत्र निश्चित अंतराल पर मूल्यांकन

(दिए गए व्यवसाय के निश्चित विशिष्ट कार्य)

तारीख

1.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
2.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
3.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
4.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
5.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
6.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
7.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
8.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
9.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
10.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
11.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
12.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
13.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
14.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>
15.	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>

चिन्ह I-स्वतंत्र ,M-विकास के पथ पर अग्रसर,V-मौखिक रूप से तत्पर,P-शारीरिक रूप से तत्पर /इच्छुक,D-पूर्ण रूप से निर्भर

(iii) अतिरिक्त कर्तव्य/कार्य

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
		कुल		

(iv) कार्य संबंधी कौशल

व्यक्तिगत

1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

क्रियात्मक अकादमिक (functional academics)

(पठन, लेखन, अंक, मुद्रा, समय, माप तौल)

1.				
2.				
3.				
4.				

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

5.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
6.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
7.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
8.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
9.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
10.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
11.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
12.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
13.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
14.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
15.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

लिंग शिक्षा

1.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
2.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
3.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
4.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
5.	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

स्वतंत्र जीवन यापन

(सुरक्षा, यात्रा, पारिवारिक तथा सामुदायिक जीवन यापन)

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
--------------------------	--------------------------	--------------------------	--------------------------

1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				
	कुल			

(v) कार्य व्यवहार

(शारीरिक वेष भूषा, व्यक्तिगत मेल-जोल, नियमितता एवं समय की पाबंदी, सम्प्रेषण तथा सामाजिक व्यवहार तथा गुणवत्ता एवं मात्रा संबंधी पहलू)

(vi) व्यवसाय की आवश्यकताएँ

1. उपकरण एवं सामग्री
2. उत्पादन की लागत
4. अनुमानित लाभ
5. अपनाने वाले संयंत्र

(vii) व्यवसाय प्रशिक्षण कार्यविधि

1. प्रशिक्षण नीति

2. अनुकरण सेटिंग के अंतर्गत प्रशिक्षण (training in simulated setting)

3. रोजगार के स्थान पर प्रशिक्षण

4. प्रबलीकरण/वेतन/मानदेय

5. रोजगार दिलाना-

a. खुला(open)/अवलम्बन(supported)/समूह(group)/आश्रय(shelterd)

b. स्व(self)/घर पर आधारित(homebased)

(viii) प्रशिक्षक की जिम्मेदारी

1. व्यवसाय दिलाने वाले व्यक्ति/समूह के सम्पर्क

2. सह-कर्मियों की जागरूकता

3. लगातार मूल्यांकन

4. लगातार सहारा देना तथा धीरे-धीरे हटाना

(ix) माता-पिता का सहयोग

1. नियमितता एवं समयबद्धता की जाँच करना

2. स्वास्थ्यवर्धक खाद्य सामग्री प्रदान करना

3. कार्यक्रम को लागू करना

4. व्यवसाय प्रदान करने वाले के साथ वार्तालाप

(x) अन्य सूचना

व्यवसाय परीक्षण(job analysis)

(व्यक्तिमुलक व्यवसायिक पाठ्यक्रम)

	कुल	निश्चित अंतराल पर मूल्यांकन तारीख
मुख्य कार्य क्षेत्र		<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
अतिरिक्त कर्तव्य		<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
कार्य संबंधी कौशल		<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>
		कुल <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>

9.5.4 मंदबुद्धि व्यक्तियों के लिए कार्य व्यवहार मूल्यांकन चेकलिस्ट

(i) सामान्य सूचना

1. विशिष्ट कार्यकर्ता का नाम :
2. उम्र /लिंग :
3. मानसिक अक्षमता का स्तर :
4. कार्य स्थल :
5. चुना हुआ व्यवसाय :

(ii) रिपोर्ट (चेकलिस्ट पर आधारित)

1. शारीरिक वेश-भूषा :
2. व्यक्तिगत मेलजोल :
3. नियमितता एवं समयबद्धता :
4. सम्प्रेषण एवं सामाजिक व्यवहार :

5.गुणवत्ता एवं यात्रा के पहलू :

(iii)टिप्पणी

कार्य व्यवहार मूल्यांकन चेकलिस्ट

निश्चित अंतराल पर मुल्यांकन

तारीख

(अ)शारीरिक वेश-भूषा

- 1.उचित वस्त्र पहनता है
- 2.वस्त्र घुले तथा इस्त्री किया हुआ हो
- 3.बाल बनाता है
- 4.नियमित रूप से दाढ़ी बनाता है
- 5.हाथों के नाखून साफ रखता है
- 6.शैचालय संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।
- 7.स्वच्छ खाना खाता है
- 8.खाने के समय के आचार का पालन करता है
- 9.दवा लेने के समय सहायता ढूंढता है
- 10.धूम्रपान नहीं करता है

कुल

(आ)व्यक्तिगत मेल जोल

- 1.निरीक्षक का आदर करता है
- 2.सहकर्मियों के साथ सहयोग करता है

3. भावनाओं पर काबू रखता है
4. आवश्यकता पड़ने पर सहायता मांगता है
5. झगड़े नहीं करता
6. उचित लिंग व्यवहार बनाए रखता है
7. दूसरों की वस्तुओं का सम्मान करता है
8. अपनी वस्तुओं का ध्यान रखता है

कुल

(इ) नियमितता एवं समयबद्धता

1. रोज काम पर जाता है
2. कार्यस्थल पर समय से पहुँचता है
3. आने से रूटीन का ख्याल रखता है
4. देर होने पर कार्यस्थल के नियम का पालन करता है
5. देर से आने का कारण विनम्रता से बताता है
6. जाने से पहले सूचित करता है
7. अंतराल के बाद कार्यस्थल पर वापस आता है
8. अंतराल का उचित नियोजन करता है
9. बंद होने तक कार्य करता है
10. ड्यूटी के रूटीन का पालन करता है

कुल

(ई)सम्प्रेषण/सामाजिक व्यवहार

- 1.निर्देशों का पालन करता है
- 2.आवश्यकताओं को जाहिर करता है
- 3.निरर्थक बातचीत नहीं करता है
- 4.आवश्यकता पड़ने पर टेलीफोन का प्रयोग करता है
- 5.उचित रूप से 'माफ कीजिए', 'धन्यवाद', 'कृपया'का उपयोग करता है
- 6.बातचीत के दौरान दृष्टी सम्पर्क बनाता है
- 7.कार्य के दौरान चिल्लाता नहीं है
- 8.कार्य से जुड़े प्रश्न करता है
- 9.बिना वजह शिकायत नहीं करता
- 10.चीजों को सही किए जाने पर स्वीकार करता है
- 11.बिना परेशान किए जाने समूह में कार्य करता है
- 12.कार्यस्थल पर सामाजिक क्रियाकलाप में भाग लेता है

कुल

(उ)कार्य के गुणवत्ता एवं मात्रा संबंधी पहलू

- 1.कार्य की गुणवत्ता में सुधार को दर्शाता है
- 2.सन्तोषप्रद कार्य करता है
- 3.कार्य संबंधी समस्याओं को रिपोर्ट करता है

4. कार्य की गति बढ़ाता है
5. उपकरणों का उपयोग सावधानीपूर्वक करता है
6. उपकरण एवं उत्पाद को सही स्थान पर छोड़ता है
7. कार्यक्षेत्र से चीजें नहीं चुराता है
8. कार्यक्षेत्र को स्वच्छ रखता है
9. खोए/टूटे हुए वस्तुओं की रिपोर्ट करता है
10. निर्देशानुसार कार्य को जारी रखता है अथवा रोक देता है

कुल

कार्य व्यवहार मूल्यांकन डाटा

क्षेत्र	कुल	निश्चित अंतराल पर मूल्यांकन तारीख
1. शारीरिक वेश-भूषा	10x3	
2. व्यक्तिगत मेलजोल	8x3	
3. नियमितता एवं समयबद्धता	10x3	
4. सम्प्रेषण/सामाजिक व्यवहार	12x3	
5. गुणवत्ता एवं मात्रा संबंधी पहलू	10x3	
कुल	50x3	

मूल्यांकनकर्ता –

अभ्यास प्रश्न

3. VAPS की क्या आवश्यकता है?

इकाई-10 पूर्व विद्यालय एवं विद्यालय अवस्था में आंकलन का महत्व एवं विकासात्मक तथा अनुकूलन व्यवहार का आंकलन

- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 उद्देश्य
- 10.3 आंकलन क्या है। आंकलन की अवधारणा
 - 10.3.1 आंकलन का प्रत्यय
 - 10.3.2.1 परोक्ष रूप से बच्चे की जांच करना
 - 10.3.2.2 अवलोकन
 - 10.3.2.3 साक्षात्कार करना
 - 10.3.2.4 परीक्षण 5 प्रश्नावली 5 रेटिंग स्केल
 - 10.3.2.5 प्रयोग
 - 10.3.2.6 चिकित्सीय परीक्षण
 - 10.3.2.7 केस स्टडी
- 10.4 आंकलन की आवश्यकता एवं महत्व
 - 10.4.1 प्रारम्भिक जांच एवं पहचान
 - 10.4.2 वर्तमान निष्पादन स्तर का निर्धारण
 - 10.4.3 वर्गीकरण एवं शैक्षिक नियोजन
 - 10.4.4 शैक्षणिक कार्यक्रम एवं रणनीतियों का निर्धारण
 - 10.4.5 व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम योजना
 - 10.4.6 व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम का मूल्यांकन -फारमेटिव आंकलन - समेटिव आंकलन
- 10.5 आंकलन के प्रकार
 - 10.5.1 चिकित्सीय आंकलन
 - 10.5.2 मनोवैज्ञानिक आंकलन
 - 10.5.3 शैक्षणिक आंकलन
 - 10.5.4 विकासात्मक आंकलन
 - 10.5.5 अनुकूलन व्यवहार आंकलन

- 10.6 विकासात्मक आंकलन
 - 10.6.1 अवधारणा एवं उपयोगिता
 - 10.7 अनुकूलन व्यवहार
 - 10.7.1 अवधारणा एवं उपयोगिता
 - 10.8 सारांश
 - 10.9 उपयोगी पुस्तकें
-

10.1 प्रस्तावना

यदि कोई अभिभावक अपने बच्चे को हस्तक्षेप कार्यक्रम (Intervention Programme) के लिए किसी विशेषज्ञ के पास लेकर जाते हैं अथवा किसी विद्यालय में प्रवेश हेतु लेकर जाते हैं तो उनसे विभिन्न माध्यमों से बच्चे के बारे में जानकारी एकत्र की जाती है जैसे उसका पारिवारिक पृष्ठभूमि, उसकी क्षमतायें या कमियाँ, समस्या व्यवहार इत्यादि। यह सब सूचनायें एकत्र करना एक कठिन प्रक्रिया है अतः संपूर्ण सूचनायें एकत्र करने का एक प्रारूप है जब आप धीरे-धीरे इस प्रक्रिया के विषय में सक्षम लें और अपने विद्यालय में उपयोग करेंगे तब आप सहज रूप में सूचनायें एकत्र कर सकेंगे। अतः सूचना एकत्रित करना एक क्रमबद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा आप किसी बच्चे या व्यक्ति के बारे में आवश्यक सूचनायें एकत्रित करते हैं तथा एकत्रित सूचनाओं के माध्यम से कुछ ठोस निर्णयों तक पहुँचते हैं। इस प्रक्रिया को आंकलन कहा जाता है इस अध्याय में आप आंकलन (Assessment) क्या है, इसके प्रकार एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता-

1. आंकलन की व्याख्या करने में सक्षम होंगे
 2. पूर्व विद्यालय एवं विद्यालय अवस्था में आंकलन के महत्व एवं आवश्यकता का बताने में सक्षम होंगे
 3. आंकलन के प्रकारों का वर्णन करने में सक्षम होंगे
 4. विकासात्मक आंकलन क्या है एवं इसके लिए कौन से उपकरण उपलब्ध हैं इसको बताने में सक्षम होंगे।
-

5. अनुकूलन व्यवहार क्या है एव इस किस प्रकार आंकलित किया जा सकता है इसको बताने में सक्षम होंगे।

10.3 आंकलन की अवधारणा (Concept of Assessment)

आंकलन एक ऐसी क्रमबद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत किसी व्यक्ति/ बच्चे से संबंधित आवश्यक सचूनाओ को एकत्र किया जाता है जिसमें उसकी क्षमताओ, समस्याओ, कमजोरियों इत्यादि का वर्जन शामिल रहता है। विशेषज्ञों द्वारा दी गई आंकलन रिपोर्ट के आधार पर उसके लिए भविष्य स सम्बन्धित योजना को तैयार किया जाता है। आंकलन एक प्रकार की प्रक्रिया है जिसका प्रयोग विद्यार्थी के निष्पादन के बारे में सूचना एकत्र करना है। अंतर्राष्ट्रीय बैकलाइट आर्गेनाइजेशन यू.एस.ए. (2007) ने आंकलन के संदर्भ में बताया है कि आंकलन के अंतर्गत विद्यार्थी के निष्पादन के बारे में सचूनाओ का विश्लेषण किया जाता है सीखन की प्रक्रिया के दौरान यह पहचान की जाती है कि विद्यार्थी क्या जानता है, कितना समझता है, क्या कर सकता है एव विभिन्न अवस्थाओ में क्या अनुभव करता है विद्यार्थी की प्रगति के बार में आंकलन करते समय अध्यापक व अभिभावक दोनो को सक्रिय रहना चाहिए क्यों क आलोचनात्मक चिन्तन एव स्वमूल्यांकन कौशल भी विद्यार्थी के विकास का भाग है।

10.3.1 आंकलन की परिभाषा

“Assessment is any variety of procedures used to gather information about the student performance (Linn & Gronlund, 2000).”

“Assessment is the process of gathering information to monitor progress and make educational decisions, if necessary (Overton, 2000).”

संक्षेप में आंकलन को निम्नलिखित रूप में स्वीकार किया गया है:-

1. आंकलन एक प्रक्रिया जिसमें किसी उद्देश्य हेतु सचूनाओ को संकलित किया जाता है।
2. आंकलन के अंतर्गत विद्यार्थी की शक्तियों एव कमियों का पता लगाने के लिये विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।
3. आंकलन के द्वारा विद्यार्थी की प्रगति को जांचा जा सकता है तथा इस आधार पर शैक्षणिक निर्णय लिये जा सकते हैं।

4. आंकलन रिपोर्ट के आधार पर विद्यार्थी के सीखने में आ रही कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

1. आंकलन को परिभाषित करें
2. आंकलन के कोई तीन उद्देश्य लिखिये

10.3.2 आंकलन की प्रक्रिया

आंकलन प्रक्रिया में आंकड़ों को विभिन्न प्रकार से एकत्रित करना सम्मिलित है। यह आवश्यक है क्योंकि परीक्षक/शिक्षक बच्चे के सभी विकासात्मक क्षेत्रों से आंकड़ें एकत्रित करना चाहता है। जो शिक्षक/परीक्षक को उचित निर्णय लेने में सहायक होते हैं। इन विधियों में बच्चे को परोक्ष रूप से जांच करना, बच्चे को विभिन्न वातावरणों में अवलोकित करना तथा अभिभावकों और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों का साक्षात्कार लेना इत्यादि सम्मिलित है।

10.3.2.1 परोक्ष रूप से बच्चे की जांच करना

बच्चे की योग्यता को जांचने के लिये सदैव यह कहा जाता है कि स्वयं बच्चे के कौशल व्यवहारों को या योग्यता को जांच क्यों कि यह प्राप्त होने वाली प्रथम सूचना होती है। इसके अन्तर्गत अभिभावक से पछूना जा सकता है कि क्या आपका बच्चा अमुक कार्य को कर लेता है परन्तु उचित सामग्री का प्रयोग कर के परीक्षक के लिये यह आवश्यक है कि वह स्वयं इसकी जांच कर लें क्योंकि कभी कभी अभिभावक यह बताने में सक्षम होते हैं कि उनका बच्चा अमुक कार्य को नहीं कर पाता है। इसलिये यह आवश्यक है कि वर्तमान स्तर का पता लगाने के लिये बच्चे की जांच शिक्षक अथवा परीक्षक के द्वारा स्वयं परोक्ष रूप से की जाये जिसमें अभिभावकों की सहायता ली जा सकती है। कुछ ऐसी क्रियाएँ हो सकती हैं जिन्हें शिक्षक परोक्ष रूप से जांच नहीं कर सकते जैसे स्नान करना, परिवार में सामाजिक अवसरों में बच्चे का व्यवहार इत्यादि। इस प्रकार की सूचनाएँ अभिभावकों से एकत्र की जा सकती हैं।

10.3.2.2 अवलोकन बच्च के निष्पादन के आंकलन या मूल्यांकन करने के लिये अवलोकन विधि अत्यधिक प्रयुक्त की जाती है। इस विधि में परीक्षक/शिक्षक बच्च के कार्य के निष्पादन का अवलोकन करता है इसका द्वारा प्राप्त आंकड़ों को वस्तुनिष्ठ ढंग से अंकित किया जा सकता है। अवलोकन के द्वारा व्यक्ति के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष सूचनायें (First-hand information) प्राप्त होती है इसमें अवलोकनकर्ता तथा विद्यार्थी के बीच बहुत कम या बिल्कुल बातचीत नहीं होती है। अवलोकन विद्यार्थी के साथ क्रिया में पणर् भागीदारी करते हुए भी किया जा सकता है, जिस प्रत्यक्ष या भागीदारी का अवलोकन (Participatory Observation) कहते हैं जैसे बच्चों के खेल व्यवहार का अवलोकन करने के लिये शिक्षक स्वयं बच्चों के साथ खेल में शामिल हो और खेले। भागीदारी अवलोकन में यह क्षमता होती है कि अवलोकन की रिकार्डिंग के दौरान ही वह वास्तविक व्यवहार को परिवर्तित कर सकता है। कुछ अवलोकनकर्ता अप्रत्यक्ष अवलोकन बिना भागीदारी अवलोकन (Non Participatory) को महत्व देते हैं। इसके अन्तर्गत अवलोकनकर्ता वास्तविक परिस्थिति से दूर रह कर विद्यार्थी के व्यवहार का अवलोकन करता है। इस प्रकार के अवलोकन के द्वारा आवश्यक सूचनाओं को प्रत्यक्ष रूप से नोट किया जा सकता है लेकिन प्रत्यक्ष अवलोकन के द्वारा सूचनाओं को एकत्र करना सदैव सम्भव नहीं होता है अर्थात् सभी प्रकार के व्यवहारों को हमेशा अवलोकित नहीं किया जा सकता है-जैसे प्राकृतिक स्थिति में शौचालय का प्रयोग इत्यादि। इसके अतिरिक्त यदि शिक्षक किसी विशेष व्यवहार को अवलोकित करना चाहें तो जरूरी नहीं है कि वह व्यवहार उस समय विशेष रूप से घटित हो जैसे कक्षा में अक्रामक व्यवहार आदि। इस प्रकार के व्यवहारों को अवलोकित करने में आने वाली परेशानियों से बचने के लिये यांत्रिक उपकरण (Mechanical Device) जैसे वीडियो रिकार्डर सी.सी.टीवी कैमरा इत्यादि की सहायता ली जा सकती है।

10.3.2.3 साक्षात्कार करना कई अनकूलित व्यवहारों के बारे में सूचना जिस न तो जांचा गया है न ही अवलोकित किया गया है मुख्यतः अभिभावकों तथा परिवार के सदस्यों से साक्षात्कार द्वारा एकत्र की जाती है। जन्म-इतिहास परिवार के सदस्यों से सम्पर्क मित्रों पड़ोस तथा समुदाय साक्षात्कार के कुछ उदाहरण हैं। इसका अन्तर्गत सूचनायें एकत्रित करने के लिये प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमें दूसरे व्यक्ति के साथ सक्रिय अंतःक्रिया की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक प्रश्नों की एक श्रृंखला का प्रयोग सूचनायें एकत्र करने के लिये कर सकता है जिसे संरचित साक्षात्कार कहा जाता है। इसके द्वारा प्राप्त सूचनायें व्यवस्थित एवं विस्तृत रूप से प्राप्त हो सकती हैं। यदि प्रश्नों को सावधानीपूर्वक संरचित किया गया हो, जब आप निश्चित प्रश्नों का उत्तर लेते हैं तब कभी कभी उत्तर के स्पष्टीकरण के लिये कुछ अलग से प्रश्नों के पछूने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में शिक्षक के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं होता है कि वह

स्वयं प्रश्नों की विषयवस्तु अथवा क्रम को परिवर्तित कर सके। अतः ऐसी स्थिति में असंरचित साक्षात्कार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके अन्तर्गत प्रश्नों के क्रम एवं विषयवस्तु को परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित किया जा सकता है। साक्षात्कार की प्रक्रिया आमन सामने बैठकर, टेलीफोन पर या प्रश्नावली के द्वारा भी सम्पन्न की जा सकती है।

10.3.2.4 परीक्षण (Testing) परीक्षण के द्वारा किसी विशेष व्यवहार का वस्तुनिष्ठ रूप से मापन किया जा सकता है। स्केल (Scale), अनुसूची (Schedule), जांच सूची (Check List) आदि का प्रयोग परीक्षण हेतु किया जाता है। परीक्षण प्रश्नावली रेटिंग स्केल या किसी कार्य के आधार पर किया जाता है। परीक्षण का प्रयोग व्यक्तिगत या समूह पर आंकलन हेतु किया जा सकता है लेकिन यहां यह आवश्यक है कि शिक्षक का परीक्षण का उद्देश्य, उसकी विशेषताये समूह जिसके लिये परीक्षण तैयार किया गया है, प्रशासन की प्रक्रिया व व्याख्या किस प्रकार की जाये आदि का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिये, अन्यथा परीक्षण द्वारा सचूना ग्रहण करने का उद्देश्य विफल हो जायेगा। किसी भी परीक्षण का चयनित करते समय उसकी वैधता (Validity), विश्वसनीयता (Reliability), वस्तुनिष्ठता (Objectivity), साधारण (Simple) मूल्य प्रभाविता (Cost effectiveness) इत्यादि को देखना आवश्यक है साथ ही परीक्षण बच्चों की योग्यता के अनुरूप होना अति आवश्यक है।

- **प्रश्नावली (Questionnaire)** प्रश्नावली का प्रयोग भी बच्च के विषय में सूचनाओं को संकलित करने हेतु किया जाता है। विशेषकर जब माता-पिता का साक्षात्कार सम्भव नहीं होता है। प्रश्नावली में बच्चे से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की सूचनायें जैसे पृष्ठभूमि अनुकूलित व्यवहार इत्यादि के बारे में प्रश्नों की एक श्रंखला तैयार की जाती है इस अभिभावक स्वयं भर देते हैं अथवा सामाजिक कार्यकर्ता अथवा मनोवैज्ञानिक उनसे प्रश्न पूछकर प्राप्त उत्तरो को फार्म में भरते हैं।
- **रेटिंग स्केल (Rating Scale)** रेटिंग स्केल का प्रयोग भी बच्च के आंकलन हेतु किया जाता है कि परीक्षक या अभिभावक की नजर में किसी कौशल या क्रिया को बच्चा किस सीमा तक कर पाता है। अनुकूलित व्यवहारों के बारे में सूचना एकत्र करने के लिये दो प्रकार के रेटिंग स्केल का प्रयोग किया जात है, जिसमें सचूनायें हां या नहीं

के रूप में एकत्र की जाती है, जैसे बच्चा बटन बंद कर लेता है हां या ना दूसरे रूप में बच्चा किसी कौशल का किस सीमा तक कर लेता है, इसमें एक से लेकर पांच तक अंको के आधार पर रेट करना होता है और इस आधार पर प्राप्त परिणामों को विश्लेषण कर के लिखा जाता है।

10.3.2.5 प्रयोग (Experiment) कभी कभी अवलोकन, साक्षात्कार तथा परीक्षण स पण्डित सचूनाये प्राप्त नहीं हो पाती है ऐसी स्थिति में प्रयोग के द्वारा सचूनाओं को ग्रहण किया जा सकता है। यहां दो विभिन्न परिस्थितियों में विद्यार्थी के व्यवहार का आंकलन किया जाता है। जैसे यह जानने के लिये कि सामाजिक पुरस्कार या वस्तु पुरस्कार दोनों में से कौन ज्यादा प्रभावकारी है। इसके लिये दो भिन्न परिस्थितियों विद्यार्थी के परफार्मेंस को देखा जायेगा प्रथम में सामाजिक पुरस्कार द्वारा तथा द्वितीय में वस्तु पुरस्कार द्वारा। अंत में शिक्षक विद्यार्थियों की परफार्मेंस के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचेगा। हालांकि परीक्षण करना बहुत आसान नहीं होता है इसके लिये व्यवस्थित योजना बनाने आंकड़े एकत्र करने एवं उनको विश्लेषित करने की आवश्यकता होती है तभी सही रूप में उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है।

10.3.2.6 चिकित्सीय परीक्षण (Clinical Investigation) सामान्यतया इसके अन्तर्गत चिकित्सीय परीक्षण की बात की जाती है जैसे सी.टी. स्कैन, ई.ई.जी., एम.आर.आई. आदि विशेष शिक्षा में इसकी उपयोगिता नगण्य है फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से चिकित्सीय परीक्षण से प्राप्त सचूनाओं का प्रयोग कक्षा व्यवस्था व कक्षा की क्रियाओं को व्यवस्थित करने हेतु किया जा सकता है जैसे दृष्टि सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रयोग विद्यार्थी को उचित स्थान पर बैठाने के लिये किया जा सकता है।

10.3.2.7 केस स्टडी (Case Study) इसके अन्तर्गत उपरोक्त सभी विधियों के द्वारा प्राप्त मुख्य सचूनाओं व घटनाओं को क्रम से लगाया जाता है ताकि समस्या का विस्तृत व स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

10.4 आंकलन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Assessment)

आंकलन से प्राप्त सचूनाओं का विश्लेषण किये बिना हम नहीं जान सकते हैं कि व्यक्ति का निष्पादन स्तर क्या है जहां से हमें प्रशिक्षण प्रारम्भ करना है। अतः किसी भी कार्यक्रम की योजना

बनाने के लिए आंकलन सर्वाधिक उपयोगी होता है। विशेषकर बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का निष्पादन स्तर एक-दूसरे से अलग होता है। यहाँ उनकी बौद्धिक क्रियाशीलता, अनुकूल व्यवहार में कमियों उनकी शक्तियों एवं आवश्यकताओं इत्यादि को भली-भाँति समझकर विस्तृत भविष्यगत योजना बनाने का कार्य आंकलन के उपरान्त ही सम्भव होता है। किसी कार्यक्रम को क्रियान्वित करने से पूर्व आंकलन न केवल लक्ष्य के चयन में दिशा निर्धारित करता है वरन् कार्यक्रम के दौरान उस कार्यक्रम की प्रभावकारिता का भी निरीक्षण करता है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि आंकलन किसी अक्षमता की पहचान, निदान, कार्यक्रम योजना बनाने, रेफरल तथा विशेष शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। आंकलन की आवश्यकता कार्यक्रम को प्रारम्भ करने, कार्यक्रम के दौरान एवं कार्यक्रम के क्रियान्वयन के पश्चात भी होती है।

1. विशेष कौशल व्यवहार जो बच्चे में विद्यमान है
2. विशेष कौशल व्यवहार जो बच्चे में विद्यमान नहीं है।
3. बच्चे को सिखाने के लिए विशेष कौशल व्यवहार का लक्ष्य निर्धारण करना।
4. बच्चे को सिखाने के लिए लक्ष्य व्यवहार सम्बन्धी पूर्व अपेक्षा।
5. बच्चे में किस प्रकार के समस्या व्यवहार उपस्थित है?
6. शिक्षण प्रशिक्षण के लिए किन-किन समस्या व्यवहारों को लक्ष्य बनाना।
7. क्या व्यवहार परिवर्तन योजना प्रभावकारी है, अन्य बच्चों के संदर्भ में या उसी बच्चे के संदर्भ में?

10.4.1 प्रारम्भिक जांच (Screening) तथा पहचान

- जिन विद्यार्थियों को विशेष ध्यान या विशेष सेवाओं की आवश्यकता होती है उन्हें प्रारम्भिक तौर पर परीक्षण विधियों द्वारा पहचाना जाता है। इन परीक्षाओं में ऐसे बच्चों को पहचाना जाता है जिन्हें आगे विस्तृत आंकलन एवं मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।
- प्रारम्भिक जांच उन बच्चों को पहचानने के लिये की जाती है जिनमें विभिन्न समस्याएँ विकसित हो सकती हैं तथा जिन्हें अति जोखिम में माना जाता है। इन

बच्चों में कुछ इस तरह की कमियाँ भविष्य में विकसित हो सकती हैं जो अभी नहीं हैं। ऐसे बच्चों को पहचानने के लिये निरन्तर समस्या वाले क्षेत्रों पर नज़र रखनी पड़ती है तथा समस्या का रोकने के लिये अगर आवश्यक कार्यक्रम को तैयार करना होता है।

10.4.2 वर्तमान निष्पादन स्तर का निर्धारण एक विद्यार्थी के विभिन्न कौशलों के वर्तमान निष्पादन स्तर का निर्धारण करने के लिये आंकलन की निम्नलिखित आवश्यकता है:-

- कौशल को पहचानना जिसमें विशेष सहायता की आवश्यकता है।
- एक विद्यार्थी की खूबियाँ (Assets) एवं कमियों (Deficits) की पहचान करना।
- उचित रणनीतियाँ व विधियों को चुनना

10.4.3 वर्गीकरण एवं शैक्षिक नियोजन परीक्षणों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग विशेष विद्यार्थियों के उनकी समस्याओं के आधार पर वर्गीकरण एवं आवश्यकता पूर्ण हेतु उचित शैक्षिक नियोजन के लिये किया जा सकता है। परीक्षण सचूनाओं के आधार पर विद्यार्थियों को वर्गीकृत किया जाता है तथा उपयुक्त निर्णय लिये जाते हैं।

10.4.4 शैक्षणिक कार्यक्रम एवं रणनीतियों का निर्धारण विद्यार्थियों हेतु उचित कार्यक्रम एवं रणनीतियों के बनाने में आंकलन मुख्य आधार प्रदान करता है। इस उद्देश्य हेतु सूचनार्थी निम्नलिखित प्रकार से संकलित करके प्रयोग में लाई जाती है:-

1- विशेष शिक्षा कार्यक्रम बनाने के लिये बच्चे को रेफर करने से पहले शिक्षक को यह निर्धारण करने में कि “क्या पढ़ाना है” व “कैसे पढ़ाना है” सहायक होता है।

2- आंकलन से प्राप्त यह वह सचू नार्थी हैं जिनका प्रयोग पूर्व रेफरल हस्तक्षेप कार्यक्रम को विकसित तथा मूल्यांकन हेतु किया जा सकता है, दूसरे शब्दों में एक शिक्षक विद्यार्थी के कार्य निष्पादन (Work Performance) का आंकलन व मूल्यांकन कर सकता है और इस आधार पर उसके लिये विशेष कार्यक्रम तैयार कर सकता है। यदि विद्यार्थी उन्नति दर्शाता है तो ऐसी स्थिति में अन्य बहुविशेषज्ञों के पास रेफरल से बचा जा सकता है इस प्रकार आंकलन व्यक्ति विशेष के लिये शिक्षण कार्यक्रम बनाने, रणनीतियों के निर्धारण तथा मूल्यांकन करने की विधि के रूप में कार्य करता है।

3- व्यक्ति विशेष के आवश्यकता के आधार पर किया गया आंकलन उचित कार्यक्रम योजना बनाने व रणनीतियों के निर्धारण में सहयोगी साबित होता है साथ ही औपचारिक रिफरल की आवश्यकता को भी बताता है।

4- आंकलन के आधार पर यह निश्चित किया जाता है कि किन विद्यार्थियों को विशेष शिक्षा की आवश्यकता है उनका वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रमों को बनाते समय पूर्व रिफरल सूचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

10.4.5 वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम का विकास आंकलन से प्राप्त सूचनाओं का सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम का बनाने हेतु किया जाता है। इसके अन्तर्गत जिन कौशलों की बच्चे में कमी होती है उनको सिखाने के लिये दीर्घकालीन लक्ष्य (वार्षिक) तथा लघुकालीन लक्ष्य (त्रैमासिक) का निर्धारण एवं सिखाने हेतु उपयुक्त शिक्षण विधि के चयन हेतु किया जा सकता है चूंकि यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चे होते हैं और सभी बच्चों की आवश्यकताएँ भिन्न भिन्न होती हैं अतः ऐसे कार्यक्रम का निर्माण आवश्यक होता है जो बच्चों की अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्णता कर सके इस हेतु एक व्यवस्थित कार्य नियोजित वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम आवश्यक होता है।

10.4.6 मूल्यांकन लक्ष्यों उद्देश्यों, विधियों तथा सामग्री के साथ साथ वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम में मूल्यांकन विधियों का वर्णन भी आवश्यक रूप से होता है। इन विधियों का प्रयोग करके शिक्षक समय समय पर बच्चों की प्रगति की जांच कर सकता है और मूल्यांकन से प्राप्त परिणामों के आधार पर कार्यक्रम, विधियों, लक्ष्यों आदि में बदलाव किया जा सकता है मूल्यांकन में दो विधियों का प्रयोग किया जा जाता है।

- **प्रथम (Formative) मूल्यांकन** प्रथम मूल्यांकन हस्तक्षेप कार्यक्रम का अमल में लाते समय करते हैं। यह आवर्ती परीक्षण को सुगम बनाता है जिससे यह पता लगता है कि क्या आयोजित कार्यक्रम आयोजित ढंग से हो रहे हैं तथा अपेक्षित सुधार बच्चों में हो रहा है कि नहीं। आगे चलने वाला मूल्यांकन शिक्षक तथा शिक्षार्थी को तुरन्त निर्देशों की पर्याप्तता या अपर्याप्तता तथा शिक्षण के बारे में फीड बैक दे देता है जिससे कमियाँ या रिक्त स्थानों को तुरन्त सुधारा या भरा जा सकता है।

- संकलित (Summative) मूल्यांकन- दूसरी आरे संकलित मूल्यांकन एक लम्बी प्रक्रिया है, इकाई निर्देश के समाप्त होने के बाद आखिरी परीक्षण किया जाता है। यह पारम शिक्षण या उपलब्धि का दर्शाता है।

बौद्धिक क्रिया

यदि आपके विद्यालय में कोई अभिभावक अपन विशेष बच्चे का दाखिला करवाने आये और आप पर दबाव बनाये कि बिना किसी आंकलन के आप उस बच्चे को प्रवेश दे दें तो आप उस अभिभावक को आंकलन की आवश्यकता के बारे में किन बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे।

.....

10.5 आंकलन के प्रकार

किसी भी बच्चे / व्यक्ति को मंदबुद्धि कहने से पूर्व उसका गहन आंकलन आवश्यक है गहन आंकलन के अंतर्गत वे सभी प्रकार के आंकलन शामिल हैं जो विभिन्न उद्देश्य पूर्ण हेतु किये जाते हैं जैसे- चिकित्सीय आंकलन मनोवैज्ञानिक आंकलन शैक्षणिक आंकलन विकासात्मक आंकलन अनुकूलन व्यवहार आंकलन

10.5.1 चिकित्सीय आंकलन चिकित्सीय आंकलन बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे के निदान प्रक्रिया का एक भाग है इस बौद्धिक अक्षमता के कारणों का पता लगाने के लिए किया जाता है इसका अंतर्गत चिकित्सकों की टीम के द्वारा आंकलन किया जाता है।

10.5.2 मनोवैज्ञानिक आंकलन मनोवैज्ञानिक आंकलन के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के आंकलन किये जाते हैं जैसे बुद्धि परीक्षण, अभिरूचि परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण इत्यादि।

बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक आंकलन का विशेष स्थान है क्योंकि इसी के आधार पर किसी व्यक्ति की बुद्धि का स्तर व बौद्धिक अक्षमता के स्तर ;फ के आधार पर पता लगाया जा सकता है।

बुद्धि के स्तर

- 140 या इससे ऊपर - जीनियस
- 120 - 139 - सुपर इंटेलीजेंस
- 110 - 119 - सामान्य से अधिक
- 90 - 109 - औसत या सामान्य
- 71 - 89 - बार्डर लाइन इंटेलीजेंस
- 50 - 70 - अल्प मानसिक मंदता
- 25 - 49 - अति अल्प मानसिक मंदता
- 20 - 34 - गम्भीर मानसिक मंदता
- 20 से नीचे - अति गंभीर मानसिक मंदता

10.5.3 शैक्षणिक आकलन- शैक्षणिक आकलन के अंतर्गत व्यक्ति के उन सभी कार्यों का आकलन किया जाता है जो शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़ी होती है जैसे-

1. शैक्षिक वातावरण बनाने में सहयोग देना
2. जो पढ़ाया जा रहा है उसमें दिलचस्पी लेना
3. सहपाठी के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाना
4. अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के साथ प्रेम भाव से रहना
5. अनुशासन का पालन करना
6. अध्यापक का कहना मानना
7. गृह कार्य समय से करना इत्यादि

शैक्षणिक आंकलन का प्रयोग विद्यालय में प्रवेश के दौरान, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान एव बाद में भी किया जा सकता है यह आंकलन कार्यात्मक सिद्धान्त पर आधारित होता है जो विभिन्न कार्यात्मक स्तर पर व्यक्ति की उपलब्धि को दर्शाता हो।

10.5.4 विकासात्मक आंकलन इसके अन्तर्गत जन्म से 6 वर्ष तक के बच्चों का आंकलन विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों जैसे गामक, भाषा एव सम्प्रेषण, संज्ञानात्मक, सामाजिक इत्यादि में किया जाता है तथा यह जानने का प्रयास किया जाता है कि उनका विकास की गति कैसी है, अर्थात् विकासात्मक मानक के अनुसार किस उम्र पर किस क्रिया को करना प्रारम्भ किया अथवा अभी तक नहीं किया।

10.5.5 अनुकूलन व्यवहार आंकलन इस प्रकार का आंकलन दिन प्रतिदिन की क्रियाओं के संदर्भ में किया जाता है कि बच्चा जो क्रियाएँ (कौशल व्यवहार) जिस उम्र पर समाज के द्वारा अपेक्षित है उसको कर पा रहा है या नहीं।

10.6 विकासात्मक आंकलन (Developmental Assessment)

जैसा कि आप जानते हैं विकास एक निश्चित व विशेष प्रतिमान का अनुसरण करता है चाहे मनुष्य हो या जानवर सभी का विकास एक निश्चित प्रतिमान (Specific Pattern) के अनुसार होता है और पृथक्-पृथक् विकासात्मक कार्य के लिए एक अपेक्षित आयु निर्धारित रहती है। जब हम, एक व्यक्ति के विकास का अपेक्षित मानक डपसमेजवदमे के आधार पर तुलना करते हैं तभी हम निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होंगे जैसे क्या बच्चा का विकास सामान्य है या उसमें किसी प्रकार का विचलन है और यह विकासात्मक विचलन (Developmental Deviation) किसी एक क्षेत्र में है या संपूर्ण विकासात्मक क्षेत्रों में है इस बात का आंकलन बच्चा को स्वयं अवलोकित ((Observe) करके या उनके अभिभावकों के साक्षात्कार के द्वारा जाना जा सकता है। कुछ प्रमुख विकासात्मक मानक (Developmental Milestones) इस प्रकार हैं-

Normal Milestones of Development

S.No.	विकासात्मक मानक (Developmental Milestones)	जिस उम्र पर उपलब्ध करता है (Age of achievement)
1.	दूसरों को देखकर मुस्कराना	4 महीने
2.	गर्दन संभालना	4 महीने
3.	वस्तु को मुंह में ले जाना	4 महीने
4.	पटे के बल सरकना	6 महीने
5.	दा, दा, दा या अ ना बोलना	7 महीने
6.	बिना सहारे के बैठना	8 महीने
7.	नाम पर प्रतिक्रिया देना	10 महीने
8.	पकड़कर, सहारे से खड़ा होना	10 महीने
9.	अंगूठे व तर्जनी की सहायता से किसी वस्तु को पकड़ना	10 महीने
10.	बिना सहारे के खड़ा होना	10 महीने
11.	बिना सहारे के चलना	15 महीने
12.	अपना नाम बताना	18 महीने
13.	स्वयं ग्लास से पीना	21 महीने
14.	शरीर के अंगों के नाम बोलने पर दिखाना	24 महीने
15.	छोटे-छोटे वाक्य बोलना	30 महीने
16.	कपड़ों के बटन खोलना	36 महीने
17.	छोटे व बड़े में अंतर करना	36 महीने
18.	बटन बंद करना	40 महीने
19.	बालों में कंघी करना	48 महीने

(C) 1989 by National Institute for the Mentally Handicapped, Secunderabad.
Note Though it is a 25-item schedule only part of the schedule is reproduced here.

इस सची में कुल 25 पद हैं, यहां उसके एक भाग का पुनरूपादित किया गया है। इन विकासात्मक मानकों के आधार पर विकासात्मक कार्यों का विप्लेशन किया जाता है और देखा जाता है किसी एक या सभी विकासात्मक क्षेत्रों में कि विकासात्मक विलम्ब (Developmental Delay) दिखाई दे रहा है यदि विकासात्मक विलम्ब दो या दो से अधिक विकासात्मक क्षेत्रों में दिखायी दे रहा है तो यह बौद्धिक अक्षमता की आरे इंगत करता है।

10.6.1 विकासात्मक आंकलन का महत्व (Importance of Developmental Assessment)

पूर्व विद्यालयी अवस्था जन्म से लेकर 6 वर्ष तक की होती है इस आयु में बच्चे का आंकलन उसके विकासात्मक कार्यों के आधार पर ही किया जा सकता है यदि बच्चा विकासात्मक कार्यों को अपेक्षित आयु पर पूरा नहीं कर पाता है अर्थात् विकासात्मक विलम्ब दिखाई देता है तो इस स्थिति में बौद्धिक अक्षमता का अंदेश व्यक्त किया जा सकता है और यह केवल विकासात्मक आंकलन के द्वारा ही सम्भव है। इस प्रकार विकासात्मक आंकलन बौद्धिक अक्षमता की पहचान के लिए एक क्राइटेरिया प्रस्तुत करता है। हालांकि बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए बुद्धि परीक्षण किये जाते हैं परंतु पूर्व विद्यालयी अवस्था वाले छोटे बच्चों (तीन साल से कम आयु) तथा गम्भीर व अति गम्भीर बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के ऊपर किये गये बुद्धि परीक्षण के परिणाम सही नहीं निकल पाते हैं। किसी भी बुद्धि परीक्षण का करने के लिए व्यक्ति का निर्देशों को सही-सही समझना आवश्यक होता है किन्तु बौद्धिक क्षमता में कमी व छोटी आयु

के कारण बच्च निर्देशों का भलीभांति पालन करने में असमर्थ रहते हैं। अतः बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग इन पर करना सम्भव नहीं हो पाता है। इसके साथ ही इंद्रिय गामक (Sensory Motor) समप्रेक्षण में कमी (Communication Deficit) औपचारिक शिक्षण व प्रशिक्षण में कमी (Lack of Formal Training & Education) इत्यादि भी बुद्धि परीक्षण में हस्तक्षेप करता है। अतः इस स्थिति में विकासात्मक आंकलन ही उपयुक्त रहता है। जिस प्रकार स बुद्धिलब्धि ((Intelligence Quotient) निकाली जाती ठीक उसी प्रकार से विकासात्मक लब्धि (Developmental Quotient) निकाला जाता है और इसका प्रयोग बौद्धिक अक्षमता की

गम्भीरता (Severity of Mental Retardation) को निर्धारित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। विकासात्मक आंकलन को प्रयोग करने का एक कारण यह भी होता है कि इस हेतु किसी प्रकार के औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है और ना ही यह आंकलन किसी प्रकार के शिक्षण से प्रभावित होता है। आज के युग में विकासात्मक आंकलन इसलिये भी आवश्यक हो गया है क्योंकि बौद्धिक अक्षमता अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में विकासात्मक एव बौद्धिक अक्षमता के रूप में परिलक्षित हो रही है। हालांकि विकासात्मक आंकलन बौद्धिक परीक्षण का विकल्प नहीं है परंतु कम आयु के छोटे बच्चों व गंभीर, अतिगम्भीर बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए अतिउपयोगी भी है।

10.7 अनुकूल व्यवहार का आंकलन (Adaptive Behaviour Assessment)

अनुकूलन व्यवहार बौद्धिक अक्षमता के पहचान का एक मुख्य क्राइटेरिया है दूसरे शब्दों में अनुकूलन व्यवहार में कमी मानसिक मंदता की प्रमुख विशेषता है। व्यवहार एक जटिल क्रिया है, प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज या सामाजिक वातावरण के अनुकूल व्यवहार करने के लिए प्रायः बाध्य रहता है। इस प्रकार का व्यवहार समाज में दैनिक क्रिया का एक प्रमुख भाग हो जाता है तथा व्यक्ति का दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं के संदर्भ में समायोजित रखना पड़ता है इस ही अनुकूलन व्यवहार की संज्ञा दी गई है। अनुकूलन व्यवहार व्यक्ति की वह दैनिक कार्यकुशलता है जिससे वह अपने वातावरण की मांग के अनुसार स्वयं को ढाल पाता है या अनुकूलित कर पाता है। अमेरिकन एसोसियेशन आन मेंटल रिटार्डेशन (1977) ने अनुकूलन व्यवहार को निम्न रूप से परिभाषित किया है- “अनुकूलन व्यवहार व्यक्ति का वह व्यवहारिक कौशल है जिसके द्वारा वह प्रभावी ढंग से व्यक्तिगत स्वावलम्बन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को आयु और सांस्कारिक श्रेणी के अनुरूप निर्वहन कर पाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अनुकूलन व्यवहार उस व्यवहार को कह सकते हैं जिसमें व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ण स्वयं कर सके तथा आयु एव सामाजिक विकास के अनुरूप सामाजिक कौशल में निपुणता प्राप्त कर लें।”

अनुकूलन व्यवहार कुशलता (Adaptive Behaviour Skills)

अनुकूलन व्यवहार कुशलता व्यक्ति की वह अनुरूपित कुशलता है जिसके द्वारा वह समाज की स्वीकृत रीतियों के अनुरूप समुदाय में आत्मनिर्भर जीवन बिता सके। इसमें समस्त कुशलताओं व क्षमताओं का समावष्ा हो जाता है जो जीवन-काल में आवश्यक है जैसे- नहाने, धोने,

शौच आदि मूलभूत कुशलता से लेकर पैसा कमाने व उस सज्जों जैसी उच्च कोटि की कुशलता अन्य लोगों की अपेक्षा मानसिक मंद व्यक्तियों में अनुकूलन व्यवहार कुशलता का स्तर नीचा होता है। व्यक्ति के दैनिक जवून की अनुकूलन व्यवहार कुशलताये हैं। जैसे- दांत साफ करना, नहाना, कंघी करना, कपड़े पहनना, भोजन करना, परस्पर सम्बन्ध रखना, समूह कार्य, पढ़ना-लिखना, रूपये पैस का लेन-देन, कर व्यवस्था, स्वास्थ्य व सफाई का ध्यान तथा समुदाय में भागीदारी इत्यादि एक सामान्य बच्चा इन क्रियाओ को सुचारू रूप से कर लेता है इन क्रियाओ में दक्ष होने के लिए उस भौतिक मदद या नकल करने का अवसर प्राप्त होता है और धीरे-धीरे वह इन क्रियाओ को करने में निपुण हो जाता है और आवश्यकतानुसार अपन को ढाल लेता है। मानसिक मंदित व्यक्तियों में मानसिक विकास में विलम्ब व कमी के कारण इस प्रकार की क्रियाओ को सीखकर स्वावलम्बी बन पाने में देरी या कमी दिखने लगती है।

10.7.1 अनुकूलन व्यवहार आंकलन का महत्व (Importance of Adaptive Behaviour Assessment) वातावरण की आवश्यकता के अनुसार प्रतिदिन की क्रियाशीलता की विशेषता को अनुकूलन व्यवहार कहते हैं। किसी व्यक्ति के अनुकूलन की क्षमता उसकी बुद्धि पर आश्रित होती है। बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों की बुद्धि में कमी के कारण अनुकूलन व्यवहार क्षमता में कमी देखने को मिलती है यह कमी लगभग सभी प्रकार के क्षेत्रों जैसे दैनिक जीवन के क्रियाकलाप, पढ़ना लिखना, सामाजिक कौशल, व्यवसायिक कौशल इत्यादि में दृष्टिगोचर होती है। कभी-कभी कौशलों में कमी के कारण समस्या व्यवहार भी दिखाई देने लगते हैं। अनुकूलन व्यवहार का आंकलन व्यक्ति की वर्तमान कार्यक्षमता तथा कमियों, दोनों का पता लगाने के लिए किया जाता है।

अनुकूलन व्यवहार का आंकलन बौद्धिक अक्षमता व्यक्तियों की पहचान का एक क्राइटेरिया भी है इस आंकलन के द्वारा यह निश्चित किया जा सकता है कि क्या व्यक्ति में अनुकूलन व्यवहार औसत से कम है? यदि हाँ तो उसकी क्या मजबूतियाँ या कमियाँ हैं इस आधार पर पक्षपात रहित आंकलन अलग-अलग संस्कृति वाले व्यक्तियों पर आसानी से किया जा सकता है क्योंकि जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है अनुकूलन व्यवहार को व्यक्ति की आयु व संस्कृति प्रभावित करती है।

AAMR (Luckason et.Al., 1992) ने अनुकूलन व्यवहार के निम्नलिखित क्षेत्रों को बताया है-सम्प्रेषण (Communication) स्वयं की देखभाल (Self-Care), घर रहना (Home Living), सामाजिक कौशल (Social Skill), स्वदिशा प्रदान करना (Self-Direction), स्वास्थ्य एवं

सुरक्षा (Health & Safety), कार्यात्मक शिक्षण (Functional Academics), खाली समय एवं कार्य (Leisure and Work),

वर्तमान समय में AAIDD (American Association on Intellectual and Developmental Disabilities) ने अनुकूलन व्यवहार के अंतर्गत तीन प्रकार के कौशल क्षेत्रों के इकट्ठे होने की बात कही है साथ ही इन कौशल क्षेत्रों में अपेक्षित औसत से कम क्रियाशीलता का बताया है, जो कि बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के पहचान की एक विशेषता भी है। यह तीन प्रकार के कौशल इस प्रकार है।

➤ प्रत्यय कौशल (Conceptual Skills)

भाषा एवं साक्षरता (Language and Literacy), पैसा (Money), समय (Time), अंक (Number) एवं स्व निर्देशन (Self-Direction)।

➤ सामाजिक कौशल (Social Skills)

अतः व्यक्तिगत कौशल (Interpersonal Skills), सामाजिक दायित्व (Social Responsibility), सामाजिक समस्या समाधान (Social Problem Solving), नियम व कानून को पालन करने की क्षमता (Ability to follow rules/obey laws and to avoid being victimized व Victim) बनने से बचाव।

➤ प्रायोगिक कौशल (Practical Skills)

दैनिक जीवन के क्रियाकलाप (व्यक्तिगत देखभाल (Activities daily living) व्यवसायिक कौशल (Occupational Skills), स्वास्थ्य संबंधी देखभाल (Health Care), यातायात व यात्रा (Transportation/Travel), सुरक्षा (Safety), पैसा का उपयोग (Use of Money), टेलीफोन का प्रयोग (Use of Telephone),

यहां यह समझना आवश्यक है कि इन कौशलों में निपुणता एवं इनकी उपयोगिता आयु व संस्कृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरणस्वरूप सवंधी गामक कौशल विकास, संप्रेषण कौशल, स्वयं सहायता कौशल व सामाजिकरण की प्रक्रिया, शैशवावस्था तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था से प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार रोजमर्रा की जिन्दगी में शुरूआती पढ़ाई-लिखाई की प्रयोग, सामाजिक अंतः क्रिया, तर्क एवं निर्णय लेने के कौशल का प्रयोग, वातावरण का नियंत्रण करने का कौशल इत्यादि की क्षमता बाल्यावस्था व किशोरावस्था में आती है। इसका

बावजूद इन सभी प्रकार के कौशलो पर व्यक्ति की संस्कृति का प्रभाव पड़ता है और इसी आधार पर व्यक्तिगत अन्तर देखने को मिलते हैं।

अपनी प्रगति जांचे एक बच्चा जिसकी उम्र 05 वर्ष है अभी तक उसको किसी प्रकार का कोई शीघ्र आधार कार्यक्रम नहीं दिया गया है यह बच्चा आपके पास आंकलन हेतु भेजा गया है आप इस बच्चे का कौन-कौन सा आंकलन करेंगे और क्यों?

10.8 सारांश

आंकलन की प्रक्रिया में व्यक्ति से संबंधित विभिन्न आवश्यक सचूनाओं को विभिन्न प्रकार के माध्यमों से एकत्रित किया जाता है इस माध्यमों में साक्षात्कार जांच सची, अवलोकन इत्यादि शामिल है किसी भी भविष्यगत योजना का आधार आंकलन ही होता है। आंकलन का प्रकार उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है जो भी विशेषज्ञ आंकलन प्रक्रिया में शामिल होते हैं उन्हें यह जानना आवश्यक होता है कि आंकलन किस उद्देश्य की पूर्त हेतु किया जा रहा है इससे सही एवं अर्थपूर्ण सचूना एकत्रित करने में मदद मिलती है। बौद्धिक अक्षमता के निर्धारण हेतु विकासात्मक आंकलन, बौद्धिक आंकलन एवं अनुकूलन व्यवहार आंकलन आवश्यक है इस प्रकार के आंकलन को करने के लिए भारत में विभिन्न प्रकार के परीक्षण उपलब्ध है।

10.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Linn, R.L. and Grunlund, N.E. (2000) Measurement and assessment in teaching, New Jersey Prentice Hall
- Narayan, J. & Kutty, A.T. (2002) Hand book for trainers of the mentally retarded persons; Pre primary Level Curriculum package series 1. Secunderabad, NIMH

- National institute for the Mentally Handicaped (1989) Mental Retardation ; Manual for Psychologists Secunderabad: Author
- Overton, T. (2000), Assessment in special education: an applied approach. NewYork: Merill.
- Taylor, R.L. (1993) Assessment of exceptional students- educational and Psychological procedures. 3rd Edn. Bostan: Allyn & Bacon.
- Venn, J. (2000) Assesing students with special needs. New Jersey Prentice Hall, Inc.
- Wolfendale, S. (1993) Assesing special education needs. London: Cassell.
- Woolfolk, A. (2001) educational Psychology. 2nd Edition. Boston: Allyn & Bacon

इकाई- 11 पूर्व विद्यालयी अवस्था में प्रयुक्त आंकलन उपकरण

- 11 .1 प्रस्तावना
- 11 .2 उद्देश्य
- 11 .3 पूर्व विद्यालयी अवस्था में विकास
- 11 .4 विकासात्मक कार्य
 - 11 .4.1 गामक क्षेत्र
 - 11 .4.2 सम्प्रेषण क्षेत्र
 - 11 .4.3 संज्ञानात्मक क्षेत्र
 - 11 .4.4 सामाजिक क्षेत्र
 - 11 .4.5 अनुकूलन व्यवहार
- 11 .5 विकासात्मक आंकलन
- 11 .6 विकासात्मक आंकलन के क्षेत्र
- 11 .7 विकासात्मक आंकलन हेतु विभिन्न उपकरण
 - 11 .7.1 उपनयन
 - 11 .7.2 आरम्भ
 - 11 .7.3 पोर्टाज
 - 11 .7.4 एम.डी.पी.एस.
 - 11 .7.5 एफ.ए.सी.पी.
- 11 .8 सारांश
- 11 .9 कुछ उपयोगी पुस्तके

11 .1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने आंकलन की अवधारणा, आंकलन कैसे किया जाता है, इसके प्रकार, महत्व एवं उपयोगिता के बारे में जाना था साथ ही विकासात्मक एवं अनुकूलन व्यवहार के आंकलन के बारे

मे भी पढ़ा था जैसा कि आप अवगत है विकासात्मक आंकलन की आवश्यकता अधिकतर छोटी आयु के बच्चों (पूर्व विद्यालयी अवस्था-जन्म से 6 वर्ष) के लिए होती है क्योंकि इस अवस्था में सभी प्रकार के विकास काफी तेज गति से होते हैं चाहे वह शारीरिक विकास हो, बौद्धिक विकास, सामाजिक विकास या अन्य प्रकार का विकास। उनके विकास की गति या विकासात्मक कार्यों के आधार पर विकासात्मक विचलन का पता लगाया जा सकता है इसी प्रकार अनुकूलन व्यवहार में कमी के बारे में भी ज्ञात किया जा सकता है विकासात्मक आंकलन एवं अनुकूलन व्यवहार आंकलन हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरण उपलब्ध हैं। इन उपकरणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर उनका प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

11.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता

1. पूर्व विद्यालयी अवस्था में होने वाले विकास पर चर्चा करने में सक्षम होंगे।
2. पूर्व विद्यालयी अवस्था में विभिन्न विकासात्मक कार्यों पर चर्चा करने में सक्षम होंगे।
3. विकासात्मक आंकलन की व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
4. विकासात्मक आंकलन में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों की चर्चा करने में सक्षम होंगे।

11.3 पूर्व विद्यालयी अवस्था में विकास

पूर्व विद्यालयी जन्म से 6 वर्ष तक मानी जाती है इस समय पर बच्चे को स्कूल में प्रवेश की तैयारी करायी जाती है जैसा कि आपको ज्ञात है अक्षमता से ग्रस्त बच्चों को जितनी शीघ्रता से पहचानकर बहुविशेषज्ञ टीम द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्रों का आंकलन किया जाता है और इस आंकलन के आधार पर उसके लिए विस्तृत हस्तक्षेप योजना तैयार की जा सकती है विस्तृत आंकलन के अंतर्गत मुख्यतः निम्नलिखित क्षेत्रों का आंकलन किया जाता है-

गामक कौशल

भाषा एवं सम्प्रेषण कौशल

दैनिक जीवन के क्रियाकलाप

सामाजिक कौशल

संज्ञानात्मक इत्यादि

11.4 विकासात्मक कार्य

विकास एक निश्चित व विशेष प्रतिमान का अनुसरण करता है चाहे मनुष्य हो या जानवर सभी का विकास एक निश्चित प्रतिमान (Specific Pattern) के अनुसार होता है और प्रत्येक विकासात्मक कार्य के लिए एक निश्चित अपेक्षित आयु निर्धारित रहती है जब हम एक बच्च के विकास को अपेक्षित मानक (Milestones)के आधार पर तुलना करते है तभी हम विभिन्न विकासात्मक कार्यों का आकंलन विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों मे कर सकते है। प्रत्येक विकासात्मक अवधि मे कुछ ऐसे कार्य होते है जिनको उसी अवधि मे पूरा होना आवश्यक होता है। इसकी को सामाजिक अपेक्षा या विकासात्मक कार्य कहा जाता है। विकासात्मक कार्य के तीन प्रमुख उद्देश्य है-

- (1) यह अभिभावको तथा शिक्षकों के लिये एक गाइड लाइन प्रस्तुत करता है कि किस उम्र के बच्चो को क्या सिखाना चाहिये।
- (2) विकासात्मक कार्य इस बात के लिये भी प्रेरित करते हैं कि एक निश्चित आयु पर कौन से सामाजिक व सामूहिक कार्य बच्चों से करवाये जांये।
- (3) विकासात्मक कार्य अभिभावक तथा शिक्षक का यह भी बताता है कि बच्चो से उनकी आयु के अनुरूप वर्तमान मे तथा भविष्य मे किस प्रकार की अपेक्षा रखनी चाहिय और उन्हे परूा करने के लिये किस प्रकार बच्चों को तैयार करना चाहिये।

यदि विकासात्मक विलम्ब दो या दो स अधिक विकासात्मक क्षेत्रों मे दिखाई दे रहा है तो यह बौद्धिक अक्षमता की ओर इशारा करता है। विकासात्मक कार्य क्षेत्र इस प्रकार हो सकते है-

गामक क्षेत्र

सम्प्रेषण क्षेत्र

संज्ञानात्मक क्षेत्र

सामाजिक क्षेत्र

अनुकूलन व्यवहार

अपनी प्रगति जांचे

क- विकासात्मक कार्य क्या होते हैं?

ख- विकासात्मक कार्य की जानकारी अभिभावकों के लिए क्यों आवश्यक है?

11 .5 विकासात्मक आंकलन (Developmental Assessment)

विकासात्मक आंकलन के विषय में इकाई सं०-1 में विस्तृत रूप से वर्णित किया जा चुका है। इस इकाई में हम विकासात्मक आंकलन के क्षेत्रों पर प्रकाश डालेंगे।

11 .6 विकासात्मक आंकलन के क्षेत्र (Areas of Developmental Assessment)

आज के परिदृश्य में शीघ्र पहचान (Early identification) का महत्व दिया जा रहा है जितनी जल्दी अर्थात् कम आयु में बालक की अक्षमता का पहचाना जायेगा, उतना ही शीघ्र एवं प्रभावी उपचारात्मक कार्यक्रम उसके लिये बनाया जा सकता है। पूर्व-विद्यालयी अवस्था में बालकों हेतु उपलब्ध आंकलन के उपकरणों से इस आयु वर्ग हेतु उपयुक्त कौशलों का बालक के सर्वांग में जानकारी एकत्र की जा सकती है। इस सम्बन्ध में बालक के माता-पिता एवं उसके शिक्षक द्वारा किये जाने वाला अवलोकन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रायः देखने में आता है कि बौद्धिक अक्षमता वाले पूर्व विद्यालयी अवस्था के बच्चों में निम्नलिखित प्रमुख विकासात्मक क्षेत्रों में कमियां दृष्टिगोचर होती हैं।

1. शारीरिक विकास (Physical Development) - इस अवस्था में बच्चे का विकास काफी तीव्र गति से होता है उसके आंतरिक व बाह्य अंगों, हड्डियों व मांसपेशियों का विकास होता है उनमें थोड़ा कड़ापन भी आ जाता है।

11 . गामक विकास (Motor Development)- इसके अंतर्गत स्थूल गामक विकास (Gross Motor Development) एवं सूक्ष्म गामक विकास (Fine Motor Development) के बारे में जानकारी एकत्रित की जाती है एवं विभिन्न विकासात्मक विलम्ब (Developmental Delay) की जानकारी ली जाती है।

3. बौद्धिक विकास (Intellectual Development) - पूर्व विद्यालयी अवस्था में बच्चे का बौद्धिक विकास भी बहुत तीव्रता के साथ होता है। इस अवस्था में बच्चे की बौद्धिक विकास को विभिन्न विकासात्मक कार्यों (Developmental Task) के माध्यम से आंकलित किया जा सकता है।

4. भाषा एवं सम्प्रेषण विकास (Language & Communication Development)- पूर्व विद्यालयी अवस्था के अंत तक बच्च का भाषा विकास पूर्ण हो जाता है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में भाषा एवं सम्प्रेषण विकास में देरी दृष्टिगोचर होती है। अतः इस क्षेत्र का आंकलन भी आवश्यक है।

5. सामाजिक विकास (Social Development)- अन्य विकास क्षेत्रों की भांति बौद्धिक अक्षम बच्चों के सामाजिक विकास में भी देरी दिखायी देती है। इसका मुख्य कारण बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के साथ अवसरों की कमी भी है।

बौद्धिक क्रिया-

एक बच्च की उम्र 4 वर्ष है। उसने 1 वर्ष पर गर्दन सभ्ालना, 1.5 वर्ष पर बैठना, 2.5 वर्ष पर खड़े होना तथा 3.5 वर्ष पर चलना प्रारम्भ किया था अभी तक वह केवल पापा, मामा शब्दों का उच्चारण कर पाता है। आप के विचार से इस बच्चे को शीघ्र उपचार कराने हेतु किस प्रकार के आंकलन की आवश्यकता है और क्यों?

11 .7 विकासात्मक आंकलन हेतु विभिन्न उपकरण (Assessment Tools)

उपरोक्त प्रकार के वर्णित विकासात्मक कौशलों का आंकलन करने हेतु निम्नलिखित भारतीय परिदृष्य में उपलब्ध उपकरणों (जांच सूचियों) का प्रयोग किया जाता है।

11 .7.1 उपनयन (Upnayan)- उपनयन का निर्माण मधुरम नारायण सेंटर फॉर एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन, चैन्नई (Madhuram Narayanan Centre for Exceptional Children, Chennai) में किया गया है। यह एक व्यवस्थित, संरचित, विकासात्मक विलम्ब/बौद्धिक अक्षम बच्चों का प्रशिक्षण शीघ्र उपचारात्मक प्रशिक्षण देने के लिये बनाया गया है जिसको भारतीय सामाजिक आर्थिक स्थितियों एवं संस्कृति के अनुकूल बनाया गया है। यह बच्चों के लिए एक प्रशिक्षण टूल है। यह कार्यक्रम बच्चों के दो समूहों के लिए बनाया गया है-

(I) जन्म से 2 वर्ष

(II) 2 से 6 वर्ष

उपनयन पारिवारिक सदस्यों, जिसमें विशेषकर मां शामिल है साथ ही शिक्षक को बच्चे को प्रशिक्षण देने हेतु भी प्रशिक्षित किया जाता है। इस कार्यक्रम में एक जाँच तालिका, एक मैनुअल पग्नोजक, एक क्रियाओं के कार्ड्स का समूह तथा परीक्षण और प्रशिक्षण के लिए सामग्री होती है।

विषय-सच्ची जन्म से 2 वर्ष तक के बच्चों के लिये जाँच तालिका में पाँच विकास क्षेत्र सम्मिलित हैं जा गामक, स्व-सहायता/व्यक्तिगत, भाषा, बौद्धिक तथा समाजीकरण। प्रत्येक क्षेत्र में 50 आइटम तथा कुल 250 आइटम होते हैं। आइटम को सामान्य विकास के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। 02-06 वर्ष तक के बच्चों का आंकलन निम्नलिखित 12 क्षेत्रों के अन्तर्गत किया जाता है। स्थूल गामक, सूक्ष्म गामक, भोजन के समय की क्रियाएँ, कपड़ पहनना, सजना संवरना, शौच, भाषा का समझना, भाषा की अभिव्यक्ति, सामाजीकरण, पढ़ना, लिखना एवं अंक कार्य।

प्रारूप

एक क्षेत्र को दूसरे क्षेत्र से भेद करने के लिए रंगीन सकंतो वाले क्रियाओं वाले कार्ड होते हैं। मैनुअल में परीक्षण के दौरान प्रयुक्त सामग्री की तालिका होती है। सामान्य सचूनाएँ तथा परीक्षण आँकड़ों को आंतरालिक रूप से दर्ज करने के लिए रिकार्ड प्रारूप प्रदान किया गया है। अगर बच्चा एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उसे “A” दर्ज करते हैं तथा अगर निष्पादन नहीं करता है तो “B” दर्ज करते हैं। यह कार्यक्रम कम्प्यूटरीकृत है जिससे अभिभावकों को उपयुक्त कार्ड दिये जा सकते हैं जो बच्चे के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक होते हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य गृह आधारित, गृह प्रशिक्षण तथा केन्द्र आधारित हस्तक्षेप से है।

बौद्धिक कौशल क्षेत्र 32

उदाहरणस्वरूप- आयु 2-3 वर्ष

शीर्षक: छोटा और बड़ा अनुरोध करने पर इशारे से बताना।

क्या करे:

1. एक ही प्रकार की वस्तुओं के छोटे तथा बड़े प्रकार एकत्रित करें जैसे (बड़े तथा छोटे लिफाफे, पेंसिल, पत्थर, जूते, कोट, कुर्सियाँ, कारे, खाने वाली चीजें इत्यादि)
2. बड़ी तथा छोटी पेंसिलें बच्च के सामने रखें। उस बड़ी पेंसिल से किताब में निशान लगाने को कहें। सहायता मिलने पर प्रशंसा करें। क्रिया को दूसरी वस्तुओं से दोहरायें।
3. बच्चे से घर के चारों तरफ से बड़ी तथा छोटी वस्तु ढूँढ़ने को कहें।

4. एक सप्ताह के लिए अभिभावकों तथा शिक्षकों को बच्चों के लिए बड़ी तथा छोटी वस्तुओं के नाम लो। इसके बाद बच्चों से बड़ी तथा छोटी वस्तुओं की ओर संकेत कराना प्रारम्भ कराये।

5. गामक क्रियाएँ जैसे बड़े कदम, छोटे कदम, लम्बी कूद, बड़ी कुर्सी पर बैठना, छोटी कुर्सी पर बैठना।

11.7.2 आरम्भ (AARAMBH) - आरम्भ का विकास समेकित विद्यालय में बौद्धिक अक्षम बच्चों आसानी से सामंजस्य बैठाने के लिए पर्व विद्यालयी अवस्था में उनको पूर्णरूप से विद्यालय हेतु तैयार करने सम्बन्धी एक पैकेज प्रोग्राम है। इसका निर्माण वी.आर.पी. शैलजा राव तथा जयन्ती नारायण ने 2002 में NIEPID पूर्व में NIMH के द्वारा यूनीसेफ के सहयोग से किया गया था। अधिकतर यह देखा जाता है विशेष आवश्यकता वाले बच्चों संसाधन उपलब्ध होने पर भी समेकित विद्यालयों में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं। इस हेतु इन्होंने पर्व में ही तैयार करना आवश्यक है अध्ययन यह बताते हैं। प्रारम्भिक सीखना बाद के सीखने से ज्यादा प्रभावशाली होता है। आरम्भ के अंतर्गत पर्व विद्यालयी स्तर पर समेकित विद्यालय प्रक्रिया हेतु बच्चों को पूर्णरूप से तैयार करना होता है। इस पैकेज प्रोग्राम के अंतर्गत निम्नलिखित सामग्री शामिल है-

1. करीकुलम कैलेंडर (Curriculum Calendar)
2. टीचर मैनुअल (Teacher Manual)
3. पालिसी मेकर बुकलेट (Policy Maker Booklet)
4. एक्टिविटी कार्ड (Activity Cards)

1. करीकुलम कैलेंडर करीकुलम कैलेंडर यह स्पष्ट करता है कि मासिक क्रिया (Monthly Activity) के रूप में सिखाने के लिए कौन सी क्रियाएँ होंगी और उनका क्या उद्देश्य होगा?

2. टीचर मैनुअल यह शिक्षकों को कार्यक्रम योजना बनाने में मदद करता है ऐसी योजना जिसमें मौजूदा ढांचा व संसाधनों का भरपूर उपयोग किया जा सके।

3. पालिसी मेकर बुकलेट इसका अंतर्गत योजना बनाने वाले व्यक्तियों के लिए सूचना किताब (Information Booklet) को शामिल किया गया है ताकि समेकित विद्यालय का एक ऐसे मॉडल तैयार किया जा सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अधिकाधिक शामिल किया जा सके।

4. एक्टिविटी कार्ड्स इसमें 225 क्रिया वाले कार्डों को रखा गया है इसमें इस बात का ज्ञान शामिल किया गया है कि बच्चा अपन अभिभावको, पारिवारिक सदस्यों तथा समुदाय के साथ बातचीत कर सके। कार्ड क्रियाओं को करने की प्रक्रिया के बारे में बताती है कि कैसे बातचीत, खेल, गाना, कहानी सुनान, सृजनात्मकता द्वारा कौशल प्रदर्शन हेतु बच्चा को तैयार किया जा सकता है। अध्ययन यह बताते हैं कि इस (Scale) का प्रयोग भारत में पूर्व बाल्यावस्था विशेष शिक्षा के क्षेत्र में बहुतायत से किया जा रहा है।

11.7.3 पोर्टाज (Portage)

पोर्टाज गाइड भारत में स्कूल पूर्व बच्चों के लिए शीघ्र उद्दीपन यह भारतीय परिवेश में प्रचलित पोर्टाज एस.एम.प्लूमा, एम. सियरर, ए.एच. फ्रोहमैन तथा जीन एम. हिलियर्ड की पोर्टाज टू अर्ली एजुकेशन गाइड का हिन्दी अनुवाद है। CBR नेटवर्क द्वारा इस अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। यह CD के रूप में मिलती है। पोर्टाज गाइड मुख्यतः विकासात्मक समस्याओं वाले पूर्व स्कूल बच्चों के लिए एक शिक्षण तंत्र है। पोर्टाज प्रोजेक्ट एक गृह आधारित प्रशिक्षण तंत्र है जिसमें अभिभावक अपन बच्चों की शिक्षा में शीघ्र बालकावस्था, 06 वर्ष की आयु में परोक्ष रूप से सम्मिलित रहते हैं। प्रशिक्षण एक प्रशिक्षित शिक्षक दिया जाता है या विशेष प्रशिक्षण सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा दिया जाता है जिससे बच्चा के विकासात्मक पहलुओं पर अनुभव होता है, फिर भी गृह आधारित कार्यक्रम में मुख्य व्यक्ति अभिभावक/परिवार के सदस्य होते हैं।

इसका उपयोग पराविशेषज्ञों द्वारा जैसे आँगनबाड़ी, बालबाड़ी तथा गैर व्यावसायिक जैसे अभिभावक, भाई-बहन, व्यावसायिक जैसे पूर्व स्कूल शिक्षक, मनोवैज्ञानिक तथा चिकित्सकों द्वारा किया जा सकता है।

विषय-सची

पोर्टाज जाँच तालिका में जैसे शिशु उद्दीपन, स्व सहायता, गामक, बौद्धिक भाषा तथा समाजीकरण सम्मिलित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में क्रियायें क्रम से आयु के अनुसार अंकित होती हैं। जाँच तालिका के अतिरिक्त प्रत्येक कौशल के लिए किनारे पर आयु मानदण्ड उपलब्ध कराती है जो प्रशिक्षक का बच्चा की क्रियान्वयन आयु का गणन करने में सहायता करती है।

प्रारूप

पहला कदम सभी क्षेत्रों में दिये गये कौशल को द्वारा जाँच करना तथा विद्यार्थी को दी गयी जग पर प्रवेश व्यवहार प्रत्येक कौशल के सामने में दर्ज करना है। उपलब्धि दर्ज करने तथा टिप्पणियाँ लिखन का भी

प्रावधान है। अलग स क्रियाओ (क्रिया चार्ट) की उपलब्धि तथा लक्ष्यों को दर्ज करने का प्रावधान किया गया है कि प्रारूप दैनिक तथा साप्ताहिक प्रगति का अंकन समाहित करती हैं जिससे बहुत ही नजदीक से जाँच होती है।

11.7.4 मद्रास डेवलपमेंटल प्रागेरामिंग सिस्टम (MDPS)- मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम एक गैर मानित स्केल है जिसका प्रयोग मन्द बुद्धि व्यक्तियों के परीक्षण तथा कार्य योजना तैयार करने में होता है। (MDPS) को सर्वप्रथम प्रो० जयचंद्रन तथा विमला व्यास ने 1982 में विजय हयूमन सर्विस चेन्नई में विकसित किया था अब तक इसमें कई संशोधन किये जा चुके हैं।

विषय सूची इसमें 360 आइटम है जिनको 18 क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम हैं। ये हैं गामक कौशल (स्थूल तथा उत्कृष्ट गामक), व्यक्तिगत कौशल (भोजन करना, कपडे पहनना, सजना सँवरना, शौचक्रिया), सप्रेषण कौशल (ग्रहणशील, अभिव्यक्ति), सामाजिक संपर्क, कार्यात्मक शैक्षणिक कौशल (पठन, लेखन, संख्या, समय, पैसा), घरलू व्यवहार, सामुदायिक ससर्ग, मनोरंजन क्रियाएँ तथा व्यावसायिक क्रियाएँ। प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम हैं। आइटम विकासात्मक रूप से क्रमबद्ध हैं। क्रियाएँ इस प्रकार क्रमबद्ध हैं कि आसान क्रियाएँ पहले तथा जटिल क्रियाएँ बाद में दर्शायी गयी हैं। आइटम को सकारात्मक वक्तव्यों में लिखा गया है जो अवलोकन तथा मापन योग्य है। दर्शाये गये आइटम कार्यात्मक क्रियाएँ हैं जो सामान्यतः व्यक्ति के जीवन में प्रतिदिन घटित होती हैं।

प्रारूप

एक प्रारूप होता है जिसमें बच्चे के निष्पादन का अन्तरालिक अंकन होता (1 तिमाही, 2 तिमाही या तिमाही) तथा इस परिवार को तथा अन्य को बताया जा सकता है जा विद्यार्थी की शिक्षा से जुड़े हुये हैं। परीक्षण पर अगर विद्यार्थी क्रिया का निष्पादन करता है तो इसको “A” अंकित करते हैं और यदि क्रिया का निष्पादन नहीं करता है तो इसको “B” अंकित करते हैं। स्केल में रंगीन कोड भरने की व्यवस्था भी है जिसमें “A” को नीला तथा “B” को लाल से भरते हैं। प्रत्येक तिमाही में प्रगति के आधार पर लाल को नीले रंग से ढँका जा सकता है। टूल में एक मेनुअल है जा समूहीकरण तथा कार्यक्रम बनाने में सहायक होता है। यह विशेष शिक्षक के लिए अन्तरालिक परीक्षण तथा IEP कार्य योजना के लिए लाभप्रद है।

एम०डी०पी०एस० की विशेषतायें

- निरीक्षणीय एवं मापनीय शब्दों में लिखित

- अलग निर्मित 18 क्षेत्र जो बच्चे का वर्तमान स्तर निर्धारित करने में वस्तुनिष्ठता प्रदान करते हैं।
- सभी आइटम सकारात्मक आंकलन करने के लिए सकारात्मक भाषा में लिखे गये हैं अर्थात् सभी आइटम में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि बच्चा क्या और किस कठिनाई स्तर तक करता है। बच्चा क्या नहीं कर सकता, इसकी चर्चा नहीं की गई है।
- प्रत्येक क्षेत्र में समान संख्या में आइटम रखे गये हैं।
- सभी आइटम सरलता से कठिन के क्रम में सजाये गये हैं।
- वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित अंकन प्रणाली जो बच्च के क्रमिक विकास का सरल वर्णन करता है।

एम.डी.पी.एस. की सीमायें

- यह टूल काफी पुराना हो चुका है, परन्तु इसमें समयानुकूल परिवर्तन नहीं आये हैं।
- टूल की अंकन पद्धति सीमित है जो हां या ना पर आधारित है।

उदाहरणस्वरूप भोजनकाल की क्रियाएँ

1. मुलायम खाने को जिसको चबाने की आवश्यकता नहीं होती निगलता है।
2. बिना गिराए पीता है, सहायता से कप या गिलास से पीता है।
3. आवश्यक खाद्य-सामग्री मुँह से काटता है।
4. खाने तथा न खाने वाले पदार्थों में भेद करता है।
5. अँगुलियों से सूखे खाने के टुकड़ों (बिस्कुट) को पकड़ता है तथा खाने को मुँह में रखता है।
6. ठोस खाने को चबाता है।
7. भरे गिलास को पकड़ता है तथा बिना गिराए पीता है।
8. खाना पकड़ने तथा मिलाने के लिए चम्मच/हाथ का प्रयोग करता है।
9. खाना मिलाता है तथा थोड़ा गिराये या बगैर गिराये खाता है।

10. अनाजो से तैयार खाना खाता है जैसे इडली, डोसा, पड़ी, रोटी (निवाले बनाने में उँगली प्रयोग करता है)
11. सार्वजनिक स्थानों पर खाने के व्यवहारों में बिना ध्यान खींचे खाता है।
12. दलिया, पायसम, आइसक्रीम थोड़ा गिराये या बगैर गिराये खाता है।
13. सभी सामान्य खाने के औजारो का प्रयोग करके पूर्ण खाना थोड़ा गिराये या बिना गिराये खाता है।
14. खाने के बाद प्लेट को कूड़ेदान में खाली करके धोता है।
15. जब खाना दिया जाता है तो उचित मात्रा लेता है।
16. खाते समय विनम्रता से खाने का इन्तजार करता है तथा दूसरों के समाप्त करने तक इन्तजार करता है।
17. आवश्यक व्यवस्था करता है तथा पारिवारिक माहौल में भोजन परोसता है।
18. सार्वजनिक स्थल में पीने के पानी की पहचान करके पीता है।
19. जब खाने के विभिन्न प्रकार के आइटम हो तो वह आवश्यक खाने का चुनाव करता है।
20. सार्वजनिक खाने की जगह में वह मँगाकर खाना खाता है।

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

मद्रास डेवेलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम त्रैमासिक कार्यक्रम याजेना प्रारूप व्यक्तिगत कार्यक्रम योजना

जाँच त्रैमासिक-I

जाँच त्रैमासिक-II

जाँच त्रैमासिक- III

जाँच त्रैमासिक- IV

नाम :

स्कूल :

तारीख :

किसके द्वारा पूर्ण किया गया :

लक्ष्य वक्तव्य :

वर्तमान क्रियात्मक स्तर :

व्यावहारिक उद्देश्य अवस्था :

प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला व्यक्ति :

प्रशिक्षण तिथि :

पूर्वावलोकन की तिथि :

अपेक्षित निष्पादन का स्तर :

समय सीमा :

उत्तरदायी कर्मचारी :

समूह बनाने की तारीख :

पुनरीक्षण की तारीख :

11.7.5 फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फार प्रोग्रामिंग (FACP)- फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फार प्रोग्रामिंग क्रियाओ पर आधारित एक जाँच तालिका है जो बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के परीक्षण तथा कार्यक्रम बनाने में प्रयुक्त होती है। इसका निर्माण वी.मायरेड्डी तथा जयन्ती नारायण ने वर्ष 2004 में एन. आई.ई.पी.आई.डी. पूर्व में एन.आई.एम.एच. में किया था। इस चेकलिस्ट को 3-18 वर्ष तक के बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों की योग्यता और उनकी आयु दोनों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। जाँच तालिका में दी गयी क्रियाएँ समझने में आसान होती हैं, रोजमर्रा के जीवन से सम्बन्धित होती हैं तथा समुदाय में आत्मनिर्भर बनने में सहायक होती हैं साथ ही बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों की क्षमता और उनकी उम्र के अनुसार उपयुक्त कक्षा के चयन में भी सहायक होती हैं।

विद्यार्थियों का समूहीकरण

जाँच तालिका में विभिन्न समूहों के लिए विषय सची आती है जिनके नाम पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक-I, प्राथमिक-II, माध्यमिक, पूर्व व्यावसायिक-I, पूर्वव्यावसायिक-II तथा संरक्षित समूह। समूहीकरण योग्यता तथा आयु के आधार पर किया जाता है। 'शून्य बहिष्करण' (Zero Rejection Policy) के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुये 3-18 वर्षों की आयु में स्कूल की आयु के सभी स्तर के बौद्धिक अक्षम बच्चों के लिए समूह बनाए गये हैं।

पूर्व प्राथमिक

इसमें 3-6 वर्ष आयु के बच्च आते हैं। विषय सची में व्यक्तिगत, सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र की क्रियाएँ आती हैं।

प्राथमिक-I

वे विद्यार्थी जो पूर्व प्राथमिक जाँच तालिका में 80% प्राप्त कर लेते हैं उनको प्राथमिक-I स्तर में कक्षोन्नति दी जाती है। जो विद्यार्थी इस स्तर में आते हैं उनकी आयु लगभग 7 वर्ष होती है। कुछ विद्यार्थी पास होने का मापदण्ड प्राप्त करने के लिए एक वर्ष और इस स्तर में रह सकते हैं। जैसे एक विद्यार्थी जो 7 वर्ष का है प्राथमिक जाँच तालिका में मूल्यांकन करने पर 60% की उपलब्धि करता है वह उसी कक्षा में अधिक समय के लिए रह सकता है तथा देखे कि वह पास होने वाला मानदण्ड 80% प्राप्त करता है कि नहीं।

प्राथमिक-II

वे विद्यार्थी जो 8 वर्ष की आयु के बाद भी प्राथमिक स्तर की जाँच तालिका में 80% प्राप्त नहीं करते, उनको प्राथमिक-II में विस्थापित कर दिया जाता है। संभवतः ये बच्चे अल्प कार्यात्मक योग्यता वाले होते हैं। इस समूह के लिए शैक्षणिक विषय सची न के बराबर होती है। इस समूह में 8-14 आयु

वर्ष के बच्च आते हैं तथा इनको माध्यमिक स्तर में कक्षोन्नति दी जा सकती है अगर व 14 वर्ष स पहले 80%प्राप्त कर पाते हैं। अगर 15 वर्ष की आयु मे वे 80% से कम हासिल करते हैं तब उन्हें पूर्व व्यावसायिक- II मे विस्थापित किया जाता है।

माध्यमिक समूह

इस समूह मे 11-14 आयु वर्ष के बच्च आते हैं। यह मिश्रित समूह है (जिसमे प्राथमिक- प् तथा प्प दोनो के बच्च आते हैं) कक्षा मे 80% उपलब्धि प्राप्त करने पर विद्यार्थी को पूर्व व्यावसायिक- I मे कक्षोन्नति दी जाती है तथा जा बच्चे 80% स कम हासिल करते हैं उन्हें पूर्व व्यावसायिक- प्प में विस्थापित कर दिये जाते हैं।

पूर्व व्यावसायिक I तथा II

I तथा II दोनो ही समूहो मे विद्यार्थी की आयु 15-18 वर्ष के बीच होती है। प्रशिक्षण का केन्द्र बिन्दु विद्यार्थियो को मूलभूत कार्य कौशलो तथा घरले कार्यों में प्रशिक्षित करना है। इस प्रकार जाँच तालिका मे आने वाले मुख्य विषय व्यावसायिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र हैं। फिर भी शैक्षणिक क्षेत्र के अन्तर्गत विषय नगण्य होंगे या आवश्यकतानुसार पूर्व व्यावसायिक-II समूह के विद्यार्थियो के लिए होंगे।

18 वर्ष आयु के ऊपर के मन्द बुद्धि व्यक्तियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण इकाइयो मे उनकी सकलित मूल्यांकन रिपोर्ट के साथ आगे की कार्यक्रम योजना के लिए भेज दिया जाएगा। इस पाठ्यक्रम मे जाँच तालिका मे व्यावसायिक क्षेत्र सम्मिलित नहीं हैं।

संरक्षित समूह

इस समूह मे बहुत ही अल्प योग्यता वाले बच्चे आते हैं (बिस्तर पर पडे रहने वाले अति गंभीर विकलांग) तथा जाँच तालिका के विषय, मूलभूत कौशल जैस पानी पीना, खाना खाना, शौच तथा मूलभूत गामक गतियाँ और संप्रेषण में प्रशिक्षण आंशिक रूप से निष्पादन में ध्यान केंद्रित करते हैं। अगर वे असंचरित बने रहते हैं तो आयु बढ़ने के साथ-साथ अभिभावक/संरक्षक को बच्च को स्कूल में लाना कठिन हो सकता है। ऐसे मे साथ-साथ सीखे गये कौशलो को बनाए रखने के लिए संरक्षक का तैयार करना आवश्यक हो जाता है। यह अच्छा है कि इस समूह के बच्चों को पूर्व व्यावसायिक कक्षा स प्रारम्भ करके प्रत्येक कक्षा मे बाँट देना चाहिए। इससे उनको उद्दीपित वातावरण मिलेगा। फिर भी इन्हें संरक्षित समूह की जाँच तालिका द्वारा परीक्षण किया जाना चाहिए वह चाहे जिस भी समूह में विस्थापित हो ।

विषय-सची

प्रत्येक जाँच तालिका में विषय मुख्य क्षेत्रों में, जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षणिक, पूर्व व्यावसायिक तथा मनोरंजन में होते हैं। विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों तथा पर्यावरणीय माहौल में आते हैं अतः प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को जोड़ने तथा हटाने का प्रावधान होता है।

प्रारूप

प्रारूप इस प्रकार से तैयार किया गया है कि कार्यक्रम तैयार करने वाला परीक्षण सचूनाएँ (प्रवेश स्तर) तथा प्रगति का अन्तरालिक (प्रत्येक त्रैमासिक) लगभग 3 वर्ष के लिए दर्ज कर सकता है। माना जाता है कि एक दिये गये स्तर पर बच्चा अधिक से अधिक 3 वर्ष तक ठहर सकता है। अंत में मूल्यांकन के बाद सभी क्षेत्रों में दी गयी तालिका में बच्चे की प्रगति अन्तरालिक रूप में दर्ज कर सकते हैं। जो प्रगति रिपोर्ट में परोक्ष रूप से स्थानान्तरिक हो सकती है। वह भी FACP का भाग है। जाँच तालिका में विद्यार्थी के निष्पादन को रिकार्ड करने का प्रावधान 3 वर्ष तक होता है। अगर एक विद्यार्थी एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उस + अंकित किया जाता है, अगर नहीं करता है तो '-' अंकित किया जाता है। फिर भी विद्यार्थी के वर्तमान स्तर के परीक्षण में सहायता प्रोत्साहन के रूप में दी जाती है। दृश्य प्रोत्साहन, सांकेतिक प्रोत्साहन, माडलिंग, शारीरिक प्रोत्साहन, परीक्षण के दौरान यह देखा जा सकता है कि बच्चा किस प्रोत्साहन से निष्पादन करता है। अगर वह सांकेतिक प्रोत्साहन से एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उस क्रिया के सामने GP अंकित किया जाता है। आइटम जिनमें 'यस' या (+) अंकित होते हैं उन्हें एक अंक के रूप में गिना जाता है जबकि अन्य को जैसे PP, VP, NE को अंकित तो किया जाता है पर अंक नहीं जोड़ जाते। अन्ततोगत्वा इसका उद्देश्य दिये गये क्रिया क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना होता है जिन क्रियाओं में बच्चा स्वतंत्र रूप से निष्पादन करता है या कभी-कभी इशारे करने पर करता है ऐसे आइटम्स को परिमाणित करने के लिए विचार किया जा सकता है। ऐसे विषय जिनमें NA अंकित होता है प्रतिशत की गणना करते समय सीखे जाने वाले कुल विषयों से हटा दिये जाते हैं। इसी प्रकार अतिरिक्त विशिष्ट विषयों को प्रतिशत का गणन करने के लिए सम्मिलित किया जाना चाहिए। जाँच तालिका में 80% उपलब्धि एक स्तर से दूसरे में पदोन्नति के लिए विचारणीय होगी। उदाहरण के लिए बच्चे, जो पूर्व प्राथमिक जाँच तालिका में 80% प्राप्त करेंगे उन्हें प्राथमिक स्तर में पदोन्नति कर देंगे। यहाँ पर फिर भी सावधान किया जाता है कि खराब शिक्षण के कारण बच्चे की प्रगति में कमी या सीखने की अयोग्यता नहीं होना चाहिए। मनोरंजन के अन्तर्गत दिये गये विषयों को परिमाणन के लिए नहीं गिना जाना चाहिए क्योंकि ये विषय रूचिपरक हैं। दी जाने वाली श्रेणियों में A रूचि लेता है तथा प्रभावशाली ढंग में भाग लेता है। B भाग लेता है जब दूसरे प्रारम्भ करते हैं। C स्वतः को सम्मिलित करता है लेकिन उसे नियम मालूम नहीं है। D रूचि से अवलोकन करता है। E उदासीन रहता है। NE का ये अवसर पहले नहीं मिला। जैसा नीचे बताया गया मनोरंजक क्रियाओं का बच्चे के साथ सलग्न होने का वर्णन करती हैं। ऐसे प्रासांक सामान्य

स्कूलों के तंत्रों के समानान्तर होते हैं। आखिरी पजे पर संकलित प्राप्तांक वह श्रेणी हो सकती है जिसे मनोरंजन के विषयों के जाँच सबसे अधिक श्रेणी मिलती है। अगर एक स अधिक श्रेणियों को बराबर प्राप्तांक मिलते हैं तो शिक्षक को अपन विवेक का प्रयोग करके निर्णय लेना पड़ता है।

प्रगति रिपोर्टें लेखन

अन्तरालिक मूल्यांकन आँकड़ तथा अंकित करने की सुविधा के प्रावधान के अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा की गयी प्रगति की अंकन का प्रावधान भी होता है। यह टूल व्यापक है तथा शिक्षकों के प्रयोग के लिए आसान है जैसे इसमें अन्तरालिक जाँच सुविधा तथा संक्षिप्त कार्यक्रम तैयार करने के लिए लेखन हेतु आसान प्रारूप होता है।

FACP की विशेषतायें

- कार्यात्मक उपागम पर आधारित
- नये व्यवहारों के अंकन का प्रावधान
- सामान्यीकरण सिद्धान्त
- कक्षा नियोजन के स्पष्ट विकल्प का प्रावधान
- मानकीकृत (Standardized)
- अंकन प्रारूप उपलब्ध

FACP की सीमायें

- नये आइटम जोड़ने की सुविधा फलतः आंकलन विश्वसनीयता और वैधता प्रभावित हो सकती है।
- छात्र की प्रगति का रिकार्ड रखने हेतु विशेषज्ञ की आवश्यकता, अनावश्यक पपेर कार्य
- विशेष शिक्षा का विकल्प, समावेशी शिक्षा का नहीं लम्बे समय से पुनरावृत्ति नहीं।
- समस्यात्मक व्यवहार के लिए कोई क्षेत्र नहीं।

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

क्रम सं	क्रियाएं व्यक्तिगत	प्रथम वर्ष प्रवेश स्तर	I स्तर	II स्तर	III स्तर	द्वितीय वर्ष प्रवेश स्तर	I स्तर	II स्तर	III स्तर	तृतीय वर्ष प्रवेश स्तर	I स्तर	II स्तर	III स्तर
1.	ठोस भोजन जब मुँह में रखा जाता है तो चबाता है और निगलता है।												
2.	पानी/दूध/जूस के गिलास या कप को पकड़ता है और पीता है।												
3.	जब खाना मिलाकर दिया जाता है उँगलियों से अपने आप खाता है।												
4.	पार्टी पर बैठता है और बैठकर पेशाब या पाखाना करता है।												
5.	मौखिक रूप से इंगित करता है या शौचालय जाने के लिए इशार से बताता है।												
6.	शौचालय प्रयोग के लिए नीचे के कपड़े उतारता है।												
7.	या तो उँगलियों से या ब्रश से पेस्ट												

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

	या पाउडर लेकर दाँतों को साफ करता है।												
8.	जब स्नान करते समय सहयोग करता है जब कहा जाए हाथ/पैर बढ़ाता है।												
9.	जब बटन खोल दिये जाएँ कपड़ों को उतारता है (जिसमें अंदर के कपड़े सम्मिलित हैं)												
10.	नीचे के कपड़ों को पहनता है												
11.	रूमाल से नाक साफ करता है।												
12.	खाना खाने से पहले या शौचालय जाने के बाद या जब हाथ गन्दे हो धोता है।												
13.	नहान के बाद तौलिये से सूखाता है।												
14.	सतरंग, केला खाने से पहले छीलता है।												
15.	सहायक खाने को उचित प्रकार से खाता है जैसे ब्रेड में जेम, चपाती और इडली चटनी।												

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

16.	खाना मिलाता है तथा बगैर गिराये खाता है।													
17.	हाथ और मुँह धोने के बाद तौलिए से सुखाता है।													
18.	चप्पले पहनता है।													
19.	बगैर फीते/बकल के जूते पहनता है।													

कुंजी: + है सही C= कभी-कभी इशारे, NA= छात्र आवश्यक नहीं NE= अवसर नहीं दिया गया, PP= शारीरिक सहायता, VP= मौखिक सहायता GP= सांकेतिक सहायता, M= माडल का प्रयोग, - = नहीं, अन्य किसी कोड का प्रयोग करे तो उसे लिखें।

निष्पादन स्तर

कुल उत्तीर्ण क्रियाएं

क्रमांक	क्षेत्र/क्रियाएं	क्रियाओं की संख्या	प्रथम वर्ष प्रवेश स्तर (%)	I सत्र (%)	II सत्र (%)	III सत्र (%)	द्वितीय वर्ष प्रवेश स्तर (%)	I सत्र (%)	II सत्र (%)	III सत्र (%)	तृतीय वर्ष प्रवेश स्तर (%)	I सत्र (%)	II सत्र (%)	III सत्र (%)
1	व्यक्तिगत													
2	समाजिक													
3	शैक्षणिक													
4	व्यावसायिक													
	योग													
	श्रेणी मनोरंजन													

ध्यान दें मनोरंजन में श्रेणियों को गिनकर योग किया जाता है तथा जो श्रेणी सबसे अधिक होती है उसको श्रेणी मान लिया जाता है। एक से अधिक श्रेणी आने पर उसी योग को माना जाता है। शिक्षक श्रेणी देने में अपने विवेक का प्रयोग कर सकता है।

क्रिया

0-6 वर्ष की आयु के बीच दो बच्चों का चुनाव करें तथा आरम्भ एवं उपनयन के द्वारा विकासात्मक आंकलन करें एवं रिपोर्ट बनायें।

11.8 सारांश

जन्म से 06 वर्ष की अवस्था जिसे पूर्व विद्यालयी अवस्था कहा जाता है यह अवस्था बहुत ही जटिल अवस्था होती है क्योंकि इस अवस्था में सभी प्रकार के विकास की गति बहुत तीव्र होती है। आगे के विकास का आधार स्तम्भ यह पूर्व विद्यालयी अवस्था का विकास होता है। आगे बच्चे का विकास किस प्रकार का होगा यह इसी समय पर निर्धारित हो जाता है क्योंकि प्रारम्भ का विकास बाद के विकास से ज्यादा जटिल होता है। इस अवस्था में विकासात्मक कार्यों के आधार पर उसके विकास का आंकलन किया जाता है यह आंकलन विभिन्न क्षेत्रों जैसे- गामक, सम्प्रेषण, सामाजिक इत्यादि क्षेत्रों में किया जाता है और इस आधार पर उसके लिए शीघ्र उपचार योजना बनायी जाती है। विकासात्मक आंकलन करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण मौजूद हैं जिनका प्रयोग उद्देश्य के आधार पर किया जाता है।

11.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Jeyachandran, P. & Vimala, V. (1975) Madras Developmental Programming System. Chennai: Vijay Human services.

- Kohli, T. (1987). Portage Basic Training Course for Stimulation of Preschool Children in India. UNICEF sponsored project. New Delhi: Author.

- Myreddi, V. Narayan, J., Saleem, S., Sumalini, K. & Padma, V. (2004)
Functional Assesment Checklist for Programming for persons with
profound) Mental Retardation Secunderabad, NIMH

- Narayan, J. Myreddi, V. Rao, V.R.P.S., & Rajgopal, P. (1994)
Functional Assesment Checklist for Programming. Secunderabad,
NIMH

- Rao, V.R.P.S & Narayan J.(2002) Aarambh- training Package for Early
Childhood special Education (An Inclusive Model) Secunderabad,
NIMH

- Upnayan, Early-intervention programme for the training of children
with developmental delays and/or mental retardation. Madhuram
Narayan Centre. <http://www.mncindia.org/tt-upanayan.html>.

इकाई-12 विद्यालयी अवस्था में प्रयुक्त आंकलन उपकरण

- 12 .1 प्रस्तावना
- 12 .2 उद्देश्य
- 12 .3 विद्यालय स्तर पर विकास
- 12 .4 विद्यालयी अवस्था में आंकलन
 - 12 .4.1 बौद्धिक परीक्षण
 - 12 .4.2 अनुकूलन व्यवहार आंकलन
 - 12 .4.3 शैक्षणिक आंकलन
 - 12 .4.4 समस्या व्यवहार आंकलन
 - 12 .4.5 आवश्यकता आधारित आंकलन
- 12 .5 बौद्धिक परीक्षणों के प्रकार
 - 12 .6 अनुकूलन व्यवहार आंकलन
 - 12 .7 अनुकूलन व्यवहार आंकलन हेतु उपकरण
 - 12 .7.1 एम०डी०पी०एस०
 - 12 .7.2 बेसिक एम०आर०
 - 12 .7.3 गलैड
 - 12 .7.4 सपोर्ट इंटेनसिटी स्केल
 - 12 .8 क्रियायें
 - 12 .9 सारांश
 - 12 .10 उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने पूर्व विद्यालयी स्तर क्या होता है इस अवस्था में मुख्यतः किन विकासात्मक क्षेत्रों का आंकलन किया जाता है और विकासात्मक आंकलन में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों के विषय में जानकारी प्राप्त करी। प्रस्तुत इकाई में विद्यालयी अवस्था जो कि 6-15 वर्ष की मानी जाती है इस अवस्था में बच्चे को विद्यालय में दाखिला करवाया जाता है इसके लिए विशेष विद्यालय व समेकित विद्यालय उपलब्ध है समेकित विद्यालय जहां सामान्य व विशेष दोनों ही प्रकार के बच्चे एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं ऐसे विद्यालयों में प्रवेश हेतु तैयारी पूर्व विद्यालयी अवस्था में करवायी जाती है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालयी अवस्था की सफलता पूर्व विद्यालयी अवस्था पर निर्भर करती है इस अवस्था में विकासात्मक के साथ-साथ अनुकूलन व्यवहार आंकलन प्रमुख होता है अतः इस अवस्था में अनुकूलन व्यवहार आंकलन हेतु कौन से उपकरण उपलब्ध है और इनको कैसे प्रयोग में लाया जा सकता है इस विषय में हम प्रस्तुत इकाई में चर्चा करेंगे।

12.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात अभिगमकर्ता-

1. विद्यालय स्तर पर विकास के क्षेत्रों की चर्चा करने में सक्षम होंगे।
 2. विद्यालय स्तर पर आंकलन के बारे में चर्चा करने में सक्षम होंगे।
 3. स्कूल स्तर पर अनुकूलन व्यवहार का आंकलन करने हेतु उपलब्ध उपकरणों की व्याख्या करने व उपयोग करने में सक्षम होंगे।
-

12.3 विद्यालय स्तर पर विकास

इस अवस्था में आने वाले बच्चों की आयु 6-15 वर्ष के मध्य होती है इस समय इन बच्चों को स्कूल में प्रवेश कराया जाता है प्रायः देखने में आता है कि बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यालयी अवस्था के बच्चों में निम्नलिखित प्रमुख विकासात्मक क्षेत्रों में कमियां दृष्टिगोचर होती है।

- सज्ञनात्मक विकास ; (Cognitive Development)
- भाषा एव सम्प्रेषण विकास (Language & Communication Development)
- समाजिक विकास (Social Development)
- व्यक्तित्व विकास (Personality Development)
- नैतिक विकास (Moral Development)
- खेल का विकास (Play Development)

विद्यालयी अवस्था की प्रमुख विशेषतायें

- शारीरिक व मानसिक स्थिरता
- व्यक्तित्व का विकास
- नैतिक गुणों का विकास
- जिज्ञासा में वृद्धि
- मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
- सामूहिक खेलों में रूचि
- रूचियों में परिवर्तन

12.4 विद्यालयी अवस्था में आकंलन (Assessment at School Stage)

जैसा कि आपको ज्ञात है इस अवस्था में आने वाले बच्चों की आयु 6-15 वर्ष के मध्य होती है इस समय इन बच्चों को स्कूल में प्रवेश कराया जाता है अतः स्कूल में प्रवेश के

दौरान न केवल विकलांगता से संबंधित परीक्षण वरन् अन्य प्रकार के परीक्षणों की भी आवश्यकता होती है ताकि इन बच्चों को सामान्य विद्यालयों में आसानी से समावेशित किया जा सके। इसके लिए निम्नलिखित परीक्षणों की आवश्यकता होती है-

12 .4.1 बौद्धिक परीक्षण ((Intelligence Assessment)-इस प्रकार की सचूना बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए आवश्यक है यह एक मनोवैज्ञानिक आंकलन होता है इसके आधार पर व्यक्ति की I.Q. अथवा बौद्धिक स्तर का पता लगाया जाता है। इसक साथ ही उसकी रूचि, अभिरूचि, उपलब्धि स्तर इत्यादि का आंकलन भी एक मनोवैज्ञानिक के द्वारा इसके अन्तर्गत किया जाता है। बौद्धिक आंकलन का प्रयोग राज्य एवं केन्द्र सरकार के द्वारा दिये जा रहे लाभ प्राप्त करने हेतु भी आवश्यक है।

12 .4.2 अनुकूलन व्यवहार आंकलन (Adaptive Behaviour Assessment) इसके द्वारा व्यक्ति के विभिन्न कौशल व्यवहारों के वर्तमान कार्यक्षमता स्तर का आंकलन किया जा सकता है। अनुकूलन व्यवहार आंकलन का विस्तृत वर्णन इकाई सं०-1 पर किया जा चुका है।

12 .4.3 शैक्षणिक आंकलन (Educational Assessment) - यह आंकलन कार्यात्मक सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए जो विभिन्न कार्यात्मक स्तर पर व्यक्ति की उपलब्धि को दर्शाता हो। शैक्षणिक आंकलन का विस्तृत वर्णन इकाई सं०-10 एवं 4 में किया गया है।

12 .4.4 समस्या व्यवहार आंकलन (Problem Behaviour Assessment)- अधिकतर बौद्धिक अक्षमता व्यक्तियों में समस्या व्यवहार दिखाई देते हैं और इसका प्रमुख कारण कौशल व्यवहार में कमी व अन्य कारण होते हैं। समस्या व्यवहार का परिमार्जित किये बगैर शिक्षण कार्य को भली प्रकार से नहीं किया जा सकता है। अतः समस्या व्यवहार का आंकलन व इसको परिमार्जित करना अति आवश्यक है।

12 .4.5 आवश्यकता आधारित आंकलन (Need Based Assessment)- व्यक्ति की आवश्यकता एवं शैक्षणिक व्यवस्था को आधार बनाकर औपचारिक अथवा अनौपचारिक किया जा सकता है।

औपचारिक आंकलन (Formal Assessment)- इस प्रकार का आंकलन किसी विशेष उद्देश्य हेतु मानकीकृत परीक्षण ((Standardized Test)) के द्वारा किया जाता है। इसमें परीक्षण को प्रशासित करने की प्रक्रिया अंकन प्रणाली व विश्लेषित करने की प्रक्रिया पूर्व निर्धारित रहती है। अधिकतर मनोवैज्ञानिक परीक्षण इसके अन्तर्गत आते हैं - जैसे बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण इत्यादि।

अनौपचारिक आंकलन (Informal Assessment)- इस प्रकार के आंकलन को शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं निर्मित करता है। इसे “टीचर मेड टेस्ट” भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत परीक्षण को मानकीकृत करने की आवश्यकता नहीं होती है। इसका अंकन की प्रक्रिया व विश्लेषण प्रक्रिया शिक्षक स्वयं ही निश्चित करता है। बच्चों के वर्तमान निष्पादन क्षमता का आंकलन करने के लिये इसी प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। इसमें विभिन्न जांच सूची शामिल है।

बौद्धिक क्रिया

आज दीक्षा 5 वर्ष की हो गई है अब तक उसके माता-पिता उसे घर पर ही शिक्षा दे रहे थे और स्कूल में प्रवेश हेतु तैयार कर रहे थे। दीक्षा जन्म के तुरन्त बाद रोयी नहीं थी उसके बैठना, खड़े होना, चलना इत्यादि सभी कार्य विलम्ब से किये थे और विकलांगता प्रमाणपत्र में उसको Moderate Intellectual Disability बताया गया है। आज दीक्षा अपने माता-पिता के साथ समेकित विद्यालय में प्रवेश हेतु गयी है। यहां यह जानना आवश्यक है कि उसे किस प्रकार विद्यालय में प्रवेश दिया जायेगा।

1. क्या उसे केवल उसकी उम्र के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा?
2. क्या उसे उसकी विकलांगता के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा?
3. क्या कुछ परीक्षणों के पश्चात उसे उसकी आवश्यकतानुसार उपयुक्त कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा। जहां पर उस अधिकतम सीखने को मिल सके?

उत्तर. जी हां पहले कुछ आंकलन किये जायेगे जैसे बौद्धिक परीक्षण, अनुकूलन व्यवहार आंकलन, शैक्षणिक आंकलन, समस्या व्यवहार आंकलन इत्यादि इन आंकलनों को करने के पश्चात ही दीक्षा को उपयुक्त कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा।

12.5 बौद्धिक परीक्षण के प्रकार

बौद्धिक परीक्षण विभिन्न प्रकार के हैं:-

(1) व्यक्तिगत प्रशासित टेस्ट व्यक्तिगत रूप से प्रशासित टेस्ट में व्यक्ति अकेले प्रश्नों के जवाब तथा कौशल का निष्पादन मनोवैज्ञानिक के साथ करता है जांच के समय मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहार तथा पेश आने वाली कठिनाइयों का अवलोकन कर सकता है। कुछ व्यक्तिगत प्रशासित टेस्ट के उदाहरण इस प्रकार हैं:-

बीने- कामत टेस्ट आफ इंटेलीजेन्स (BKT)

मालिन का इंटेलीजेन्स स्केल फार इंडियन चिल्ड्रेन (MISIC)

इमिडियटे मेमोरी तथा पिक्चर कन्स्ट्रक्शन टेस्ट

भाटिया परफार्मेंस टेस्ट इंटेलीजेन्स

वेक्श्वलर एडल्ट परफार्मेंस इंटेलीजेन्स स्केल (WAPIS)

(2) समूह प्रशासित टेस्ट

समूह टेस्ट अधिकांशतः शिक्षकों, क्लर्कों, सचिवों, विद्यार्थियों तथा अन्य व्यक्तियों के लिये समूह में प्रशासित किये जाते हैं। समूह टेस्ट में भ्रमित होने की गुंजाइश ज्यादा रहती है एवं त्रुटियों के अवसर अधिक रहती हैं जबतक कि एक प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा इसे प्रशासित न किया जाये। समूह टेस्ट सामान्यतः कम खर्चीले तथा अल्प यथार्थ होते हैं लेकिन प्रशासित करने में समय की बचत करते हैं। समूह टेस्ट के उदाहरण इस प्रकार हैं:-

(a) रैवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस टेस्ट (RPM)

(b) कोलम्बिया मेंटल मेच्योरिटी टेस्ट (CMM)

(3) मौखिक टेस्ट

मौखिक टेस्ट में प्रयोज्य को प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं।

(4) गैर मौखिक टेस्ट

कौशल पर निष्पादन भाषा का कम से कम प्रयोग करने वाले टेस्टों को दूसरे शब्दों में निष्पादन टेस्ट कहते हैं जैसे ब्लॉक डिजाइन चित्र को पूरा करना इत्यादि निष्पादन टेस्टों प्रयोज्य को हाथ की गतियों के माध्यम से अपने उत्तर की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, जैसे एक ब्लॉक व्यवस्थित करके संरचना की नकल करना तथा चित्रों को अर्थपूर्ण क्रम में लगाना।

(5) पेपर एण्ड पेन्सिल टेस्ट:

पेपर एण्ड पेन्सिल टेस्ट मुख्य उदाहरण ड्रा ए परसन टेस्ट है जिसका विकास गुडइनफ ने किया था इसको प्रशासित एवं अंकन करना आसान है।

12 .6 अनुकूलित व्यवहार आंकलन (Adaptive Behaviour Assessment)

अनुकूलित व्यवहार से तात्पर्य उस विधि से है जिस प्रकार से एक व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण में अपने आप को कैसे क्रियान्वित करता है अमेरिकन एसोसियेशन आफ मेन्टल रिटार्डेशन अनुकूलित व्यवहार को इस प्रकार से परिभाषित करता है जिस प्रभावशील स्तर से व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता के मानदण्डों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है जो उसकी आयु तथा सांस्कृतिक समूह से अपेक्षित होता है।

इस प्रकार के मापन का उद्देश्य यह निर्धारण करना है कि किन क्षेत्रों में विशेष सहायता या दी गई परिस्थिति में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अनुकूलन व्यवहार का परीक्षण व्यक्ति के वर्तमान क्रियात्मक स्तर का निर्धारण करता है यह व्यक्ति के गुणों के साथ साथ उसकी कमजोरियों को भी उजागर करता है। इस प्रकार मापन का प्राथमिक कारण व्यक्ति को सुधारने तथा स्वीकार्य मानदण्डों के अन्दर क्रियान्वयन सीखने का एक प्रयास है।

अनुकूलित व्यवहार आंकलन जो अवलोकित व्यवहारों के परोक्ष रिपोर्ट पर आधारित है, व्यक्ति के गुणों तथा कमियों पर विशिष्ट सूचनाएँ प्रदान करता है अक्षमता के कारण या एक कौशल को न करना निम्नलिखित श्रेणियों में आ सकता है: ;1द्ध हो सकता है व्यक्ति को

कभी कोई अनुभव या व्यवहार को करने का अवसर प्राप्त ना हुआ हो ;2-द्व व्यक्ति की कुछ शारीरिक सीमायें होती है जो उन व्यवहारो के निष्पादन को रोकती है ;3-द्व कुछ सांस्कृतिक प्रारूपों या व्यवहारों के कारण व्यक्ति पूर्णरूप से प्रेरणा विहीन हो।

12 .7 अनुकूलन व्यवहार आंकलन हेतु उपकरण

विद्यालयी स्तर पर अनुकूलन व्यवहार आंकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणो का प्रयोग किया जाता है।

12 .7.1 मद्रास डवलपमेटं प्रोग्राम सिस्टम (एम०डी०पी०एस०)

इस स्केल के बारे मे विस्तारपूर्वक पिछली इकाई सं०-11 में उल्लेख किया जा चुका हैं।

12 .7.2 बिहेवियरल स्केल फार इण्डियन चिल्ड्रन विद मेन्टल रिटार्डेशन (BASIC-MR) –

बेसिक एम०आर० चेक लिस्ट का निर्माण डा० रीता पेशावरिया तथा एस० वैंकटेशन ने एन०आई०एम०एच० सिकन्दराबाद में 1992 में किया था। इस परीक्षण का प्रयोग 3-16 वर्ष (या 18 वर्ष) के बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के कौशल व्यवहार के वर्तमान स्तर को जानने एवं समस्या व्यवहार परीक्षण और भविष्यगत कार्यक्रम योजना बनाने हेतु किया जाता है।

विषय-सची-

परीक्षण टूल दो भागो में बँटा है भाग-A तथा भाग-B बेसिक एम०आर० के भाग- A में 280 विषय निम्नलिखित सात श्रेणियों मे समूहित हैं-

- 1- गामक सम्बन्धी कौशल
- 2- दिनचर्या की क्रियायें सम्बन्धी कौशल
- 3- भाषा सम्बन्धी कौशल
- 4- पठन तथा लेखन सम्बन्धी कौशल

5- संख्या-समय सम्बन्धी कौशल

6- घरलू-सामाजिक सम्बन्धी कौशल

7- पूर्व व्यावसायिक-पैसा सम्बन्धी कौशल

प्रत्येक क्षेत्र में 40 आइटम हैं। सभी आइटमों को अवलोकन तथा मापित करने योग्य रूप में कठिनाई के बढ़ते हुये क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

बेसिक एम. आर. के भाग B में 75 आइटम जो कि समस्या व्यवहार से सम्बन्धित है इनको 10 क्षेत्रों में निम्नवत बाँटा गया है -

1. उग्र तथा विनाशक व्यवहार
2. चिड़चिड़ापन एवं झल्लाहट
3. दूसरों के लिये घातक व्यवहार
4. स्वयं के लिये हानिकारक व्यवहार
5. पुनरावृत्ति व्यवहार
6. विचित्र व्यवहार
7. अति चंचल व्यवहार
8. विद्रोही व्यवहार
9. असामाजिक व्यवहार
10. अस्वाभाविक डर

प्रत्येक क्षेत्र में आइटमों की संख्या भिन्न है।

बेसिक-एम आर का प्रारूप भाग- A

प्रत्येक बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चा बेसिक-एम आर भाग I में विभिन्न विषयों पर विभिन्न निष्पादन स्तर दर्शा सकता है। छह सम्भव निष्पादन स्तर, जिसके अन्तर्गत प्राप्तांक दर्ज किये जा सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं। प्रत्येक आइटम में बच्चे द्वारा प्राप्त प्राप्तांक दर्ज करने के लिए लेखन पुस्तिका प्रयुक्त करें।

स्तर एक:

स्वतंत्र (अंक 5) अगर दिये गये व्यवहार को बच्चा बिना किसी शारीरिक या मौखिक सहायता के करता है, उस स्वतंत्र “I” अंकित किया जाता है और अंक दिये जाते हैं।

स्तर दो:

संकेत (अंक 4) अगर दिये गये व्यवहारों को बच्चा मौखिक संकेत से करता है, उसे ‘क्यूडिंग’ C अंकित किया जाता है तथा 4 अंक दिये जाते हैं।

स्तर तीन:

मौखिक सहायता (अंक 3) अगर दिये गये व्यवहारों को बच्चा किसी प्रकार के मौखिक वक्तव्य की सहायता से करता है, इसे “VP” अंकित किया जाता है तथा 3 अंक दिये जाते हैं।

स्तर चार:

शारीरिक सहायता (अंक 2) अगर दिये गये व्यवहारों को बच्चा किसी प्रकार के शारीरिक सहायता देने के बाद करता है उसे “PP” अंकित किया जाता है तथा 2 अंक दिये जाते हैं।

स्तर पांच:

पूर्ण रूप से निर्भर (अंक 1)

स्तर छह:

लागू नहीं (अंक 0) कुछ बच्चे अंकित व्यवहारो का निष्पादन इन्द्रियो या शारीरिक विकलांगता के कारण बिल्कुल नहीं कर पाते हैं। जहां भी विषय में “NA” अंकित है, उसे 0 अंक दिये जाते हैं।

बेसिक एम आर B भाग का प्रारूप

बेसिक एम आर भाग B के प्राप्तांकों का योग करने के लिए निम्नलिखित मापदण्ड उपयुक्त होते हैं: किसी बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चे मे समस्या व्यवहार वाले सभी आइटमों की जाँच हेतु उन्हे तीन बिन्दुओ वाले स्केल में आँके। इसके लिये इन्हें कभी नहीं (0), कभी-कभी (1), या बहुत जल्दी-जल्दी (2) पुस्तिका मे प्रत्येक विषय के सामने अंकित करते हैं।

- अगर दिया गया समस्या व्यवहार बच्चे मे घटित नहीं होता है तो N दर्ज करें तथा 0 अंक दें।

- अगर दिया गया समस्या व्यवहार बच्चे में कभी-कभी घटित होता है तो O अंकित करें तथा 1 अंक दे।
- अगर दिया गया समस्या व्यवहार बच्चे में जल्दी-जल्दी घटित होता है तो F अंकित करें तथा 2 अंक दे।

इस प्रकार बेसिक एम आर के प्रत्येक आइटम पर बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चा कोई भी अंक 0-2 तक प्राप्त कर सकता है। यह समस्या व्यवहारों की आवृत्ति पर निर्भर करता है। रिकार्ड बुकलेट में बच्चे द्वारा अर्जित उचित अंक दर्ज करें एवं इस आधार पर उसके लिये व्यवहार परिमार्जन प्रबन्ध योजना बनायें।

बेसिक एम०आर० चकेलिस्ट की विशेषताये-

- कौशल व्यवहारो एव समस्या व्यवहारों के आंकलन की सुविधा

- मापनीय व अवलोकनीय व्यवहारों पर आधारित
- विशेष रूप से भारतीय बालको के लिये निर्मित

बेसिक एम.आर. चकेलिस्ट का नमूना

आयु स्तर वर्षों में	विषय संख्या	क्षेत्र IV (RW)	लेखन व पठन
		पठन	
0-5	1	पाँच एक जैसी वस्तुओं को मिलाता है*	
	2	किताब के चित्र से पाँच आम चीजों को मिलाता है#	
	3	पाँच रंगों को मिलाता है#	
	4	अपना नाम पहचानता है*	
	5	अपना नाम पढ़ता है*	
	6	उसी श्रेणी के पाँच एक जैसे चित्रों की पहचान करता है*#	
	7	तीन अक्षरों वाले 5 शब्दों का मिलान करता है*#	
5-7	8	पाँच रंग पहचानता है*#	
	9	पाँच रंग के नाम बताता है#	
	10	पाँच छपे हुये शब्दों को पढ़ता है*#	
7-9	11	अभिभावकों के नाम पढ़ता है*	
	12	दो शब्दों वाले वाक्यों को पढ़ता है*#	

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

	13	अपना पता पढ़ता है*
	14	परिवार के सदस्यों/मित्रों के नाम पढ़ता है *
	15	छोटे वाक्यों को पढ़ता है*#
	16	संकेत बोर्ड को पढ़ता है*#
9+	17	छोटे अनुच्छेदों को पढ़ता है*#
	18	मैगज़ीन, समाचार पत्रों इत्यादि के बड़े अनुच्छेद को पढ़ता है*#
	19	मध्यम दर्जे के हस्तलिखित लेख को पढ़ता है*#
	20	अखबार से छोटी खबर पढ़ता है*#

* ग्लासेरी # सामग्री *# ग्लासेरी

तथा सामग्री

कौशल व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग-A)

कौशल व्यवहार क्षेत्र	अधिकतम प्राप्तांक	वर्तमान स्तर	त्रैमासिक I	त्रैमासिक II	वार्षिक
गामक	200				
दिनचर्या की क्रियायें	200				
भाषा	200				
पठन व लेखन	200				
संख्या-समय	200				
घरेलू-सामाजिक	200				

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

पूर्व व्यावसायिक-समय	200				
कुल अंक	1400				
उपस्थिति-कार्य करने वाले दिन					
हस्ताक्षर	कक्ष अध्यापक				
	स्कूल समन्वयक प्रधानाचार्य				
	परामर्शदाता				
	निदेशक				
	अभिभावक				

समस्यागत व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग-B)

समस्यागत व्यवहार क्षेत्र	अधिकतम अंक	वर्तमान स्तर	त्रैमासिक	वर्षिक परीक्षण
उग्र विनाशक व्यवहार	32			
चिड़चिड़ापन एवं झल्लाहट	6			
दूसरो के लिये घातक व्यवहार	16			
स्वयं के लिये हानिकारक व्यवहार	20			
पुनरावृत्ति व्यवहार	16			
विचित्र व्यवहार	16			

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

अतिचंचल व्यवहार	6			
विद्रोही व्यवहार	12			
असामाजिक व्यवहार	18			
अस्वाभाविक डर	06			
कुल योग	150			

अधिक प्राप्तांक विद्यार्थी के अधिकतम समस्यागत व्यवहारों को अच्छा दर्शाते हैं। कम प्राप्तांक विद्यार्थी में कम समस्यागत व्यवहारों का द्योतक है। प्रयोक्ता मैनुअल

12 .7.3 Grade Level Assessment Device for Children with Learning Problem in Schools (Narayan 1994) GLAD

यह भारत में अपनी तरह का पहला टूल है जिसका निर्माण डा० जयन्ती नारायण ने 1994 में NIMH में बच्चों की सीखने संबंधी समस्याओं के आंकलन हेतु किया था। इस आंकलन टूल में दो प्रारूप दिये गये हैं प्रथम प्रारूप (Format-1) कक्षा एक से चार तक के लिए टेस्ट बुकलेट दी गई है जो कि वर्कशीट के रूप में है। प्रत्येक कक्षा के लिए हिन्दी, इंग्लिश तथा गणित की वर्कशीट दी गई है प्रत्येक पद को एक प्रश्न के रूप में रखा गया है जिसका उत्तर मौखिक रूप में देना होता है विद्यार्थी की निष्पादन स्तर का विश्लेषण किया जाता है जिससे उसके सीखने के तरीके (Style of learning) तथा समस्या समाधान क्षमता (Problem solving ability) के बारे में पता चलता है। इस Scale का एक प्रमुख गुण है कि इसमें सभी पद (items) सीखने के निम्न स्तर (Minimum level of learning (MLL) पर आधारित है जो कि राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)के द्वारा प्रतिपादित है। सभी पद केन्द्रीय बोर्ड तथा राज्य बोर्ड के द्वारा प्रयोग किये जा रहे पाठ्यक्रम के सीखने के निम्नस्तर (MLL) को रखा गया है।

यह आंकलन उपकरण सम्पूर्ण भारत के विभिन्न विद्यालयों से आये हुये बच्चों की आंकलन की आवश्यकता को परा करता है। यह पाठ्यक्रम आधारित आंकलन उपकरण है।

द्वितीय प्रारूप (Format-2) विद्यार्थी के निष्पादन स्तर पर आधारित है जो उसने प्रथम प्रारूप मे प्रदर्शित किया है। यह शिक्षक के अवलोकन पर आधारित है। इसमें तीन खण्ड है-

प्रथम खण्ड विद्यार्थी के व्यक्तिगत वृत्तान्त, पारिवारिक इतिहास, विद्यालय इतिहास इत्यादि से सम्बन्धित है।

द्वितीय खण्ड के अन्तर्गत शिक्षक उन सचूनाओं को एकत्रित करता है जो संवेदी गामक कौशल से संबंधित है जिसका प्रयोग मेडिकल रिफरल (चिकित्सीय जांच हेतु भेजना) के लिए किया जाता है।

तृतीय खण्ड विद्यार्थी द्वारा की जाने वाली सम्भावित त्रुटियों (Possible Errors) की ओर संकेत करता है। अंत में सभी Sheet की संक्षिप्त रिपोर्ट (Summary) बच्चे की सम्पूर्ण पिकचर प्रस्तुत करती है। इसके अंतर्गत मैट्रिक्स (Matrix) बनी होती है जिसमें बच्चे की कक्षा में क्रियाशीलता (Functioning) को स्वतंत्र, कार्यात्मक तथा कुंठा के स्तर के रूप में वर्णित किया जाता है बच्चे को जिस कक्षा स्तर के लिए आंकलन किया गया है उसके निष्पादन स्तर को सांकेतिक रूप (Coding) में वर्णित किया जाता है।

विशेषतायें

इस आंकलन उपकरण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

1. सम्पूर्ण प्राप्त आंकलन सूचनाओं का प्रयोग पाठ्यक्रम के संदर्भ में सीखने संबंधी सचूनाओं की पहचान के लिए किया जा सकता है।
2. हिन्दी, इंग्लिश तथा गणित विषयो मे बच्चे के ग्रेड लेवल (Grade Level) को बताया या निश्चित किया जा सकता है।
3. प्राप्त सचूनाओं का प्रयोग प्राथमिक कक्षा स्तर पर विभिन्न विशेष सीखने संबंधी विकलांगताओ के निदान एवं प्रबन्धन हेतु किया जा सकता है।
4. यह विश्वसनीय, वैध है इसका प्रयोग एवं व्याख्या करना आसान है।

5. यह भारत के प्रत्येक क्षेत्र व शैक्षिक माध्यम वाले विद्यार्थियों के लिए प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि यह सीखने के निम्न स्तर (MLL) पर आधारित है।

12 .7.4 सपोर्ट इंटेन्सिटी स्केल (Support Intensity Scale)

सपोर्ट इंटेन्सिटी स्केल दूसरे आंकलन उपकरणों से भिन्न है यह स्केल इस बात का निर्धारण करती है कि एक बौद्धिक रूप से अक्षम व्यक्ति या विकासात्मक विकलांगता वाले व्यक्ति को समुदाय में पूर्ण भागीदारी हेतु किस हद तक या कितनी मात्रा में सहायता या सपोर्ट की आवश्यकता है। इस स्केल को अमेरिकन एसोसियेशन आन इंटेलिक्चुअल एण्ड डेवलेपमेन्टल डिस्एबिलिटीज, वाशिंगटन डी.सी. (AAIDD) के द्वारा जनवरी 2004 में प्रकाशित किया गया था। इस स्केल को इंग्लिश तथा फ्रेंच भाषा में प्रकाशित किया गया है। इस स्केल का प्रमुख उद्देश्य उस आवश्यकता का मापन करना है जिसके द्वारा एक बौद्धिक अक्षम तथा विकासात्मक अक्षमता वाले व्यक्ति को अपनी दैनिक जीवन की क्रियाओं, चिकित्सीय एवं व्यवहारिक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य करने हेतु आवश्यकता प्रतीत होती है।

The SIS defines success in a particular way..... “success involves thinking about the help, an individual would need to perform each activity at a level comparable to a typically functioning person of the same age.”

SIS के अनुसार सफलता से तात्पर्य किसी कार्य या क्रिया को ठीक उसी प्रकार करने से है जिसको कि एक समान आयु व विकलांगता रहित व्यक्ति जिस प्रकार से करता है। दूसरे शब्दों में किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए किस प्रकार से और कितने सपोर्ट या सहायता की आवश्यकता है ताकि एक बौद्धिक रूप से अक्षम व्यक्ति स्वतंत्र रूप से सफलतापूर्वक दैनिक जीवन की क्रियाओं को कर सके। इस बात का आंकलन SIS के द्वारा किया जा सकता है।

निम्नलिखित क्षेत्रों (domains) में कितनी सहायता चाहिए SIS इसका आंकलन करता है।

1 घरलू जीवन (Home Life)

2 सामुदायिक जीवन (Community Life)

3 अधिगम/शिक्षा (Learning/Education)

4 रोजगार (Employment)

5 स्वास्थ्य एवं सुरक्षा (Health & Safety)

6 सामाजिक क्रियायें (Social Activities)

7 वकालत एवं संरक्षण (Advocacy & Protection)

अंकन ((Scoring) इस स्केल के दो प्रारूप हैं एक बच्चों के लिए तथा दूसरा व्यस्क व्यक्तियों हेतु। SIS में सपोर्ट या सहायता की आवश्यकता को निम्नलिखित प्रकार से आंकलित ; (Rate) किया जा सकता है। किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है

- बिल्कुल नहीं से शारीरिक सहायता
- कितनी देर के लिए सहायता की आवश्यकता है
- बिल्कुल नहीं से घंटों हेतु या अधिकतर समय के लिए
- रोज कितना सपोर्ट/सहायता चाहिए
- बिल्कुल नहीं से प्रतिदिन चार घंटे से अधिक समय के लिए

SIS के द्वारा चिकित्सकीय तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक सहायता का आंकलन किया जा सकता है इसका आंकलन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है

- कोई सहायता नहीं चाहिए
- थोड़ी सहायता चाहिए
- अधिकतम सहायता चाहिए

SIS व्यक्ति को सभी प्रश्नों को आंकलित करना आवश्यक है चाहे व्यक्ति उस क्रिया को न करता हो, कभी न किया हो अथवा आगे भी कभी करने का मन न हो। व्यक्ति को प्रत्येक पद (Item) को इस प्रकार आंकलित Rate करना है जैसे व्यक्ति उस क्रिया में पूर्ण भागीदारी करने जा रहा हो।

सपोर्ट इंटेन्सिटी स्केल की विशेषतायें

1. यह स्केल 57 क्षेत्रों में जिन्दगी की क्रियाओं का प्रत्यक्ष, विश्वसनीय तथा वैध तरीके से आंकलन करता है कि इन क्रियाओं का स्वतंत्र रूप से करने के लिए व्यक्ति कितने सपोर्ट या सहायता की आवश्यकता है। साथ ही विशिष्ट चिकित्सकीय तथा व्यवहारिक चुनौतियों से बचाव व प्रबंधन हेतु कितनी सहायता की आवश्यकता है इसका आंकलन भी करता है।

2. व्यक्ति की आवश्यकताओं, पसंद, जीवन के लक्ष्य आदि के बारे में ठोस ज्ञान प्रदान करता है तथा यह जताती है कि किस प्रकार की क्या सहायता उसके लिए आवश्यक व महत्वपूर्ण है।

- सपोर्ट इंटेन्सिटी स्केल के साक्षात्कार के दौरान किस प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे।

- सपोर्ट इंटेन्सिटी स्केल में व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित क्षेत्रों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

जीवन सम्बन्धित क्रियायें (Life Activity)	एसे प्रश्न जो व्यक्ति की आवश्यकताओं के क्षेत्र से सम्बन्धित है। (Includes questions about supports the person needs in areas such as:)
घरेलू जीवन (Community Life)	बच्चा: भोजन, धोना/स्वयं को साफ सुथरा रखना, शौचालय का प्रयोग करना। (Child: eating, washing/keeping self-clean, using the toilet) वयस्क: कपड़े धाने, घर की सफाई करना भोजन तैयार करना। (Adult: laundering clothes, tidying home, preparing meals)

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

<p>अधिगम/ शिक्षा (Learning/ Education)</p>	<p>बच्चा: सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को अपनाता है तथा भागीदारी करता है गृह कार्य को पूरा करता है। (Child: attending and participating in general education curriculum, completing homework assignments)</p> <p>वयस्क: सीखता है तथा कौशल का प्रयोग करता है जैसे संकेतों को पढ़ना या समस्या समाधान करना ऐसी जगह भागीदारी करना जहां वयस्क लोगों को सिखाया जाता है।</p> <p>(Adult: learning and applying skills like reading signs or solving problems, participating in adult learning settings)</p>
<p>रोजगार (Employment)</p>	<p>वयस्क प्रतियोगी राजेगार में सफलता हेतु सहायता आवश्यक है।</p> <p>(Adult: supports needed to be successful in competitive employment)</p>
<p>स्वास्थ्य एवं सुरक्षा</p>	<p>बच्चा: स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सम्बन्धी आपदाओं से बचाव करता है- आपातकालीन स्थिति में प्रतिउत्तर देता है।</p> <p>चिकित्सीय समस्याओं व स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों जैसे दर्द आदि के विषय में बताता है।</p> <p>(Child: avoiding health and safety hazards, responding in emergency situations, communicating health related issues and medical problems such as pains)</p> <p>वयस्क: स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सम्बन्धी आपदाओं से बचाव करता है। आपातकालीन सेवाओं का प्रयोग करता है। शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखता है।</p> <p>(Adult: avoiding health and safety hazards, using emergency services, maintaining physical and mental health.)</p>

आवश्यकताओं का मूल्यांकन और पहचान (C12MR)
B.Ed.Spl.Ed. II Sem

<p>सामाजिक क्रियायें (Social Activities)</p>	<p>बच्चा: घनात्मक सम्बन्धों को बनाये रखता है, मित्र बनाये रखता है। (Adult: socializing with different people in a variety of settings, making friends and dating)</p> <p>वयस्क: विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न भिन्न लोगों के साथ सामाजिकता दिखाता है, मित्र बनाता है व उनके साथ बाहर जाता है। (Adult: socializing with different people in a variety of settings, making friends and dating)</p>
<p>वकालत एवं संरक्षण (Advocacy & Protection)</p>	<p>बच्चा: वरीयता को अभिव्यक्त करना चुनाव या निर्णय लेना। (Child: expressing preferences, making choices/decisions)</p> <p>वयस्क: अपनी वकालत करना तथा निर्णय लेना। (Adult: advocacy and decision-making)</p>

उपरोक्त साक्षात्कार फार्म के आधार पर जो उत्तर मिलते हैं प्रत्येक प्रश्न के अनुसार उनका विवरण बहुत संक्षिप्त होता है। अतः साक्षात्कारकर्ता को इस बात के लिये प्रशिक्षित किया जाता है कि वह प्रत्येक प्रश्न/पद की व्याख्या करे और विवरणात्मक रूप में उत्तर प्राप्त करे।

12.8 क्रियायें

1 माडरेट तथा सीवियर बौद्धिक अक्षम बच्चों का आंकलन एम.डी.पी.एस. एवं बौद्धिक एम.आर. चकेलिस्ट के द्वारा करे।

2 समावेशित विद्यालय में पढ़ने वाले किन्हीं दो बौद्धिक अक्षम बच्चों का गलैड के द्वारा आंकलन करें एवं रिपोर्ट तैयार करे।

12.9 सारांश

विद्यालयी अवस्था 6-15 वर्ष तक मानी जाती है। इस अवस्था में बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है विद्यालयी अवस्था को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता प्रथम 6-9 वर्ष तथा द्वितीय 10-15 वर्ष इस अवस्था में बच्चे का संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास आदि चरमोत्कर्ष पर होते हैं। इस अवस्था में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अनुकूलन व्यवहार के आंकलन हेतु विभिन्न उपकरण जैसे एम.डी.पी.एस. बेसिक एम आर, गलैड आदि स्केल भारतीय परिदृश्य में उपलब्ध है जिनका बहुतायत से प्रयोग किया जा रहा है। एस.आई.एस. बहुत उपयोगी स्केल है, परन्तु इसका अभी भारत में पूर्णरूप से प्रयोग नहीं हो पा रहा है क्योंकि यह केवल इंगलिश तथा फ्रेंच भाषा में ही उपलब्ध है।

12.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Jeyachandran, P. & Vimala, V.(1975) Madras Developmental Programming System. Chennai: Vijay Human services.
- Myreddi V. Narayan, J., Saleem,S., Sumalini, K.& Padma, V. (2004) Functional Assesment Checklist for Programmingfor persons with profound) Mental Retardation Secunderabad, NIMH
- Narayan,J. (1994) Grade level Assesment Device for Children with Learning Problems in Schools,Secundrabad, NIMH

इकाई- 13 आंकलन परिणामों का अभिलेखीकरण एवं व्याख्या व रिपोर्ट लेखन कक्षा आधारित आंकलन व इसका समावेशित शिक्षा में प्रयोग

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 आंकलनों के प्रकार

13.3.1 चिकित्सीय परीक्षण

13.3.2 मनोवैज्ञानिक परीक्षण

13.3.3 शैक्षणिक परीक्षण

13.3.3.1 मानित परीक्षण

13.3.3.2 गैर मानित परीक्षण

13.4 रिपोर्ट लेखन

13.5 आंकलन से प्राप्त परिणामों के व्याख्या की आवश्यकता

13.5.1 प्रशासनिक निर्णय हेतु रिपोर्ट लेखन

13.5.2 शैक्षणिक कार्यक्रम हेतु रिफरल

13.5.3 रिफरल हेतु रिपोर्ट लेखन

13.5.3.1 शुरुआती आंकलन के दौरान रिफरल

13.5.3.2 शैक्षिक कार्यक्रम में दौरान रिफरल

13.5.3.3 नियमित या विशेष विद्यालय में प्रवेश हेतु रिफरल

13.5.3.4 विद्यालयी शिक्षा के उपरान्त रिफरल

13.6 परिणामो की व्याख्या की प्रक्रिया

13.6.1 आइ.ई.पी. प्रारूप

13.6.2 परीक्षण का कार्यक्रम बनाने के लिये जांच तालिका

13.6.3 कार्य विश्लेषण

13.6.4 ग्राफ

13.6.5 कार्य नमूने

13.6.6 उपख्यानात्मक रिकार्ड

13.6.7 प्रोग्रेस रिपोर्ट

13.7 रिपोर्ट लेखन हेतु ध्यान योग्य बातें

13.8 रिपोर्ट का रखरखाव

13.9 समावेशी शिक्षा में आंकलन के परिणामोका प्रयोग

13.10 सारांश

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में अपने आंकलन क्या होता है इसकी क्या आवश्यकता है आंकलन के विभिन्न प्रकार एवं प्रक्रियाओ इत्यादि के बारे में अध्ययन किया इसके साथ ही पूर्व विद्यालय स्तर व विद्यालय स्तर पर किये जाने वाले आंकलन एवं आंकलन उपकरणों की

भी चर्चा की गई परन्तु एक बार किसी विशेषज्ञ के द्वारा आंकलन हो जाने के पश्चात उस आंकलन की रिपोर्ट भी आवश्यक होती है क्योंकि केवल आंकलन हो जाना ही सम्पूर्ण कार्य नहीं होता है जब तक कि उसकी सही रूप से व अर्थपूर्ण तरीके से व्याख्या न की जाये, क्योंकि इस रिपोर्ट का प्रयोग विभिन्न विशेषज्ञों से लेकर अभिभावक तक करते हैं अतः रिपोर्ट ऐसी हो जिसको आसानी से समझा जा सके एवं जिसके आधार पर बच्च के सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सके। उदाहरणस्वरूप आप जब खून की जांच या सी.टी. स्कैन करवाते हैं तो आप तब तक उस आंकलन के परिणामों को नहीं समझ पाते हैं जब तक आपके सामने लिखित रूप में उस रिपोर्ट का विश्लेषण न किया जाये। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के आंकलनों के पश्चात उसके परिणामों की व्याख्या या रिपोर्ट लेखन भी एक कला है इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप विभिन्न आंकलनों के परिणामों की स्पष्ट व्याख्या करने तथा सम्बन्धित रिपोर्ट तैयार करने में सक्षम हो जायेंगे।

13.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता –

- आंकलन परिणामों की आवश्यकता के बारे में चर्चा करने में सक्षम हो जायेंगे।
- आंकलन की अर्थपूर्ण व्याख्या की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- आंकलन से प्राप्त परिणामों के रिपोर्ट लेखन में सक्षम हो सकेंगे।
- समावेशी शिक्षा में आंकलन से प्राप्त परिणामों (रिपोर्ट) का प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

13.3 आंकलनों के प्रकार

13.3.1 चिकित्सीय परीक्षण

चिकित्सीय परीक्षण बौद्धिक अक्षम बच्चों के निदान (Diagnosis) प्रक्रिया का एक भाग है। इस बौद्धिक अक्षमता के कारणों का पता लगाने के लिये किया जाता है। इस सुनिश्चित करने के लिये जांच हेतु रेफर करके तथा आगे अन्य बीमारियों का इलाज एवं मूल्यांकन

करने में सहायता मिलती है। व्यक्ति के वर्तमान स्वास्थ्य, दृष्टि तथा श्रवण स्थिति का परीक्षण टीम के चिकित्सको द्वारा किया जाता है। चिकित्सीय परीक्षण में स्वास्थ्य इतिहास, शारीरिक परीक्षण तथा अन्य प्रयोगशाला सम्बन्धी आवश्यक जांच सम्मिलित हैं जैसे अगर शक है कि अमुक व्यक्ति को बौद्धिक अक्षमता आनुवांशिकी समस्या के कारण हो सकती है तो इस साबित करने के लिये आवश्यक प्रयोगशाला सम्बन्धी जांच के लिये रेफर किया जाता है।

13.3.2 मनोवैज्ञानिक परीक्षण

मनोवैज्ञानिक परीक्षण किसी व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में सूचनाओं को एकत्रित तथा परिस्थिति के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार पर अनुमान लगाने की एक प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण में मस्तिष्क के तीन पहलुओं बुद्धि, क्रिया तथा भाव का अध्ययन किया जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण में समस्याओं के कारणों की समझ तथा समस्याओं के समाधान समाहित है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उद्देश्य व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को विशेष पहलू या समस्या के लिये मूल्यांकित करना है। इसमें बौद्धिक क्षमता, शिक्षण सम्बन्धी अक्षमतायें, विशिष्ट योग्यतायें, पढ़ाई सम्बन्धी उपलब्धि, व्यक्तित्व की कार्यात्मकता एवं समाजिक क्षेत्र और सामान्य या असामान्यता सम्बन्धी प्रश्न सम्मिलित है मनोवैज्ञानिक सूचनाओं के आधार पर प्राकल्पना (Hypothesis) विकसित करते हैं या वर्तमान व्यवहार अथवा दी गई परिस्थितियों में किये गये व्यवहार को परिभाषित करते हैं एवं भविष्य में होने वाले व्यवहारों प्रतिमानों का अनुमान लगाते हैं जो परीक्षण सूचनाओं में सम्मिलित हैं।

13.3.3 शैक्षणिक आकलन

शैक्षणिक आकलन की दो विभिन्न विधियां प्रचलन में हैं परीक्षण की विधियों का चुनाव किसके उद्देश्य से परीक्षण किया जा रहा है उस पर निर्भर करता है एक मानित परीक्षण है (NRT) तथा दूसरा गैर मानित परीक्षण है (CRT)

13.3.3.1 मानित परीक्षण (NRT)

मानित एक परम्परागत परीक्षण विधि है इसमें जांच तथा मापन विधियों में जांच सामग्री सम्मिलित होती है जिस एक नमूने वाली जनसंख्या में मानित होती है तथा इसका प्रयोग

जांच कराने वाली की दूसरे स तुलनात्मक योग्यता की पहचान करते हैं इसे औपचारिक परीक्षण विधि भी कहा जाता है। मानित परीक्षण को एक टेस्ट द्वारा विशिष्ट उद्देश्य के लिये एक बड़े नमूने वाली जनसंख्या पर मानित करने की विधि के रूप में परिभाषित किया जाता है। प्रत्येक मानित परीक्षण टेस्ट के कुछ दिशा निर्देश होते हैं जिनका पालन आवश्यक है इन दिशा निर्देशों में टेस्ट को प्रशासित करने की विधियां परिणामों के विश्लेषण तथा व्याख्या करने की विधियां तथा उनको रिपोर्ट करना शामिल है।

मानित परीक्षण (NRT) के लाभ-

- बच्चों को श्रेणीबद्ध करने का निर्णय जैसे असाधारण या विशेष-यह मुख्यतः मानित टेस्टों के परिणामों पर निर्भर करता है।
- अभिभावकों तथा अन्य टेस्टों से अनभिज्ञ लोगों को परिणाम सम्प्रेषित करना आसान है।
- मानित टेस्टों को शोध तथा तकनीकी आंकड़ों में काफी अहमियत प्राप्त है। ये विशेष तौर पर समस्या को पहचानने तथा जांच में सहायक होते हैं।

मानित परीक्षण (NRT) के दोष-

- मानित टेस्टों से प्राप्त सूचनाएँ बहुत ही साधारण होती हैं जिनको दिन-प्रतिदिन कक्षा शिक्षण के लिये लाभप्रद नहीं माना जा सकता है कई शिक्षक पूर्वानुमान तथा मानित टेस्टों से प्राप्त व्याख्यात्मक प्रभार के आंकड़ों को नहीं मानते हैं क्योंकि प्रायः सूचनाएँ परोक्षरूप से दैनिक शिक्षण क्रियाएँ या हस्तक्षेप विकसित करने के लिये उपयोगी नहीं होती हैं। उदाहरणस्वरूप बच्चों के वक्त्रालर इंटेलिजेन्स स्केल फार चिल्ड्रेन (WISC) में कुल प्राप्तांक है लेकिन इससे विशेष शिक्षक को यह पता नहीं लगता है क्या और कैसे पढ़ाएँ या बच्चों के लिये क्या जानना आवश्यक है? क्या बच्चों को प्रारम्भिक व्यंजन सीखने में कठिनाई है या उस समझने में किस प्रकार की कठिनाई है? इत्यादि।

- मानित परीक्षण (NRT) इस बात पर बल प्रदान करते हैं कि समस्या बच्च के अन्दर है। यह इसलिये होता है क्योंकि मानित टेस्ट का उद्देश्य एक विद्यार्थी का दूसरे विद्यार्थी से तुलना करना होता है फिर भी बच्चा मानदण्ड से भिन्न हो सकता है। शिक्षक के व्यवहार, पाठ्यक्रम, विषय क्रमबद्धता तथा अन्य पहलू मानित टेस्टो द्वारा मापित नहीं किये जाते हैं।

13.3.3.2 गैर मानित परीक्षण (CRT)

गैर मानित परीक्षण से तात्पर्य होता है कि बच्चा एक कौशल का निष्पादन पूर्व निर्धारित मानदण्ड के अनुसार करता है या नहीं। मानित परीक्षण के विपरीत जो एक व्यक्ति के निष्पादन को दूसरे से तुलना करते हैं गैर मानित टेस्ट एक व्यक्ति के निष्पादन को पूर्व निर्धारित मानक से तुलना करते हैं गैर मानित टेस्ट विषय के अन्तर्गत कौशल क्रम से व्यवस्थित होते हैं जिससे जो पहले सीखा गया है उसकी जांच पहले हो सके। गणित में उदाहरणार्थ गुणा वाले सवालों को सिखाने से पहले जोड़ वाले सवालों को आंकलित करगे। ये टेस्ट सामान्यतः गैर मानित टेस्ट है क्योंकि एक विद्यार्थी को उच्च स्तर पर पढ़ाया जाने से पहले एक स्तर क्षमता जानने की आवश्यकता पड़ती है।

गैर मानित टेस्टो के लाभ

- विशिष्ट कौशलो को पहचानना जिन्हें हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- पढ़ाने के लिये अगले सबसे तार्किक कौशल का निर्धारण करने में गैर मानित टेस्टों का प्रभाव परोक्ष रूप से शिक्षण में होता है।
- प्रथम मूल्यांकन करने में अर्थात् जो विद्यार्थी के निष्पादन को निरन्तर या रोज जब कौशल पढ़ाये जा रहे हो तब दर्ज करते हैं। इससे विद्यार्थी की उन्नति को दर्ज करना सम्भव होता है इससे यह भी सम्भव होता है कि हस्तक्षेप कार्यक्रम (Intervention Program) कितना प्रभावकारी हुआ है। यह इस बात में भी सहायक है कि यदि पूर्व कौशल प्राप्त कर लिये गये हैं तो आगे कौशल ग्रहण कर लिये जायें। यह जानना आवश्यक है कि शिक्षण के लिये कौन सी रणनीतियां या कौन सी विधियां अपनाई

जायें साथ ही शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का चुनाव करना भी आवश्यक है।

गैर मानित टेस्टों के दोष

- विशिष्ट कौशल के लिये सफल होने वाले मानदण्ड का निर्धारण गैर मानित टेस्ट में समस्या होता है। उदाहरणार्थ अगर टेस्ट को यह निर्धारण करना है कि क्या विद्यार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर के गणित में महारथ प्राप्त कर लिया है, तब यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि टेस्ट में किस प्रकार के आइटम रखे जायें। आगे क्या विद्यार्थी का 90% सवालों को सही करने पर पास माना जाये या 100 सही करने पर? इन सभी निर्णयों को सावधानी पूर्व लिया जाना चाहिये क्योंकि अनुचित मानदण्ड तय करने में अनावश्यक रूप से विद्यार्थी अवधारणा से संघर्ष करता है।
- टेस्ट में किन कौशलों को सम्मिलित किया जाये यह तय करना कठिन है।
- यह भी समस्या है कि परीक्षण किया गया कौशल, निर्देश के लिये लक्ष्य बन जाता है बजाय इसके कि बच्चे को कौन सा कौशल सीखना आवश्यक है। इसके कारण शिक्षक निर्देशों को संकुचित कर सकते हैं तथा वही पढ़ाते हैं जो वह टेस्ट में आंकलित करते हैं बजाय इसके कि सत्यता में बच्चे को क्या जानना आवश्यक है।

बौद्धिक क्रिया

शैक्षणिक आकलन के अन्तर्गत मानित एवं गैर मानित परीक्षण की विभिन्नताओं को स्पष्ट करते हुए इसके गुण एवं दोषों पर प्रकाश डालिये।

13.4 रिपोर्ट लेखन

आंकलन के पश्चात एक अच्छी रिपोर्ट लिखना भी एक कला है गलत तरीके से लिखी गई रिपोर्ट व्यक्ति के लिए खतरनाक साबित हो सकती है कल्पना कीजिए यदि आप खून दान करने के लिए जाते हैं और आपके ब्लड ग्रुप की गलत रिपोर्ट दे दी जाती है सोचिए जिसको वह खून चढ़ाया जायेगा उसका क्या होगा? अतः रिपोर्ट तैयार करते समय बहुत ज्यादा सावधानी की आवश्यकता होती है। रिपोर्ट सदैव उद्देश्य सहित एवं अर्थपूर्ण रूप में होनी चाहिए। बहुत सी रिपोर्ट जा प्रशासकीय निर्णय या विकलांगता के प्रमाणीकरण के लिए बनायी जाती है उसमें बहुविशेषज्ञों की टीम के द्वारा किये आंकलन रिपोर्ट का शामिल होना आवश्यक है जैसे विकलांगता के प्रमाणीकरण के लिए देश के सरकारी अस्पतालों में इसकी व्यवस्था की गई है इसमें बहु विशेषज्ञों की टीम एक बोर्ड के रूप में होती है और वह विकलांगता का सर्टीफिकेट संवैधानिक उद्देश्य हेतु प्रदान करता है। दूसरी तरफ प्रगति रिपोर्ट की आख्या शिक्षक एवं प्रधानाचार्या द्वारा, श्रवण संबन्धी रिपोर्ट आडियोलाजिटस्ट द्वारा एवं मनोवैज्ञानिक बौद्धिक आंकलन की रिपोर्ट देता है और इन सभी आंकलनों के रिपोर्ट के आधार पर विभिन्न प्रकार के निर्णय जैसे-शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा रिफरल सम्बन्धी निर्णय लिए जाते हैं।

13.5 आंकलन से प्राप्त परिणामों के व्याख्या की आवश्यकता

किसी भी निर्णय का लेने के लिए बहु विशेषज्ञों की टीम के द्वारा किये गये आंकलन की रिपोर्ट को संकलित करना आवश्यक है। इस संपूर्ण रिपोर्ट के आधार पर ही निर्णय लेने या प्रमाणीकरण का कार्य किया जा सकता है।

13.5.1 प्रशासनिक निर्णय हेतु रिपोर्टें लेखन

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के संदर्भ में प्रशासनिक निर्णय हेतु निम्नलिखित प्रकार के आंकलनों की आवश्यकता होती है जैसे-

1. निदान एवं प्रमाणीकरण
2. बौद्धिक आंकलन

3. उपयुक्त विद्यालय में प्रवेश
4. सरकार के द्वारा प्रदत्त लाभो को लेने हेतु योग्यता निर्धारण
5. स्वतंत्र चलन, संप्रेषण व अधिगम हेतु उपयुक्त अनुकूलन उपकरण
6. अधिकारो का संरक्षण

जैसे कि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं दिव्यांगता का निदान एवं प्रमाणीकरण का कार्य संपूर्ण मेडिकल बोर्ड करता है प्रायः यह देखा गया है कि यदि अभिभावक बच्च से संबंधित अन्य आंकलन रिपोर्ट जैसे अध्यापक के द्वारा दी गई आंकलन रिपोर्ट जिसमे बच्च की निष्पादन क्षमता, उसका स्कूल इतिहास आदि शामिल हो इन रिपोर्ट को भी मेडिकल बोर्ड के सामने पेश करते हैं तो बोर्ड को इन रिपोर्ट के आधार पर बच्चे की विकलांगता के निदान व प्रमाणीकरण में सुविधा हो जाती है।

बच्चे के पारिवारिक इतिहास से पता चलता है कि उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, परिवार मे बच्चे का संयोजन (Association) एवं अनुकूलन व्यवहार, आंकलन रिपोर्ट द्वारा बच्चे का वर्तमान निष्पादन स्तर इत्यादि के बारे में पता चलता है और इस आधार पर उसके लिए उपयुक्त साधन व उपकरण (Aids & Appliances) उपलब्ध करवाये जा सकते हैं, जिससे बच्चा यथा संभव स्वतंत्र जीवनयापन कर सके। जो भी कानूनी व प्रशासनिक निर्णय बौद्धिक रूप स अक्षम व्यक्तियों के संदर्भ मे लिए जाते हैं व सभी आई0क्यू0 (I.Q) पर आधारित होते है। (I.Q) का आंकलन जैसा कि हम जानते हैं मनोवैज्ञानिक के द्वारा किया जाता है। बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र मे यह (I.Q) का आंकलन करना, कभी-कभी कठिन हो जाता है अतः ऐसी स्थिति मं विशेष अध्यापक के द्वारा बच्चे के संबंध मे दी गई अनुकूलन व्यवहार, वर्तमान निष्पादन क्षमता आंकलन सम्बन्धी रिपोर्ट मनोवैज्ञानिक को बच्च के सम्पूर्ण आंकलन एव सही रिपोर्ट तैयार करने मे काफी मददगार साबित होती है। उदाहरण स्वरूप यदि एक बौद्धिक अक्षम व्यक्ति का (I.Q) 48 है ऐसी स्थिति मे व्यवसायिक पुनर्वास केन्द्र (Vocational Rehabilitation Centre) जो कि भारत सरकार के द्वारा खोले गये हैं मे प्रवेश के लिए मनोवैज्ञानिक को अध्यापक के द्वारा विद्यार्थी की योग्यता के संदर्भ मे दी गई रिपोर्ट पर निर्भर होना होगा यही समान स्थिति उन व्यक्तियों के प्रवेश के संदर्भ मे भी होगी जिनकी बौद्धिक अक्षमता का स्तर माइल्ड, माडरेट या

सीवियर श्रेणी में आता है। कोई भी परीक्षण कितना भी वैध क्यों न हो लेकिन बच्चे के प्रेरणा, उसके सहयोगात्मक रवैये, अनुकूलन व्यवहार इत्यादि के बारे में विशेष अध्यापक स अधिक अच्छी रिपोर्ट कोई नहीं दे सकता है। जब भी बच्च के बौद्धिक अक्षमता के स्तर का प्रमाणीकरण किया जाये उस समय बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है कि बच्च का कार्यात्मक स्तर (Functional Level) क्या है जिसमें अनुकूलन व्यवहार भी शामिल है अर्थात बच्च के प्रत्येक पहलू को ध्यान में रखा जाये क्योंकि भारतीय कानून के अनुसार I.Q के आधार पर ही सरकार द्वारा प्रदत्त लाभो को प्राप्त किया जा सकता है यदि एक बच्चे का बौद्धिक स्तर (I.Q 71-90) है तो उसको किसी प्रकार का कोई सरकारी लाभ प्राप्त नहीं होता है। ऐसी स्थिति में अध्यापक द्वारा दी गई संक्षिप्त (Precise) व वस्तुनिष्ठ (Objective) रिपोर्ट मायने रखती है। विकलांग व्यक्तियों के लिए बहुत सार अधिनियम बनाये गये है जिसमें विकलांगजन अधिनियम 1995 (समान अवसर, अधिकारो का संरक्षण व संपूर्ण भागीदारी), राष्ट्रीय न्यास अधिनियम 1999 (स्वलीनता, प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात, मानसिक मंदता एवं बहुविकलांगता) यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन आन द राइट्स आफ पर्सन्स विद डिसएबिलिटी (United Nations Convention On the Rights of Persons with Disabilities UNCRPD) पर हस्ताक्षर करने वाला भारत भी एक देश है। जो भी अधिनियम बनाये गये हैं वे सभी दिव्यांगजनो के हितों की रक्षा के लिए बनाये गये है। अतः इसलिए आवश्यक है कि दिव्यांगजनो की दिव्यांगता के प्रमाणीकरण के सदर्भ में जो भी रिपोर्ट तैयार की जाए तो एकदम सही हो ताकि सरकार के द्वारा प्रदत्त लाभो को निर्वहन करने हेतु योग्य बन सके हो एवं उनके अधिकारों का संरक्षण हो सके।

13.5.2 शैक्षणिक कार्यक्रम हेतु रिपोर्ट लेखन

इस प्रकार की रिपोर्ट अध्यापक के द्वारा तैयार की जाती है जब यह रिपोर्ट शुरूआती अवस्था में तैयार की जाती है तो यह फारमेटिव अवस्था तथा समेटिव अवस्था (संकलित अवस्था) में रिपोर्ट लेखन का प्रयोग अगले स्तर में भेजने या भविष्य के प्रयोग हेतु होता है इस प्रकार की रिपोर्ट लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है-

1. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
2. प्रायोगिकता (Relevance or use)

3. स्पष्टता (Clarity)
4. प्रामाणिकता (Authenticity)
5. पक्षपातरहित (Unbiased)
6. अद्यतन (Up to date)
7. साधारण (Simplicity)
8. बिन्दुवार (Precise)
9. जहां तक आवश्यक हो वहां डाक्यूमेंट उपलब्ध करवाना- (Provision of support documents, wherever applicable)

सालविया एव एसलडेक (Salvia and Ysseldyke) 2007 ने कहा है शैक्षिक आंकलन व मूल्यांकन रिपोर्ट में आवश्यक है कि सचूनाए अर्थपूर्ण हो यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि रिपोर्ट का प्रयोग किस हेतु किया जाना है अब यह पहला चरण यह देखना है कि “रिपोर्ट किस उद्देश्य पूर्ति के लिए बनायी जानी है” यदि रिपोर्ट का प्रयोग आगे के कार्यक्रम योजना बनाने हेतु किया जाना है तो इसमें विद्यार्थी के कौशल, वर्तमान एवं भविष्यगत आवश्यकताओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

एक रिपोर्ट जो स्कूल में बच्चे के सम्बन्ध में अध्यापक द्वारा लिखित रूप में अभिभावकों को दी जाती है वह प्रगति पत्र (Progress Report) कहलाती है। इस रिपोर्ट को बनाते समय अध्यापक को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इसमें न केवल प्रतिशत या अंकों का समावेश हो बल्कि बच्चे की आवश्यकताओं, उसकी प्रत्येक विषय में प्रगति का विवरण लिखित रूप में करना आवश्यक है क्योंकि यह रिपोर्ट अभिभावकों को दी जाती है। अतः स्पष्ट एवं सरल भाषा का प्रयोग बच्च की प्रगति को व्यक्त करने के लिए होना चाहिए।

13.5.3 रिफरल (Referral) हेतु रिपोर्टें लेखन

जब भी बच्चे का शुरूआत में आंकलन किया जाता है तो उससे जुड़ी हुयी विभिन्न समस्याओं के निदान एवं निराकरण हेतु सम्बन्धित विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है इसी को

रिफरल कहा जाता है रिफरल का प्रयोग शुरूआती आंकलन, शैक्षिक कार्यक्रम के दौरान अथवा विद्यालयी शिक्षा के पूर्ण होने पर भी किया जा सकता है।

13.5.3.1 शुरूआती आंकलन के दौरान रिफरल (Referral at the Time of Initial Assessment) आपके पास किसी विशेषज्ञ या अन्य व्यक्ति के द्वारा किसी बच्चे का आंकलन करने हेतु भेजा जा सकता है या आपके द्वारा किसी बच्चे को शैक्षिक योजना हेतु अन्य प्रकार के आंकलन हेतु संबंधित विशेषज्ञ के पास भेजा या रिफर किया जा सकता है। यदि आपके पास कोई बच्चा रिफर किया जाता है तो यह आपका कर्तव्य बनता है कि उसकी आंकलन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ण कर एव प्राप्त परिणामों का रिपोर्ट के रूप में रिफर करने वाले संबंधित व्यक्ति या विशेषज्ञ को दें जब भी किसी विशेषज्ञ के पास रिफर कर उसके साथ रिफरल पत्र (Referral Letter) अवश्य दें जिसमें रिफरल का उद्देश्य, बच्चे की पृष्ठभूमि एव संबंधित आवश्यक सूचनाओं का समावेश होना चाहिए साथ ही व्यवसायिक नैतिकता (Professional Ethics) का पालन होना आवश्यक है।

13.5.3.2 शैक्षिक कार्यक्रम के दौरान रिफरल (Referral During the Educational Programme)

आरम्भिक आंकलन के पश्चात एव शैक्षिक योजना के क्रियान्वयन के दौरान भी रिफर किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि किसी बच्चे में अनोखा व्यवहार की समस्या हो तो उस समस्या के निदान एव निराकरण हेतु उस किसी मनोवैज्ञानिक के पास भेजा जा सकता है। इसी प्रकार प्रमस्तिष्क पक्षघात वाले बच्चे को यदि आप स्वयं भोजन करना सिखाना चाहते हैं तो इसके लिये किस प्रकार की सी.पी.। चेरर उपयुक्त रहेगी व उसके चम्मच या गिलास आदि में किस प्रकार के अनुकूलन की आवश्यकता है इसके लिये व्यवसायिक चिकित्सक के पास भेजा जा सकता है। यदि बच्चे को एपिलेप्सी के दौर की समस्या है तो उसे उपचार हेतु डॉक्टर के पास रिफर किया जा सकता है किसी भी विशेषज्ञ के पास भेजने से पूर्व बच्चे का पूरा ब्योरा (Profile) एव पृष्ठभूमि लिखित रूप में होना चाहिये तभी किसी कार्यक्रम का क्रियान्वित करना चाहिये और आवश्यकतानुसार शैक्षणिक कार्यक्रम के दौरान जरूरी सहायता का सुझाव लेने हेतु सम्बन्धित विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिये।

13.5.3.3 नियमित या विशेष विद्यालय में प्रवेश हेतु (Referral for Admission Regular/Special school)

जब भी कोई बच्चा नियमित/विशेष या समावेशित विद्यालय में प्रवेश लेता है अथवा कभी कभी कुछ अवसरो पर जब माता-पिता का स्थानान्तरण हो जाता है या किन्हीं अन्य कारणोंवश विद्यालय परिवर्तित करना पड़ता है तो इन स्थितियों में भी रिफरल रिपोर्ट की आवश्यकता पड़ती है। इस रिपोर्ट में बच्चे का वर्तमान दक्षता/ योग्यता स्तर, स्कूल का प्रगति पत्र संलग्न होना चाहिये जिसमें बच्चे की पसंद, नापसंद, सहगामी काकेरीकलर क्रियाओं में भागीदारी एवं बच्चे से सम्बन्धित आवश्यक जानकारियां रिफरल रिपोर्ट में लिखी होनी चाहिये ताकि बच्चे को नये विद्यालय अथवा विद्यालय में प्रथम प्रवेश के दौरान सामन्जस्य स्थापित करने में दिक्कत न हो।

13.5.3.4 विद्यालयी शिक्षा के उपरान्त रिफरल (Referral on Completion of School Education)

जब एक बच्चा विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात व्यवसायिक प्रशिक्षण हेतु स्थानान्तरित किया जाता है तो उस समय जो रिफरल रिपोर्ट दी जाती है उस रिपोर्ट में उसकी दक्षताओं/ योग्यताओं, सामाजिक कौशल/दक्षता, अभिरूचि, रूचि एवं परिवार पर विशेष बल दिया जाता है साथ ही उसके लिये उपयुक्त व्यवसाय से सम्बन्धित सूची भी संलग्न की जाती है।

13.6 परिणाम प्रलेखन विधियां

विशेष बच्चों की शिक्षा में विभिन्न मूल्यांकन के प्रलेखन में प्रचलित है।

13.6.1 आई ई पी प्रारूपः

IEP प्रारूप में एक विशिष्ट समय उपरान्त मूल्यांकन परिणामों को प्रलेखित करने का प्राविधान है। शिक्षक मूल्यांकन विधि तथा IEP में निर्धारित मानदण्ड सूचित करता है। योजना अनुसार विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जाता है। बाद में विद्यार्थी के निष्पादन की

तय मानदण्डों से जो प्रगति के मापन के लिये तय की गई है तुलना की जाती है। योजना अनुसार शिक्षार्थी का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षार्थी के निष्पादन की तुलना तय मानदण्ड से की जाती है, जो उद्देश्यों में उन्नति का मापन करने के लिये निहित होगा।

13.6.2 परीक्षण का कार्यक्रम बनाने के लिये

प्रयुक्त जांच तालिका क्रियात्मक जांच तालिकायें बौद्धिक अक्षम शिक्षार्थी की उन्नति को पत्र खित करने के लिये वैकल्पिक रूप में की जाती है। शिक्षक जांच तालिकाओं का प्रयोग विद्यार्थी के शिक्षण के लिये विषय चुनने में करता है क्रियाओं में महारथ प्राप्त करने की जांच में भी कर सकता है।

13.6.3 कार्य विश्लेषण

एक बौद्धिक अक्षम बच्चे के पूर्व तथा उत्तर निर्देशात्मक परीक्षण में कार्य विश्लेषण बच्चे को क्या पढ़ाना है उसका प्रारूप होता है यह बड़ी ही वस्तुपरकता से विद्यार्थी के निष्पादन स्तर का पता करती है तथा शिक्षक को क्रमबद्ध रूप से कार्य योजना बनाने में मार्गदर्शन करती है। विद्यार्थी की दैनिक/साप्ताहिक उन्नति को दर्ज किया जा सकता है जो निर्देशों के अन्त में परिणामों के संक्षिप्तीकरण में सहायक होते हैं। यह एक दृष्टि में बच्चे की उन्नति भी दर्शाती है।

13.6.4 ग्राफ

विद्यार्थी की उन्नति को ग्राफ दृष्टिपरक बनाते हैं इनके कई रूप हो सकते हैं। लक्ष्य की आरे उन्नति रोज/सप्ताह में शिक्षक द्वारा पता की जा सकती है। ग्राफ का बनाने के निम्नलिखित लाभ हैं:

- उन्नति के ग्राफ विद्यार्थी द्वारा निरन्तर एक विशिष्ट उद्देश्य की ओर की गई उन्नति की ओर दृष्टि संकेत करते हैं।
- ये बहुत ही संवदनशील होते जो छोटे बदलाव को भी जा विद्यार्थी या शिक्षक को नहीं मालूम पड़ते हैं, दर्शाते हैं।

- विद्यार्थी द्वारा की गई उन्नति के संकेत के अतिरिक्त उपलब्धि दर भी दर्शाते हैं। रोज आंकड़े दर्ज करने हेतु सभी विद्यार्थियों के लिये ग्राफ बनाना शिक्षण के लिये समय लेने वाला है फिर भी शिक्षकों द्वारा संकलित आंकड़े विकसित किये जा सकते हैं।

13.6.5 कार्य नमूने

निर्देश के दौरान विद्यार्थियों के कार्य नमूने विद्यार्थी के निष्पादन की तुलना करने में सहायता करते हैं। क्षेत्रों जैसे हस्त आलेख, भाषा में लिखा कार्य गणित तथा कार्य नमूने सीखने की महारथ का निर्णय करने के लिये अच्छी मूल्यांकन विधियां हैं।

13.6.6 उपख्यानात्मक (Anecdotal) रिकार्ड

उपख्यानात्मक रिकार्ड संक्षेप में लिखे गये विद्यार्थी के व्यवहार या घटनायें होती हैं। ये रिकार्ड विद्यार्थी के व्यवहार या घटना का सत्य वर्णन करते हैं। इनका प्रयोग गैर अनुमानित व्यवहार की सूचना में प्रयुक्त होना चाहिये। हम विशेष शिक्षकों से ऐसी टिप्पणियां सुनते रहते हैं कि X ने एक शब्द दूसरे विद्यार्थी को आकर्षित करने के लिये बोला जो उसने पहले नहीं बोला या भोजनालय में जाने से पहले ही अपना खाना खा लिया इत्यादि। इस प्रकार का वर्णन उपख्यानात्मक रिकार्ड के अन्तर्गत आता है। यह शिक्षकों को समस्या व्यवहार प्रबन्धन के लिये सोचने के लिये मजबूर करता है तथा निर्देश देने के लिये विद्यार्थी को समझने में सहायक होता है।

13.6.7 प्रोग्रेस रिपोर्ट

प्रोग्रेस रिपोर्ट विद्यार्थी की उन्नति को समय समय पर अंकित करने में प्रयुक्त किये जाने वाला प्रारूप है। सामान्यतः एक शिक्षक इसका प्रयागें विद्यार्थी की उपलब्धियां अभिभावकों तथा परिवार के सदस्यों को फीडबैक देने के लिये करता है।

13.7 रिपोर्ट लेखन के समय ध्यान रखने योग्य बातें

आवश्यकतानुसार जब रिपोर्ट को लिखा जाता है ऐस में कुछ बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक होता है:-

- रिपोर्ट के उद्देश्य पर प्रकाश डालना।
- प्रकरण सदैव स्पष्ट एवं यथावत (Precise) होना चाहिये।
- यदि रिपोर्ट देने हेतु कोई प्रारूप (Format) दिया गया है तो इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक सचूना देने हेतु करना चाहिये।
- सभी बहुविशेषज्ञों की टीम द्वारा एक निश्चित निर्णय पर पहुचने के आद ही रिपोर्ट लिखी जानी चाहिये।
- जहां तक सम्भव हो परिणामात्मक सचूना के साथ उपयुक्त गुणात्मक सचूना का भी समावेश रिपोर्ट में होना चाहिये।
- वर्तमान दक्षता के स्तर के बारे में लिखते समय खराब (Bad), ठीक (Fair), अच्छा (Good) इत्यादि सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि इनका अपना कोई मूल्य नहीं होता है। जो एक व्यक्ति के लिये अच्छा है वह दूसरे के लिये ठीक (Fair) अथवा खराब (Bad) भी हो सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि आंख और हाथ के सामन्जस्य की बात करे -बच्चा छोटी वस्तुओ को जमीन से अंगूठे व तर्जनी के द्वारा उठा लेता है, जमीन से सिक्को को उठा लेता है, छोटे मोतियों को धागे मे पिरो लेता है इत्यादि।
- उपरोक्त उदाहरण के द्वारा आपको भी समझ आ गया होगा कि अच्छा या खराब इत्यादि शब्दो का प्रयोग क्यों नहीं किया जाना चाहिये।
- यदि रिपोर्ट कम्प्यूटर की बजाये हाथ से लिखी गई है तो लिखावट साफ स्पष्ट एवं पढ़ने योग्य होनी चाहिये।
- रिपोर्ट के अन्त में हस्ताक्षर (नाम एव पद सहित) तथा तिथि अवश्य लिखी जानी चाहिये। यह बताता है कि रिपोर्ट कितनी विश्वसनीय/प्रमाणिक व पुरानी है।

13.8 रिपोर्ट का रख-रखाव (Maintenance of Records)

सभी प्रकार की रिपोर्ट को कायदे स बनाने व रख-रखाव की आवश्यकता होती है क्योंकि इसी के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रमों को बनाया जाता है साथ ही पुनः आंकलन (Reassessment) मूल्यांकन (Evaluation) किया जाता है। इसके लिए आवश्यक है रिपोर्ट को विस्तृत रूप से तैयार किया जाये प्रत्येक कालम (Column) को पूरी तरह से भरा जाये। रिपोर्ट का कवर पेज (Cover Page) रंगीन होना चाहिए जिस पर बच्चे का डेमोग्राफिक डेटा (नाम, उम्र, लिंग, माता-पिता का नाम, जन्म तिथि आदि) का विवरण होना चाहिए। Index Page होना चाहिए जिसमें इस बात का विवरण आवश्यक है कि रिपोर्ट में किस पृष्ठ पर कौन सी सूचना उपलब्ध है। आंकलन रिपोर्ट को ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहां से वह सरलतापूर्वक मिल जाये साथ ही रिपोर्ट दो प्रतिलिपियों में होनी चाहिए यदि किन्हीं कारणों से एक खो जाये या किसी अध्यापक के द्वारा प्रयोग में लायी जा रही हो तो दूसरी रिकार्ड में होना आवश्यक है।

13.9 आंकलन परिणामों का समावेशित शिक्षा में प्रयोग

समावेशी विद्यालय में सामान्य एवं दिव्यांग बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा प्रदान की जाती है ऐसी स्थिति में दिव्यांग बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कक्षा के समतुल्य लाने हेतु विशेष शिक्षण प्रदान करने का कार्य संसाधन शिक्षक (Resource Teacher) के पास रहता है। संसाधन शिक्षक में इन दिव्यांग बच्चों को समावेशी कक्षा में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का कार्य किया जाता है ताकि ये बच्चे भी समावेशी शिक्षा से पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें। उपरोक्त परिस्थिति में बहु विशेषज्ञों के द्वारा किये गये आंकलन सम्बन्धी रिपोर्ट दिव्यांग बच्चों को समझने उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु काफी कारगर साबित होती है। जहां भी आवश्यकता हो इस रिपोर्ट का प्रयोग किया जा सकता है वैसे तो आंकलन रिपोर्ट प्रधानाचार्य या कक्षा अध्यापक के पास रहती है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर अन्य सम्बन्धित अध्यापक व संसाधन शिक्षक के साथ भी इसको साझा (Share) किया जा सकता है क्योंकि यह बच्चों की क्षमताओं (Strengths) कमजोरियों के बारे में विस्तृत रूप से बताती है अतः बच्चों की क्षमताओं को धनात्मक रूप

में लेते हुये इसका प्रयोग सामाजिक रूप से मुख्य धारा में लाने सामाजिक समावेशीकरण हेतु किया जा सकता है। इस रिपोर्ट के आधार पर अपने सहपाठियों के साथ सामंजस्य, सहयोग, सम्प्रेषण आदि स्थापित करने व अभिभावकों को बच्चे के सम्बन्ध में सुझाव आदि दिये जा सकते हैं ताकि बच्चे की कक्षा में पूर्ण भागीदारी को भी सुनिश्चित किया जा सके। समावेशी शिक्षा में संसाधन शिक्षक बच्चे की समस्या के आधार पर आवश्यक आंकलन हेतु विशेषज्ञ के पास भेज सकता है और सभी रिपोर्ट को संकलित करता है यहां वह बच्चे के बेहतर भविष्य हेतु योजना बनाने के लिए नये संसाधनों को खोजता है, दूसरे विशेषज्ञों से बातचीत करता व सहायता लेता है साथ ही इस पूरी प्रक्रिया में अभिभावकों को शामिल करता है।

बौद्धिक क्रिया

एक बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चे की केस हिस्ट्री एवं शैक्षिक आंकलन रिपोर्ट तैयार करते हुये उसके लिए व्यक्तिगत शैक्षिक योजना तैयार कीजिए।

13.10 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि विभिन्न प्रकार के आंकलन बहुविशेषज्ञ टीम के द्वारा किये जाते हैं जिसका प्रयोग विशेष शिक्षक के द्वारा विभिन्न उद्देश्यों जैसे प्रशासनिक, शैक्षणिक योजना, रिफरल इत्यादि के लिए किया जाता है। इसके साथ ही आपने जाना कि विशेष शिक्षा में विभिन्न रिपोर्ट (केस वृत्तांत प्रारूप तथा विशेष शिक्षा आंकलन) की व्याख्या स्पष्ट शब्दों में किस प्रकार की जाती है साथ ही रिपोर्ट तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जिस प्रकार से आंकलन रिपोर्ट तैयार की जाती है उसका उद्देश्य बच्चे के लिए बेहतर भविष्य योजना बनाना होता है। इस क्रम में समावेशित शिक्षा में भी इसका प्रयोग संसाधन शिक्षक व अन्य अध्यापकों के द्वारा किया जाता है ताकि दिव्यांग बच्चा समावेशित शिक्षा के वातावरण में भी भली प्रकार सामंजस्य बैठा सके। इस रिपोर्ट को तैयार करते समय व रख-रखाव में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जैसे यह पूर्ण रूप उपयुक्त सचूनाओं से युक्त होनी चाहिए तथा ऐसी जगह रखनी चाहिए जहाँ से सुगमतापूर्वक इसको प्राप्त कर प्रयोग किया जा सके, पक्षपात रहित एवं सुस्पष्ट रूप से लिखित रूप में होनी चाहिए।

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Government of India (1999) National Trust Act for the welfare of persons with Autism, Cerebral Palsy, Mental Retardation and Multipale disabilities, New Delhi: GOI Press, www.Disabilityindia.org/trustact/cfm accesses on 19-12-2009
- Lengone, J. (1998) Managing inclusive instruction settings: Technology, Cooperative planning and learn based organization Focus on Exceptional Children, 30(8),
- Linn,R.L. and Grunlund, N.E. (2000) Measurement anassessment in teaching, New Jersey Prentice Hall
- Narayan, J. (1994) Grade level Assesment Device for Children with Learning Problems in regular Schools, Secundrabad, NIMH
- Payne, D.A. (2003) applied educational assessment. Wadsworth: Thompson learning
- Polloway, E.A.,Patton, J.R., Serna, L. (2007) Startegies for teaching learners with special needs Ohio; Person Mrrrill Prentice Hall pp444
- Raymond, E.B., (2008) Learners with mild disabilities, Boston: Person
- Salvia J., and Ysseldyke, J.E. (2007) Assessment in special and inclusive education, Boston: Hunghton Mifflin Company